अभिशप्त

लेखक
नागरसिंह

पतवार प्रकाशन, दिल्ली

प्रथम संस्करण मार्च १९६७
प्रकाशक पनवार प्रकाशन
मेन रोड गांधी नगर दिल्ली-३१
आवरण शिल्पी पानबन्धू
मूल्य ८.०० (आठ रुपये)
मुद्रक शुक्ला प्रिंटिंग एजेंसी द्वारा
हरिहर प्रेस दिल्ली।

ABHISHAPAT (Novel) By NANAK SINGH Rs 8·00

सस्नेह
पुत्री
इन्दुबाला को

? ? ? ? ?

ऋषि गौतम ने अपनी पत्नी 'अहिल्या' को उसके एक दुराचरण के फलस्वरूप श्राप देकर शिला बना दिया। तत्पश्चात अहिल्या शिलारूप में हजारों वर्षों तक पड़ी रही। अन्ततः भगवान राम के चरण स्पर्श द्वारा वह शाप मुक्त हुई।

एक पौराणिक कथा में ऐसा ही लिखा मिलता है। यह कथा जितनी हृदयस्पर्शी है उतनी ही शिक्षाप्रद भी। कुछ इसी से मिलती-जुलती मालूम होगी प्रस्तुत उपन्यास में आये नायक तथा नायिका की कहानी।

उपर्युक्त पाँच प्रश्न चिन्हों को देख रहे हैं आप? अवश्य ही आपको यह शीर्षक कुछ अच्छा-सा जान पड़ेगा। परन्तु वास्तव में इस उपन्यास की वार्ता इन्हीं पाँच प्रश्न चिन्हों में निहित है। संक्षिप्त रूप में इसकी व्याख्या करने की अनुमति चाहता हूँ।

अहिल्या ने पाप किया था ना? उसने भारतीय नारी को अपमानित करने वाला आचरण किया था? उसने अपने पति से विश्वासघात भी तो किया था और उसने अपने सामाजिक विधान को तोड़ने की भूल भी की थी जिसका दण्ड उसे भुगतना ही चाहिए था। चाहे अभिशाप के रूप में चाहे सामाजिक विधान के अधीन। परन्तु जिन अभिशप्त व्यक्तियों का निरूपण इस पुस्तक में किया गया है प्रश्न पैदा होता है कि उन्होंने ऐसा क्या पाप किया था अथवा किससे विश्वासघात किया था या कौन से सामाजिक कानून को उन्होंने भंग किया था जिसके बदले में उन्हें शापग्रस्त होना पड़ा?—पहला प्रश्न चिन्ह।

? ? ? ? ?

ऋषि 'गौतम' ने अपनी पत्नी 'अहिल्या' को उसके एक दुराचरण के फलस्वरूप श्राप देकर 'शिला' बना दिया। तत्पश्चात अहिल्या शिलारूप में हजारों वर्षों तक पड़ी रही। अन्तत: भगवान राम के चरण स्पर्श द्वारा वह शाप-मुक्त हुई।'

एक पौराणिक कथा में ऐसा ही लिखा मिलता है। यह कथा जितनी हृदयस्पर्शी है उतनी ही शिक्षाप्रद भी। कुछ इसी से मिलती-जुलती मालूम होगी प्रस्तुत उपन्यास में आये नायक तथा नायिका की कहानी।

उपर्युक्त पाँच 'प्रश्न चिन्हों' को देख रहे हैं आप? अवश्य ही आपको यह 'शीर्षक' कुछ अच्छा-सा जान पड़ेगा। परन्तु वास्तव में इस उपन्यास की वार्ता इन्हीं पाँच प्रश्न चिन्हों में निहित है। संक्षिप्त रूप में इसकी व्याख्या करने की अनुमति चाहता हूँ।

अहिल्या ने पाप किया था ना? उसने भारतीय नारी को अपमानित करने वाला आचरण किया था? उसने अपने पति से विश्वासघात भी तो किया था और उसने अपने सामाजिक विधान को तोड़ने की भूल भी की थी जिसका दण्ड उसे भुगतना ही चाहिए था। चाहे अभिशाप के रूप में चाहे सामाजिक विधान के अधीन। परन्तु जिन अभिशप्त व्यक्तियों का निरूपण इस पुस्तक में किया गया है, प्रश्न पैदा होता है कि उन्होंने ऐसा क्या पाप किया था अथवा किससे विश्वासघात किया था या कौन से सामाजिक कानून का उन्होंने भंग किया था, जिसके बदले में उन्हें शापग्रस्त होना पड़ा?—पहला प्रश्न चिन्ह।

? ? ? ? ?

ऋषि गौतम ने अपनी पत्नी 'अहिल्या' को उसके एक दुराचरण के फलस्वरूप श्राप देकर शिला बना दिया। तत्पश्चात अहिल्या शिलारूप में हजारों वर्षों तक पड़ी रही। अन्ततः भगवान राम के चरण स्पर्श द्वारा वह शाप मुक्त हुई।'

एक पौराणिक कथा में ऐसा ही लिखा मिलता है। यह कथा जितनी हृदयस्पर्शी है उतनी ही शिक्षाप्रद भी। कुछ इसी से मिलती-जुलती मालूम होगी प्रस्तुत उपन्यास में आये नायक तथा नायिका की कहानी।

उपर्युक्त पाँच प्रश्न चिन्ह। क्या देख रहे हैं आप ? अवश्य ही आपको यह शायद कुछ अच्छा-सा जान पड़ेगा। परन्तु वास्तव में इस उपन्यास की वार्ता इन्हीं पाँच प्रश्न चिन्हों में निहित है। संक्षिप्त रूप में इसकी व्याख्या करने की अनुमति चाहता हूँ।

अहिल्या ने पाप किया था ना ? उसने भारतीय नारी को अपमानित करने वाला आचरण किया था ? उसने अपने पति से विश्वासघात भी तो किया था और उसने अपने सामाजिक विधान को तोड़ने की भूल भी की थी जिसका दण्ड उसे भुगतना ही चाहिए था। चाहे अभिशाप' के रूप में चाहे सामाजिक विधान के अधीन। परन्तु जिन अभिशप्त व्यक्तियों का निरूपण इस पुस्तक में किया गया है, प्रश्न पैदा होता है कि उन्होंने ऐसा क्या पाप किया था, अथवा किससे विश्वासघात किया था या कौन से सामाजिक कानून को उन्होंने भंग किया था, जिसके बदले में उन्हें शापग्रस्त होना पड़ा ?—पहला प्रश्न चिन्ह।

अहिल्या ने तो पाषाण खण्ड बनकर अर्थात अचेतनावस्था में होकर बिना दुःख कष्ट का अनुभव किए इतना लम्बा समय व्यतीत कर दिया था। परन्तु प्रस्तुत कहानी के पात्र जो पाषाण न होकर हाड़ मांस के जीवधारी पिण्ड हैं—जो शारीरिक तथा मानसिक कष्टों से अछूते नहीं हैं उनके साथ पाषाण जैसा बर्ताव क्यों किया गया? जिनके हृदयों में जीने की लालसा थी और प्रगति करने की अभिलाषा भी क्यों उन्हें इन सबसे वंचित करके मर जाने के लिए बाध्य किया गया?—दूसरा प्रश्न चिन्ह।

अहिल्या को शाप-मुक्त होने के लिए हजारों वर्षों का समय लग गया था। फिर भी एक सीमा तो थी उसके शाप मुक्त होने की। परन्तु इस उपन्यास में आये दो पात्रियों—नाथी और प्रीतो अथवा इन जैसे दूसरे अगणित अभिशप्तों के शापमुक्त होने की भी क्या कोई सीमा है?—तीसरा प्रश्न चिन्ह।

नाथी नामधारी वह युवक जो नेत्रहीन होते हुए भी अपने व्यक्तित्व विकास के लिए हृदय में आकांक्षाएं रखता है और आकांक्षाओं के अतिरिक्त योग्यता भी फिर क्या उसे अपनी आकांक्षाओं को मसल कर—अपने मस्तिष्क को ताला लगा कर भीखमंगा बनने को बाध्य होना पड़ा और प्रीतो नाम की वह युवती जो भली चंगी होते हुए भी कलहिणी कुरूपा मुंहफट और हिंसक स्वभाव की बन गई तो क्यों? क्या जन्मजात से ही वह ऐसी थी और यदि नहीं तो इसका कारण?—चौथा प्रश्न चिन्ह।

अहिल्या ने तो भगवान राम के अनुग्रह से अनन्त शाप से मुक्ति पा ली। राम जिनका अवतार त्रेता युग में हुआ था। परन्तु मौजूदा युग में—जिस कलियुग की कलिकाल की संज्ञा दी जाती है क्या कोई भगवान है जो अपने पावन स्पर्श द्वारा किसी अभिशप्त को शाप मुक्त करने की सामर्थ्य रखता हो? पांचवां प्रश्न चिन्ह।

और इन पांचों प्रश्नों का उत्तर अथवा इन पांच पहेलियों का

समाधान ? मेरे विचार में यह प्रश्न मुझे अपने पाठकों पर ही छोड़ देना चाहिए और इस विश्वास के साथ कि उपन्यास के पढ़ लेने के बाद या तो स्वतः ही यह गुत्थी उनके सामने सुलझ जायेगी अथवा इसके सुलझाने के लिए दिमाग लड़ाने को उन्हें बाध्य होना पड़ेगा। फिर भी यदि कोई पाठक इनके सम्बन्ध में लेखक का मत जानने का हठ करे तो उसे मैं केवल अन्तिम प्रश्न का ही उत्तर दे पाऊँगा। सम्भव है कि उसी में शेष चारों प्रश्नों का उत्तर भी उन्हें दीख जाए।

माना कि हम उस युग की उपज हैं जिसे पाप, अज्ञान और असत्य का प्रतीक कहा जाता है परन्तु सोचने की बात तो यह है कि क्या युग परिवर्तन के साथ-साथ भगवान में भी अन्तर आ सकता है? भगवान को तो काल की सीमाओं से स्वतन्त्र, अनादि और अनन्त कहते हैं। उसने यदि त्रेता युग में अपने पतित पावन होने का प्रमाण प्रस्तुत किया था तो क्या कलियुग में उसकी पावनता बिगड़ गई? वस्तुतः भगवान अपरिवर्तित है और उतना ही जितना कि दूसरे युगों में था। यदि किसी को इस सत्य को प्रत्यक्ष रूप में देखना हो तो जिन अभिशप्त जीवों का मैंने पुस्तक में निरूपण किया है पुस्तक के उत्तरार्ध में पहुँच कर उनका कायाकल्प देख लेना ही पाठकों के लिए पर्याप्त होगा। क्या यह बात किसी की कल्पना में भी आ सकती है कि नत्थी और प्रीतो जैसी अधम आत्माएं कभी पतित से पुनीत बन सकेंगी? और यदि ऐसा सम्भव है तो कहना नहीं होगा कि यह सब उस भगवान के आग्रह का ही चमत्कार है अन्य कुछ नहीं। भगवान जिसका दूसरा नाम है प्रेम। जिसकी व्याख्या गुरु गोविन्द सिंह जी ने इन शब्दों में की है—

साँच कहौं सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो।

प्रीत नगर
(अमृतसर)

नानकसिंह

अरे हुआ क्या है तुम आज ? मन्के नमा मन पनाय किरता है।

जना जान दना ग्या है इस स्वरूपनग ना ना हर रात यहा होता है।

मैं तो दन-भर ग्यान गाना रहा कि कितना दर स्नाफम्न म गुजारी उमने हाउ पर न हुए नहा उम्याया। वनरा पूछा कि तुझ आज हुआ क्या है भानम पर यह तो नम नाना म बात ठाक बा रही न हूँ न हा।

अरे रफा भा करो। क्या उन भूतना की बातें छर रखा हैं। एक बार जिमक मन पर जा फिर हटन का नाम नहा। इसलिए कहती हू कि क्या लेना है उन छत्तर।

अरे वह ना आराम म। आ गई बडा उपदेश दन वाली। नई मुझ तो आज तमाशा दख हा रना है। यह होगा न कि पाव दन गालियाँ सुना दगी तो इनम का स्मारवान वाले हा नायेंगे ? दो घना का मौज-मना देखन का मिलागा।

अच्छा नई अगर चा। उनन्वान की हा इच्छा है ता नम मन म आय वर।

कौन होता है मरा चो। उनाग्न जाना। अगर उनके नद्र पाहर वानिया की चाग्यिा उखाम्दर न आऊ ता मरा नाम न ।।

ना फिर ना जावर मह ना इनर अगर तुम गाया गाया हम नही होना है तो।

ले फिर मैं ही जानी हू अगर तुम सबकी जान हवा हाने लगा है तो।

× × ×

छुट्टी की घटी बजत ही छात्राओं की लाम डारा स्कूल के अहात म स निकलनी आरम्भ हुई। जस किसा ने मुर्गियां का दरबा खोल दिया हो। दखत हा दखते सब कमरे खाली हो गय और फिर आगन की भीड भाड भी कम होनी गई। पर पाच चार अध्यापिकाय अभी तक भी एक कमरे म बठा उपयुक्त गप शप म व्यस्त था।

अन्त म बातें करने वाली थी प्रमलता। उम्र म कम छोटा और चुस्ती चालाकी म सबका बडी अम्मा। आख मटकाता और कध हिलाती हुई जब वह बात करती तो लगता जसे स्टेज पर काइ अभिनत्री अभिनय कर रही हो।

बीना गुरदेवी—ना नाक नक्श स अच्छी पर जरा लगडाकर चलती थी प्रमलता का कधा थपथपात हुए बोला वाह रे मरी गाल गप्पी ! फिर चल ना बता सूनी तरा बात न बाला हा।

सब अध्यापिकाय कहकहा मार कर हम पडी। गोर आसा और भारी भरकम शरीर वाली रामप्यारी न गुरुदेवी का पुष्टा करते हुए प्रेमलता को कहा तो फिर झटपट जा री ना हम लाग भी दख लें तेरी चातुरी का पर जल्दी लौटना कही एसा न हा कि बीबी रानी वहा जाकर रेगालभी बन जाय।

और प्रमलता इस प्रोत्साहन को पाकर शरीर को लचकाते हुए स्टाफ रूम का द्वार पर जा खडी हुई।

नई हा इस दहानी स्कूल म भर्ती हुई थी मिस प्रानम। यो तो सभी महकमो म नय भर्ती होन वाले कमचारियो की मिस प्रीतम जसी हालत हुआ ही करता है। किसी को ईर्ष्या का किसी का जिज्ञासा का और किसी को पसन्द का शिकार बनना ही पडता है। परन्तु इस नई अध्या पिका के आने पर तो स्कूल के वातावरण म एक अनोखी प्रकार की

खुसुर फुसुर चलने लग गई। जिसका एक नहीं, कई कारण थे। एक दम अनुभवहीन अध्यापिका, तिस पर वेतन मिलने लगा अनुभवी अध्यापिकाओं जितना और यह एक ऐसी बात थी जिसने समूचे स्टाफ में मिस प्रीतम के प्रति ईर्ष्या पैदा कर दी। उनका कहना था कि मिस प्रीतम हैडमिस्ट्रेस की कोई निकटवर्ती रिश्तेदार है। तभी तो यहीं पर सोई रानी जो सय्याँ मानी कहावत पर अमल हो रहा है। परन्तु हैडमिस्ट्रेस के विरुद्ध पर अंगुली उठाना भी तो अपनी नौकरी से हाथ धोने के बराबर था। जब कि वहाँ स्कूल भर की कर्ता धर्ता थी। खुद ही मैनेजिंग कमेटी और खुद ही स्कूल की स्वामिनी।

अपनी ईर्ष्या को मिटाने का जब अध्यापिकाओं को दूसरा कोई साधन नहीं मिल पाया तो अपना अपना मन हल्का करने के लिए सब ने मिल मिस प्रीतम से छेड़ छाड़ का क्रम शुरू कर दिया। जितना ही मिस प्रीतम बुरा मानती उतना ही अध्यापिकाओं को अधिक आनन्द आता। कई बार तो तंग आकर मिस प्रीतम ने बड़ी बहिन जी (हैड मिस्ट्रेस) के पास जाकर उन सबों के विरुद्ध शिकायतें भी कीं। पर बड़ी बहिन जी क्या करती जब कि एक ओर अकेली मिस प्रीतम थी और दूसरी ओर सारा स्टाफ। मिस प्रीतम यदि एक शिकायत करती तो उधर से उसके विरुद्ध एक दर्जन शिकायतें आ जातीं। परिणाम स्वरूप बेचारी मिस प्रीतम अपना सा मुँह लेकर रह जाती—रुआँसी होकर और खिसियानी होकर।

यों तो प्रतिदिन मिस प्रीतम को लेकर कोई-न-कोई बखेड़ा चलता रहता था परन्तु बड़ी बहिन जी की अनुपस्थिति में तो 'बिल्ली भागों छींका टूटा' जैसी बात बन जाती और आज भी बड़ी बहिन जी किसी आवश्यक काम के लिए बाहर गई हुई थीं।

यों आज की स्टाफ मीटिंग का कोई विशेष महत्त्व नहीं था। यदि था तो मात्र इतना ही कि इस बहाने से मिस प्रीतम को जी भर कर छकाया जाय। परन्तु न जाने क्या आज उन लोगों को अपने इस मनोरथ में सफलता नहीं मिल पाई। सफलता तो तभी मिलती जो इनके उत्तर में मिस

प्रीतम कुछ कहती। पर वह आज इस सारी छेड़छाड़ के अंतर्गत टस से मस नहीं हुई। कहां तो वह मिस प्रीतम कि जब तक इंट का जवाब न पत्थर न उठा फरती उसे चैन नहीं आता था और कहां आज उसकी यह मुख मुद्रा कि आरम्भ से लेकर अन्त तक मौनी महाराज बनी बैठी रहीं। जिससे बेचारी अध्यापिकाओं का सारा मजा ही किरकिरा हो गया।

इधर स्टाफ मीटिंग समाप्त हुई तो उधर छुट्टी का घंटा बजा। पर *मिस प्रीतम को आज न जाने क्या हो गया था कि पूर्ववत् ही अपनी कुर्सी* के साथ मानो सिली रही। सारी अध्यापिकायें बारी-बारी से उठकर चली गईं। परन्तु मिस प्रीतम वैसी की वैसी बैठी रह गईं।

भीतर से निकल कर अध्यापिकायें बाहर के एक कमरे में खड़ी हो कर मिस प्रीतम की प्रतीक्षा करने लगीं पर जब वह नहीं आई तो अन्त में अप्रसन्नता स्टाफ रूम की ओर चल दीं।

पांच मिनट दस मिनट पन्द्रह मिनट बीत गये। पर प्रेम नाम नहीं तोड़ी। पहले मन में एक का प्रतीक्षा थी तो अब दो की होने लगा। यह प्रतीक्षा की घड़ियां बिताने के लिए इन लोगों में बातचीत का क्रम चलने लगा।

अरे मैंने कहा यह बन्नो बहिन जी को क्या हो गया जो इतना स्याना होकर उन्होंने इस फूहड़ छोकरी को स्कूल में ला बांधा है।

ठीक ही तो कहती हो बहिन पढ़ाने का काम कोई मजाक नहीं है जो हर नथ्थू खैरा इसे कर लगा।

अरे ज्ञान पढ़ाना पड़ता है इस काम में पढ़ाई कराना कोई खाला जी का घर नहीं है।

खास टंग की बात कही बहिन तुमने और फिर पढ़ाने वाले का मुंह माथा भी तो ढंग का होना चाहिए। लगता है इस जंगल की भतनी पकड़ कर स्कूल में ला बिठाई है। सांझ सबेरे अगर कहीं किसी नन्हे मुन्ने को दिख जाय तो डर कर चीखें मार उठेगा।

शुक्र की बात है कि भगवान ने शक्ल नहीं दी है नहीं तो क्या यह कम्बख्त किसी को टिककर बैठने देती।

बातों का क्रम यहीं तक पहुँच पाया था कि स्टाफ रूम की ओर से आ रही चीखने चिल्लाने की आवाजों ने सबको भयभीत कर दिया और तब भी वे सब उसी ओर भागीं। भीतर जाकर यह सुनाई दिया—

कुतिया ! कमीनी ! रण्डी ! तुझे मजा चखाऊँ शरारतों का ! कौन होती है तू मुझसे मजाक करने वाली मैं तेरी हड्डी बोटी एक करके रख दूँगी

तभी सब अध्यापिकायें भीतर आ पहुँचीं। उस समय मिस प्रीतम का चेहरा एकदम रक्तिम हो रहा था और सिंहनी की तरह प्रमलता पर भयंकर उसका गला दबाये वह दहाड़ रही थी।

सबों ने मिलकर अपनी सहकारिणी का गला छुड़ाया। हालत देखे ही बनती थी। यदि और थोड़ा देर तक इनकी सहायतायें न आ पहुँचतीं तो संभव था कि आज प्रेमलता का काम ही तमाम हो जाता।

इधर वे सब मिलकर प्रमलता को सम्भालने में जुटीं थीं उधर मिस प्रीतम ने आव देखा न ताव और उसी प्रकार लाल हुए वायु वेग से बाहर निकली और आन की आन में यह जा वह गई। किसी को साहस नहीं हुआ उसे पकड़ने या कुछ कहने का।

क्या हुआ-क्या हुआ' कहते हुए सब झाड़ प्रमलता पर झुकी थीं। वह एक ही साँस से चिल्लाये जा रही थी। सब कोई उसकी सहानुभूति में कह रहा था—

अरे जान हो इस चुड़ैल का। बेचारी का मुँह नोच डाला इसने जाने न।

यही शुक्र है जो आँखें बच गईं। अगर कहीं झपट मार देती तो न जाने क्या हो जाता।

मैं तो तुम लोगों को पहले ही कहती थी कि मत छेड़ो इस कलमुँही को। पर तुम लोगों ने माना भी मेरा कहना ?

अच्छा तो फिर क्या हुआ। हम भी इसका बदला नकर दिखायेंगी।

और साथ म उन बडी बहिन जी के कानो क पर्दे भी जरा खोलने होंगे जिसने इस बाँदी को हमारे सिर पर चढा रखा है।

नही तो और क्या। आज उस छिनार न प्रसन्नता का यह हाल किया है कल हमारा भी यही हाल करेगी। इस बावली कुतिया को अगर अभी से जजीर नहा डाली जायगी तो क्या क्या उपद्रव कर बठेगी।

नाक ठके का बात कही सुमन। हम सबको मिलकर जल्दी से जल्दी उसकी नाक म नकेल डालनी होगी। अगर बात ठण्डी पड गई तो फिर कुछ नही बनने का।

सब किसी ने प्रसन्नता को दम दिलासा देकर शान्त करने का यत्न किया और फिर विचार विमर्श के बाद शिकायतनामा लिख डाला गया। जिसके नीचे बारी बारी स सबने हस्ताक्षर कर दिये।

इस अर्जी को बडी बहिन जी के पास पहुचाने का जिम्मेदारी राम प्यारी ने अपने पर ली क्योकि वह दूसरो की अपेक्षा कुछ अधिक ही बडी बहिन जी के मुह लगी थी।

२

सब कोई इसमें करमो को ही दोषी मानते थे। जो इतने बड़े घर की लड़की होकर भी विधवापन के दिन न काट सकी। सब कोई आपस में कानाफूसी किया करते — चाण्डालिन को न जाने क्या हो गया जो कि सब वालों के माथे पर कलंक का टीका लगा कर भाग निकली। भला इसके मायके में किसी बात की कमी थी?"

पर इन लोगों में कोई यह कहते भी सुने जाते — भई इसमें दोष करमो का नहीं बल्कि उस राक्षसी भाभी का है जिसने करमो को और साथ में उसके दूध मुँहे बच्चे को घर में टिकने न दिया। हर समय नोच-नोच कर खाया करती थी। अन्त में इस बेचारी का जीना दूभर ही हो उठा तो भाग न जाती तो और क्या करती।'

करमो ने अपना पहला प्रसूत समय मायके में ही काटा था। अर्थात् अपने भाई और भाभी के घर में। और प्रसूतकाल में ही अभागिनी पर वज्रपात हो गया। इधर वह प्रसूत गृह से निकली तो उधर उसके पति की मृत्यु हो गई।

मृत्यु चाहे साधारण तौर पर ही हुई थी जैसी सब किसी की हुआ करती है। परन्तु लोगों ने इसके लिए उस बच्चे को दोषी ठहराया जिसने संसार में आकर अभी पूरी तरह से आँखें भी नहीं खोली थीं। सब कोई मुँह खोलकर यह सुनाते — 'ऐसा दुष्ट है कि जन्म लेते ही अपने बाप को खा लिया।

मायके के परिवार में करमो का मात्र एक ही बड़ा भाई लाला चन्दर दास था। सगन्दर शहर का प्रमुख व्यापारी। जिसका दूर दूर तक नाम

चलता था। घराना जितना बड़ा था उतना ही मर्यादा का अनुयाई। और पुरातन मर्यादा के नियमानुसार हिंदू घराने में विधवा विवाह का नाम भी जबान पर लाना वज्रपात समझा जाता था। वह धार्मिक नियम जिस का पालना करते हुए पुरातन हिन्दू विधवायें हंसते हंसते चिता पर चढ जाया करती थीं। पर युग ने अंग्रेजी हकूमत का जिसके विदेशी कानून का संयम बढ़ा उसके प्रसार हुआ उस परम्परागत धार्मिक नियम पर जिससे हिन्दू धर्मावलम्बियों को अपने इस नियम में संशोधन करना पड़ा। जिसके अनुरूप जो विधवा हुआ जाती से दधार्य जीवन का निवाह करेगी उस सती जितना ही पुण्य प्राप्त होगा।

करमो के लिए अब तो इस नियम का पालन करना आवश्यक था। जिसके अनुसार उसे भाई के घर में रह कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए था और करमो ने इसे स्वीकार किया। पर जब घर के वासी टुकड़े भी उसके लिए दूभर हो उठे तो फिर क्या करती वह ?

भाई के मन में बहिन के लिए कुछ भी ममता न रही हो या भावजी के लिए मामू के हृदय में वात्सल्य का अंश मिट गया हो यह बात असम्भव थी और यही बात चक्कर देने वाली थी कि यह स्वामी के लिये बहू बहिन और भानजा का बोझ सहन करना असम्भव हो उठा। जब कि नाना ईश्वरदास के घर में ईश्वर की कृपा से चिड़िया के दूध के अतिरिक्त किसी भी बात की कमी नहीं था। धन धान से जिसके भण्डार भरे पड़े थे। फिर भी यदि करमो को सभा नहीं हो पाई—फिर भी यदि उस मायके वालों की मान मर्यादा में विवाह करके घर में निरादर भाजना पड़ा तो आखिर क्या ?

कहने वाले कहते हैं कि जिस दिन करमो ने अपना सुन्नी का वंश से लगाकर मायके के घर को त्यागा उस दिन बेचारे ईश्वरदास की हालत देखे ही बनती थी। उस बुढ़ापे पर बड़ा आघात लगा। वह माथा पीट पीट कर और सिर को दीवार से लगा-लगा कर दहाड़ मारता रहा था— हे भग

बात ! मेरा मान कुला के सिर में राख डाल कर चली गई !

'राख' नाम की चीज चाहे देखने में एक ही रहता है परन्तु अलग अलग स्थानों पर पड़ने से इसका अलग अलग प्रति क्रम हुआ करता है। किसी के सिर में पड़कर यदि यह उसकी सात कुलों का कलंकित कर डालती है तो चरण धूलि के रूप में यही राख जब किसी के माथ पर चढ़ जाय तो उस व्यक्ति को अधिकारी बना देती है।

लाला ईश्वरदास ने अपने जीवन में जितनी सुन्दरियों की चरण-धूलि अपने माथे पर चढ़ाई उन सुन्दरियों में एक ऐसी भी थी जिसकी चरण धूलि उनके माथे पर से उतरकर उसकी पत्नी की आत्मा में जा पड़ी।

आखिर धूलि ही तो थी जिसने आरम्भ में तो लाला ईश्वरदास की पत्नी द्रौपदी की आँखें धुंधली करी। परन्तु जैसे जैसे धुंध दूर होती गई उसी क्रम में रहस्योद्घाटन होता गया। पर द्रौपदी बेचारी तो स्त्री थी जिसका दर्जा धर्मानुसार पति की चरणदासी का था और पति को साक्षात परमेश्वर का था। तब द्रौपदी के पास रोने धोने के अति-रिक्त और साधन ही क्या था पति को सुमार्ग पर लाने के लिए और जब परमेश्वर का मन जब दिन प्रतिदिन उसी कुमार्ग की ओर बढ़ता चला गया तो इसके फलस्वरूप द्रौपदी की शारीरिक तथा मानसिक अवस्था उत्तरोत्तर बिगड़ने लगी।

इन परिस्थितियों में लाला ईश्वरदास इसके बिना और कर ही क्या सकता था कि अपने भगवान के चरणों में दिन रात प्रार्थना करे कि वह द्रौपदी के लिए शीघ्रातिशीघ्र यमराज का परवाना भेज दे। परन्तु न जाने उसकी इन प्रार्थनाओं में कुछ त्रुटि रह गई थी या भगवान के ही कान बहरे हो गए थे कि द्रौपदी के जीवन का धागा लम्बा ही होता चला गया।

और इसी बीच में वह कर्मों वाली घटना घट गई। ईश्वरदास कुछ तो पहले से ही कम परेशान न था ऊपर से पत्नी का निकृष्ट

कर आया है। चिनस्वरी और अवकाश दारी दखकर हुलिया कुछ मुसामानो का जान प-ता था।

न्ति कजडा की दुकान घर स कुछ अधिक दर नहा थी। एक गुम नाम मा गला क सिर पर। जिमन ग्मकी निरा नाममात्र को ही हानी थी। चाह थोड़े-से दोना सौना नाक रखता फिर भा प्यान टाररी म प-पट सडन नरा नान। गोभा मतगम तथा मेथी पाक क पत्त कुम्हला कर चिम्न जाते और न्ति कजडा न्न मजियो के समाप्त नो रहे जीवन की अवधि बनाने क लिए दोना वोनी न्र म उन पर पानी का छिड़काव करना रहता। साय हा गा- मन पन उनारकर दुकान क एक कोने म फेंके चला जाता।

इससे भी बढ़कर जो बात न्ति कजडे के लिए दुसह्य हा उठी थी वह था चूहा का भरमार। ना न्ति दवन न गत। तब भी ना चाह सजियो को कुतरना आरम्भ कर देते। न्ति कजडा न्न नाका पर विजय पाने क लिए बहुतेरे यत्न करता पर अामतौर पर उसे सदा ही पराजित होना पड़ता। कई बार उसने च पकड़ने का पीजरा लाकर रखा। चूहा को प्रलोभन देने के लिए कभी तो वह पिंजरे म मास के छिछड़े रख देता कभी गोभी क डण्ठल और कभी बासी-मा सना इत्यादि। पर चूहे य कि पिंजरे म घुसकर सब पदार्थो को चट करने के बाद न जान किस रास्ते स बाहर निकल जाते।

पिंजरे की असफलता के बाद न्ति कजडा न कहा स एक बिल्ली लाकर दुकान म छोड़ दी। उसे विश्वास था कि बिल्ली आते ही चूहा का समाप्त कर जायगी पर न जाने वह बिल्ली पूर्व जन्म की कोई सन्यासिनी थी या निरामिष आहारिणी और या शायद चूहा के साथ ही उसने कोई समझौता कर लिया था कि न तो चूहा का नाश हा हो पाया और न ही सब्जियो का नुकसान।

अन्त म न्ति कजडे के लिए केवल एक ही साधन शेष रह गया और वह था चूहे मारने वाली गोलियों का प्रयोग। अन्त उस काम म उसे पर्याप्त

सफलता मिली। पर यह सफलता तो उसके लिए असफलता से भी कहीं बढ़कर दुखद सिद्ध हुई। गालियाँ खाने के बाद बेचारे चूहे दूकान के नुक्कड़ में या टूटे-फूटे सामान के नीचे घुसकर प्राण त्याग देते और कुछ ही दिन पश्चात् उनकी दुर्गन्ध आने लग जाती कि दूकान के आगे किसी ग्राहक का खड़ा होना दूभर हो उठता। परिणामतः जो थोड़े-बहुत ग्राहक दूकान पर आते थे उनका भी आना नहीं रहा।

किन्तु बजटा भरसक यत्न करता कि वहाँ के भाग ठहरकर ... दिखाने लगा है। पर दूकान भी तो एक पूरा कबाड़खाना था। नीचे से ऊपर तक टोकरियाँ व रस्सियाँ और घास फूस के अम्बार लगे रहते थे। फलतः कभी ही उसने किसी चीज को हिलाया कि गर्द का बवंडर उठ सब रस्से और टोकरियाँ गिरकर इधर उधर फैल जाता।

एकाकी जीवन भी क्या जीवन है। न कोई दुख बँटाने वाला न कोई सुख पहचानने वाला। दिन भर रिन्नू कूँचा दूकान पर खाक छानता रहता। रात में घर लौटते समय किसी ढाबे-तंदूर से दो चपातियाँ गले से उतार लेता और फिर घर में घुसकर चुपचाप बिस्तर में दुबक जाता।

अपने जीवन का वही समय उसने सुख से व्यतीत किया जब तक उसकी पत्नी जीवित रही। मन मुताबिक जीवन साथी हो तो दरिद्रता में भी सुख की प्राप्ति होती है। कदाचित् यही कारण था कि तब रिन्नू कूड़ा अब जैसा खिन्न स्वभाव का नहीं था। खूब हँसकर बातें करता और सब किसी से बिना माथे पर बल डाले मिलता। परन्तु जब से उसकी पत्नी का देहान्त हुआ जिन्दगी उसके लिए अभिशाप बन गई।

अब उसकी आयु दूसरे विवाह रचाने के योग्य नहीं थी। न ही उसकी आर्थिक स्थिति इसकी आज्ञा देती थी पर बेचारा एकाकीपन हर समय शत्रु की परछाई बनकर उसके साथ चिपका रहता था। इसी से कभी कभी उसके मन में होता कि यदि एक बार फिर उसका घर बस जाय तो कितना अच्छा हो।

कुछ कमी था तो वह भी पूरी हो गई जब उसने एक और सन्तान को जन्म दिया और कन्या के रूप में। जब ही दित्तू कूजड़ा ने सुना कि माथा पीटकर रह गया। वह तो पुत्र की आशा लगाये बैठा था। पुत्र यदि हो जाता तो उसके कुल का नाम चलेगा मरने के बाद उसका क्रिया-कर्म करेगा। पर हाय री किस्मत!

लोग उत्तरोत्तर पैदा हुई सन्तान का मिलता-जुलता नाम रखा करते हैं। कदाचित इसलिए कि दोनों सन्तानों का जीवन पर्यन्त आपस में प्रेम भाव बना रहे। दत्तो ने भी सोचा यही सोचा होगा। तभी तो उसने बड़ा लड़की प्रीतो के बाद छोटी का नाम जीतो रख दिया। परन्तु परिणाम उसकी आशा के प्रतिकूल ही हुआ। न जाने दोनों बच्चियों के नक्षत्रों में ही कुछ गड़बड़ हो गई थी कि दोनों बहनों में घड़े और ईंट जैसा सम्बन्ध स्थापित हो गया।

जब तक तो दोनों बहिनें संसार के उतारों चढ़ावों से अनभिज्ञ थीं तब तक उनमें बहिनों जैसा ही सम्बन्ध बना रहा। परन्तु जैसे जैसे ही सयानी होती गयीं उसी क्रम से उनमें वैर भाव बढ़ने लगा और फिर यह वैर भाव अपनी सीमा में सीमित न रह कर ईर्ष्या, जलन तथा सौतन के रूप में परिणित होने लग गया।

किन्तु कूजड़े के लिए जीतो यदि अपनी बेटी थी तो प्रीतो एकदम बेगानी। दोनों बहिनों की इस अलग अलग प्रतिक्रिया के कुछ और भी कारण थे। बड़ी जहां एकदम मरियल सी दिखाई देती वहां छोटी खूब मोटी ताजी। यही अन्तर दोनों के स्वभाव प्रभाव में भी पाया जाता। बड़ी जहां अत्यन्त मुंह फट और स्वच्छन्द थी वहाँ छोटी हंसोड़ तथा चतुर स्वभाव की। किन्तु कूजड़ा जहां छोटी को हर समय बांध से चिपकाये फिरता वहाँ बड़ी को छूने का भी रवादार नहीं था।

माताओं को लोग जननि छाया की उपमा देते हैं। इस पंजाबी में एक लोकोक्ति है "मावां ठन्डियां छावां"। माताओं की वात्सल्य छाया में ही सन्तानें पलती फूलती हैं। यदि प्रकृति का यही नियम माना जाय

ना फिर क्या कारण कि माँ की शीतल छाया तले होते हुए भी प्राना दिन प्रति दिन मुरझाती जा रही थी और नीना के प्रति प्रयत्न खूब निराश कर रहे थे। पर बेचारी माँ का इसमें क्या दोष। जब कि इस विश्वास हो चला था कि नीना माथे में दुर्भाग्य का रेखा लिखवा कर संसार में आई है। कदाचित् यही कारण था कि कम्मा का वात्सल्य प्राना को विस्मात में सहायक नहीं हो पाया।

एक तो प्राना की चिन्ता में दिन रात घुलते रहना ऊपर से पति महाशय का हर समय टुनकार जाना। और इस गोद में कि वह क्या बड़ी लड़की से स्नेह करती है। परिणामतः बेचारी मा सूख कर कांटा होती गई। न इसे भूख लगती न ढंग से नींद आती। हर समय वह प्राना के प्रसंग को लेकर मन में सोचा करती— कौन इस अभागिनी का व्याह कर ले जायगा? किसे विपद पड़ी है जो इस प्रकार मा नन्हा का गल बाधना स्वीकार करेगा? तो क्या अभागिनी उम्र भर कुवारी ही बनी रहेगी? और यदि इसकी प्रारब्ध में यही लिखा है तो कौन इसके भरण पोषण का दायित्व सँभालेगा? क्या मेरी तरह इस भाग्य हीना को भी दर दर की ठोकरें खानी पड़ेंगी?

तब कम्मा का ध्यान कतिपय ऐसी चिर कुमारियों तथा विधवाओं की ओर चला जाता जिन्होंने पढ़ लिखकर नौकरी कर ली थी किसी प्रकार जीवन यापन कर रही थीं—विशेषतः स्कूलों की नौकरियाँ। वह मन में सोचती— यदि मैं भी इसे विद्या से भूषित कर दू तो सम्भव है कि इसका भावी जीवन निष्कण्टक रह पावे। तब वह मन में दृढ़ निश्चय कर लेती कि चाहे कुछ भी हो मुझे नीनो को अवश्य ही पढ़ाना होगा।

समय व्यतीत होता गया। अन्ततः समय ने प्राना को उस ठिकाने पहुँचा दिया। जब बालिकाओं को पढ़ाई की ओर अग्रसर होना पड़ता है। पर दुर्भाग्यवश यहाँ तक पहुँचते न पहुँचते प्राना का स्वभाव और नीना के लक्षण दिन प्रतिदिन अपने नाम से प्रतिकूल दिखाई देने लगे।

एक तो शारीरिक तौर पर बेचारी कुछ ऐसी वसी था दूसरे सौतेनी बहिन का निखरा हुआ रग रूप उसे नोच-नोच कर खाने लगा। इसमे भी बढकर जो कष्टप्रद बात यह कि दित्तू कूजडा जहा जीतो पर प्राण छिडकता था वहाँ प्रीतो के प्रति उसका उपेक्षा का यह हाल कि जबान तक साझी करने का रवादार नही और यदि कुछ बोलता भी ता कलमु ही सिरमुण्डी इत्यादि की भाषा मे। कई बार दम्पत्ति म महा भारत शुरू हो जाता जब करमो प्रीतो क पक्ष म कोई बात कह देती।

कितनी दयनीय दशा होती होगी उस घर का जहा एक ओर दोनो बहिनें आपस म लड रही हों और दूसरी ओर पति पत्नी मे कलह का राग अलापा जा रहा हो।

आज के युग मे भगवान का दूसरा नाम माना जाता है आर्थिकता का। बल्कि कई बार तो आर्थिकता का आसन ऊचा और भगवान का नीचा देखने मे आता है। थोड बहुत अन्तर से यही सिद्धान्त दित्तू कूजडा के घर पर लागू होता है। भगवान ने उसे बहुत अच्छ न सही पर बहुत बुर मनुष्यो की श्रेणी म भी नही रखा था। किसी जमाने म वह सभ्य और सुहृदय मनुष्या म गिना जाता था। परन्तु जब से वह आर्थिकता द्वारा अभिशप्त हुआ तब से वही दित्तू कूजडा जसे मानव स दानव बनकर रह गया। और उसी दानव के सामने करमा जब कभी प्रीतो को पाठशाला भेजने की बात चलाती तो दित्तू कूजडा रस्सी स साप हो तो बन जाता। उधर करमा भी जब तुर्की बतुर्की जबान चलाने लगती तो परिणाम स्वरूप मामला बढत-बढते गाली-गलौच तक जा पहुचता और वहाँ भी रुका न रहकर जूत-पैजार तक पहुच जाता।

चाहे कुछ भी सहा पर इस मामले म करमा खूब कडी निकली। दित्तू कूजडा ने जब देखा कि करमो प्रीतो के स्कूल न भेजने पर आत्म हत्या तक करने स नहीं चूकेगी तो अन्तत उसने हार मान ली।

प्रीतो की तुलना म जीतो की उम्र अभी स्कूल जाने लायक नही था। पर यहा तो प्रश्न उम्र का नहीं बल्कि जिद का था। दित्तू कूजड

ने फैसला दे डाला कि माना अगर स्कूल जायगा तो जाता भी जायगी। करमा को भला इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी। जब कि दोनों ही उसकी सगी बेटियाँ थी। उसने पति की इस घोषणा का स्वागत किया और तत्पश्चात् दोनों बहिनों ने साथ-साथ स्कूल जाना आरम्भ किया।

४

पढ़ने लिखने की अवस्था में पहुंचकर बालक प्राय समझदार एवं चतुर हो जाया करते हैं और इस पक्ष में प्रीतो अपनी उम्र की दूसरी लडकियों से कम नहीं थी। दूसरा कोई गुण उसमें भले ही न हो परन्तु बुद्धि उसकी तीक्ष्ण थी। फलतः वह थोड़े ही दिनों में न केवल पढ़ने लिखने में रुचित हो गई बल्कि अच्छी खासी चल भी निकली। पर इस एक गुण की तुलना में वह जो अगणित प्रकार के अवगुण उसमें थे उनका क्या करती।

सबसे प्रमुख अवगुण जो परछाई की तरह हर समय प्रीतो के साथ रहता वह था अपने पिता के प्रति घृणा और ईर्ष्या। उसके मन में आता कि आखिर कारण क्या है जो उसका पिता हर समय जीतो की तुलना में उसे धिक्कारता और फटकारता रहता है। क्या जीतो को सुरखाब के पर लगे हुए हैं? क्या उसने अपने बाप का कोई नुकसान किया है जो उसके लिए तो हर समय गाली-गलौज और जीतो के लिए हर समय प्यार-दुलार।

प्रीतो के प्रति बाप का दुर्व्यवहार जैसे जैसे बढ़ता गया बाप के विरुद्ध उसकी नस-नस में मानो तनाव भरता चला गया और यह तनाव भीतर ही भीतर प्रीतो को गलाये चला जा रहा था। विशेषतः करमा जब कभी भूल से भी प्रीतो के पक्ष में कोई बात मुँह से निकाल देता तो पति देवता के सिर पर भूत सवार हो जाता। जिसका फलस्वरूप पहले यदि प्रीतो की नाड़ियों में तनाव प्रवाहित होता था तो फिर तनाव बारूद के रूप में बदल जाता। पर प्रीतो क्या कर सकती थी जब कि उसकी माँ पर जुल्म ढाने वाला था एक पुरुष जिसकी तुलना में प्रीतो थी कुछ

सहता। न जिनके पास शक्ति थी न साहस।

कहते हैं बहुत रखवा बरजात दरवान। भीतर की आग में प्रीतो स्वयं ही जलता धधकता रहता। आग का धुआँ कहीं भूल से भी बाहर न निकल जाय इसके लिए सदा सावधान रहता। उसके वश में कुछ था तो इतना ही कि पिता यदि उत्तर पूर्व की ओर जाने को कहता तो वह पश्चिम की ओर जाता। पिता यदि दिन कहते तो उसे रात मानता। अर्थात पिता के प्रत्येक आदेश की अवहेलना की ठान मानकर अपने मन को शान्त करने का यत्न करती। पिता उसे जिस बात से मना करता वह जानबूझ कर वही करता। पिता के वचन से वह गालियाँ भूल जाता और थप्पड़ खाय जाता और मन में न जाने क्या-क्या बुदबुदाय जाती। उसका विद्रोह अब उस सीमा तक पहुँच चुका था जहाँ पहुँच जाने पर मनुष्य सब बातों को तुच्छ समझने लग जाता है। न उसे गालियों की परवाह रहती न ही थप्पड़ों की ही। उसे अब ऐसा जान पड़ने लगा मानो पिता की गालियाँ तथा मार पिटाई यह मानो चावल उसकी प्रतिदिन की खुराक में सम्मिलित हैं।

पिता से उतर कर दूसरे नम्बर पर जो व्यक्ति उसकी आँखों में शहतीर की तरह खटकता रहता था वह थी उसकी बहिन जीना। जब कभी जीना की शिकायत की जा रही होती तो सामने खड़ा जाता इस दृश्य को ऐसे देखता मानो कोई रंगीन नाटक देख रहा हो। तब प्रीतो का मन होता कि यदि कहीं से उसे जहर की पुड़िया मिल जाय—यदि कोई साँप उसे मिल जाय यदि तीखी धार वाला कोई छुरा उसके हाथ में आ जाय तो इसके प्रयोग से वह अपने इन नाक में दम करने वालों का क्षण भर में काम तमाम कर डाले। परन्तु पिता का वध करने के मनसूबे बनाना जितना सरल होता है इसे कार्य रूप देना उतना ही कठिन। अन्त में प्रीतो के पास अपनी हिंसक वृत्ति को शान्त करने के लिए यदि कोई साधन शेष रह जाता तो यही कि वह जीना को जी भर कर परेशान

कर। इसके बदले में चाहे पिता द्वारा उसे कितनी ही पिटाई क्यों न सहन करनी पड़े।

इसी उकताहट की उकताई हुई प्रीतो हर समय अपना मन ठण्डा करने के प्रयत्न में लगी रहती। जीतो यदि कमरे की सफाई करके बाहर निकलती तो वह वहां पर फिर से कूड़ा करकट बिखेर देती। जीतो यदि बर्तन साफ करके रखती तो वह उनमें भूसा डाल देती। कभी जब जीतो पतीली में दाल भाजी बनाकर इधर उधर होती तो पीछे से वह चटकी भर अतिरिक्त नमक उसमें डाल देती। परन्तु जिस मनोरथ से वह इस प्रकार की क्रियाएं करती वह पूरा नहीं होता। क्योंकि पिता द्वारा न तो जीतो की कभी मार पिटाई होती न ही गाली गलौच होता। उल्टा यह कि जीतो की शिकायत पर अपने किये का दण्ड उसी को भुगतना पड़ता। उम्र की दूसरी लड़कियों की अपेक्षा प्रीतो का शरीर कुछ अधिक लम्बा था। पर शारीरिक दुर्बलता के कारण वह और भी लम्बी दिखाई देती। चलते समय उसकी दोनों बाहें कुछ इस प्रकार से हिलतीं जैसे किसी ने उसके कन्धों में बांध कर लटका दिया हो।

यदि रंगवर्ण ही सौन्दर्य का प्रतीक माना जाता तो सम्भव था कि प्रीतो भी सुन्दरियों में गिनी जाती। परन्तु अभागिनी को यह गोरा रंग पीतवर्ण मलिन रूप में प्राप्त हुआ था। जिस पर चेहरे की उभरी हुई हड्डियां और आंखों के गिर्द पड़े हुए स्लेटी रंग के घेरों ने उसकी कुरूपता को और भी बढ़ा दिया था। फिर भी एक चीज तो उसके तन पक्ष में ऐसी थी ही जिसे यदि सुन्दर नहीं तो असुन्दर भी नहीं कहा जा सकता था और वह था उसकी बड़ी बड़ी आंखें। परन्तु यह आंखें भी कुछ इस प्रकार का प्रभाव डालती थीं जैसे किसी ने मन कचनार में दो गुलाब के फूल रख दिये हों। इतने पर भी यदि उसकी कुरूपता में कुछ कमी रह गई थी तो उसे पूरा कर दिया था उसकी चूहे की पूंछ जितनी चोटी और बात करने के ढंग ने। बोलती तो लगता जैसे बकरी जुगाली कर रही है।

बाहरी कलह-क्लेश की तरह प्रीतो की आन्तरिक मशीनरी में भी कई प्रकार की अस्वाभाविकता सी पाई जाती थी, उसका सोचने का ढंग, उसकी समझने की शक्ति तथा उसका साधारण बर्ताव इन सबों में कुछ-न-कुछ विलक्षणता थी। जब कभी अकेली होती तो अकारण ही होठों में कुछ न कुछ कुनमुनाती रहती। चलते फिरते, बैठते-उठते उसके होठ कुछ इस प्रकार से गतिशील रहते मानो किसी से बातें कर रही या लड़ रही है। कभी कभी तो अनायास ही उसकी मुट्ठियाँ भिंच जातीं और हवा में हाथ हिलने लग जाते।

प्रीतो के मन को सबसे अधिक कष्ट उस समय होता जब जीतो के साथ मिल कर उसे स्कूल जाना पड़ता। देखने वालों को इन दोनों बहिनों की जोड़ी राजहंसिनी और कौवी सी जान पड़ती। कदाचित् यही कारण था कि स्कूल जाते तथा लौटते समय प्रीतो किसी-न-किसी बहाने से अलग हो जाती।

प्रीतो को स्कूल जाने का कम-से-कम एक लाभ तो हुआ ही कि उतना समय घर से बाहर रहने के कारण कलह क्लेश से उसका बचाव रहता। इसके अतिरिक्त दूसरा लाभ उसे यह हुआ कि पढ़ने लिखने के काम में जहाँ जीतो की बुद्धि स्थूल थी वहाँ इसकी तीक्ष्ण। इस अन्तर का चमत्कार प्रीतो के लिए जहाँ आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ वहाँ उत्साहवर्धक भी। अर्थात् जीतो तो पहली कक्षा में ही बनी रही पर प्रीतो दूसरी में प्रविष्ट हो गई। अपनी छोटी बहिन से प्रतिशोध लेने के लिए प्रीतो को यह एक अच्छा अस्त्र मिल गया। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब तो मैं इस मनहूस लड़की को नीचा दिखलाकर ही छोड़ूँगी। फलतः वह पढ़ाई के काम में पहले से भी अधिक परिश्रम करने लगी।

जहाँ इस सफलता ने प्रीतो को प्रोत्साहित किया वहाँ स्कूल के वातावरण में से उसके लिए कुछ ऐसी चीजें भी पैदा हो गई जिन्होंने न केवल उसकी सफलता और उत्साह को ही ढाँप लिया बल्कि उसके तन-बदन

की भर्त्सना भी आरम्भ कर दिया।

मनुष्य के किसी अंग पर घाव हो जाय तो उस अंग में पीड़ा का होना स्वाभाविक ही है। परन्तु तब यह पीड़ा क्या अभिशाप बन जाय—जब उस दूषित अंग पर चोट-पर चोट पड़नी आरम्भ हो जाय तब?

भले ही प्रीनो कुरूप थी। उसके पास कुछ भी नहीं था जो किसी आँख को आकर्षित कर सकता। पर किसी का क्या अधिकार है कि हर समय उसकी कुरूपता का व्याख्यान करता रहे। लोगों को यदि भगवान ने सौंदर्य दिया है तो क्या इसलिए कि वे दूसरों की हँसी उड़ाएँ? प्रीनो भीतर ही भीतर जल भुन कर रह जाती। जब स्कूल के प्रांगण में प्रविष्ट होते या बाहर निकलते समय उस पर अंगुलियाँ उठने लग जातीं और उसके सम्बन्ध में खुसर फुसर शुरू हो जाती। घर में तो उसके साथ जो बर्ताव किया जाता था उसे सहन करने का उसे अभ्यास सा पड़ गया था। पर इन निगोड़ी छोकरियों को क्या अधिकार है जो उसकी कुरूपता पर टीका टिप्पणी करने लग जायें। तिस पर आश्चर्य यह कि उसकी सगी बहिन भी उन चुड़ैलों के साथ मिल कर वैसा ही करने लग जाती है।

अब प्रीनो करे तो क्या करे। न उसे घर में सुख की साँस लेना नसीब होता न स्कूल में। वह किधर जाय? क्या किसी कुएँ में जाकर छलांग लगाय? अनेकों बार यह प्रश्न मन में उठता पर सब व्यर्थ। कभी कभार किसी लड़की के साथ उसका झगड़ा भी हो जाता। पर परिणाम उल्टा ही होता। जिसने नहीं सुना होता वह भी सुन कर उसकी हँसी उड़ाने लग जाती।

प्रत्येक वर्ग में कुछ मुँहफट मसखरे वाले व्यक्ति रहते हैं जो दूसरे आविष्कारकों की तरह उपनामों का आविष्कार करने में दक्ष होते हैं। विशेष तौर से विद्यार्थी श्रेणी में। सम्भवतः इसी प्रकार की लड़कियों ने प्रीनो के कई उपनाम गढ़ डाले—छिपकिली भुतनी ऊँटनी

लाड बगैर इत्यादि।

पहले पहल साधारण फिर कुछ अधिक और फिर तो उनने भी बच्चे को आना के इस उपनाम से बुलाना शुरू कर दिया था। आना के लिए इस सबको सह पाना न केवल दूभर बल्कि असह्य हो उठा। फलत जब भी कोई लड़का उसे इस प्रकार के किसी नाम से पुकारता तो आना के माथे पर एक आग सी लग उठती। उसका मन होता कि वह इन सभी बच्चों को एक एक कर पीट डाले। परन्तु किसी भी बच्चे के पिटने पर उसकी माँ आना के घर आ पहुँचती। वहाँ बड़ी भारी लड़ाई होती। महल्ले भर की स्त्रियाँ इकट्ठी हो जातीं। आना की माँ अपने बेटे को बुरा भला कहतीं और कहतीं—'अरी कमीं! कुलक्षणा! घर में तेरा जन्म हुआ था तो न कभी इन सबके बीच ही बैठ सकता था न मुझे बैठने दिया।'

तब माँ के इन कोसे हुए दावों को सुनकर आना का धीरज जाता रहता। फिर भी आना को इतना भर सन्तोष तो था ही कि इस संसार में कम-से-कम एक व्यक्ति तो ऐसा है ही जो उनके दुख में दुखी होता है—जो उसके रोने पर रोता है—उसके तड़पने पर तड़पता है—उसके आँसू भरने पर आहें भरता है—उसकी अभागिनी माँ।

आना की मानसिक स्थिति चाहे कैसी भी थी परन्तु पढ़ाई के काम में वह तन मन सारा जुटा रहा था। निरन्तर प्रयत्न के फलस्वरूप वह दसवीं पर कक्षा पास करता हुआ अन्ततः दावा में प्रविष्ट हुआ। उसे यह ज्ञान चाहे अपना बल्कि में अभिशाप लेने के अन्तर्गत ही लगी था पर इससे उस लाभ कुछ कम नहीं हुआ।

अन्ततः आना का चिर परिश्रम फलीभूत हुआ जब दसवीं की परीक्षा

फल सामने आया—प्रीतो ने अच्छे नम्बरा पर मैटिक पास किया । जिसकी तुलना म वेचारी जीतो अभी तक सातवी कक्षा म ही लटकती चली आ रही थी ।

निश्चय ही करमो के अन्धकारमय जीवन म यह एक प्रकाश बिंदु था । अब उसे किसी सीमा तक विश्वास होने लगा कि उसकी यह अभागिनी बटी चाहे क्वारी ही रह जाये भूखी नहीं मरेगी—कहीं न कहीं अवश्य ही छोटी मोटी नौकरी तो पा जायगी । यदि एक आध छलाग और लगाकर वसिक भी कर ल फिर तो उसका दुर्भाग्य यदि सौभाग्य में नहा भी बदला तो कम स कम जीवन यापन करने योग्य तो हा ही जायेगी ।

करमा चाहे अपने पति की आर्थिक दशा स नात था और यह भी जानती था कि उसका पति अपनी सौतेली लडका को फूटी आखा दखना नहा चाहता है । फिर भा उसने सोचा कि कौन-सी बात है यदि लडकी का भविष्य सवारने के लिए उसे अतिरिक्त मेहनत मजदूरी ही करनी पड़ ।

परन्तु विधाता को कुछ और ही मजूर था जो इन दोना के पीछे हाथ भाड़कर पडा हुआ था । सहसा करमो को मलेरिया ने आ दबोचा और फिर मलेरिया टाइफाईड के रूप म बदलकर यमराज का परवाना लिय आ पहुचा और देखते ही देखते करमा को उठाकर ले गया । प्रीतो की अधरी दुनिया म प्रकाश की धुधली-सी जो किरण थी वह भी सदा सदा के लिए बुझ गई ।

उधर करमो ने आखें मूंदी, इधर दित्तू कुबड़ा और उसकी लाडली का भाग साफ हुआ। अभागिनी प्रीतो जो पहले ही उन दोनों की नजरों में दूध में मक्खी की तरह खटकती थी अब उनके लिए और भी कष्ट मय हो उठी। हंसना खेलना तो प्रीतो अपने भाग्य में लिखाकर ही नहीं लाई थी पर मां के मरने के बाद तो उसे खुलकर रोने भी नहीं दिया जाता। भूले से भी जब कभी उसकी आंखों में तरलता दिखाई दे जाती तो दित्तू कुबड़ा चिंघाड़ उठता— अरी चुड़ैल! यह टिसुए बहा कर किसे दिखलाती है! पहले तूने अपने सगे बाप को खाया फिर मां को डकारा। अब क्या मुझे भी लीलना चाहती है?

किसी के मरने के बाद ही उसके गुणों का मूल्यांकन हुआ करता है। प्रीतो को प्रारम्भ से ही एक प्रकार की लालसा-सी चली आई थी कि किस प्रकार मां-बाप अपनी सन्तानों से स्नेह किया करते हैं। कैसे माँयें अपनी पुत्रियों को लाड लडाया करती हैं। कभी भी तो उसे इसका अनुभव नहीं हुआ था। उसे यदि कुछ मिला था तो मात्र इतना ही कि यदा कदा उसकी मां उसे गले से लगाकर रो लिया करती थी और रोते हुए कहा करती थी— अरे ओ मेरी बदनसीब बच्ची! तूने क्या मेरी कोख से जन्म लिया! इत्यादि। अब प्रीतो अपनी मां के उन कटु वाक्यों को याद करके आहें भरती और आँखों से गंगा यमुना बहाती रहती। कितना स्नेह—कितना वात्सल्य टपकता था उन कटु वाक्यों में से—कितना सुख मिलता था उसे अपनी मां के वक्ष से लगकर। तब भर में यदि कोई प्रीतो के साथ अन्याय करता तो उसकी मां की आँखें छलक

आती थी। परन्तु आज चाहे कोई प्रीतो की बोटियां नाचता रहे चाहे प्रीतो घण्टा रोता रहे किसी का क्या से।

पहले भी तो प्रातो का अब जैसा ही स्वभाव था। जब भी कोई उस कड़वी कसैली बात कह देता था तो वह पेट से बैर करने लग जाती और खाना खाते थाली को ढकेल देता था। तत्पश्चात मां की मिन्नतों एवं गालियां में आतुर होकर फिर से उस चार कवर नीलने को बाध्य होना पड़ता था। परन्तु अब घर में ऐसा कौन था जो उसे रूठा को मनाकर बलपूर्वक उसके मुंह में ग्रास डालने लग जाए। अब तो यह हाल था कि ऐसा अवसर पैदा होने पर नीतो बाप से शिकायत करता 'भय्या जी आज प्रीतो ने खाना नहीं खाया है। और उत्तर मिलता जहन्नुम में जाय नहीं खाया है तो। प्रीतो एक जून दो जून तीन जून भूखी रहने पर जब आतुर हो उठती—पेट में जब चूहे नाचने लग जाते तो मन मारकर उस हठ त्यागना पड़ता। पर दित्त कूजड़ा के घर आने पर नीता उसे कहती भय्या जी! प्रातो ने खाना खा लिया। और उधर से उत्तर मिलता मैं कहता नहीं था कि पाखण्ड कर रही है!

मां के जाने हुए प्रीतो छोटी बहिन को एक के बाद एक में चार सुनाया करता था। पर अब आंख में डाल सा नहीं सटकती। जैसे मुंह में जबान ही न रह गई हो। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि प्रीतो का जन्मजात का भाव बदल गया। वह तो पहले से भी कहीं अधिक हिंसक और गुस्सा हो गया था। अन्तर यदि था तो यही कि पहले वह जबान दराजी द्वारा—स्पष्टधर्मी सारा अपने मन की भड़ास निकाल लिया करती थी पर अब अधमरी नागिन की तरह भीतर-ही भीतर विषपान करती रहती और यह भीतर का विषपान उसे गलाये जा रहा था।

किन्तु कूंजड़ा के सम्बन्ध में ऐसा तो नहीं कहा जा सकता था कि मनुष्यता उसे छू नहीं गई हो। ध्यान से सही साधारण स्त्री कुछ-न कुछ मान मर्यादा तो रखता ही था। जात बिरादरी का तो किन्तु भी

मानता था और देवी देवताओं के प्रति श्रद्धालु भी था। जब वह जवान था तो जवानी के मध्य में अपने वर्तमान तथा भविष्य दोनों की ओर से प्राय उपेक्षित ही बना रहता था। वही हाल कि तली में आया गली में गाया। परन्तु जब गृहस्थ का झूला गले बंध गया और फिर यह झूला दिन प्रतिदिन उसका गला घोटने लगा। तब उसे नानी याद आने लगी। काम काज भी तो कुछ उपजाऊ नहीं था। सदा ही नौ तीस और ग्यारह हाथ की सी स्थिति बनी रहती थी।

वह तो आरम्भ की बात होती है चुपड़ी न सही अनचुपड़ी सही चार चपातियाँ मिल ही जाती थीं नया न सही पुराना सही पहरन को प्राप्त हो ही जाता था। परन्तु जो चिन्ता जोंक बनकर इन दिनों उसका रक्त चूस रही थी वह थी इन दोनों लड़कियों के विवाह की समस्या। जीतो के सम्बन्ध में वह कुछ अधिक चिन्तित नहीं था। एक तो उसकी आयु अभी छोटी थी दूसरा नाक-नक्श भी अच्छे थे और तीसरे थी भी तो उसकी अपनी सन्तान। परन्तु प्रीतो! उसका शरीर तो एकदम ऊँटनी जैसा लम्बा हो चला था। एड़ियाँ उठाकर यदि वह खड़ी करती तो छत को छू लेती। यदि थोड़ी बहुत मुँह हाथ लगता होती तो सँभव था कि बनिया न सही घटिया सही—खाते पीते घर का न सही किसी कुली मजदूर का लड़का ही उसके लिए प्राप्त हो जाता। परन्तु इस मरे हुए ढोर को अपनाने के लिए क्या कोई लड़का तैयार होगा? और यदि कोई लोभी लालची मिल भी जाय तो यहाँ दित्तू कूजड़े के पास कौन-सा खजाना रखा है जो प्रीतो के दहेज में देकर किसी लम्पट की लम्पटता को तृप्त करेगा।

करमों के जीते हुए जब कभी प्राणों के विवाह के बारे में पति-पत्नी में बात चलती तो हमेशा ही इसकी समाप्ति लड़ाई झगड़े पर हुआ करती थी। जिसके अन्तगत दित्तू कूजड़ा अपनी पत्नी को इस प्रकार की जली कटी सुनाने लग जाता था—

मुझ तेरे मायके वालों ने सोने चाँदी की गठरी बाँध कर नहीं थमा

दी थी जा मैं तेरी इस लाडली के लिए दहेज बनाने बठ जाऊगा।

उत्तर म जब बिसूरते हुए करमा कहती कि फिर बताओ न अब मैं क्या करु ता पति कह देता गले मे पत्थर बाँध कर फेंक दे इस किसी कु ए पाखर म। तब करमो भगवान स मनान लगती रे प्रभु! या तो इम उठा ल या मुझ ही समाप्त कर दे।

करमा क्या मरा घर का ासे तख्ता ही उलट गया। वही घर जो हर समय लिपा पुता और साफ सुथरा दिखाई दता था अब लगता जसे घर सब सामान का मुर्गियाँ बिखेर गई हैं। भीतर की चीजें बाहर बाहर का चीजें भातर। कई दिना से भाडा बतन जूठा पडा है तो धोने मलन का किसा को चिता नही। कपड आदि हलवाई के तप्पड जसे मले हो गय है तो किसी की बला से। खाटें ढीली हैं तो कसने की ओर किसी का ध्यान नहा। जिन दिनो लडकियो पर घर को सभालने का दायित्व था उनकी हालत साँझा बाप न रोये कोई जसी है प्रीतो कहती मैं क्या करू। मैं ही नौकर रखी हुई हू? और इधर जीतो कहता घर से मेरा कोई अलग नाता है जो सब बखेड मैं ही झलू।

इन परिस्थितियो मे बेचारे दित्तू कू जडा की हालत वसी ही हो रही था जसा साँप क मुह म छिपकली खाये तो कुष्ठी छोड तो अधा। दुकान पर जाना तो ग्राहको क अभाव स उसका रक्त सूखता रहना घर। जाता ता लडकिया का लडाई उसकी नाकों दम कर दनी।

इधर कुछ दिना स प्रातो को अपने पिता के स्वभाव म एक अनोखा सा परिवतन दिखाई दन लगा था। मानो बाघ दहाडन का ढग भूल गया हा। माना साँप की डक चलाने की आदत छूट गई हो। अब प्रीतो का डाँटना डपटना उसने एकदम बन्द कर दिया था। प्रातो अच्छा करे बुरा करे—किसा काम को सवार दे चाह बिगाड दे वह उसे कुछ नही कहता। कभा-कभा तो प्रातो के प्रति उसके सम्बोधना म चुडल कलमुही इत्यादि क स्थान पर बेटी पुत्री इत्यादि का प्रयोग होने लग जाता।

पिता के स्वभाव में आ रहे इस उलट फेर ने प्रीतो को आश्चर्य में डाल दिया। सोचती आखिर इसका कारण क्या है।

सहसा एक दिन अनायास ही यह रहस्य प्रीतो के सामने उद्घाटित हो गया जब रात में घर आने पर दित्तू कूजड़ा ने उसे आवाज दी प्रीतो बेटा इधर आना तो जरा तुमसे कुछ बातें करनी हैं।

बातें और मुझसे! मन ही मन प्रीतो सोचने लगी। उसके हृदय की धड़कन बढ़ चली। यंत्र चलित पुतली की तरह वह अपने पिता के पास जा पहुंची और बोली 'कहिए भइया जी क्या कहना है।

थोड़ी देर तक दित्तू कूजड़ा चुप्पा साधे रहा और फिर बोला बेटा, मैंने तुझे इसलिए बुलाया है कि और बलवन्त मानो उसके गले में कोई चीज फंस गई।

पिता के इस अधूरे वाक्य को सुनकर प्रीतो के दिल की धड़कन थोड़ी और बढ़ी। तब उसने पिता ने अपने अपूर्ण वाक्य को इस प्रकार पूरा किया—

अब तू छोटी नहीं है बेटी और इधर घर की हालत भी तो तुमसे कुछ छुपी नहीं है। सोचता हूं आखिर कब तक यह चलेगा। कब तक मैं तेरा बोझ उठाए रखूंगा।

देर तक दित्तू कूजड़ा इस प्रसंग की व्याख्या में प्रमाणों पर प्रमाण देता चला गया और प्रीतो छुई मुई बनी सुनती रही। अपनी इस व्याख्या के अन्तर्गत दित्तू कूजड़ा एक विशेष वाक्य को थोड़ा अदल बदल करके बार-बार दोहराये चला जा रहा था, 'आखिर कब तक मैं तेरे बोझ को उठाए रखूंगा और अब तो पानी सिर पर से गुजर चला है।

इस एक ही प्रकार के वाक्य को सुनते-सुनते प्रीतो विचलित हो उठी। मानो उसकी श्रवण शक्ति आंखों में और देखने की शक्ति कानों में जा घुसी हो।

तभी उसने सुना 'सुन लो मेरी सब बातें?'

प्रातो ने तुतलाते हुए कहा सो सुननी हैं भय्या जी किसी होने वाले वज्रपात की प्रतीक्षा में एडी से लेकर चोटी तक वह स्पन्दित हो उठी।

तो फिर क्या सलाह है तेरी ?

इस सलाह शब्द ने एक बार फिर प्रीतो को झकझोरा। पर कुछ भी तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उत्तर में क्या कहे वैसी की वैसी मौन बनी रही वह।

प्रीतो का मौन किन्तू कूजड़ा के लिए प्रहार बन गया। उसके चेहरे पर कुछ खीज के से—कुछ क्रोध के से चिह्न विद्यमान हो आये। इसी कठोर मुद्रा में बोला सुनी हैं या नहीं मेरी बातें। बता क्या सलाह है तेरी ?

कुछ डरते डरते—कुछ सहम सहम—कुछ कपकपाते से स्वर में प्रीतो बोली किस बात की सलाह भइया जी ?

किन्तू कूजड़ा का क्रोध उबलने लगा— सब कुछ जानते हुए भी अनजान न बन लाडो। मुझे यह पाखण्ड कभी अच्छा नहीं सुहाता है। अपनी सब हालत मैंने तुझे बता दी। कुछ भी छिपा कर नहीं रखा है। अब दायें कान से सुन चाहे बायें कान से तेरा बोझ उठाने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। मुर्गी के जब धूप में पांव जलने लगते हैं तो वह अपने चूजों को परे तले ले लेती है। जब मेरे अपने ही प्राण संकट में पड़े हैं तो किसी का क्या करूं।

अब प्रीतो से कुछ भी छुपा नहीं रह गया। मन-ही-मन वह मानो अपने आप से पूछ रही थी तो बता अब मैं कहाँ जाऊं—किस ओर धकेल देना चाहता है मुझे ?

लगता था जैसे प्रीतो के मन की बात किन्तू कूजड़ा ने सुन ली। वह क्रोध की मात्रा को तनिक कम करते हुए बोला अगर कुछ दिनों के लिए सगरूर ही चली जाय तो क्या हर्ज है ?

ससुराल? मीतो को लगा जैसे उसे पर्वत की शिखा पर से किसी ने धक्का दे दिया हो। वह ससुराल जाय? अपने ननिहाल में? क्या वह अपनी माँ द्वारा सब कुछ सुन चुकी थी किस प्रकार उसकी माँ अपने मायके वालों के घर से सब के लिये निरादर लेकर निकल भागी थी।

बहुत यत्न किया मीतो ने कि उत्तर में कुछ न कुछ कहे। पर उसकी जबान तो जैसे मास की नहीं लकड़ी की बन चुकी थी और उसकी यह चुप्पी दित्तू कुँवड़ के क्रोध की आग पर तेल बनकर पड़ा। वह उठ खड़ा हुआ और जो कुछ भी उसके मुँह में आया बकते बकते घर से बाहर निकल गया। मीतो की सहमी-सहमी आँखें कुछ इस प्रकार से फटी हुई थी जैसे पुतलियों के स्थान पर किसी ने उनमें दो बंटे रख दिये हों।

६

कई दिन बीत गए कई रातें बीत गई और इन दिनों रातों में दो भारी पाटों के मध्य प्रीतो का मन पिसा चला जा रहा था। उसकी नींद प्राय समाप्त हो चुकी थी भूख का नाम नहीं। हर समय प्रीतो होती और होती प्रीतो की चिन्ता। साथ-साथ वह बड़ी तीव्रता से बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी कि अपना निर्णय सुना देने के बाद उसका पिता अब आगामी पग क्या उठाता है। प्रीतो सोचती—क्या उन्होंने अपना निश्चय बदल लिया है ? क्या उन्हें अपने फैसले पर पश्चाताप होने लगा है ? परन्तु इस बात का विश्वास भी तो उसे नहीं हो पा रहा था।

दोपहर का समय था। जीतो स्कूल गई हुई थी और प्रीतो आँगन में खाट बिछाये बैठी थी। आज उसका मन कुछ अधिक भारी था। घर वालों का बर्ताव उसके साथ अच्छा तो कभी भी नहीं रहा था। परन्तु विगत कुछ दिनों से तो उसे लगता जैसे अपने पिता और पिता की लाडली नाओं की नजरों में वह कोई प्रतनी विनाचनी बन गई है। एक का यदि मुँह उतरा हुआ है तो दूसरे ने मार्थे माथे पर रख ली हैं। उसे लगता कि घर की दीवारें भी उसे बाहर करने में उन लोगों का साथ दे रही हैं।

और यह आज की व्यग्रता और उदासी अकारण भी तो नहीं थी। सवेरे दुकान पर जाते हुए उसका पिता कुछ ऐसी बातें उसे कह गया था अथवा आदेश दे गया था कि जिन्हें सुनने के बाद उसके लिए इस घर का मन कुछ एक प्रकार से समाप्त ही हो गया।

समय-समय की बात होती है। एक समय मनुष्य बड़े से-बड़ा प्रहार भी सहन कर सकता है तो किसी और समय फूल की चोट भी उसके लिए वज्र-पात से कम नहीं होती। सवेरे दूकान पर जाते जाते किशू कुंजड़े ने कितनी मुलायमी से—कितने स्नेह-युक्त स्वर में उससे पूछा था— अच्छा बेटी फिर क्या सोचा तूने ?

तब प्रीतो को लगा जब उसके पिता का मद-भीना उच्चारण विकृत बन कर उस पर हँस रहा है। उसका हृदय दुखने लगा गया और जबान तालू से सट गई। उसकी दुरूह खामोशी से तनिक खीझकर किशू कुंजड़े ने जब फिर से अपने प्रश्न को दोहराया तो प्रीतो ने बलपूर्वक अपनी जबान को हिलने योग्य बनाते हुए टूटे-फूटे शब्दों में कहा था— पर भाई जी वहाँ कौन है मेरा [illegible] "

पूरी बात कहने की न उस समय प्रीतो में सामर्थ्य थी और कदाचित् न ही किशू कुंजड़े में सुनने का धीरज। वह एक दम भड़क-सा उठा— 'क्या कहा वहाँ कौन है तेरा ? अरे मामा है मामी है और क्या तुझे यमराज चाहिए ?'

उत्तर देने के लिए उस समय प्रीतो के पास बहुत कुछ था परन्तु कैसे वह इतना चौड़ा मुँह फाड़कर कह दे कि वहाँ से तो उसकी माँ जीने-मरने का नाता तोड़ कर निकल आई था।

'साँप सूँघ गया तुझे क्या ? मैं क्या भौंक रहा हूँ ?'

और जब प्रीतो टस से मस न हुई तो किशू कुंजड़ा केवल इट ऐंठन जस स्वर में यह कहते हुए घर से बाहर निकल गया—'जहन्नुम में जा।'

इस समय खाट पर लेटी-लेटी प्रीतो उसी 'जहन्नुम में जा' वाक्य को पाती कि उसकी [illegible] होंठों में गुनगुनाती जा रही थी— जहन्नुम में [illegible] जहन्नुम में जा [illegible]। और इसके साथ साथ उसके अन्दर में बैठी हुई मानो एक दूसरी प्रीतो कह रही थी—'जहन्नुम में नहीं गहरे कूप में।

कल्पना-ही-कल्पना द्वारा प्रीतो इस समय अपने को वहाँ खड़ी पा रही थी जहाँ पर रहट चल रहा था और मेड़ पर खड़-खड़ वह छलाँग लगाने के लिए सोच रही थी स्वयं अपने भीतर की प्रीतो से प्रश्नोत्तर कर रही थी—

कितनी देर लगेगी भला डूबने में ?

अरे यही पाँच-सात मिनट और क्या घण्टा लग जाएँगे ?

कितना कष्ट होगा ?

हतभागिनी ! कष्ट को रोती है अब क्या तू पालने में बैठी है ?

तो बस ठीक है। प्रतिदिन के कष्ट झेलने से तो यही अच्छा है कि एक ही बार कड़वा घूँट पीकर सदा की नींद सो जाऊं।

इसी प्रश्नोत्तरी के अन्तर्गत प्रीतो का ध्यान अनायास ही एक दूसरी ओर चला गया आँगन में कपड़े सुखाने के लिए एक रस्सी बँधी थी। एक चिड़िया थोड़ी-थोड़ी देर में आकर उस रस्सी पर बैठ जाती और अपनी चोंच द्वारा रस्सी में से एकाध रेशा निकाल कर उसे चोंच में दबाए उड़ जाती कितनी देर से चिड़िया इसी क्रिया में संलग्न थी।

चिड़िया का इस निरंतर क्रिया को देखते हुए प्रीतो की चेतना कुएं की ओर से हट कर किसी और ही ठिकाने पर केंद्रित हो गई—एक भवन निर्माण की ओर। नर और मादा चिड़ियों का जोड़ा अपने निरन्तर परिश्रम द्वारा एक घोंसला बना रहा है—न जाने कहाँ-कहाँ से घास के तिनके रस्सियों के रेशे इत्यादि जुटा-जुटा कर।

कल्पना ही कल्पना द्वारा प्रीतो क्या देखती है कि भवन निर्माण का काय सम्पन्न हो चुका है। अब भवन की फिनिशिंग चल रही है दूरदर्शी जोड़ा कदाचित् इस चिन्ता से कि उनकी आने वाली सन्तान की आँधी पानी से सुरक्षा होनी चाहिए और साथ ही उन्हें आराम भी मिलना चाहिए, और यह तभी हो सकता है जब घर को पूरे तौर से एयर कंडीशन बनाया जाये। अतः अब वह जोड़ा रेशों तिनकों के बजाय म

जाने कहाँ-कहाँ से अन्न आदि ला के नन्हें-नन्हें—बालक खाने के लिए चुगा ला रहा है।

चिड़िया को अपनी क्रिया में व्यस्त देखते हुए प्रीतो सोच रही थी कितने समझदार और कितने दूरदर्शी हैं यह नन्हें-नन्हें पक्षी।

इसी समय चोंच में एक लम्बा-सा रेशा दबाए चिड़िया उसके सामने से उड़ गई चूँ-चूँ-चूँ-चूँ करते हुए। प्रीतो को लगा जैसे यह नन्हा पक्षी अपनी भाषा में उसे कुछ खरी-खोटी सुना गया है— अरे मूर्ख लड़की! इधर देख मेरी ओर। तेरी मुट्ठी में आने योग्य शरीर है मेरा। पर मुझे मालूम है कि अपनी गृहस्थी कैसे बसाई जाती है और अपनी आने वाली सन्तान का भविष्य कैसे सुरक्षित किया जाता है और तू री कम्बख्त तू बाबा आदम की सन्तान होकर इतनी कायर बन गई जो तुझसे कुछ भी नहीं बन पाता है? धिक्कार है तुझे।

अपनी स्थूल भाषा द्वारा इस दृश्य को देखते हुए और पक्षी की इस फटकार को सुनते हुए प्रीतो की आँखें इस समय कुछ दूसरी ही प्रकार का दृश्य देखने लगीं। एक नन्हा-सा नीड़। जिसकी नन्हीं-सी खिड़की द्वारा बाहर को झाँकते हुए दो नन्हें-नन्हें पक्षी। चिड़िया का जोड़ा बारी-बारी से आता और अपनी चोंच में लाया हुआ एकाध दाना या रोटी का टुकड़ा जिनकी उनकी चोंच में डालकर फिर से उड़ जाता। अपने माता-पिता द्वारा लाए हुए इस आहार को पाकर दोनों नन्हें पक्षी अपने मुलायम पर फड़फड़ाते हुए और गर्दनें मोड़ कर बाहर को ताकते हुए अपनी प्रसन्नता और प्रतीक्षा को प्रकट कर रहे थे।

प्रीतो को लगा जैसे यह सब कुछ—वास्तविक भी है और भविष्य भी—मात्र उसी के लिए हो रहा है। चिड़िया घोंसला बच्चे आहार यह सब कुछ अन्ततोगत्वा प्रीतो के सामने घूमे चला जा रहा था और यह उसे बहुत ही अच्छा लग रहा था। परन्तु इसके अन्तर में एक टीस-सा एक अपवाद-सा पैदा होकर उसकी आनन्दमग्नता को बिखेर

देता।

पर यह तो जोडा है न। जोड़ा होने को ही तो यह सब करामात है। यदि जोड़ा न होकर चिड़िया अकेली ही होती तो? और इस तक या अपवाद के फलस्वरूप प्रीतो का मन गिरने-सा लग जाता मानो यह जो कुछ वह देख या कल्प रही है कुछ भी नहीं है—केवल भूल भुलैया—एकदम भ्रम।

चिड़िया फिर नहीं लौटा। इधर प्रीतो बराबर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी उसकी आँखें रस्सी के उसी भाग पर टिकी हुई थीं जहाँ से रेत निकाल निकाल कर चिड़िया ने उसे कुछ जर्जर कर दिया था।

क्या वह मुझसे डर गई? पर मैंने तो उसे हटाया या बरजा नहीं था। या सम्भव है कि उसने अपना काम समाप्त कर लिया हो। या हो सकता है कि बेचारी थक गई हो। शायद कल उसके जीवन साथी की बारी होगी यह काम करने की।

जीवन साथी यह छोटा सा शब्द कुछ इस प्रकार से प्रीतो के समूचे अस्तित्व पर छा गया कि प्रीतो इससे आगे कुछ नहीं सोच पाई—सोचना चाहते हुए भी नहीं। वह पूर्ववत ही रस्सी के उस जर्जर भाग पर आँखें गड़ाये हुए थी। उस लगता जैसे रस्सी का वह भाग रस्सा न रह कर कोई पारदर्शी शीशा बन गया हो जिसमें से उसे अपना निस्सहाय और अन्धकारमय भविष्य दिखाई दे रहा था। वह कुछ हताश-सी होकर खाट से उठ खड़ी हुई और भीतर जाकर फर्श पर बिछी हुई चटाई पर मुँह के बल लेट गई।

× × ×

रात को जब निक्कू कुनबा खाना खाने के बाद सोने की तयारी कर रहा था सहसा प्रीतो उसके सिर पर आ धमकी। भय संकोच या दुविधा जैसा कोई चिह्न इस समय उसके चेहरे पर [illegible]

रहा था। इससे पहले कि दित्तू कूंजड़ा उससे आने का कारण पूछता वह बोल उठी—

भाई जी, सगरूर की गाड़ी कितने बजे चलती है?

दित्तू कूंजड़े को ऐसा प्रश्न सुनने की आशा नहीं थी। वह तो अपने मन में कुछ और ही सोच रहा था—किसी दूसरे ढंग की तलाश में जिसके प्रयोग से वह इस सात अमावस की छाया से पीछा छुड़ा सके। आश्चर्यचकित होकर उसने प्रीतो की ओर ध्यान मोड़ा। साथ ही कुछ आशंकित नज़रों से देखा कि लड़की कहीं झूठ मूठ तो नहीं कह रही है? पर लड़की की मुख मुद्रा और साथ ही उसके वाक्य की दृढ़ता उसे कह रही थी कि प्रीतो झूठ मूठ नहीं कह रही है। अब उसके चेहरे पर वात्सल्य जैसा कुछ भाव झलक आया। वात्सल्य का स्वांग भरते हुए बोला— क्या कहा सगरूर जाने वाली गाड़ी? वह तो शायद दोपहर के अढ़ाई बजे चलती है क्यों?

यह क्या पूछ उसने कुछ ऐसे ढंग से कहा मानो प्रीतो की बात को समझ नहीं पाया हो। तभी प्रीतो बोली— तो मुझे कल उस गाड़ी में चढ़ा आना भइया जी।

पगली कहीं की— मानो दित्तू कूंजड़े को प्रीतो की यह बात बहुत ही बुरी लगी हो—प्रीतो का सगरूर भेजने की इच्छा न हो— भला इतनी भी क्या जल्दी है सगरूर जाने की तुझे? अगर तुझे सगरूर ही जाना है तो महीने-दो महीने बाद चली जाना।

नहीं भाई जी, प्रीतो साग्रह बोली—मुझे कल ही जाना है।

अरे हठपगली! इस कल ही जाना है। क्या वहाँ पर कोई ब्याह शादी है तेरे ननिहाल में?

नहीं भइया जी, मुझे जरूर जाना है।

फिर वही पागलपन की बातें। अरे मैंने जो कहा कि महीने-दो महीने ठहरकर चली जाना।

नहीं भाई जी मैं जरूर जा और बोलते-बोलते प्रीतो की आँखें छलछलाने लग गई।

अच्छा। दित्तू कूजड़े ने मानो हार मान ली हो— अगर तुझे जरूर ही जाना है तो फिर मैं तुझे रोकना नहीं चाहता। कल चढ़ा आऊंगा तुझे। अच्छा बेटी अब जाकर सो जा दिन भर काम करते करते थक गई होगी।

कितना पतक स्नेह प्रदर्शित कर रहा था दित्तू कूजड़ा! मानो प्रीतो की अनुपस्थिति में उसका जीना दूभर हो उठेगा।

प्रीतो मन ही-मन कह रही थी—काश यह! पतक रग वास्तविक होता—स्थाई होता।'

और उससे अगले दिन दित्तू कूजड़ा प्रीतो को सगस्र की गाडी में सवारी करके लौट आया। लौटते समय अपनी उदारता का प्रदर्शन करते हुए पांच रुपये का नोट अण्टी से खोलकर प्रीतो की मुट्ठी में खोस दिया।

ननिहाल की बड़ी महानता मानी जाती है—विशेषतः पंजाब में। तभी तो किसी रसिक ने 'नरसे' पे मां का चित्र इन शब्दों में चित्रित किया है—

नानकड़े घर जावांगा।
लड्डू-पेड़ा खावांगा।
मोटा होके आवांगा।

ननिहाल में जाऊंगा, वहां जाकर लड्डू पेड़ा खाऊंगा और खूब मोटा होकर लौटूंगा।

पंजाब की प्रथा के अनुसार यह बात आम पाई जाती है कि बड़े-बूढ़ों और औरतों के लिये नवासों का स्नेह 'पोतों' से भी बढ़चढ़ कर रहता है।

प्रीती होश संभालने के बाद पहली बार ननिहाल में जा रही थी। उसने कभी भी आज तक ननिहाल वालों का स्नेह ममत्व नहीं चखा था। उसके लिये तो नानी नाना अथवा मौसी-मौसा का प्रेम सुनी सुनाई बातें थीं। ननिहाल वालों के घर का चित्र उसकी आंखों में जो समाया हुआ था उसकी उपमा उस नीड़ से दी जा सकती है जिसमें से पंछी को, जन्म लेते ही निकालकर बाहर फेंक दिया गया हो।

कदाचित यही कारण था कि रेल का सफर अधिक लम्बा न होने पर भी प्रीती को सात समुद्र पार जाना जान पड़ा। गाड़ी में चढ़ने से लेकर उतरने तक वह धड़कते दिल और सहमी सहमी आंखों से उस अनदेखे अनजाने घर की कल्पना किये चली गई थी, जिस घर में आज उसे जाना था। कैसा होगा वह घर? किस प्रकार के होंगे वहाँ के लोग? न जाने वे लोग मुझसे सीधे मुँह से बात भी करेंगे या नहीं।

प्राय ऐसा होता है कि जितने लम्बे समय के बाद कोई निकट सम्बन्धी आपस म मिलते हैं उतना ही अधिक प्रेम स्नेह का रग उन पर चढता है। परन्तु प्रीतो इसका अपवाद थी। क्या वह नहीं जानती कि उसकी मा ने उसके लिए वहा कुछ भी नहीं रहने दिया था ? ननिहाल वालों द्वारा प्रेम-स्नेह पाना तो उसे नाम को भी अधिकार नहीं रह गया था ?

इसी प्रकार की आन्तरिक दुविधा म घिरी प्रीतो म उत गाडी से उतरी।

स्टेशन से उसके ननिहाल वालो का नगर दूर नहीं था और न ही प्रीतो के पास कोई गठरा था जिसे उठाकर चलना उसे दूभर जान पडता या सवारी की आवश्यकता होती। अत वह पदल ही चल दी।

चलते चलते उसका ध्यान अपने कपडे लत्ता की ओर—अपने हुलिया की ओर चला जाता और मन ही मन वह अपने पर खीझ उठती—कितनी फूहड़ है। इतना भी ध्यान न आया जो कपडा पर साबुन का टुकडा ही घिस लेती। वहा देखने वाले क्या कहेंगे कोई भिखारिन घुस आई है घर म।

प्रीतो को अपने मामू ईश्वरदास का नाम याद था और ममानी द्रोपदी का भी। जिनका जिक्र कभी कभार उसकी माँ किया करती थी। परन्तु मामू के लडके-लडकियो का क्या नाम है ? यह उसे पता नहीं था।

नगर म प्रविष्ट होने के बाद पूछते पूछते वह एक बड़ी-सी हवेली के सामने जाकर रुकी।

मकान का फाटक यदि अधिक नहीं तो इतना तो था ही कि उसमें प्रविष्ट होने के लिये प्रीतो को चार दीवारी का अच्छा खासा चक्कर काटना पडा। तब कहीं जाकर वह ड्योढ़ी तक पहुच पाई। पर भीतर घुसने का साहस कहाँ से लाती। वह दरवाजे के सामने कभी उधर से

उधर तो कभी उधर से इधर मुड़ते हुए अपने मामू का अनदेखा हुलिया विचारने लगी। इसके साथ ही वह बड़े लोगों जैसे अदब तहजीब के कुछ शब्द और वाक्य भी बटोरने लगी। जिनकी सहायता से वह अपने इतने बड़े सम्बन्धियों से भेंट कर पाये। कहीं ऐसा न हो कि उसे देख कर ये लोग नाक भौं सिकोड़ने लग जायें।

तभी भीतर से एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति निकला और सशंकित नजरों से उसकी ओर ताकते हुए फटकार जैसे स्वर में बोला—

"अरे ओ छोकरी! क्यों दरवाजे पर ताना बाना बुन रही है। चलती बन यहाँ से।"

प्रीतो पैरों से लेकर चोटी तक थर्रा उठी। उसके पाँव वहीं जम गये। मानो किसी ने उन दोनों में एक एक कील ठोंक दी हो। वह राहट में तुतलाते हुए बोली—

"जी मैं ... मैं अपने ... अपने मामू जी से ... मिलने ...।"

"किस से मिलने आई है? क्या नाम है तेरे मामू का? किस काम पर नौकर है वह?"

"नौकर नहीं जी। वह तो ... इस घर के स्वामी हैं—लाला ईश्वरदास जी।"

"क्या कहा—क्या कहा?" कहते हुए वह व्यक्ति दो चार कदम प्रीतो की ओर बढ़ आया—"होश ठिकाने हैं तेरे या नहीं! क्या बक-वास कर रही है?"

प्रीतो का रहा सहा साहस भी समाप्त हो गया। इतना तो उसे विश्वास हुआ कि यह आदमी इसी घर का नौकर है। पर नौकर होते हुए भी वह अपने स्वामी की भांजी को इस तरह दुत्कार रहा है। वह सोचने लगी "मैं भी कितनी कायर हूँ जो एक तुच्छ नौकर के रौब में आ गई। आखिर लाला ईश्वरदास की भानजी हूँ कोई नत्थू खैरा तो नहीं हूँ।" और इन विचारों के आते ही उसका साहस फिर से

लौट आने लगा अत अपने सम्बोधन को तुम मे बदलते हुए वह तनिक रोब से बोली— तुम जाकर उन्हें खबर कर दो कि उनकी भानजी प्रीतम कुमारी आई है।

अब वह व्यक्ति कुछ एस ढग से मुस्कराया मानो प्रीतो को कह रहा हो अरे वाह रे बडी नावबजादी—यह मुह और मसूर की दाल।

अपने प्रति इस मूक व्यग ने प्रीतो का कलेजा मानो मथ डाला। उसम एक उत्तेजना सी पदा हो आइ। उसका मन हुआ कि झपटकर इस व्यक्ति का मुह नोच ले।

मुह नोचने तक की नौबत तो नही आ पाई परन्तु ज्बान की छुरी द्वारा प्रीतो ने उस व्यक्ति पर प्रहार कर ही डाला—

आखें फाड फाड कर क्या ताक रहा है। सीधे से जाकर अपने मालिक से कह दे जो मैंने तुझे बताया है।

उस व्यक्ति को लगा ये आगन्तुका यदि पूरे तौर से पागल नही तो भी इसके दिमाग का एकाध पुर्जा ढीला अवश्य है। अत क्रोध के स्थान पर हसी मजाक म वह बोला— अच्छा भाई तू उनकी भानजी सही—भानजी सही—पर सध्या समय घुटाला नही किया करते। जा भगवान् तेरा भला करे।

मानो धधकती आग पर एक बोतल तेल पड गया—मैं कहती हू जबर-जबर जबान मत चलाये जा नही तो अपने मामू जी स कहकर ऐसा दिखलाऊगी कि याद रखेगा।

वह व्यक्ति फिर स क्रुद्ध हो उठा— चुप रह चुडैल नही तो चोटी पकडकर उस सामने वाले बाजार म फेंक दूगा समझी ?

अब प्रीतो ने भी इट का जवाब पत्थर उठाया—'चल रे चल। तेरी इतनी मजाल यो लाला चन्दरदास की भानजी के मुह लगता है! दाढी नोच लूगी मार फिर ऐसी बात मुह स निकाली।

दफा हो कतिया।

'कतिया तेरी मा तेरी बहिन।

अब दोनों ओर से गालियों की बौछार शुरू हो गई। जिसने देखते ही-देखते हगामे का रूप धारण कर लिया। राह चलते कुछ स्त्री, पुरुष एकत्र हो गये। लड़ाई यदि दो पुरुषों या दो स्त्रियों में होती तो बात साधारण थी। पर यहाँ तो इसके विपरीत था, जिसके देखने वालों के लिए एक रुचिकर तमाशा सा बन गया।

तभी किसी की आवाज सुनाई दी— अरे जाने दे कालासिंह। क्यों बेचारी पगली को तग कर रहा है। गरीब पर दया करनी चाहिए।

उत्तरोत्तर गोलियों का दुगाड़ा बजा, प्रीतो की दोनों कनपटियों पर—'पगली और गरीब शब्दों द्वारा। नगर के साहूकार की सगी भानजी और मामू के दरवाजे पर लोग उसका अनादर कर। प्रीतो भड़ककर सब किसी के गले का हार ही तो बन गई। जो भी उसके मुँह में आया बकते-बकते चली गई।

सहसा एक सेठ टाइप का व्यक्ति भीतर से निकला। भारी भरकम शरीर गेहुँआँ रग, फूल हुआ चेहरा और साधारण से कुछ बड़ा आँखें। दाढ़ी मूछ साफ छोड माथे की नसें उभरी हुई और निचला होंठ कुछ लटका हुआ। उसकी रेशमी कमीज तथा धोती मानो मुह से बोल कर कह रही थी कि यही गृहस्वामी। उसे आते देखकर सबकी जबानों में जस ताले पड गय—सब किसी ने आदर से रास्ता छोड़ दिया।

प्रीतो चाहे आपे से बाहर हो चुकी थी। जस ही आगन्तुक पर उसकी नजर पड़ी कि सहसा दूसरे लोगों की तरह वह भी गुमसुम हो गई।

प्रीतो उस व्यक्ति को नख से शिख तक जिज्ञासा मिश्रित नजरों से निहार रही थी। उसके नाक-नक्श प्रीतो को अज्ञात जाने-पहचाने मालूम पड़ रहे थे, जिनकी तुलना वह अपनी माँ से कर रही थी और दोनों में उसे पर्याप्त समानता दिखाई दे रही थी। अब कुछ भी सदेह नहीं

क्या छोटे सब कोई न जाने क्या क्या फुसर फुसर किये जा रहे थे। धान धान भी छटती जा रही थी।

मुह लटकाये लाला ईश्वरदास हवेली में प्रविष्ट हुए और उसके पीछे पीछे प्रीतो भी। अब किसी नौकर को साहस नहा हो रहा था रहा था प्रीतो की ओर आंख उठाकर ताकने का।

रात होते होते जगल की आग की तरह नगर भर में यह खबर फल गई उस छिनार करमो की लड़की आ गई।

सहमी हिरणी की तरह—जिसके दाएं बाएँ आगे-पीछे शिकारी उपस्थित हों—प्रीतो हवेली में प्रविष्ट हुई। साहस का जो अंश उसके अंतर में शेष रह गया था वह भी छिन्न हो गया जब ड्योढ़ी पार करके वह आँगन में पहुँची जहाँ सामने वाले बरामदे में भारी भरकम शरीर की एक स्त्री दो तकियों का सहारा लगाये पलंग पर अधलेटी हालत में पड़ी इस तरह हाँफ रही थी जैसे अभी अभी उसने सिर पर से अनाज मन का बोझ उतारा हो।

प्रीतो की नजर उस रमणी पर पड़ते ही इस तरह लौट आई जैसे दीवार से टकराकर रबड़ की गेंद—विशेषतया रमणी के माथे पर बल और आँखों में क्रोध की लालिमा देख कर।

यही है मेरी ममाइन प्रीतो के भीतर से कोई पुकार उठा। अत प्रीतो का माथा उसकी ओर झुका और दोनों हाथ एक दूसरे से सट गये। प्रयत्न करने पर भी मुह से कुछ बोल नहीं पाई। मानो नमस्ते शब्द बोलने से पहले ही किसी ने उसकी जबान को पकड़ लिया हो।

आरम्भ में इस दुर्ग जैसे मकान को देखकर जो प्रभाव प्रीतो पर पड़ा था और एक गर्व की-सी जो लहर उसके हृदय में उठी थी इस समय उसका कहीं नाम तक नहीं था। वह अपनी गहराइयों में स्वय ही डूबती चली जा रही थी और यह सोचते हुए काश! मैं यहाँ न आई होती।

मामू जी किस ओर अदृश्य हो गये। सोचते हुए वह इधर-उधर देखने लगी। पर कहीं भी मामू महोदय उसे दिखाई नहीं दिये यदि

कुछ दिखाई दिया तो खूब सजे सजाये कमरे। किसी का द्वार खुला, किसी का अधखुला और किसी का बन्द। उसके नथनों में कुछ उसी प्रकार की गन्ध आ रही थी जैसे बड़े घरों की रसोई में से आया करती है—पराठे सिकने की, दाल सब्जी बघारे जाने की और न जाने किस किस की। इस बात को सूंघते ही उसकी भूख चमक गई।

मेले में जैसे बकरी का मेमना घिर गया हो वह आश्चर्यचकित आँखों से कभी इधर ताकती कभी उधर। कभी उसके कदम रुक जाते कभी गतिमान हो जाते। शायद वह इस प्रतीक्षा में थी कि घर का कोई व्यक्ति नहीं तो घर का कोई नौकर ही उसे बैठने को कहेगा, उसकी कुशल क्षेम पूछेगा, उसे जलपान के लिए कहेगा।

अन्ततः उसकी प्रतीक्षा समाप्त हुई जब एक अधेड़ उम्र की औरत—जो पहनावे से घर की दासी जान पड़ती थी—उसके सामने आकर रुकी और हाथ से उसे अपने पीछे आने का संकेत करते हुए आगे आगे चली। मानो गूंगी-बहरी हो।

हिरणी अब शिकारियों के घर से बाहर थी। परन्तु चारदीवारी के विशाल पिंजरे में बन्द। मन ही मन प्रीती अपने पर विषवमन करते हुए सोच रही थी—अपने से पूछ रही थी, क्या री कलमुँही ननिहाल वालों के स्नेह से मन भरा था नहीं?

अब प्रीती अपने को एक कमरे में पा रही थी—बिना बिस्तर के एक खाट पर। कमरे में खाट के अतिरिक्त यदि कुछ था तो एक कोने में मैले कपड़ों का ढेर, दूसरे कोने में पालिश किए हुए जूतों व चप्पलों की दो पंक्तियाँ और बस। उसके मन में बेचैनी होने लगी। वह उकता ही नहीं गई बल्कि घबरा भी गई यह सब देखते-देखते। उसका मन हुआ कि यहाँ से निकल भागे और फिर कभी जाने-अनजाने इस ओर ताके तक नहीं। समय का एक एक मिनट उसके कष्ट को उत्तरोत्तर बढ़ाता चला जा रहा था। वह सोच रही थी न जाने अब आगे क्या होने वाला है।

उसकी साँस एम चल रही थी माना गर बीच की "यास नाड़ी सकुचित हुए जा रही हो। किसी भीतरी दबाव के कारण उम अपनी आँखें सिम टती-सा जान पड रही थीं। उस अपन शरार म स कुछ इस प्रकार का उष्णता निकलती जान पड रहा थी जस उम बुखार आ रहा हो।

तभी उसन दखा वही औरत एक हाथ म पीतल की थाली थामे और दूसरे म पाना का गिलास लिए उसक सामन उपस्थित है और फिर वह थाली और गिलास उसके आग रखत हुए तरकश लहज म बाली 'ल खान'।

प्रीतो न हाथ धोकर गिलास फ्श पर रख दिया और थाली अपन निकट सरका ली। उसन तो सुन रखा था कि बड लोगा की रसोइ म छत्तीस प्रकार क भोजन तयार हुआ करत हैं पर थाला म रखी हुइ दो रोटिया और कटोरा म भरी हुइ दाल की ओर ताकते हुए सोच रही थी— क्या इसा को कहत हैं छत्तीस प्रकार क भोजन ?

भूख लगी हुई थी उस। और भूख लगन पर सूखे टुकडा म से भी खान वाल को छत्तीस प्रकार क भोजना का-सा स्वाद मिलता है। प्रीतो खाती जा रहा था और अपने दुभाग्य को कोसती जा रही थी।

नौकरानी जब लौटने लगी तो प्रीतो का इच्छा हुई कि उससे कुछ पूछे कुछ सुन। परन्तु वह जबान खोलना कि पहल ही माई नौकरी न्यारह हो गई।

खात हुए प्रीतो कुछ एसा अनुभव कर रहा था मानों अनाज क स्थान पर वह विष का गोलियाँ नील रही हो। प्रत्यक ग्रास उसके स्व-सम्मान का घायल किय जा रहा था। क्या वह यहाँ पर अनाज की प्रतीक इन रोटिया को निगलन क लिए ही आई है ? इतना अपमान ता उसका सौतेन पिता द्वारा—सौतेना बहिन द्वारा भा कभा नहा हुआ था। इतना बुरा बर्ताव ता उसका स्कूल की लडकियां न भी कभी नहा किया था। और यहाँ अपन सग मामू क घर म उसका यह दुगति! भले ही उसकी माँ ने इन लोगा की मान-मर्यादा को ताक म रखकर पग्ग डाला। पर

उसका तो इसमे दोष नही था फिर यह घोड की बला तबले पर क्या ? आखिर तो वह इस घर की नवासी है। मन स न सहा ऊपरी तौर से कोई तो सीध मुह स उसक साथ बात करता। उसका दुख सुख पूछता।

सहसा एव लम्ब तडगे क्द का व्यक्ति—जो महरा या बावर्ची जान पडता था—कमरे म प्रविष्ट हुआ और आते ही प्रीतो स बोला—तुझे बुलाते हैं।

कौन बुलाते हैं बिना इस बात की ओर ध्यान दिए प्रीतो उस व्यक्ति के पाछ हो ली। तत्पश्चात उसन अपने को एक सजे कमरे म पाया। उसका डिगा हुआ साहस फिर स खडा होन लगा। उसकी भर चकी आशा फिर स स्पदित होने लगा। उसे विश्वास हो गया कि मामू जी ने उस बुलावा भेजा होगा। परन्तु उसकी आशा निराशा मे बदल गई और उसक साहस के पाँव फिर स डगमगाने लगे जब थोडी दर बाद वही भारी भरकम शरीर वाली स्त्री कमर पर दोनो हाथ रखे कुछ कठिनाई स पग उठाते हुए कमरे म आ पहुची और आते ही आराम कुर्सी पर फल गई।

प्रीतो उसके सामन खडी हो गई तब रमणी ने उस सामने वाली कुर्सी पर बठन का सकेत किया। और आदश का पालन करते हुए प्रीतो बठ गई।

जस अदालत का कोई जज किसी अभियुक्त स जिरह करता है कुछ उसी तरह म प्रीतो की आर घूरत हुए स्त्री न उसे पूछा— करमो की लडकी है तू ?

उत्तर म तुतलात हुए प्रीतो जी जी मैं ही।

'सत्यानाश' भाभी न दायें हाथ स हल्का-सा प्रहार अपन माथे पर करते हुए कहा— वह जाता है अभी तक ? हमन तो सुना था कि कभी की मर गई है।

प्रीतो क कलेज म जसे किसी ने भाला मार दिया। उसकी जवान खुलत-खुलते रुक गई। उसका माथा झुक गया। तभी उसने और सुना—

तो कहाँ-कहा भक मारती रही वह अब तक ? हम लोगों ने तो सुना था कि वह किसी चौबारे म बैठ कर पैसा कमाने लगी है। बेडा गरक हो कुल कलंकिना का उसने हम कहीं का न छोड़ा।

प्रीतो क तन मन पर आग की बौछार हुय जा रही थी। उसके भीतर म कुछ हिंसा के भाव पैदा होने लगे। उसका मन हुआ कि इस हृ‍थनी का गला पकड कर इतनी जोर स दबावे कि आँखें बाहर निकल आयें। पर प्रीतो अभी पागलपन की हालत तक शायद नहीं पहुंची थी। अत वह बलपूर्वक अपने को संयत करने का प्रयास करने लगी।

इधर भाभी साहिबा एक ही जबान स सलवातें सुनाए चली जा रही थी प्रीतो की माँ को। परन्तु प्रीतो को भावावेश म कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।

थोड़ी देर म जब प्रीतो अपने को संतुलित करने म असमर्थ हुई तो उस सुनाई दिया ' जिस आदमी को देवी-देवताओं का पाप लग जाए—जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाए उसका क्या इलाज। इतनी बड़ी दुनिया बसती है—बडा बड़ा पर मुसीबतें आती हैं। रानियों महारानियों के माथ का सिंदूर पुछ जाता है। पर ऐसी अनहोनी बात तो कभी किसी के साथ नहीं हुई होगी जो हम अभागना के साथ हुई। भला इस घर म किस बात की कमी थी अगर अपने भ्रम भय को लेकर यहां बनी रहती। चार दिन भी न काट सकी और मुंह काला करके निकल भागी।

उधर पूरे स्पीड म मामी की जबान चल रही थी, इधर प्रीतो का शरीर ठण्डा होता जा रहा था। मिट्टी के लौंदे की तरह वह अचल बनी सहन कर रही थी विष म सने हुए इन वाक्यों को। परन्तु मात्र उनका सुन जाना ही तो पर्याप्त नहीं था जबकि यहाँ उसे बुलाया गया था उसकी माँ के बारे म पिछली आली बात सुनने के लिए।

प्रीतो चाहे इस समय गले तक विषाद और कष्ट म भरी पड़ी थी—कुछ भी बोलने की इच्छा नहीं हो रही थी। परन्तु सभ्यता के नाते कुछ

तो उसे कहना ही होगा। अन उसने यथाशक्ति अपनी मा का संक्षिप्त जीवनी फिर उसकी मृत्यु ‑ सम्बन्ध म सुनाना आरम्भ किया।

सुना चकने क पश्चात प्रीतो को ज्ञान पडा जसे उसकी मामी के वताव म अन्तर लचक आन लगी है। विपरीत जब उसन सुना—

अच्छा जो हो गया सो गया। मर गई यह भी भगवान ने कृपा ही की जो धरती माता का बोझ कुछ तो हलका हुआ। ऐसी दुराचारिणियो का मरना ही अच्छा। इसमे तुझ बेचारी का क्या दोष। पर बीबी रानी एक मछली मर कर सारा पानी गदा कर देती है। तू चाहे कितनी ही अच्छी और दूध की धुली हो पर कलक का जो टीका तेरी माँ न तेरे और हमारे माथ पर लगाया है वह तो सात जन्म म भी धुलने का नही। किसी की जबान थोडे ही पकडी जाती है। सब कोई यही कहेंग न कि यह लडकी उसी कालनिनी की है। टूटे हुए बतन को टाँका लग जान से पानी टपकना तो बन्द हो जाता है पर टाके का निशान तो कभी नही मिटता है।

प्रीतो भीतर ही भीतर आगबबूला हो रही थी। कुछ न कुछ कर गुजरने की उसके अन्तर म उकसाहट पैदा होती जा रही थी। परन्तु उसकी चेतना अभी तक विलुप्त नही हुई थी। और चेतना का तकाजा था कि दाना तले जबान दबाये रहे।

एक लम्बी सांस भरते हुए मामी कह रही थी— शास्तर मे लिखा है कि दुश्मन भी अगर चलकर दरवाजे पर आ जाय तो उसे धक्का देना पाप है। अब जो तू यहा आ ही गई है तो कैसे तुझे घर से बाहर धकेल दूँ। पर सच्ची बात पर नाराज मत होना आत्मा की शान्ति न तालो म मिलती है न करोडो म। सो अभी कुछ दिन तो तू यहाँ रह ले फिर माम् को कहकर तेरे लिए वहा दूर देहात म कोई काम धाम ढूंढ निकालेंगे।

सुनकर घबरा ही तो उठी प्रीतो। पर मन की आग को मन ही में दबाकर रह गई। न दबाती तो और करती भी क्या? जहाँ पर ताराबर का तान बीसों सो चलता हो वहाँ इसके बिना और हो भी क्या सकता है।

६

आज कुछ कल कुछ, परसों कुछ। गत दिन प्रीतो ने अपने को उस अपरिचित तथा दुस्सह वातावरण से किसी सीमा तक समझौता कर ही लिया। परन्तु इसका यह भाव नहीं कि ननिहाल में रहकर वह सन्तुष्ट या सुखी हो गई हो। सन्तुष्ट हो चाहे न हो—सुख मिले न मिले प्रकृति ने इसका स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि किसी भी स्थिति से वह समझौता कर लेती है।

वातावरण प्रीतो के लिए डुबाने और गला घोटने वाला था। पर इस प्रकार का वातावरण तो यह भाग्य विधाता द्वारा ही माथे में लिखवा कर जन्मी थी—अनुकूल वातावरण उसे मिला ही कब था।

बड़े घराने में किसी छोटी हैसियत के सम्बन्धी से जैसा बर्ताव किया जाता है वैसा भी यदि प्रीतो के साथ किया जाता तो शायद इसे वह अपना सौभाग्य ही मान लेती। आग में जल रहे व्यक्ति को यदि कोई आग में से निकालकर धुएं में ही बिठाल दे तो वह इसे अपना सौभाग्य ही समझेगा। पर यहाँ तो तन्दूर में से निकाल कर भाड़ में झोंके जाने जैसी स्थिति थी प्रीतो की। अब वह करे तो क्या करे—जाए तो कहाँ जाए।

लोक दिखाने के लिए अथवा अपने भाईचारे के दायित्व को निभाने के लिए या यों ही समधियों की लड़की पर दया मया करके घर वालों को इतना तो करना ही पड़ा कि प्रीतो के लिए हवेली का एक छोटा-सा कमरा खाली कर दिया गया, और वहां पर दो चपातियाँ भोजन की व्यवस्था भी कर दी गई। यों मन से कोई भी नहीं चाहता था कि

तो उसे कहना ही होगा। अत उसने यथाशक्ति अपनी माँ की संक्षिप्त जीवनी फिर उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में सुनाना आरम्भ किया।

सुना चुकने के पश्चात प्रीतो को भान पड़ा जैसे उसका मामी के बर्ताव में अन्तर निश्चय आ गया है। विशेषत जब उसने सुना—

अच्छा जो हो गया सो हो गया। मर गई यह भी भगवान ने कृपा ही की जो धरती माता का बोझ कुछ तो हलका हुआ। ऐसी दुराचारिणियों का मरना ही अच्छा। इसमें तुझ बेचारी का क्या दोष। पर बोबी रानी एक मछली मर कर सारा पानी गन्दा कर देती है। तू चाहे जितनी ही अच्छी और दूध की धुली हो पर कलंक का जो टीका तेरी माँ ने तेरे और हमारे माथे पर लगाया है वह तो सात जन्म में भी धुलने का नहीं। किसी की जबान थोड़े ही पकड़ी जाती है। सब कोई यही कहेंगे न कि यह लड़की उसी चाण्डालिनी की है। टूटे हुए बर्तन को टाँका लग जाने से पानी टपकना तो बन्द हो जाता है पर टाँके का निशान तो कभी नहीं मिटता है।

प्रीतो भीतर ही भीतर आगबबूला हो रही थी। कुछ-न-कुछ कर गुजरने की उसके अन्तर में उकसाहट पैदा होती जा रही थी। परन्तु उसका चेतना अभी तक विलुप्त नहीं हुई थी। और चेतना का तकाजा था कि दाँतो तले जबान दबाये रहे।

एक लम्बी साँस भरते हुए मामी कह रही थी— शास्त्र में लिखा है कि दुश्मन भी अगर चलकर दरवाजे पर आ जाये तो उसे धक्का देना पाप है। अब जब तू यहाँ आ ही गई है तो कैसे तुझे घर से बाहर धकेल दूँ। पर सच्ची बात पर नाराज मत होना आत्मा की शान्ति न गाँवों में मिलती है न करोड़ों में। सो अभी कुछ दिन तो तू यहाँ टिकी रह, बाद में तेरे मामू को कहकर तेरे लिए कहीं दूर दराज में कोई काम धाम ढूंढ निकालेंगे।

सुनकर धधक ही तो उठी प्रीतो। पर मन की आग को मन ही में दबाकर रह गई। न दबाती तो और करती भी क्या? जहाँ पर तलाबर का सान चौसों सो चलता हो वहाँ इसके बिना और हो भी क्या सकता है।

आज कुछ कल कुछ, परसों कुछ । धीरे धीरे प्रीतो ने अपने को उस अपरिचित तथा रूखे वातावरण से किसी सीमा तक समझौता कर ही लिया । परन्तु इसका यह भाव नहीं कि ननिहाल में रहकर वह सन्तुष्ट या सुखी हो गई हो । सन्तुष्ट हो चाहे न हो—सुख मिले न मिले प्रकृति ने स्त्री का स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि किसी भी स्थिति से वह समझौता कर लेती है ।

वातावरण प्रीतो के लिए उबाने और गला घोटने वाला था । पर इस प्रकार का वातावरण तो वह भाग्य विधाता द्वारा ही माथे में लिखवा कर जन्मी थी—अनुकूल वातावरण उसे मिला ही कब था ।

बड़े घराने में किसी छोटी हैसियत के सम्बन्धी से जैसा बर्ताव किया जाता है वैसा भी यदि प्रीतो के साथ किया जाता तो शायद इसे वह अपना सौभाग्य ही मान लेती । आग में जल रहे व्यक्ति को यदि कोई आग में से निकालकर कुएँ में ही धकेल दे तो वह इसे अपना सौभाग्य ही समझेगा । पर यहाँ तो तन्दूर में से निकाल कर भाड़ में झोंके जाने जैसी स्थिति थी प्रीतो की । अब वह करे तो क्या करे—जाए तो कहाँ जाए ।

लोक दिखाने के लिए अथवा अपने भाईचार के दायित्व को निभाने के लिए या यों ही सम्बन्धि की लड़की पर दया माया करके घर वालों को इतना तो करना ही पड़ा कि प्रीतो के लिए हवेली का एक छोटा-सा कमरा खाली कर दिया गया, और वहीं पर दो चपातियाँ भेजने की व्यवस्था भी कर दी गई । यों मन से कोई भी नहीं चाहता था कि

प्रीतो की परछाइ भी घर पर पड़। सिर पर आ पड़ी मुसीबत को तो उह झेलना ही था यदि उस घर से निकाल बाहर करते तो इसके फल स्वरूप उह एक बार फिर जग हसाई का शिकार होना पड़ता।

प्रीतो को आश्रय मिल गया—प्रीतो ने अन्न वस्त्र की चिन्ता से मुक्ति पा ली। वह अपनी नाद सोय? अपना सानी जग कोई उसे चिताने वाला नहा था। यहा कामना नकर तो वह यहाँ आई था। उसने सोचा चाहे किसी भा हालत म उस रहना प। वह यथा समय अपने परो पर खड होने का प्रयत्न करेगी। तब भा उसम बन पड़गा पढ़ाई का क्रम जारी रखते हुए अपने को किसी नौकरी के योग्य बनायेगी उस यदि थोड़ा सा भा कहीं पाँव टिकाने का स्थान मिल गया तो वह इस घर को त्याग देगी। परन्तु शारीरिक स्वतन्त्रता हा ता सब कुछ नहीं है। हाथ पाँव हम तभी हिला सकते हैं जब हमारी मानसिक हालत ठीक हो। प्रीतो मन ही मन बहुतेरी बातें सोचती रहती। कल्पना के भवन उसारती गिराती रहती। परन्तु कार्य रूप म उससे कुछ भी नहीं हो पाता। न तो पढ़ने लिखने म उसका मन टिकता न ही कुछ और करने धरने म। कारण उसके प्रति घर वालो की उपेक्षा और बेरुखी दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही था। घर का कोई भी व्यक्ति उसके साथ सीधे मुह बात करने का इच्छुक नहा था।

कभी कभा जब उसका मन अधिक ऊब जाता तो वह सोचने लगती—

इस घर की अपेक्षा तो वही घर अच्छा था चाहे वहाँ मुझे पिता द्वारा हर समय दुत्कारा जाता था बहन द्वारा मुह चिढ़ाया जाता था। फिर भी वहाँ मुझे सब कुछ अपना जान पड़ता था और उसकी तुलना म यहाँ पर न तो मुझे डाँट फटकार दी जाती और न ही प्रगट तौर पर कोई मुह चिढ़ाता है। फिर भी वहाँ की तुलना म यहाँ का सब कुछ बेगाना है अपरिचित है और असगत है।

इस घर म सब से बढ़कर उसे जिस व्यक्ति पर आशा थी—

अपने मामू पर वह तो पहले दिन के बाद उसके साथ जबान साझा करने तक का भी रवादार नहीं रहा था। सिवाय इसके कि जब कभी भूले चूके से दोनों का साक्षात हो जाता तो वे महाशय एक नजर उसकी ओर ताक भर लेते और बस। बाकी रही मामी वह तो मानो प्रीतो की परछाइं से भी डरने लगी थी।

मनुष्य के स्थान पर यदि प्रीतो पशु होती तो कदाचित इतना पाकर ही धन्य हो उठती पशु पक्षी को खाने को चाहिए या सिर छिपाने को। परन्तु प्रीतो तो मानव श्रेणी में थी—जिसे आम तौर पर सामाजिक जानवर कहा जाता है। इस जानवर को तो पेट भरने और तन ढांपने के अतिरिक्त और भी कितना ही कुछ चाहिए—दिल बहलाने के लिए कोई सगी साथी दुख सुख बांटने के लिए कोई मन का मीत इत्यादि। परंतु यहाँ प्रीतो के पास ऐसा कुछ भी नहीं था। तो क्या उसे सामाजिक जानवर न मान कर 'दो पाया पशु ही मानना होगा?

प्रीतो के मामू की कई सन्तानें थी लड़के भी और लड़कियां भी। पर वे सब तो प्रीतो को ऐसे निहारा करते मानो हुमा में कोई कौवा आकर मिल गई हो। सबसे बड़ी कठिनाई उसके लिए यह पैदा हो गई कि मामी द्रोपदी का कमरा उसके कमरे से निकट पड़ता था। जहाँ एक बड़े से पलंग पर दो तीन तकिया को ढमना लगाये मामी साहिबा पड़ी रहती और पड पड कभी एक पर बरसती कभी दूसरे पर विषवमन करती— अरे छोकरे तेरा नाश हो तूने कमरे की सफाई करते हुए फर्श पर गीले पाँव रख दिए अरी ओ लौण्डिया! इधर आ तो जरा करूँ तेरे हाथ पीले।'

द्रोपदी ने पूर्वजन्म में न जाने कौन कर्म किये थे जो एक सौ एक बीमारियाँ भाग्य विधाता ने उसे प्रदान कर रखी थी। और बीमारियों की इस लम्बी सूची का दीपक था 'दिल का दौरा। जब यह दौरे पड़ने शुरू होते तो उत्तरोत्तर बढ़ दिनों तक बने रहते। इनकी समाप्ति

होते ही दूसरी कई छोटी मोटी बीमारियाँ उस पर हल्ला बोल दती। सिर म चक्कर आ रहे हैं आँखो म जलन हुए जाती है पेट म गस भर रही है आँतें फूली जा रही हैं और न जाने क्या-क्या।

इधर कुछ दिनो से द्रोपदी को अधिक लम्बे तथा विस्मयी दौरे पडने लगे थ। दिनके सम्बन्ध म उसे विश्वास हो गया था कि जिस दिन स प्रीतो का पाव इस घर म पडा है उसी दिन स उसको यह बीमारी बढने लग गई है। द्रोपदी का ही नहीं घर के दूसर लोगों का भी यही ख्याल था। सब कोई उस लडकी के बारे म अनोखी से अनोखी टीका टिप्पणी करते लगे—

दुराचारिणी माँ की सन्तान अच्छी कैसे हो सकती है खून तो उसी बदचलन औरत का है न कुलक्षणा सवेरे सवेरे जिसके माथे लग जाय दिन भर उसे खाना तक नसीब नहीं होगा

एक ओर यदि घर वालों को गृह स्वामिनी की रोग वृद्धि ने चिंतित कर रखा था तो दूसरी ओर सब कोई सोचते— आखिर इस कलमुही को किस ढग से दफा किया जाय ?

कमरा निकट होने के कारण प्रीतो को हर समय मामी का दहाडें सुनाई दिया करती। जहा वह अपने नौकरों और बेटों बेटियों को पानी पी पीकर कोसती रहती वहा बीच बीच म जब प्रीतो का उल्लेख आ जाता तो प्रीतो सुना करती— हे भगवान! दुश्मन दूसरी को भी ऐसा समय न दिखाना जो उस नकटी न हम दिखाया पुराने घाव अभी भरे नहीं थ कि उन पर नमक छिडकने को यह आ मरी भूली बिसरी बातो को लोगबाग फिर से ले बैठे हैं हम तो यहा मुह दिखाने लायक नहीं छोडा है इन दोनों ने एक पैदा होन ह तो घर का नाम रोशन करते हैं एक पैदा होकर खानदान की नाक कटकर बाजार म रख देन हैं।

यह सब सुना करती प्रीतो और सुन-सुन कर उसके अन्तर मे उफान स आने लग जाते। मामी पर उसे इतना रंज नहीं था जितना

अपने मामू पर। वह सोचता—"इस औरत से तो मेरी इज्जत-मान की कोई कीमत नहीं है। पर जिसके साथ यह साँझ है क्या उसका भी खून सफेद हो गया जो सब कुछ देखते हुए भी कभी टस-से मस नहीं होता है?"

अब प्रीतो का विश्वास हुए जा रहा था कि इस घर में अधिक दिनों तक उसका टिकना असम्भव है। परन्तु असम्भव से भी असम्भव बात तो उसके लिए यह थी कि यहाँ से निकल कर वह जायगा कहाँ?

तभी एक दिन प्रीतो ने क्या देखा कि सहसा उनके मामू साहिब आकर उसके सामने बैठ गये और बैठते हुए उन्होंने उसे पूछा—

'कैसे है प्रीतो?'

'अच्छा हूँ मामा जी।"

और तब मामा जी ने एक लम्बी कथा का आरम्भ कर दिया।

बहुत दिनों से मिल नहीं सका क्या करूँ। एक तो काम धन्धे के चक्कर ने हैरान कर रखा है दूसरे तेरी मामी की बीमारी दिनों दिन खतरनाक शक्ल अख्तियार किए जा रही है, कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। न जाने हमारे भाग्य में क्या बदा है

प्रीतो मौन साधे सुनता रहा। फिर उसने सुना—

'अरे हाँ मैं तो बताना ही भूल गया। तूने उस दिन कहा था न कि मामा जी, मेरे लिए कोई नौकरी तलाश कर दो?

"जी हाँ कहा था मामा जी हुआ कोई प्रबन्ध?

एक जगह पर कुछ आशा बंधी तो है। अच्छा तो ऐसा करना प्रीतो एक एप्लीकेशन कन्या पाठशाला मालेर कोटला के मैनेजर के नाम पर लिख कर मुझे दे देना। मैं कोशिश करूँगा कि वहाँ पर तुझे अध्यापिका की जगह मिल जाय। उस दिन तूने यह भी कहा था न कि इसी साल मैट्रिक किया है तूने?

जी हाँ मामा जी।

'तो अभी लिख कर और साथ में सर्टिफिकेट की टाइप कॉपी कल

मुझे दे देना बाकी सब मैं खुद ही कर लूगा। कहते हुए लाला ईश्वरदास चला गया।

प्रीतो की आँखो मे नव आशा की किरण-सी जगमगा उठी। मन ही मन वह अपने को धिक्कारने लगी कि ऐसे देवता स्वरूप मामू के बारे म वह कितने गलत अनुमान लगाती रही थी।

उसके दूसरे दिन प्रीतो ने लिखी हुई अर्जी लाला ईश्वरदास के हाथ म दे दी। ततपश्चात प्रीतो बडी उत्सुकता स उस शुभावसर की प्रतीक्षा करने लगी जब किसी पाठशाला म अध्यापिका होने पर सब कोई उस सम्मान की नजरो से देखा करेंगे। सब कोई उस बहन जी कहकर पुकारा करेंगे।

वातावरण चाहे कितना ही घुटन भरा था प्रीतो के लिए परन्तु जिस दिन से उसने प्रार्थना पत्र भेजा था उसे पहले जितना कष्ट नहीं जान पड़ रहा था। जब भी घर के लोगों द्वारा परेशान होकर उसकी सहन शक्ति के पाँव डगमगाने लगते तो वह यही कहकर अपने को ढाढ़स बंधाती— मुझे यहाँ थोड़े ही बैठे रहना है। नौकरी मिलने की ही तो देर है।"

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। अपने माँ बाप की देखा-देखी लड़के लड़कियाँ प्रीतो के साथ वैसा ही दुर्व्यवहार करने लगे और घर वालों की देखा-देखी नौकर चाकर भी उसी मार्ग पर चलने लग गये।

पास पड़ौस की औरतें छेड़ छाड़ करने के लिए प्रीतो की ओर आकर्षित होने लगी थीं। मानो प्रीतो उनके मन बहलाव के लिए खिलौना हो। किसी-न किसी बहाने से वे घर में आकर चुपके से प्रीतो के कमरे में घुस जाती और इधर-उधर की बातें करने के बाद वही प्रसंग छेड़ देती जिससे प्रीतो के रिसते हुए घाव और अधिक रिसने लग जायें ?

प्रीतो कितनी अच्छी थी तेरी माँ। न जाने किस देवी-देवता का श्राप लग गया बेचारी को अच्छा तो प्रीतो। क्या सचमुच ही तेरी माँ पगली होकर चली गई ? कोई तो कहते हैं कि किसी भड़भूजे या न जाने कुँजड़े के घर में जा बैठी थी। और सुना है कि वह बहुत ही पीटा करता था उसे। पहले ही क्या कुछ कम दुखी थी बेचारी। अरे यह हरजाई लोग ऐसे ही होते हैं। और सुनते हैं कि तेरी

मुझ दे देना बाकी सब मैं खुद ही कर लूगा। कहते हुए लाला ईश्वरदास चला गया।

प्रीतो की आंखो म नव आशा की किरण-सा जगमगा उठी। मन ही मन वह अपने को धिक्कारने लगी कि एस देवता स्वरूप मामू के बारे मे वह कितन गलत अनुमान लगाती रही थी।

उसक दूसरे दिन प्रीतो ने लिखी हुई अर्जी लाला ईश्वरदास के हाथ म दे दी। ततपश्चात प्रीतो बडी उत्सुकता स उस शुभावसर की प्रतीक्षा करने लगी जब किसी पाठशाला म अध्यापिका होन पर सब कोई उसे सम्मान की नजरो से देखा करेंगे। सब कोई उसे बहन जी कहकर पुकारा करेंगे।

१०

वानावरण चाह कितना हा घुटन मरा था प्रातो के लिए परन्तु जिस दिन स उसन प्रायना पत्र भज था उस पहल जितना कष्ट नहीं जान पड रहा था। जब ना घर के लोगों द्वारा परेशान होकर उसकी सहन शक्ति क पाँव डगमगाने लगते तो वह यही कहकर अपने को ढाढस बधाती— मुझ यहा थाडे ही बठ रहना है। नौकरी मिलने की दा ता दर है।

खरबूजे का दखकर खरबूजा रग बदलता है। अपने माँ बाप को देखा-देखी लडक लडकियाँ प्रीतो क साथ वसा हा दुर्व्यवहार करन लगे और घर वालों की दखा दखी नौकर-चाकर भी उसा माग पर चलने लग गय।

पास-पडोस की औरतें छेड-छाड करने के लिए प्रातो की ओर आक-पित हाने लगा थीं। मानो प्रीतो उनके मन बहलाव क लिए खिलौना हो। किसा-न किसी बहान स व घर म आकर चुपके स प्राता के कमरे में घुस जाता और इधर-उधर का बातें करने के बाद वहा प्रसग छेड देतीं जिसस प्रीता क रिसत हुए घाव और अधिक रिसने लग जायें?

प्रीता कितनी म ा थी वरी माँ। न जाने किस दवी-दवता का श्राप लग गया बचारी को म ा तो प्रीतो। क्या सचमुच ही वरी माँ पेशा करवान ला गई? कार्य तो कहते हैं कि किसी नडभून या न जान कूंजडे क घर म जा बठी थी। और सुना है कि वह बहुत ही पीडा करता था उस। पहन ही क्या कुछ कम हुआ थी बेचारी। अरे यह हरजाइ लोग एस हा होत हैं। और सुनते हैं कि वरी

मा के मरने पर तुझ मार-पाट कर घर से निकाल दिया उस दाढ़ीजार ने। भला क्या बात थी जो रूखी-सूखी रोटियाँ दिये जाता तुझे। ऐसा भी कोई किया करता है !

प्रीतो इन तीरो को कलेजे पर खाये जाती और भीतर ही भीतर घायल होती चली जाती। उसका मन होता कि बोलने वाली की जबान खींच ले चोटी उखाड ले। परन्तु मन मारकर रह जाना। इससे भी कहा बढ़कर उसका दिल जलाने वाली बात यह कि उपर्युक्त प्रकार की सहानुभूति प्रकट करते हुए वे औरतें इन माँ बेटियों की शक्ल सूरत पर भी टीका टिप्पणी करने लग जाती।

पर भई थी तो वह सुन्दरता की मूर्ति गोरा चिट्टा रंग कजरारी आँखें और सब लम्बे बाल। हाथ लगाये से मैली होती थी। अरे प्रीतो ! यह तेरी शक्ल सूरत किस पर पड गई। तेरा बाप भी तो अच्छा खासा मुह हाथ लगता था। कितना डरावना है तेरा मुंह माथा।

टूटे हुए घड़े में कब तक पानी सुरक्षित रह सकता है। बहुतेरा यत्न करता प्रीतो अपने आवेग को संयत रखने का पर कई बार रोकते रोकते भी उसके मुंह से कुछ ऐसी वैसी बातें निकल ही जाती।

अच्छा बेबे मेरी माँ पापिन थी या दुराचारिणी थी तो किसी को क्या। मेरे साथ चाहे किसी ने बुरा बर्ताव किया या अच्छा।

मैंने तुम्हारे पास जाकर फरियाद तो नहीं की है कुरूप हूं बदशक्ल हूं किसी को यह नहीं कहती कि अपना शरीर मेरे शरीर से घिसा दे और प्रीतो की इन जली-कटी बातों को सुनकर आगन्तुकाओं का मजा किरकिरा हो जाता। वे अपना रवैया और भी कठोर बना लेतीं।

एक दिन सवेरे-सवेरे जब प्रीतो शौच आदि से निबट कर आ रही थी। प्राय अकेली ही वह बाहर जाया आया करती थी। न तो उसे किसी का साथ पसन्द था और न ही किसी को उसका। रास्ते में एक जगह बहुत-सी भीड एकत्रित हुई उसे दिखलाई दी। ढोल की

आवाज़ सुनकर उसने समझ लिया कि या तो कोई दंगल हो रहा है या गाँव के युवक कबड्डी इत्यादि कोई खेल खेल रहे हैं। ढोल का बजना इसी बात का सूचक था।

प्रीतो का ध्यान न तो खेल की ओर था और न ही ढोल बजने की ओर। वह अपने ही ध्यान में मग्न चली जा रही थी कि सहसा पीछे से उसे कुछ सुनाई दिया। एक युवक अपने साथी से पूछ रहा था—अरे यार यह ढोल क्या कह रहा है अपनी आवाज़ में? तब दूसरे ने उत्तर में बोला—कह रहा है—करमो लौट आई सागर, करमो लौट आई सागर।

चलते चलते प्रीतो की गति मन्द पड़ गई। कुछ घबराकर और कुछ तुनक कर उसने पीछे गर्दन घुमाकर ताका। दस-बारह कदमों की दूरी पर दो युवक उसके पीछे पीछे चले आ रहे थे और प्रीतो की ओर कनखियों से ताककर मूँछों को ताव दे रहे थे।

प्रीतो के रुक जाने पर वे दोनों रास्ता काटते हुए आगे निकल गये और जब वे प्रीतो की आँखों से ओझल हो गये तो उसका ध्यान फिर से ढोल बजने की आवाज़ की ओर चला गया। उसे लगा जैसे सच ही ढोल में से यही बोल निरन्तर निकलकर वातावरण को गुंजरित कर रहे हैं—करमो लौट आई मास्टर—करमो लौट आई सागर।

प्रीतो को जान पड़ा जैसे वह धरती में धँसी जा रही है। उसे लगा मानो गाँव के रूप में एकत्रित हुए वे लोग गला फाड़-फाड़कर कह रहे हैं कि वही करमो जो एक दिन किसी के साथ भाग गई थी उसी का प्रतिरूप था, पर यह लड़की (प्रीतो) फिर से वहीं लौट आई है।

वह घर पहुँची और आते ही खाट पर गिर गई। रात का खाना लेकर जब महरी उसके कमरे में आई तो उसने भूख नहीं है कहकर उसे लौटा दिया और बिना पूछे कि भूख क्यों नहीं है महरी उल्टे पाँव लौट गई।

उस रात प्रीतो सो नहीं पाई। वही ढोल की आवाज़ **'करमो लौट**

आई सगरूर उसके कानो के पर्दो से उत्तरोत्तर टकराती चली गई। प्रीतो के बार बार काना म उगलियाँ घुसेडन पर भी आवाज नही रुकी। उसे अब इस घर म—इस गाँव म क्षण भर क लिए टिकना भी मृत्यु समान लग रहा था। मन ही मन वह अपन भगवान स प्रार्थना कर रहा था। हे न्यायमय ! अब और नही सहा जाता। मुझ निकाल ल इस नक म से फिर चाहे कही भी ले जा कर फेंक दना मुझ।

वस्तुत प्रीतो क लिए इस समय यदि कोई भगवान था तो वही उसकी अर्जी के जवाब म आने वाला सम्भावित नियुक्ति पत्र। जिसकी प्रतीक्षा करते-करते—जिसकी आराधना करते करते वह ऊब उठी थी।

इधर प्रीतो का यह हाल था और उधर घर के वातावरण म दिन प्रतिदिन विष के परमाणु पैदा हुए जा रहे थे और बढते चले जा रहे थे वातावरण को अधिक-से अधिक दूषित किए जा रहे थे।

दुराचारी पति और ईर्ष्या ग्रस्त पत्नी का साथ कुछ उसी तरह का रहता है जसे सरकस क रिंग मास्टर और उसके प्रधान हिंसक पशुओं का। पशु चाहे कितना ही हिंसक हो रिंग मास्टर के चाबुक से डर कर उसे अपन जन्म जात स्वभाव को दबाते हुए उसकी सब बातें माननी ही पडती हैं। परन्तु नाना इश्वरदास क पतिपन पर यह उपमा पूरे तौर स नहा घटती है। कारण ? गुनाहगार होते हुए भा वह एक शरीफ गुनाहगार है और द्रोपदी हिंसक होते हुए भी एक समझदार जीव जो पति के अवगुणा का समझते हुए भी उन्ह इसलिए सहन करती चली आ रही है कि वह समझदार है। इसी प्रकार पति यह समझते हुए भा कि स्त्री हर समय हिंसा की मूर्ति बनी रहती है उस सहन करता है तो इसी स कि वह शरीफ है। मानो गृहस्ता की इस गाडी को चलान वाल दोना बल दूसरे के विपरीत होते हुए भी गाडी के जूए म से अपनी गर्दना को मुक्त नहीं कर पाते है।

चिर रोगी व्यक्ति चिडचिडे और अक्खड स्वभाव का हो जाता है। फिर वह चिर रागिणी जिसके रोग का कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष

रूप में उसका पति ही हो। उस बेचारी की क्या हालत होती होगी। इसका सजीव प्रमाण है इस घर की स्वामिनी बाला द्रौपदी।

इस कल्याणी को किस ढंग से दफा किया जाए, पति पत्नी में इसके सम्बन्ध में कई बार वाद विवाद चलने लगता और अन्त में ईश्वर दास यह कह कर उसे सान्त्वना देता, "अरे उसकी अर्जी का जवाब आज कल ही में तो आने वाला है। और मुझे पूरा विश्वास है कि वहां इसे जगह मिल ही जायगा।"

पतिदेव का दिया हुआ यह आश्वासन कब फलीभूत होता है, इसकी प्रतीक्षा में द्रौपदी क्षण पल गिनती चली आ रही थी। जब-जब भी उसका पति घर आता तो वह उस पर सबसे पहला प्रश्न यही करती— "अर्जी का उत्तर आया या नहीं?" और ईश्वरदास वही "आज आता है—कल आता है" कह चला जाता है।

कई दिन तक यही चलता रहा। अन्ततः एक दिन द्रौपदी के धीरज का बाँध टूट ही तो गया—

"कान खोलकर सुन लो जी मेरी बात। मुझमें और सहन नहीं रहा है। अगर तुम से अपनी इस लाडली की जुदाई सही नहीं जाती है तो इसके लिए किसी अलग मकान का प्रबन्ध कर दो। नहीं तो देख लेना किसी दिन इस घर से मेरी अर्थी निकलकर ही रहेगी।"

ईश्वरदास के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती थी। उसे क्रोध भी कुछ कम नहीं हो रहा कि जब वह स्वयं ही मीनो को भगाने के लिए उत्सुक है तो फिर पत्नी क्यों हर समय हाथ झाड़कर उसके पीछे पड़ी रहती है। उसे खीझ होने लगी? यदि द्रौपदी बीमार न होती तो सम्भव था कि वह उस पर बरसने ही लग जाता। पर उसका ऐसा करना तो द्रौपदी को समय से पहले ही अर्थी पर सवार करने जैसी बात थी।

मामला जिस सीमा तक जा पहुँचा इससे तो यही पाया जाता था कि घर में किसी दिन कोई दुर्घटना होकर ही रहेगी। परन्तु विधाता को शायद ऐसा मंजूर नहीं था। जिस रात पति पत्नी में यह द्वन्द्व झगड़ा

हुआ उससे दूसरे ही दिन प्रीतो का नियुक्ति-पत्र आ पहुंचा।

जैसे ही प्रीतो को अपनी भाग्यशीलता की यह सूचना मिली कि उसकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा। वह अपने देवता स्वरूप मामू का मन ही-मन धन्यवाद दे रही थी उसका रोम रोम पुलकित हो उठा। साक्षात भगवान के रूप में दर्शन देने वाले नियुक्ति पत्र ने मानो उसे करोड़ों जन्मों के पुण्यों का फल प्रदान कर दिया हो।

इधर वे दम्पत्ति युगल खुशी के मारे मानो एक में चार हो उठे। आज पति के प्रति नौपदा के बर्ताव में कुछ अनोखा परिवर्तन दिखाई दे रहा था। वह खूब हंस हंसकर उनसे बातें कर रही थी।

इसके दूसरे ही दिन प्रीतो के चलने की तैयारी में गृहस्वामिनी दत्तचित्त होकर ध्यान दे रही थी। उसने रसोई घर की नौकरानी को आदेश दिया—

वसन्ती! ऐ बसन्ती! बेटा को नौकरी पर जाना है। उसके वहां काम आने वाली सब चीजें इकट्ठा करके एक अच्छे से ट्रंक में रख देना और बिस्तर रजाई सिरहाना चद्दर और दूसरा सब चीजें ध्यान से रखना। ऐसा न हो कि वहाँ जाकर लड़की को किसी बात का तकलीफ हो। समझी?

मालकिन के आदेशानुसार वसन्ती ने सब कुछ ठीक तौर से तैयार कर दिया। इसके अतिरिक्त आलू वाले पराठे बनाकर और साथ में चटनी इत्यादि सब चीजें उसने पीतल के डिब्बे में बन्द कर दी।

तत्पश्चात लाला ईश्वरदास ने प्रीतो को साथ ले जाकर गाड़ी में सवार किया और लौटते समय कुछ नकदी देते हुए उसने भानजी को भरपूर प्यार किया और स्नेहयुक्त शब्दों में बोला—

वहां जाते ही पत्र लिखना बेटा और किसी चीज की जरूरत पड़े तो निःसंकोच लिख देना समझी। प्रीतो ने सिर झुकाये और आंखों में आँसू भरे मामू जी को प्रणाम किया।

११

वहीदा मन को धीरज देना चाहती कि मेरे लिए तो सारा संसार ही बेगाना है— एक जगह क्या दूसरी क्या और तीसरी क्या। फिर भी ननिहाल वालों के घर से निकलकर एक अपरिचित जगह पर जा टिकना उसे कष्टप्रद जान पड़ रहा था। गाड़ी की यात्रा उसने इसी हालत में समाप्त की।

स्कूल बिल्कुल कुछ नहीं था। यों ही एक ढोंग-सा था। एक कुछ पढ़ी-लिखी औरत ने अपने घर के निचले भाग में जो तीन-चार कमरों में विभक्त था एक प्राइवेट स्कूल सा खोल रखा था जिसमें कुल मिलाकर पाँच अध्यापिकाएँ थीं। स्कूल की हैडमिस्ट्रेस, मैनेजिंग कमेटी और प्रोप्राइटर इत्यादि सब कुछ वही श्रीमती जी थीं। और उसने बीच जो अध्यापिकाएँ काम करती थीं वे भी इधर-उधर से बटोरकर एकत्र की हुई। जिनके लिए किसी डिग्री व डिप्लोमा की आवश्यकता नहीं थी। आवश्यकता उन्हें यदि थी तो इतनी ही कि स्कूल की सर्वेसर्वा बड़ी बहिन जी के प्रत्येक आदेश को आँख मूँदकर मानती चली जाएँ और समय समय पर मुक्त कण्ठ से उनकी श्लाघा तथा खुशामद करती रहें।

छात्राओं की हालत भी प्रायः अध्यापिकाओं जैसी ही थी। नाम को कितना ही आडम्बर रचा गया था—अक्षर विद्या के अतिरिक्त रसोई शिक्षा, सीने पिरोने का काम, कढ़ाई का काम और दूसरा कितना ही कुछ। परन्तु वास्तव में यह सब दिखलाने को ही था।

कुल मिलाकर तीस चालीस छात्राएँ यहाँ पर विद्या प्राप्त करती थीं और पढ़ाई की व्यवस्था भी कुछ अनोखे ही ढंग की थी। अध्यापिकाएँ

दिनभर या तो गप्प हाँकती या जम्हाईयाँ लिया करती। छात्राओं का यह हाल कि जिसका मन चाहे स्कूल का काम करे और जिसका जी चाहे आपस में लड़े भिड़े और गाली-गलौज का काम करने में संलग्न रहे। यदाकदा जब बहिन जी क्लास के सामने आ जाती तो उसे देखते ही सब भीगी बिल्ली बन जाती। जिस किसी के बारे में बहिन जी को पता चलता कि इसने काम नहीं किया है या किसी दूसरी लड़की का सर माथा नोचा है तो उसे दो एक थप्पड़ रसीद किये जाते और रण्डी कुतिया इत्यादि का प्रसाद प्रदान करती और बस।

स्कूल एक गुमनाम सी गली में था। नाम का वार्षिक परीक्षा भी हुआ करती। प्रातःकाल एक किताब में हाजरी भी लगाई जाती इत्यादि। किन्तु यह सब स्कूल की मुख्याध्यापिका बड़ी बहिन जी की इच्छा पर ही निर्भर होता कि परीक्षा में किसे पास करना है और किसे फेल। हाजरियाँ कम हैं या अधिक इसके बारे में कोई विशेष झंझट नहीं था। बस जो कुछ बड़ी बहिन जी ने कह दिया वह ठीक है। बड़ी बहिन जी ही स्कूल रूपी नाव की खिवैया थीं। किसी को पार लगा दें चाहे मझधार में डुबा दें इसका सर्वाधिकार उन्हीं को था।

बड़ी बहिन जी अर्थात् बीबी गंगादेवी चाहे अपढ़ थीं पर उनकी ऊपरी चटक-मटक और नाज-नखरा देखकर तो उन्हें पंडिता ही कहना बनता था। प्रातः जब स्कूल में आती तो रेशमी साड़ी ब्लाउज में झूमती मामते हुए। दोपहर को देखो तो वास्कट पहनावे में मेम साहिबा बनी हुई। शाम को जब बाहर सैर को निकलती तब पूरी मानो महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी चेला हों।

बड़ी बहिन जी का शरीर जितना चिकना है उतना ही कड़ा। यदि किसी पर क्रोधित हो जायें तो उसे जहन्नुम रसीद किये बिना नहीं छोड़ेंगी और जो किसी पर दयालु हो गई तो उसकी पाँचों घी में हैं।

इस लेखे प्रीतो को भाग्यशालिनी ही मानना चाहिए कि बड़ी बहिन

जी ने उसके साथ ऊपरी प्रकार का ही बर्ताव किया और पूरे आदर सम्मान से उसका स्वागत किया। इसके अतिरिक्त प्रीतो के लिये उसने एक छोटा-सा मकान किराये पर ले रखा था। उसका वेतन एकदम पचास रुपये मासिक निश्चित किया, जबकि दूसरी अध्यापिकाओं में से कोई तीस पाता थी तो कोई पैंतालीस।

जैसे ही प्रीतो ने अपनी नौकरी सँभाली कि खुशी के मारे फूल ही उठी इतना बड़ा सम्मान! वह प्रीतो न रहकर मिस प्रीतम और बहन जी कहलाने की अधिकारिणी थी।

प्रीतो के लिए बड़ी बहिन जी ने जो मकान लिया था वह अभी नया-नया ही किसी ने बनवाया था और अपूर्ण ही छोड़ दिया गया था। मात्र उसमें कि दो अगाड़ी कमरे ही ऐसे थे जिन्हें प्रयोग में लाया जा सके। बाकी सब अधूरी ही हालत में पड़े थे। अलबत्ता मकान की चार दीवारी पूर्णतया बन चुकी थी। किराया साधारण था—कुल दस रुपये। और इतना मकान मिल पाना इस बड़ी बहिन जी के प्रभाव की ही करामात समझना चाहिए और था इसलिये कि यह आबादी से कुछ बाहर की ओर था और एकान्त पड़ता।

इससे भी बढ़कर बड़ी बहिन जी ने जो कृपा मिस प्रीतम पर की वह यह कि उन्होंने अपने घर का नौकरानी को दो एक घंटे के लिये नियुक्त कर दिया।

पहले दिन जब प्रीतो मिस प्रीतम बनकर बहन जी के रूप में स्कूल के अहाते में प्रविष्ट हुई तो खुशी के मारे उसके पाँव धरती पर नहीं टिक रहे थे मन ही मन जहाँ वह अपने सौभाग्य को सराहना कर रही थी वहाँ अपनी कृपालु मुख्याध्यापिका के प्रति भी आभार तले दबी जा रही थी।

या प्रीतो दूसरी अध्यापिकाओं की तुलना में अपने को कुछ छोटी छोटी तुच्छ-तुच्छ अनुभव कर रही थी और यह छोटेपन का भाव उसे बुरी तरह से खटक रहा था। परन्तु उसने यही सोचकर अपने को धीरज

बधाया कि यह तो प्रारम्भ में हुआ ही करता है। जब वह दूसरी अध्यापिकाओं में हिलमिल जायगी तो स्वतः ही उसका यह संकट दूर हो जायगा। उसने सोचा जब बड़ी बहिन जी की वह कृपापात्र है तो उसे घबराने का कोई कारण नहीं। यदि दूसरी अध्यापिकाएं आयु में उससे कुछ बड़ी हैं या पहराव में तनिक अच्छी हैं तो यह कौन सी बात है। जब उसे पहले महीने का वेतन मिलेगा तो वह भी उन्हीं जैसा पहरावा धारण करेगी।

जिस दिन वह नौकरी पर हाजिर हुई उस से पहले बहिन जी ने स्टाफरूम में उसे ले जाकर दूसरी अध्यापिकाओं से उसे इन्ट्रोड्यूस करवाने की रस्म अदा की। सब अध्यापिकाएं एकत्र हुई। और जब उन लोगों ने बड़ी बहिन जी से सटकर एक छोटी बहिन जी को बैठे पाया तो उन्हें कुछ आश्चर्य भी हुआ और कुछ डाह।

शब्द पर बड़ी बहिन जी उसका सम्मानित करते हुए बोलीं—

आप सबको यह जानकर खुशी होगी कि आज आप लोगों की एक और सहकारिणी हमारे स्टाफ में सम्मिलित हो रही है। और इसके अन्तर्गत ये हैं बहिन जी मिस प्रीतम की प्रशंसा में जितना ही कुछ कहना चाहीं—यह एक उच्च खानदान की लड़की हैं बड़े कोमल स्वभाव की हैं और खूब पढ़ी लिखी आदि।

सुनने वालियों पर इस परिचय का अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा था जिसका कारण या तो मिस प्रीतम की प्रशंसा अतिशय थी। दूसरे मिस प्रीतम का वेतन उन सबों से अधिक होगा।

बड़ी बहिन जी जब अपना परिचय समाप्त करके चली गई तो उसके बाद बाकी दुर्गावती ने बड़े सामान्य प्रशासनात्मक शब्दों में छोटा सा व्याख्यान भाषा। तत्पश्चात एक दूसरी अध्यापिका ने उसकी पुष्टि में थोड़ा बहुत कहा।

मिस प्रीतम इस छोटे से जमघटे में घिरी हुई अपने प्रति प्रशंसा की बौछार सुन सुनकर खुशी के मारे फूली नहीं समा रही थी। पर इसके

बाद कुछ ऐसे शब्द उसके कानों में आ पड़े जिन्होंने सारा गुड़ गोबर कर डाला। बड़ी बहिन जी कह रही थीं—

अब हमारी नई अध्यापिका मिस प्रीतम आपके सामने अपने विचार प्रकट करेंगी।

मिस प्रीतम को काटो तो खून नहीं। उसे व्याख्यान देने के ढंग से बात करने का भी शऊर नहीं था। न ही उसे किसी गोष्ठी में कभी इसका अवसर ही मिला था। वह इन बातों में जान पाती तो कम। क्षोभ के मारे उसका दिल फटने और सिर चकराने लगा। माथे पर पसीने के बिन्दु चमकने आने और हाथ-पैर ठंडे पड़ने लगे पर इस समय जिस स्थिति में वह आ घिरी थी बिना बात कहे तो काम नहीं चल सकता था। अब करे तो क्या करे। अन्ततः मन कड़ा करके काँपते शरीर और विकम्पित स्वर में उसे बोलना ही पड़ा—

आ आसमान वश बहिन जी और अ और छोटी बहनो! मैं मुझे मेरा आपका धन्यवाद हार्दिक धन्यवाद धन्यवाद हूँ कि कि धार मैं मैं और इसके बाद मिस प्रीतम से कुछ भी बोलते नहीं बना मानो गला जुड़ गया हो।

उधर श्रोताओं का यह हाल था कि बड़ी बहिन जी को छोड़ शेष सब अध्यापिकाएँ मुँह छिपा छिपा कर हँसी को रोकने का व्यर्थ यत्न कर रही थीं। यदि बड़ी बहिन जी का डर न होता तो सम्भव था कि मिस प्रीतम की यह बौखलाहट उनके पल्ले ही पड़ती और कमरा हँसी और ठहाकों के मारे कमरा गूँज उठता। —

पर फिर भी रुक न सकी हँसी। इस परिस्थिति में सामना किया पाया तो उसकी हो मूक पड़ी।

मिस प्रीतम को फ़िज़ा में उन्होंने जोरदार तालियाँ बजाना शुरू कर दिया और सीताराम। बस नियमानुसार दूसरी अध्यापिकाओं ने उनका अनुकरण करते हुए तालियाँ बजाना शुरू कर दिया। इन तालियों की कर्कश आवाज़ से मिस प्रीतम का रहा सहा धैर्य भी जाता रहा और उसका सिर भी चकरा उठा।

तत्पश्चात बड़ी बहिन जी ने मिस प्रीतम के साथ जाकर उसे उसका क्लासरूम दिखला दिया। साथ ही उन्होंने वहाँ बैठी हुई नन्ही मुन्नियों को सम्बोधित करते हुए कहा—

देखो लड़कियो ! यह हैं तुम्हारी नयी बहिन जी। इनकी हरेक आज्ञा का तुम सब को पालन करना होगा। अगर किसी ने इनका कहना नहीं माना या और किसी तरह की ढिठाई की तो मारते मारते भस्म कर दूंगी। और यह कहने के बाद बड़ी बहिन जी वहाँ से विदा हुई।

क्लास पहली श्रेणी की थी और छात्राओं की गिनती एक दर्जन से अधिक नहीं थी। फर्श पर बिछी हुई एक फटी पुरानी चटाई पर वे आलती पालती मार बैठी थीं। उनमें कुछ तो बहुत छोटी थीं और कुछ तनिक बड़ी। कुछेक का कपड़ा लत्ता ढंग का था और कुछ का एक दम बेढंग। किसी की चोटी गुंथी हुई तो किसी के बाल अस्त-व्यस्त।

खाली कुर्सी—जो मिस प्रीतम की प्रतीक्षा में ही थी—उसने उसे सुशोभित किया और फिर यथा शक्ति लड़कियों से माथा पच्ची करने लग गई। चाहे इस काम में उसे कठिनाई हो रही थी। जबकि अपरिचित लड़कियों के झुण्ड से उसे पहली बार पाला पड़ा था। पर शनै शनै उसने अपने को संभाल लिया।

किसी भी महकमे में किसी नये कर्मचारी का प्रथम प्रवेश पुराने कर्मचारियों के लिए जिज्ञासा का प्रतीक बन जाया करता है। मिस प्रीतम के लिए भी वहाँ हुआ। जिज्ञासा के साथ साथ एक प्रकार का कौतूहल भी दूसरी अध्यापिकाओं में पैदा हो रहा था। मिस प्रीतम के सम्बन्ध में इतना तो वे सब जान चुकी थीं कि उसका वेतन पचास रुपये निश्चित किया गया है। परन्तु इस बात को उन्हें समझ नहीं आ रही थी कि आखिर इतना वेतन उसकी किस योग्यता के लिए निश्चित किया गया है। और तिस पर इस नई अध्यापिका जी की बात चीत का प्रमाण उन्हें मिल ही चुका था। अतः सब किसी का यही अनुमान था

कि अवश्य ही मिस प्रीतम किसी सिफारिश के बलबूते पर ही यह सम्मान प्राप्त कर पाई है। और यही बात थी जिससे उन सबो के मन म ईर्ष्या की एक एक चिगारी धधक उठी और पहल ही दिन म इन चिगारियो के परिणाम स्वरूप मिस प्रीतम के साथ उन लोगो की नोक झोक का क्रम शुरू हो गया—

'अरे यह क्या जगली जानवर को लाकर स्कूल मे घुसेड दिया है बडी बहिन जी ने।'

'भई साई राना जा वन्न मानी "

चलो जी। हम क्या पडी है। हलवाई जाने और मिठाई जाने '

अध्यापन का पहला दिन मिस प्रीतम ने बहुत ही कठिनाई से व्यतीत किया। जैसे ही छुट्टी की घण्टी बजी कि दूसरी अध्यापिकाओं की नजरों से अपने को बचाते हुए वह स्कूल के अहाते से निकली और घर जाने पर सुख की साँस ली। उसे ऐसा जान पड़ रहा था कि वे सब अध्यापिकाएँ आँखों ही आँखों द्वारा उस पर व्यंग्य के तीर चला रही हैं और जी भर कर उसकी अवहेलना कर रही हैं। उस व्यथा पर भी कुछ कम क्षोभ नहीं हो रहा था। बार बार वह अपने को धिक्कार रही थी पूरे दस वर्ष मैंने पाठ्य पुस्तकों से माथा मारा तो इतना भी साहस न आया मुझमें कि चार औरतों के बीच जाकर ... कर सकूँ। क्या वहाँ कोई हजारों का मजमा लगा था जो बोलने में मेरे छक्के छूट गये? यदि मुझे भविष्य में भी यही करना है तो ... चकी मुझसे नौकरी।

नहीं।

नहीं मानो उसने अपने को कड़ा आदेश दे डाला— भविष्य में मैं कदापि ऐसा कच्चापन नहीं करूँगी।

पहिले दिन की अपेक्षा दूसरा दिन मिस प्रीतम ने कुछ अच्छा ही बिताया। तीसरा दिन उससे अच्छा और चौथा उससे भी अच्छा। जैसे जैसे दिन व्यतीत होते गये वह अपने को सम्भालने में किसी सीमा तक सफल होती गई। परन्तु उसके लिए कठिनाई यह पैदा हो गई कि अध्यापिकाओं का बर्ताव उसके प्रति दिनों दिन बुरा होता चला जा रहा था। मानो उन लोगों की नजरों में मिस प्रीतम अध्यापिका न होकर कोई चपरासिन हो।

एक तो अपरिचित जगह, दूसरा सहकारियों का कठोर वर्ताव और तीसरा अपनी ही निर्बलताओं का भय।

बहुत ही उदास था मिस प्रीतम का मन। और इस उदासी को दूर करने वाला यदि उसके लिए कोई था तो अपना मामू। उसने मामू को कई पत्र लिखे और खूब लम्बे लम्बे। पर किसी का भी तो उत्तर नहीं मिला उसे। हार कर उसने भी पत्र लिखना बंद कर दिया।

इन दिनों ईर्ष्या, घृणा, क्रोध और हिंसा के भाव उसके अंतर में उपज रहे थे सब मिलाकर अब सारे वातावरण में यदि उसके पक्ष में कोई था तो मात्र बड़ी बहिन जी और या छोटी बहिन जी की कृपा से प्राप्त हुई महरी निहालो जो दिन में दो बार उसके घर आने लगी थी।

बड़ी बहिन जी ने निहालो महरी को मात्र इतना ही आदेश दिया था कि वह दोनों समय नई अध्यापिका के घर जा कर और रसोई इत्यादि के काम में उसका हाथ बटा कर शीघ्र ही लौट आया करे परन्तु निहालो जो एक तो स्वभाव से ही बातूनी थी दूसरे मिस प्रीतम द्वारा उसे भरपूर आदर मिलता था। साथ ही थोड़ा बहुत खाने को भी दुगना तिगुना और कभी-कभी चौगुना समय वहां बिता कर लौटने लगी।

विपत्ति के समय आदमी में बंधा हुआ खोटा पैसा भी हमें कुछ न कुछ सान्त्वना देता है। निहालो चाहे कमी भी थी पर मिस प्रीतम के लिए तो वह वरदान से कम नहीं सिद्ध हुई। बात यह कि इस प्रदेश में उसके साथ भावना साझा करने वाला तो कोई नहीं था। तिस पर मुसीबत यह कि उसका मकान ही ऐसी जगह पर था जिसके पड़ोस में कोई नहीं था। दाएं घर के लोग वहां परदेश गए हुए थे जिससे वह टोला दिन भर सूना ही रहता और बाईं ओर का मकान गत बरसात में गिर चुका था और वहां मलबे के ढेर के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। जितनी देर तक निहालो वहां रहती मिस प्रीतम का मन बहला रहता। और जब चली जाती तो घर की दीवारें भी उसे काटने को आतीं। इसी में वह

निहालो की मिन्नत समाजत करके और थोड़ा घना लोभ लालच देकर अधिक-से अधिक समय देकर उसे अपने पास बिठाय रखती।

निहालो वृद्धावस्था में थी। झुर्रियों भरा चेहरा सिर के कपासी बाल महदी के प्रयोग से रंगे हुए और कमर जरा टेढ़ी। फिर भी लाठी पकड़कर चलने की आदत नहीं थी। उसके दांत झड़ चुके थे उसके मेंहदी रंगे बाल माथे और कनपटियों पर हमेशा ही बिखरे रहते। जिन्हें यह बार-बार हथेलियों द्वारा बिठाने का यत्न किया करती जो एक प्रकार से उसकी आदत बन चुकी थी। उसके बात चीत करने के ढंग में एक विशेषता यह थी कि चाहे किसी भी विषय पर बात चल रही हो उसे मो तोड़कर दो केन्द्रों पर ले आती। एक तो अपने पुत्र तथा पुत्र वधु के अन्याय गिनने और दूसरा अपनी मालकिन की बुराइयाँ करने में। यों देखने में निहालो एक भक्तिभाव वाली औरत थी। सुबह सवेरे मन्दिर जाती कभी कभी उसके हाथ में माला भी दिखाई देती। विशेष कर मंगल के दिन हनुमान पर पाँच पैसे का प्रसाद चढ़ाना तो वह कभी नहीं भूलती।

पहले पहले तो मिस प्रीतम को बड़ी बहन जी की निन्दा अच्छी नहीं लगी परन्तु बाद में निहालो द्वारा प्रस्तुत किये प्रमाणों द्वारा उसे विश्वास होने लगा कि वास्तव में मुख्याध्यापिका एक नम्बर की धूर्त और छत्तीसी औरत है।

निहालो और बड़ी बहन जी का साथ बहुत पुराना था। पर आश्चर्य की बात यह कि इतना पुराना साथ होते हुए भी इन दोनों में बिल्ली कुत्ते का सा बैर चला आ रहा था। न तो मालकिन की बात नौकरानी को अच्छी लगती और न ही नौकरानी की मालकिन को। पर इतना होने पर भी दोनों आपस में कुछ इस प्रकार से बंधी हुई थीं कि न इसका काम उसके बिना चल सकता था और न ही उसका इसके बिना। मालकिन के मुंह से सुना जाय तो बहुत ही दुखित लहजे में कहा करती है—

'अरे इस जैसी हरामखोर औरत तो मैंने जीवन भर में नहीं देखी है और यदि निहाली के मन को टटोला जाय तो वह एकबारगी कह उठती— हे भगवान ! ऐसी नौकरी से तो भीख माँगना हजार दर्जे अच्छा। प्रभात से लेकर आधी रात तक खड़ी खाट काम में पिसती रहो, फिर भी इस नवाबजादी का मुँह सीधा नहीं होता है। घर का काम करे तो निहाली हाट बाजार में जाय तो निहाली निहाली न ठहरी कोई मशीन हुई !

निहाली निसन्तान भी तो नहीं। वह पुत्र की माँ है ? बहू की सास है और पोते पोतियों की दादी है। फिर यह भी नहीं कि उसका परिवार कहीं सात समुद्र पार रहता हो। उनके पास पहुँचने के लिये रेल या मोटर में तीन-चार घंटों से अधिक सफर नहीं लगता है। ऐसा भी नहीं कि उसका पुत्र निखट्टू हो। खूब कमाता है वह और अच्छा खाता-पीता है फिर भी यदि इस बुढ़ापे में निहाली को ऐसी कठिन और अपमानजनक नौकरी करनी पड़ रही है तो क्यों ? लोग बाग ऐसा ही सोचा करते हैं।

वर्ष में दो एक बार उसका पुत्र उससे मिलने के लिये आया करता है, परन्तु मिलने को कम और कौड़ियाँ नोचने के लिए अधिक। अपनी जान पहचान वाली औरतों से निहाली प्राय कहा करती है— अबके तो उस उचक्के की मिन्नतों समाजतों पर रहम करके मैंने उसे खाली हाथ नहीं लौटाया। पर गंगा की कसम खाकर कहती हूँ कि इसके बाद अगर कच्ची कौड़ी भी उस पाखंडी को दे जाऊं तो अपने बाप की नहीं। पर आश्चर्य की बात यह कि जब भी पाखंडी महोदय पधारते, निहाली का खीसा खाली कराकर ही लौटते। जैसे ही पुत्र आकर आर्थिक परेशानियों के रोने रोने लगता कि माँ का मन 'पत्थर' से 'मोम' हो जाता और अपनी जुटी जुटाई पूँजी पुत्र के आगे पटकते हुए कड़कती आवाज में कह देती— ले रे कसाई ! अब के तो निहाल किए देती हूँ। फिर अगर आकर मुझसे कुछ माँगा तो झाड़ू से यह मरम्मत करूँगी कि

उम्र भर या" रखेगा।

दिन प्रतिन्दिन निहारो और मिस प्रातम म निकटना बढता चला जा रही थी। जिसक फलस्वरूप मिस प्रीतम के पास निहारो का अधिक से अधिक समय बिताना स्वाभाविक ही था। परन्तु नौकरानी की इस स्थिति का मालकिन पर क्या प्रतिक्रम हा रहा था ?

मनुष्य का स्वभाव ही कुछ एसा है कि चाहे कितनी ही अनभावनी जगह हो गन गन वह उसके साथ समझौता कर ही लेता है। प्रारम्भ म जो बातें मिस प्रीतम को फूटी आंखों नहीं सुहाती थी। अब उन्हें सहन करने की उस आदत सी पड़ गई थी। अध्यापिकाओं का बर्ताव उसके साथ पहले स भी कहीं बढ़कर बुरा था। मिस प्रीतम अब इसका बुरा न मानती हो ऐसी बात नहीं अन्तर यदि पड़ा तो यही कि जहाँ पहले वह हर समय उन लोगों स मुंह छिपाने के यत्न म रहती और सामना हो जाने पर रास्ता कतराकर निकल जाती थी। वह अब छाती तान कर उनके सामने डट जाती और साथ ही कवि गिरधर की इस पंक्ति को प्रयोग म लाने लग जाती। जो कोई मारे ईंट ताहि ले पत्थर मारो जैसे ही कोई मनचली उस पर किसी प्रकार का व्यंग कसता कि उत्तर म वह एक के बजाय चार सुना देती और खूब नमक मसाला लगा कर। जिसका फल स्पष्ट सिवाय और क्या हो सकता था कि स्कूल के वातावरण म एक प्रकार की शीतयुद्ध शुरू हो गई। एक मोर्चे म अकेली मिस प्रीतम और दूसरे म समूचा स्टाफ।

अध्यापिकाओं को कुछ ऐसा आनन्द पड़ गई थी कि जब तक वे मिस प्रीतम स छेड़ छाड़ न कर लें मानो उन्हें खाना हजम नहीं होता था। कभी कोई उसके पास स गुजरते हुए कह जाता— मिस प्रीतम ! तुमने कभी टमाटर खाये है या नहीं ? डाक्टर कहते हैं कि टमाटर खाने स चेहरे का रंग लाल हो जाता है। और उत्तर म मिस प्रीतम कहने वाली पर क्रोध का टोकरा ही उड़ेल देती— टमाटरों के बजाए तेरा खून पीने स तो मेरे चेहरे का रंग और भी लाल हो जाएगा।

मिस प्रीतम इतनी अनजान नहीं थी जो समझ न पाई हो कि उसके प्रति अध्यापिकाओं का यह दुर्व्यवहार एक बनी बनाई योजना का परिणाम है। बहुतेरा वह उन लोगों का डटकर मुकाबला भी करती, गालियाँ देती। पर यही सब तो उन सबों के लिए दिल बहलाने का साधन था। जितना ही मिस प्रीतम अधिक से अधिक भड़क कर उनके गले पड़ती उतना ही उन्हें आनन्द प्राप्त होता।

अब मिस प्रीतम करे तो क्या करे। भीतर ही भीतर घुट घुट कर राख हुई चली जाती। मन ही मन कहती— इन हरामजादियों से गिन गिन कर बदला लूंगी। इन छिनालों की हड्डी बोटी एक कर डालूंगी। परन्तु बेचारी को कहां से भी तो गिन गिन कर बदला लेने का या हड्डी बोटी एक करने का कोई साधन नहीं मिल पा रहा था।

मिस प्रीतम को एक और बात का भी कुछ वहम सा हो गया था कि अध्यापिकाएं जो कभी पट्टी द्वारा बन ठन कर आती हैं तो मात्र उसी को अपमानित करने के लिए ही अतः वह भी अपने पल सवार कर स्कूल में आने लगी। सम्भवतः इस इरादे से कि उनकी तुलना में पूरी उतर सके। पर उसके लिए मुसीबत यह थी कि पहरावा उसके शरीर पर खिलता तो क्या उल्टा उसे तमाशा जोकर सा बना देता। साड़ी पहन कर आती तो लगता जैसे कोई पगली स्कूल में आ घुसी हो। और जो कमीज सलवार में आती तो ऐसा मालूम पड़ता जैसे सितार पर गिलाफ चढ़ा दिया गया हो। बाकी रहा केशों का बनाव शृंगार। बेचारी का यह पुरुषार्थ भी व्यर्थ हो जाता जब कि केशों की पूंजी ही उसके पास नाम मात्र की थी।

पहले पहल मिस प्रीतम के मन को खूब सुख और आनन्द मिलता था जब वह मुंह लगने वालियों को आड़े हाथों लेती थी। परन्तु बाद में जब उन लोगों की मिली भगत का नतीजा उसे भुगतना पड़ा तो एकदम तिलमिला ही तो उठी।

शरीर पर उठी हुई फुन्सी में खाज होने पर जब हम उसे खुजलाते

हैं तो हम एक प्रकार का सुख-सा मिलता है। परन्तु बार-बार के खजलाने पर जब वह छोटी-सी फुन्सी फोड़े के रूप में बदल जाती है तो उसकी पीड़ा से हम तिलमिला उठते हैं। इन दिनों कुछ उसी प्रकार की हालत मिस प्रीतम की हो रही थी।

एक से अधिक बार उसने बड़ी बहिन जी के पास जाकर अध्यापिकाओं की शिकायतें कीं और बड़ी बहिन जी उसे विश्वास दिलाती रहीं कि वे उन लोगों से पूछ-ताछ करेंगी। परन्तु न तो कभी किसी से पूछताछ की गई न ही अध्यापिकाओं के बर्ताव में कोई परिवर्तन ही हुआ। बल्कि इसके विपरीत वे लोग और भी बढ़ चढ़ कर मिस प्रीतम को सताने लगीं।

मिस प्रीतम को अब मिहानी महरी की वे सब बातें यथार्थ जान पड़ीं जो वह कहा करती थी कि— 'यह औरत एक नम्बर की चार सौ बीस है।'

कुछ विलक्षण-सी हालत होती जा रही थी मिस प्रीतम की। जितना समय भी वह स्कूल में बिताती मानो फाँसी के तख्ते पर लटकते हुए। इन परिस्थितियों में भला वह अपनी छात्राओं को पढ़ाने लिखाने में क्या दिलचस्पी ले पाती। दूसरी अध्यापिकाएँ जहाँ खाली पीरियड में या आधी छुट्टी के समय आपस में मिलकर हँसती खिलखिलाती दिखाई देतीं वहाँ मिस प्रीतम किसी कोने में खड़ी धरती पर की चिऊँटियाँ गिन रही होती। यदि कभी स्टाफरूम में कोई गोष्ठी आरम्भ होती तो वहाँ जाकर वह ऐसे बनी रहती मानो दुनिया दूर गई हो।

इसी बीच में एक दिन उसे बड़ी बहिन जी का बुलावा आ गया और फिर जब ही वह बड़ी बहिन जी के दफ्तर में पहुँची कि थप्पड़ जैसा एक वाक्य उसकी कनपटी पर आकर पड़ा—

मिस प्रीतम! अब तुम्हारी बहुत ही शिकायतें आने लगी हैं। अब तक तो मैं तेरा लिहाज करती रही, पर अब नहीं सहा जाता। सो तुम्हें वार्निंग दी जाती है कि तुम्हें अपना रवैया ठीक करना होगा।

जहाँ से किसी व्यक्ति का अंगूर पान का आशा हो वहाँ से यदि उसे बलपूर्वक ही गर्दन पकड़ खींचा लिये जायँ तो कैसा मन होगा होगा उसका ? कल की डाँट फटकार ने मिस प्रीतम के मन पर कुछ ऐसा ही प्रभाव डाला। शायद यही कारण था कि आज स्कूल जाने को उसका मन नहीं हो रहा था। यों तो पहले भी वह अपने को बाँध साध कर ही स्कूल जाया करती थी। फिर भी यदि स्कूल के साथ उसकी नाममात्र की उमंग थी तो इसलिए कि वहाँ पर कम-से-कम एक व्यक्ति तो उसका अपना है ही—वही बहिन जी। पर उस व्यक्ति का जो विकराल रूप कल उसे दिखाई दिया इसके फलस्वरूप अब स्कूल उसके लिए नरक कुण्ड के समान बन गया।

जाने का मन हो चाहे न हो, परन्तु उसके लिए जाना आवश्यक था। उसके तन का प्रश्न जो स्कूल के साथ बंधा था। अन्ततः पाँव घसीटते हुए और अपने विचलित मन को थामने का यत्न करते हुए वह जा ही पहुँची।

स्कूल वैसी था वहाँ का सब कुछ पहले जैसा ही था। पर मिस प्रीतम को आज वहाँ का प्रत्येक वस्तु कुछ बासी-बासी—कुछ उदास भरी जान पड़ रही थी। सब किसी के चेहरे उसे कुछ-कुछ विचित्र से लगते थे मानो वह रास्ता भूलकर इस ओर आ निकली हो। क्या अध्यापिकाएँ और क्या छात्राएँ मानो सब किसी ने भौंहें माथे पर चढ़ा ली हों और वे सब मिलकर उसकी खिल्ली उड़ा रही हों।

वह कक्षा में प्रविष्ट हुई। पठन-पाठन का क्रम आरम्भ हुआ। पर उसका मन आज न जाने कहाँ-कहाँ उड़ रहा था। सहसा बाहर से

गुजरती हुई किसी अध्यापिका की आवाज उसके कानों में टकराई — इक्के की दुक्की।

पहली बार तो उसने इस ओर कुछ अधिक ध्यान न दिया— परन्तु उसके बाद जब थोड़ी थोड़ी देर में वही इक्के का दुक्का उसे सुनाई देने लगा तो उसे समझने में देर न लगी कि यह शब्द उसी को सुनाने के लिए उचारा जा रहा है। साथ ही इन शब्दों का अर्थ भी उसकी समझ में आ गया। इक्के का दुक्का का मतलब है बाद का किया हुआ व्यक्ति। जो ताश में इक्के का दुक्का हो फालतू पत्ता समझ कर खेलते समय प्राय अलग करके रख दिया जाता है।

लड़कियों को पाठ पढ़ाते पढ़ाते मिस प्रीतम आग बबूला होकर सोच रही थी— तो क्या यह एक नई उपाधि उन लोगों ने मुझे प्रदान की है?

अक्ल का तकाजा था कि और बातों की तरह मिस प्रीतम इस बात को भी जहर का घूंट समझ कर पी जाती। जिससे बात आगे बढ़ने न पाती। चार दिन दस दिन के बाद वे लोग मिस प्रीतम के इस उपनाम को त्याग देते। परन्तु मिस प्रीतम भी क्या करती घायल अंग पर कोई कहां तक चोट सहन करेगा और फिर जब कि मिस प्रीतम का कोई शारीरिक अंग नहीं बल्कि उसका दिल घायल हो चुका था। अतः इसका प्रतिक्रम वही हुआ जो होना चाहिए था।

उस समय मिस प्रीतम एक लड़की की लिखावट का संशोधन कर रही थी। इससे जब उपर्युक्त बात उसे एक से अधिक बार सुनाई दी की बेचारी नहीं सुना पर उसका क्रोध बरस पड़ा। उसने आव देखा न ताव और तड़ातड़ लड़की पर चांटों की बौछार शुरू कर दी और इतने जोर से कि लड़की मरणासन्न हो उठी।

लड़की इतने जोर जोर से चिल्लाने लगी कि उसकी आवाज स्कूल भर में गूंजा और देखते ही देखते स्कूल में एक हंगामा सा मच गया। एक के बाद दूसरी दूसरी के बाद तीसरी सभी अध्यापिकाएँ

कलाम रूप में आ धमी। किसी ने बच्ची को उठाया कोई उसके गालों को सहलाने लगा और कोई मिस प्रीतम की ओर रक्तिम आँखों से ताकने लगा।

बजाय इसके कि मिस प्रीतम अपनी भूल पर पश्चाताप करती, वह लड़कों की ओर से हट कर अध्यापिकाओं पर बरसने लग गई—

यहाँ क्या लेने आई हो तुम लोग—निकल जाओ मेरे कमरे से नहीं तो वह गत बनाऊँगी कि नानी याद आ जायगी। अध्यापिकाओं ने मिस प्रीतम की यह सब बात सुनी और फिर बाहर निकल कर बड़ी बहिन जी के पास जा पहुँची। जिस पर बड़ी बहिन जी ने तत्क्षण मिस प्रीतम को बुलवाया और तपे हुए स्वर में उस कहने लगी—

मिस प्रीतम! यह क्या हो रहा है? कल की मेरी नसीहतों का क्या यही असर हुआ तुम पर? शाम हुआ को बच तो नहीं खाया है तुमने?

इससे पहले कि उत्तर में मिस प्रीतम कुछ बोलती उधर से वही पिटी हुई लड़की दहाड़ें मारते हुए बड़ी बहिन जी के सामने उपस्थित हुई।

बड़ी बहिन जी ने एक बार लड़की की ओर ताका और फिर आँखों ही आँखों द्वारा मिस प्रीतम पर विष वमन करती हुए बोला—

इधर देख री बड़ी नवाबजादी! यहाँ तू नौकरी करने आई है या बच्चियों का खून करने को। शर्म हो तो चुल्लू भर पानी में डूब मरे।

खड़ी खड़ी मिस प्रीतम को जस काठ मार गया। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। कानों में साँय साँय हो रहा थी और आँखों आगे तारे उड़ रहे थे।

तभी उसने और सुना— दूर हो जा मेरी आँखों आगे से।

लड़खड़ाते हुए और दीवार का सहारा लेते हुए मिस प्रीतम कमरे से बाहर निकल गई और फिर स्कूल के अहाते से भी बाहर।

किसी प्रकार मिस प्रीतम घर तक जा ही पहुंची और बिना गिरते पड़ते व । जाते ही वह खाट पर औंधे मुह पड़ गई और पड़े पड़े मन में सोचने लगी— बस अब मेरी नौकरी गई । इसके साथ ही भविष्य के बारे में कई प्रकार के भयानक दृश्य उसकी आंखों आगे घूमने लगे । अब वह क्या करेगी कहां जायगी और अपने जीवन का शेष भाग किस प्रकार व्यतीत करेगी ? बहुत देर तक वह इसी प्रकार के कष्टप्रद उतारों चढ़ावों में डूबते उतरते चली गई ।

थोडी देर बाद वह उठ कर बैठ गई और अपने आपको संभालते हुए उसने निश्चय किया कि जब उसे स्कूल से निकलना ही है तो बजाए इसके कि उसे डिसमिस किया जाए क्यों न वह स्वयं ही स्तीफा लिख कर कल बड़ी बहिन जी की मेज पर जा रखे ।

थोडी देर बाद उसके इस विचार ने एक और करवट ली ।

नहीं ऐसा नहीं । इससे तो यह अच्छा होगा कि कल जाकर बड़ी बहन जी के पाँव पकड़ लूं और गिड़गिड़ाकर क्षमा याचना करूं । परन्तु इसके साथ ही उसे एक और बात का भय होने लगा कि यदि उसे क्षमा प्रार्थना का अवसर ही नहीं मिला यदि स्कूल में प्रवेश करते ही घोषणा कर दी गई तो ? और या प्रवेश करने से भी पहले उसके लिये डिसमिस की घोषणा कर दी गई तब ?

× × ×

दूसरे दिन यथा समय वह स्कूल पहुंची । भले ही कल जब बड़ी बहन जी ने उसे कह दिया था कि दूर हो जा मेरी आंखों के आगे से तो इस का अर्थ डिसमिस के अतिरिक्त और कुछ नहीं था फिर भी निश्चित

का पालन करते हुए तब तक काम पर हाजिर होना उसके लिए आवश्यक था जब तक कि लिखित रूप में उसके लिए ऐसा हुक्म जारी न हो जाय।

स्कूल जाकर उसकी यह धारणा निर्मूल सिद्ध हुई कि वहाँ जाते ही उस चपरासिन द्वारा हिडमिस्ट्रेस का लिखित आर्डर थमा दिया जायगा ऐसा कुछ नहीं हुआ, न ही बड़ी बहन जी की ओर से कोई बुलावा आया। अत पूर्ववत ही प्रात प्रार्थना के बाद उसने अपनी क्लास ली। क्लासरूम में जाने पर उसे मालूम पड़ा कि वह लड़की जिस दिन उसने पीटा था गैरहाजिर था।

सहसा उस चपरासिन दिखाई दी जिसने आते ही उस कहा बड़ी बहन जी किसी आवश्यक काम से गई हैं और उनकी अनुपस्थिति में काम चलाने के लिए स्टाफ रूम में अध्यापिकाओं की मीटिंग हो रही है। जिसमें आप को भी बुलाया है।'

मानो बकरी को कसाई का डर। उसे जाने के स्थान पर भड़िया के झुंड में जाना पड़ गया परन्तु आज्ञा का पालन करना तो आवश्यक था अत मिस प्रीतम टूटे मन से वहाँ जा पहुँची और शांत हो एक खाली कुर्सी पर बैठ गई।

गोष्ठी का कार्यक्रम कब आरम्भ हुआ और कब समाप्त हुआ मिस प्रीतम को कुछ भी भान नहीं हो पाया। वह कुर्सी पर बैठी-बैठी अपने ही विचारों के बहाव में बहते हुए न जाने कहाँ-कहाँ डूबता उतरता चला गई। इसके दौरान जब जब भी किसी अध्यापिका ने उससे कुछ कहा या कुछ पूछा तो उत्तर में मिस प्रीतम ने या तो सिर हिला दिया और या सिर हाँ न की तरह उत्तर देकर पीछा छुड़ा लिया।

न जाने आज कैसी धुन सवार थी मिस प्रीतम पर कि अध्यापिकाओं द्वारा हजार छेड़ छाड़ करने पर भी उसकी मौन समाधि टूटने में नहीं आई। यहाँ तक कि गोष्ठी की समाप्ति पर जब सब अध्यापिकाएँ स्टाफ-रूम से बाहर चली गई तब भी वह बैठी ही मौनी महाराज बनी बैठी

रही न हिली न डली।

इधर मिस प्रीतम स्टाफ रूम में ज्यों की त्यों बैठी रही तो उधर अध्यापिकाओं के लिए मानो बिल्ली भागो छिकवा टूटा वाली बात बन गई थी। आज कोई वह्नि जी यहाँ पर नहीं था। अब मिस प्रीतम के साथ छेड़छाड़ करके मन बहलाने का यह स्वर्ण अवसर था उनके लिये।

बाहर आकर के सब मिस प्रीतम के आने की प्रतीक्षा करने लगी। परन्तु लम्बी प्रतीक्षा के बाद भी जब उनका मनोरथ सफल नहीं हुआ तो उनमें से सबसे छोटी उम्र की अध्यापिका ने उनसे पूछा मैं जाकर बुला लाऊँ उसे ? और थोड़ी बहुत आपत्ति के बाद अन्त में उसे मिस प्रीतम के पास भेज ही दिया गया।

भीतर जाकर प्रमलता ने देखा कि मिस प्रीतम कुर्सी पर दोनों पाँव रखे और घुटनों पर सिर टिकाये बैठी है और बुड़बुड़ाये चली जा रही है।

तब प्रेमलता ने उसके दोनों कंधों को भकझोरते हुए कहा— क्या बात है मिस प्रीतम ! यह किससे लड़ रही हो ? कमरे में तो कोई दूसरा दिखाई नहीं दे रहा है। फिर यह अला बला किसे सुनाये चली जा रही हो ?

मानो किसी ने सोई हुई साँपिनी पर पैर रख दिया हो। मिस प्रीतम कड़ककर बोल उठी—

तेरे खसम को। भाग यहाँ से मुँहझौंसी। तू कौन होती है मुझसे पूछने वाली।

उत्तर में प्रमलता बड़ी छेड़छाड़ के रंग में बोला— अरे क्या हो गया आज तुम्हें मिस प्रीतम जो राह चलतों से लड़ाई मोल लेती हो। मैंने तो यों ही पूछा कि

प्रमलता की बात समाप्त भी नहीं हो पाई थी कि सोई हुई साँपिनी उछल कर फुफकार उठी हो तो भी पड़ा—

जी हाँ मैं पागल जो ठहरी और तुम सब ठहरी बड़ी सलीके

यारी—बड़े नवाबों की रखेलियाँ।

ज्यों ज्यों मिस प्रीतम आपे से बाहर होती जाती। प्रेमलता के स्वाद में वृद्धि होती जा रही थी। उसने कुर्सी घसीटकर उसके साथ सटा ली और उसका हाथ पकड़ते हुए बोली—मिस प्रीतम! सच सच बताओ आज किसी से लड़ कर आई हो?

मिस प्रीतम के क्रोध की भट्ठी में ईंधन पड़ गया—मैं यह सब भी कह देती हूँ। मुझे सब मालूम है जो मेरे विरुद्ध साजिश करती रहती हो तुम लोग। जाकर कह दे अपनी उन मौसियों फूफियों से। मैं नहीं डरती तुम लोगों की इन शरारतों से। और यह भी कह देना कि प्रीतम अगर तुम सबसे गिन गिनकर बदला न ले तो अपने बाप की नहीं।

और बोलते बोलते मिस प्रीतम हाँफने लग गई।

प्रेमलता के आनन्द की सीमा नहीं रही। वह खिलखिलाकर हँसते हुए बोली—सच ही तुम तो इट की दुलरी हो मिस प्रीतम।

फिर क्या था। मिस प्रीतम ने एक बारगी अपना सन्तुलन खो दिया और पागलपन से प्रेमलता पर झपट पड़ी। उसके सिर के बाल दोनों मुट्ठियों में भरकर उखाड़ डाले। उसके गालों पर माथे पर नाखूनों द्वारा रंगोली बना डाली और इतने पर ही सन्तोष न करते हुए उस पर थप्पड़ों की बौछार शुरू कर दी। साथ ही गला फाड़ फाड़कर उसे सब बातें सुनाती चली गई।

इधर मिस प्रीतम का दहाड़ना उधर प्रेमलता का चीखना-चिल्लाना। परन्तु थोड़ी ही देर में सब अध्यापिकाएँ कमरे में आ गयीं और पूरे बल का प्रयोग करते हुए उन्होंने मिस प्रीतम के चंगुल से प्रेमलता को मुक्त किया। यदि उनके पहुँचने में दो चार मिनट की देर हो जाती तो सम्भव था कि प्रेमलता को अस्पताल में पहुँचाने तक की नौबत आ जाती।

मिस प्रीतम पर एक बार जो क्रोध का भूत सवार हुआ कि फिर उतरने का नाम नहीं। ज्यों ही प्रेमलता उसकी बगल से छूटी कि सब किसी को गालियाँ सुनाते हुए वह बन्दूक की गोली की तरह भागकर

कमरे से और फिर स्कूल के अहाते से बाहर निकल गई। उसके उग्र रूप को देखते हुए किसी की भी उसे रोकने पकड़ने का साहस न हुआ।

मामला बिगड़ता देख कर सब अध्यापिकाओं को हुना मज़ाक भूल गया। उन बेचारियों ने तो बड़ी का शुगन मनाने के लिए यह सब सेट करवाया था। पर यहाँ उल्टा लेने के देने पड़ गए उन्हें। यहाँ तो उनके चेहरों पर से हास्य उड़ कर इसी पर रहा था और वहाँ यह हाल कि सब की आँखों में खून उतर आया। इतना भारी हमला उनकी एक सहकारिणी पर!

प्रमलता कुछ समझ चुकी थी कोई अधिक नहीं आई थी। केवल चेहरे पर की खरोंचें उसे पीड़ित कर रही थीं। पर इतने में कष्ट पर वह अपनी साथिनों को शोक या कमजोर नहीं दिखाना चाहती थी और फिर उस स्थिति में जब कि वह बड़ी बड़ी डींगें हाँकते हुए मिस प्रीतम को नीचा दिखाने के लिए आई थी।

कमरे का वातावरण एक दम गंभीर हो गया और इस गम्भीरता में से वाद-विवाद असहयोग हड़ताल और सत्याग्रह इत्यादि की योजनाएँ बननी आरम्भ हो गई।

अन्तत एक प्रार्थना पत्र बड़ी बहिन जी के पास भेजने के लिए लिया गया। जिसके अन्तर्गत माँग की गई कि मिस प्रीतम जिसने इतना भारी अपमान किया है उसके विरुद्ध भरपूर कार्यवाही की जाए जिसके अनुरूप या तो मिस प्रीतम को डिसमिस किया जाए या वह इन्दु बाला सहित सब अध्यापिकाओं से क्षमा माँगें। और यदि ऐसा नहीं किया जाएगा तो सब अध्यापिकाएँ प्रोटेस्ट के तौर पर हड़ताल कर देंगी।

क्रोध को चाण्डाल की संज्ञा दी जाती है। चाण्डाल के अतिरिक्त इसे भूत प्रेत अथवा हिंसक पशु भी माना जाता है। क्रोध के आवेग में मनुष्य ऐसा कितना ही कुछ कर गुजरता है जो उसे चाण्डाल भूत प्रेत या हिंसक पशु-सा बना देता है।

स्कूल से निकलकर घर पहुंचने में मिस प्रीतम को अधिक से अधिक कितना समय लगा होगा? यही पन्द्रह बीस मिनट और इन पन्द्रह-बीस मिनटों में मानो उसे अपने अन्दर में वर्षों जितना परिवर्तन दिखाई देने लगा।

बिना मुँह हाथ धोये, बिना कपड़े बदले और बिना खाये पीये जो चारपाई पर पड़ी तो दोपहर से सन्ध्या कर दी उसने। आज जैसी बुरी हालत में उसने अपने को इससे पहले कभी नहीं पाया था, बस हां औंधे मुंह पड़ी पड़ी वह अपने आप पर एक प्रकार से समीक्षा किये चली जा रही थी। आज उसे इतना क्रोध दूसरों पर नहीं आ रहा था जितना अपने आप पर।

पड़े-पड़े वह उसी अपने स्थाई स्वभावानुसार मुंह में बुदबुदा रही थी—

"यह मुझे क्या होता जा रहा है दिन दिन? क्या मैं इतनी मुँहफट, इतनी हिंसक हो गई हूं? कौन कयामत आ गई थी मगर उसने मुझे मजाक कर दी? पहले भी तो यह सब होता ही रहता था मेरे साथ शायद मेरे दिमाग में कुछ खराबी हो गई है—शायद मुझमें पागल पन के चिन्ह प्रगट होते जा रहे हैं नहीं तो और क्या। इस तरह जो मैं

उस पर झपट पड़ी—उसे इतने जोर से पीटने—गराने लग गई। अगर उसकी व हमदर्दने न आ पहुँचती तो सम्भव था कि मैं उस जान से ही मार डालती। हे भगवान! मुझे क्या हो गया? मैं कहाँ हुई जा रही हूँ? मेरा क्या होगा मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ?

मिस प्रीतम के उद्गारों की फुलझड़ी पर चल रही गाड़ी को सहसा ब्रेक लग गई और वह सोचने हुए उठकर बैठ गई—

अरे मैं इतनी जोर जोर से क्यों बोल रही हूँ जैसे छत को सिर पर उठा लिया हो। किसे सुना रही हूँ यह सब बातें? क्या यहाँ पर सुनने वाला कोई है? पहले भी तो यह मेरी आदत थी ही पर यह एक दम इतनी बढ़ गई है तो जरूर मेरा दिमाग खराब हो गया है।

तब मिस प्रीतम का मन होने लगा कि जिस प्रकार आज वह प्रेमलता पर झपट पड़ी थी वैसे ही अपने पर झपट पड़े। दोनों हाथों से सिर के बाल नोच डाले। अपने चेहरे को नोच डाले। अपना गला घोट डाले। यहाँ तक कि दोनों मुट्ठियों में उसने अपने सिर के बालों को भर लिया परन्तु इसके आगे नहीं बढ़ पाई मानो उसके अन्तर में बैठी हुई किसी दूसरी मिस प्रीतम ने उसकी दोनों कलाइयाँ कस कर पकड़ ली यह पुकारते हुए अरे ओ बेवकूफ! यह क्या करने लगी? अक्ल को सिरे से ही खा बैठी है क्या?

इसी बीच में मिस प्रीतम को दरवाजे के पट खुलने की आवाज सुनाई दी और साथ ही कमरे में का अंधेरा उजाले में बदल गया। सिर ऊपर उठाकर जो उसने ताका तो सामने महरी खड़ी कह रही थी—क्या बात है बहिन जी जो अंधेरे में ही या पड़ी है। न दिया न बत्ती।

निहालो इधर कई दिन से उसके घर पर नहीं आई थी और उसका न आना मिस प्रीतम की परेशानी में और भी वृद्धि कर गया था। पहले यदि अधिक नहीं तो अस्थाई तौर पर ही मिस प्रीतम का दिन बहला रहता जब तक निहालो इसके पास रहती थी। अब उसका यह दिन बहलावा भी जाता रहा।

अरे निहालो तुम ?"

'जी हाँ, मैं हू वहिन जी।

'कहाँ रही ी इतने दिन ? क्या रास्ता भूल गयी थी ?"

'क्या बताऊ वहिन जी एक बार छोड़ सात बार आनी। पर क्या करती ववस था।

क्या हुआ ?'

कछ न पुछिये वहिन जा यो तो नौकरी गुलामी का ही दूसरा नाम है पर इस राक्षसी की नौकरा ? भगवान दुश्मन दूती को भी नसीब न करे।

इसी वाच म, उपरोक्त बातें करते हुए निहालो ने वत्ती जला दी। तब तक मिस प्रीतम अपने को समाल चुकी थी। बत्ती जलाने के बाद निहालो आकर उसके सामने बठ गई और उदास मुद्रा म बोली— उसने मुझे नौकरी स हटा दिया वहिन जी।

अरे सच है।

'हाँ वहिन जी।' और फिर निहालो ने इस नौकर तल एक लम्बी वार्ता सुनानी आरम्भ कर दी। मिस प्रीतम दत्तचित होकर उसकी करुण कथा सुन रही थी और सुनते हुए बीच-बीच मे वही पागलपन-सा उसे अपने अन्तर म उठता जान पड़न लगा। परन्तु समूची शक्ति का प्रयोग करते हुए वह अपने को सन्तुलित रखने का प्रयास कर रही था। फिर भी कुछ-न कुछ ऐस वाक्य उसके मु ह स फूट ही पड़, जिनम पागलपन का अंश विद्यमान था—

तो उस हरामजादी न इसी बात का बदला लिया तुमस कि तू प्रीतम के पास इतनी देर क्या ठहरा करती है ? परमात्मा सत्यानाश करे इस कुतिया का। मेरा बस चले तो रातोंरात जाकर उसका काम तमाम कर डालूं। मैं मैं और यहाँ पहुँचने पर मिस प्रीतम ने मानो अपनी जबान को मरोड़कर बोलने से बन्द कर लिया।

निहालो उसके आवेग को कम करने के अभिप्राय से कह रही थी—कोई बात नहीं बहिन जी। आप नाहक मे इतना रंज मत कीजिए। जिस भगवान ने चोंच दी है वह दाना भी देगा। बनने चून्ड की नौकरी हो तो थी कोई थानेदारी थोड़े ही था जो छिन जाने पर आफत आ जाएगी एक द्वार बधा सौ द्वार खुले। सच पूछिए तो मैं स्वयं ही इस नौकरी से बेजार थी। कई बार मुंह फाड़कर उसे कहा भी कि मुझसे नहीं हर रोज तेरे जूते खाए जाते—भाड़ मे जाए तेरा नौकरी और साथ में तू। पर जब जब भी मैंने चले जाने की बात कही कि बीबी रानी तन गई न्मिुए बहाने और हाथ जोड़ने कि निहालो! तू तो मेरी बहिनों जैसी है। अगर तू चली जायेगी तो मेरा जीना दूभर हो उठेगा। बस बहिन जी मुझ किस बात की परवाह है भला। भगवान बड़ी-बड़ी उम्र करें बेटा हाथों छाया करता है मेरे सिर पर बहू बलायें लेती है मेरा और पौत्र पौत्रियाँ मुझ पर जान छिड़कते हैं। यह तो मैं ही थी जिसने इस कलमुही के साथ इतने साल गुजार दिए। मेरी जगह यदि और कोई होती तो चार दिन भी न टिक पाती। पर यहाँ तो हसाए का नाम न रुलाए का नाम है।

निहालो की इस वार्ता को सुनने मे मिस प्रीतम इतनी तल्लीन हो गई कि थोड़ी देर के लिए उसे अपना दुःख दर्द भूल सा गया।

उधर निहालो अपना जीवन वृतान्त सुनाये चली जा रही थी—

अरे मैं तो कब की चली गई होती बहिन जी पर इसी बात की लाज मारती थी कि जहाँ इतने साल गुजार दिए हैं वहाँ कुछ दिन और सही! मुझ अपनी नौकरी चले जाने का तो जरा भी दुःख नहीं है बल्कि उल्टी प्रसन्नता ही हुई कि भला हुआ मेरा चर्खा टूटा प्राण कष्ट से छूटे। पर जैसे ही पता चला कि उस हत्यारी ने आपकी बेइज्जती की है तो मैं तो सुन कर ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गई। आप ने अभी इसका देखा ही क्या है बहिन जी मैं तो बहुत दिनों से इसके भेद पाये हुए हूं। इसकी एक एक करतूत सुनाऊं तो आपके पैरों तले से

धरती खिसकने लग जाये। तभी तो मैंने सोचा कि जाने से पहले आप को जरा चौकस कर जाऊँ कि इससे बच कर रहना। यह तो गन्दगी की नाली है गन्दगी का। जो राह चलतों के कपड़े भ्रष्ट कर डालता है।"

मिस प्रीतम गहरी निराशा में बोली— मुझे क्या लेना देना है निहालो इन बातों से चाहे अभी तक मुझे नौकरी से जवाब नहीं मिला पर देखती हूँ कि अब यहाँ पर मेरा ठिकाना नहीं। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों मुझे इस नौकरी से हाथ धोने हो पड़ेंगे।

निहालो कुछ उपदेश के लहजे में बोली— आप की नौकरी कोई नहीं छीन सकता। इस बात से निश्चिन्त रहिये बहन जी। आप के साथ जो छेड़ छाड़ चल रहा है सब सुन चुकी हूँ और उसी चुड़ैल की जबान से। कुछ स्वभाव ही ऐसा है उसका कि उसके पेट में कोई बात तब तक टिक नहीं सकती जब तक मेरे सामने उसे उगल न दे—बात अच्छी हो चाहे बुरी।

मिस प्रीतम कुछ उत्तेजित हो कर बोली—'क्या कहा, मुझे नौकरी से कोई नहीं हटा सकता? पर निहालो! शायद तुम नहीं जानती कि मामला कहाँ तक बढ़ चुका है।

निहालो उसी दृढ़ता से बोली— मामला चाहे कितना भी क्यों न बढ़ गया हो बहिन जी पर मेरी बात का विश्वास करिये कि आपको नौकरी से हटा पाना उनके बस का रोग नहीं है।

मिस प्रीतम की उत्सुकता और भी बढ़ गई। उसने पूछा— यह कैसे कह रही है निहालो कि मुझे नौकरी से हटा पाना उनके बस का रोग नहीं है।

'ठीक ही कह रही हूँ बहिन जी। और कहते-कहते निहालो उठ खड़ी हुई और दरवाजा बंद करके चिटकनी चढ़ाकर फिर से अपनी जगह पर आ बैठी—'बात की हुई दूर चली जाती है बहिन जी। पर अब तो मुझे यहाँ से चली ही जाना है तो डर किस बात का। सोचती

हू कि उस भेद को भी खोल ही दूं जिसे मैंने आज तक आप से छिपाए रखा है। पर पहले एक बात पूछ रही हूं कि इस स्कूल पर जितना खर्च होता है क्या आपने ध्यान में कभी सोचा कि वह पूरा किया जाता है?

मिस प्रीतम बोली— इसी बात को सोच कर तो निहालो कभी कभी मुझे भी आश्चर्य होता है कि फीस की आमदनी से तो इस नन्हे दिन के खर्चे का भी पूरा होता नहीं। और यह भी सुनती हू कि स्कूल को न तो कोई सरकारी एड मिलती है न ही और किसी किस्म की सहायता।

तो सुनिए मुझसे। निहालो जरा झुक कर बोली— यह सब खर्च चलता तो आपके मामू साहिब की कृपा से।

क्या कहा! मिस प्रीतम को मानो किसी ने सोते से जगा दिया हो— यह तुम क्या कह रही हो?

सच कह रही हू और भगवान की साक्षी देकर कहती हू कि इतना ही नहीं कि स्कूल का सारा खर्च ही आपके मामू देते हैं बल्कि यह स्कूल का इन्तजाम उन्होंने ही चला रखा है।

सुनकर सकते में आ गई मिस प्रीतम। उधर निहालो इस रहस्य को उदघाटित किए जा रही थी—

बहुत लम्बी वार्ता है बहिन जी। जिसे सुनकर आप हैरान हो रह जायेंगी। इस औरत के साथ आपके मामू का बहुत पुराना नाता मेल चला आ रहा है। यह एक गरीब आदमी से ब्याही गई थी और ब्याह के बाद यह अपने पति को छोड़ कर आपके मामू की रखैल बन कर रहने लगी। यह तब की बात है जब आपके मामू कुंवारा था। बाद में जब उनकी शादी हो गई और फिर जब उसकी पत्नी को इन बातों का पता चल गया तो उनके घर में दिन रात कलह होने लगा। अन्त में ईश्वरदास ने एक ऐसा ढंग सोच निकाला जिससे सांप भी मर जाय और लाठी भी बच जाय उसने भीतर ही भीतर

दाखिल करके यहाँ पर बस यह स्कूल का मकान खरीद लिया और फिर इसी मकान के निचले भाग में स्कूल खुलवा दिया। यह तो आप जानती ही है कि आपके मामू के पास धन की कमी नहीं है—लाखों में खेलते हैं। अपनी इस बहन के लिए अगर उन्होंने पचहत्तर हजार का मकान खरीदना पड़ा था और रुपये महीना स्कूल चलाने के लिए खर्च करने पड़ते हैं तो यह उनके बाएँ हाथ का काम था।

इसके आगे निहालो ने इस रहस्य को भी मिस प्रीतम के सामने खोल दिया कि मिसेज़ आनन्द पर यह बड़ा रोब था कि मिस प्रीतम को नौकर का कोई ज़रूरत नहीं है। बचपन में माँ-बाप के मर जाने पर अपनी नानी के घर में रहना दूभर हो उस दिन और न अस्पताल की पत्नी को तो उनने मिस प्रीतम को अभिभाविका के रूप में अपनी इस स्त्री के पास भेज दिया। और इस मनोरथ के लिए अतिरिक्त सौ रुपये महीना भी इन को बाँधना किया। जिसका मतलब है कि यदि वह मिस प्रीतम को नौकरी में इतना हूँ तो एक तो उन्हें रुपये महीने से हाथ धोना पड़ेगा, दूसरे अपने उन प्रभाव के शाप का शिकार बनना पड़ेगा।

इन रहस्यमयी बातों को सुनना था कि मिस प्रीतम की आँखों के आगे से मानो एक पर्दा हट गया। फिर भी यदि इसमें कुछ कमी रह गई थी तो उसे निहालो के इन शब्दों ने पूरा कर दिया—

और बहिन जी क्या आप जानती हैं कि आपकी मामी को दिन के दौरे क्यों पड़ने लगे हैं? इसके आगे निहालो ने पूरे विस्तार से इन दौरों का कारण मिस प्रीतम को कह सुनाया। ... और दाल और यह भी कहा कि कल वह कुल्लू कहाँ गई थी। उसी ... आपके मामू के यहाँ जाकर आपकी शिकायत लगाई।

सुन कर मिस प्रीतम का माथा ठनका। वह घबरा कर बोली—

'फिर तो निहालो, मेरा यहाँ टिकना और भी मुश्किल है।

'चिन्ता मत करिये बहिन जी। आपके मामू इतना मूर्ख नहीं

है जो उस कह देगा कि उसकी भानजी को निकाल बाहर करे। उसे अपनी इज्जत का भी तो डर है। उस यह भी तो गवारा है कि बात अगर फैल गई तो नया सिरे से पुराना चरचा चलने लगेगी। मेरे विचार से होगा यही कि इस कुलटी के बनी अपना मजा को बना बड़ा कर सुनाने पर इस एक अच्छा खासी रकम और मिल जायगी। आपके मामू का दब्बू स्वभाव मुझसे छुपा नहीं है।

रात भाग रही थी और निहालो का जीना था। यह इतना कह कर वह उठ खड़ी हुई।

तो आपको घबराने की जरूरत नहीं है बहन जी और यह भी कहना चाहती हूं कि इस तरह दिल छोटा करने से काम नहीं चलेगा। मैं समझ रही हूं आपके दिल की हालत का। सो एक बात कह देती हूं कि इस तरह दब्बू नहीं बनिये। अन्दर-ही भीतर कब तक आप अपना खून पीती चली जायेंगी? मेरे कहने का मतलब यह है कि खूब डट कर मुसीबत का मुकाबला कीजिए।

और बाहर निकलने से पहले निहालो इतनी बात और भी कहती गई— जरा कुछ इस धर्म की ओर भी रुचि लिया कीजिए बहिन जी। सवेरे दो घड़ी के लिए मन्दिर चला जाया कीजिए। यहां से निकट ही तो है— आवाज मारे पहुंचती है।

मिस प्रीतम का रोम-रोम इस समय निहालो के प्रति आभार प्रकट कर रहा था। बोली— अच्छा निहालो आज से मैं तेरी ही शिक्षा पर चलूंगी। और उठ कर उसने निहालो को अपनी बांहों में भर कर अपने आभार को प्रगट किया।

रात न्हे मिन पोउम बहुत कम सो पाइ थी परन्तु तिहारी का चेतावनी उन मा" था, जो उमन जात समय उम दी था और जिसक अनुसार उसन प्रतिन्नि मन्दिर जाने का निश्चय कर लिया था। अत वह प्रात काल मन्दिर जा पहुची।

मन्दिर म खासी भीड थी। ढोलक मंजीरा इत्यादि की गूंज म मगन गाय जा रहे थे हाल नमरे म श्रद्धालु गण उत्तरोत्तर एकत्र हो रहे थ एक ओर स्त्रियाँ और दूसरी ओर पुरुष बड भगता का रसा स्वादन कर रहे थ।

मिस प्राउन स्त्रियों के साथ बग नरमर यत्न कर रही थी कि उसका मन एकाग्र हो। परन्तु उसका यह यत्न सफल नहीं हो पा रहा था। तिहारी की बात मन म उमड़ रही थी और मोहन का प्रयास उसकी आँखों म घूम रहा था, जिसके कारण रह-रहकर आँसू उमड़ आते और उनकी आँखें नाहक ही गीली हो जातीं।

इसी मध्य मन्दिर प्रांगण की स्त्रियाँ आने लगीं और उसकी आँखों म उमड़ रहे थे। तिहारी के धन्यवाद उसके कानों म कीर्तन के बजाए कुछ और ही सुना रहा था—

अरे तू ना मोहन का छोकरी और तेरी इतना मजाल मच्छा ... निकला अब मैं इना भूत दा भी उस इनका का विश्वास नहीं करूंगी ... ।

तिहारी ... उसने मजूर अपनी माँ ने आँखें खोलीं और ... रास्ते की ओर चल दीं—

मैं तो तुमरे दरस की प्यासी।
मैं तो तुमरे दरस की प्यासी।
जिसको ऋषि मुनि ध्यान धरत हैं
योगी और सन्यासी
प्रभु जी मैं तो तुमरे दरस की प्यासी।
दाता जी मैं तो तुमरे दरस की प्यासी

सुनते-सुनते मिस प्रीतम की आखों में कुछ खुमार सा छाने लगा और इसी मस्ती में उसने भक्त को देखा। भक्त अपनी मुंदी हुई आंखों द्वारा वह देख रही थी छोटा सा बालक ... बड़ा सा ढोल बज रहा था। ढोल में से आवाज आ रही है—

करमो ! लौट आई सगरर
करमो लौट आइ सगरर ।

कहां गया कीर्तन का रसास्वादन और किधर विलुप्त हो गया मंदिर का वातावरण। मिस प्रीतम का मन न जाने कहां कहां पर मंडराय चला जा रहा था।

तब अनायास ही उसे स्वप्न जाने की याद ने झकझोर सा डाला। बाहें ऊपर उठाकर और पूरा मुंह खोल जम्हाई लेते हुए वह इधर उधर ताकी। सतसंगी और सतसंगन धीरे धीरे उठकर बाहर निकल जा रहे थे। उधर कथा वाचक महाशय अपनी पोथी को रुमाल में लपेटते हुए उच्चारण कर रहे थे।

कथा समाप्त होत है।
सुनो वीर हनुमान।
श्री राम लक्ष्मण जानकी
सदा करो कल्याण।

दूसरों की देखा देखी मिस प्रीतम भी उठ खड़ी हुई और नत मस्तिष्क मंच के सम्मुख प्रणाम करते हुए मंदिर से बाहर निकली।

रास्ता कुछ तंग था और भीड़-भाड़ बहुत अधिक। जगह-जगह पर छोटी-छोटी दुकानें लगी थीं। कहीं-कहीं पर साधु-सन्त भिक्षा की पुकार कर दानी लोगों को मोक्ष और कल्याण की निधियाँ मुफ्त बाँटने में लगे थे। कहीं कोई विकलांग व्यक्ति आने-जाने वालों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पुकार रहा था—

दया धर्म का मूल है
नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँड़िये
जब लग घट में प्राण।

इसके थोड़ी देर बाद मिस ब्राउन ने अपने को उसी नरक कुण्ड रूपी स्कूल के मकान के सामने देखा। स्कूल के सामने लगे साइन बोर्ड पर नजर पड़ते ही उनका दिल डूबता सा लग गया। मानो उनका जीवन ही यमराज के दूत उसे पकड़ कर धधकती आग में फेंक देंगे।

सहसा उन विचारों द्वारा कही हुई उन बातों की याद हो आई कि चाहे कुछ भी हो मुख्याध्यापिका उन्हें नौकरी से अलग नहीं कर सकती और यह बात याद आते ही उनके दुबले पतले शरीर में फिर से उत्साह का संचार होने लगा और साहस की आन में उन्होंने इस बात का निश्चय कर लिया कि अन्दर पहुँचकर सबसे पहले उन्हें मुख्याध्यापिका के पास जाना होगा और जाते ही उन्हें उस अपमान की शिकायत के विरुद्ध भरपूर ... में शिकायत करनी होगी। इसके बाद जो कुछ भी होगा देखा जायेगा।

और फिर ब्राउन ने वही किया।

मुख्याध्यापिका मानो उन्हीं की प्रतीक्षा में बैठी थी। सामने रखे हुए रजिस्टर पर से आँखें उठाकर उसने कुछ ... लिया। ... फिर ब्राउन को मार ... और फिर वह ... —'बैठो'।

स्कूल में लड़कियों की छवियाँ खराब होती हैं। उनमें पहले मगर यह मामला ज़्यादा बढ़ा। ऐसा हो तो खतरा और भी बढ़ जायगा। बताओ क्या सलाह है तुम्हारी।

आप का कहना सच है बड़ी बहिन जी। मुझे आप जो कुछ भी करने को कहेंगी वही करने को तैयार हूँ।

तो फिर तुरन्त दाम महा कल्याण महावन पर ही अमल करना चाहिये।'

क्या मतलब बड़ी बहिन जी?

मतलब यही कि तुम अभी जाकर बारी-बारी से उन सबको मिलो और मिन्नत समाजत से कहो कि वे तुम्हें माफ कर दें।

यानी मैं उनसे माफी माँगूँ।

और इसमें हर्ज ही क्या है। जब तुमने कसूर किया है तो माफी तो तुम्हें मागनी ही पड़ेगी।

अन्त में जहर का घूँट पीते हुए मिस ब्राउन ने बड़ी बहिन जी के सामने यही करने का वायदा किया।

शाबाश उनकी पीठ थपथपाते हुए बोली शरीफ लड़कियों को यही सुहाता है। अच्छा तो जाओ और झटपट इस काम को निपटा डालो। और हाँ एक दूसरी बात कहना तो मैं भूल ही गई। वह जो उस लड़की को उस दिन तुमने डाँटा था उसके घर जाकर उसकी माँ से भी क्षमा याचना करना होगा। वे लोग तो उसी दिन थाने जाकर रपट लिखवाने वाले थे। पर मैंने उन्हें समझा बुझाकर ठण्डा किया। अरे पगली! कहीं इस तरह पीटा जाता है? बेचारी मासूम बच्ची को तुमने अधमरी कर डाला! अच्छा जाओ। कहते हुए बड़ी बहिन जी फिर से अपने काम में लग गई।

मिस ब्राउन इस समय एड़ी से लेकर चोटी तक बारूद का पलीता बना हुई थी। उठ कर जब वह कमरे से बाहर हुई तो उसका मन चाह रहा था कि क्षमा माँगने के बजाए वह उन सब को बारी बारी से लगा घाट डाले। इस समय तो इसे वही करना था जैसा उसे आदेश दिया गया था।

यह जादूगरनी कहीं की क्या मुझे नीचा दिखाने के लिए उधार खाये बैठी है ? इससे माफी माँग ? इससे माफी माँग। बस मैं उसके पूत भतीजों का दान करके आई हूँ।

यह मन कुड़कुड़ाहट करती हुई मिस प्रीतम मुख्याध्यापिका के कमरे में से निकलकर अभी चार पाँच पग ही चली थी कि रामप्यारी से उसका सामना हो गया। वस्तुतः रामप्यारी पर मिस प्रीतम को सबसे बढ़कर गुस्सा था। उसके स्थान में कभी दूसरी अध्यापिकाओं को बहकाकर उसके पीछे डाला करती थी।

जैसे ही थोड़ा-सा रास्ता काटकर वह आगे बढ़ी कि रामप्यारी ने यह कहते हुए उसे रोक लिया— क्या बात है मिस प्रीतम ? कोई पाठ कर रही हो क्या ?

मानो धुआँ छोड़ती हुई आग को किसी ने माचिस दिखला दी। बजाय इसके कि उत्तर में मिस प्रीतम पाठ कर रही हूँ या नहीं के बारे में कुछ कहती वह उसी माफीनामे के प्रसंग को खींचकर ले आई—

मुझे तुम से कभी उम्मीद नहीं थी बाबा रानी कि तुम भी उन लड़कियों में मिलकर मेरे खून में हाथ रंगना शुरू कर दोगी। अच्छा अगर माफी मँगवाये बिना तेरे पेट का अफारा नहीं ही उतरने का तो ले और [illegible] के साथ ही मिस प्रीतम ने अपने दोनों हाथ इतने क्रोध से एक दूसरे के साथ भिड़ाये कि उनमें से ताली पटाखे सा छूटने जैसी ध्वनि पैदा हुई। परन्तु उसका अनुमान गलत निकला कि इस प्रकार की क्षमा-याचना रामप्यारी को सन्तुष्ट कर देगी। रामप्यारी कड़ककर बोली—

अरे ! क्या हो गया तुम्हें सवेरे-सवेरे जो राह चलता को काटने आ रही हो । होश तो ठिकाने है तुम्हारी ?

इतना कहने कि मिस प्रीतम अपने तरकश में से पहले के बाद दूसरा तीर निकालती रामप्यारी यह कहते हुए आगे बढ़ गई— कितना घमंड हो गया है इस छोकरी को न बड़े का लिहाज न छोटे का ।

मिस प्रीतम को चाहे रामप्यारी द्वारा भरपूर अपमान प्राप्त हुआ फिर भी उसे कुछ न कुछ सन्तोष ही हुआ कि उसने जी भरकर रामप्यारी पर प्रहार कर डाला है । उसने मन में ठान ली कि इसी प्रकार वह दूसरी अध्यापिकाओं से भी क्षमा माँगेगी । बल्कि इससे भी कहीं बढ़चढ़ कर । तब ही उसके अन्दर की आग बुझ पायेगी ।

उसके तुरन्त बाद मिस प्रीतम का दूसरा शिकार हो गई गुरु देवी से । जो किसी काम अथवा छेड़छाड़ करने के इरादे से मिस प्रीतम की क्लास में आ पहुँची । जिसे देखते ही मिस प्रीतम पढ़ाना भूल गयी और बिना इस बात की परवाह किये कि लड़कियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा वह पंजे झाड़कर गुरुदेवी के पीछे ही तो पड़ गई—

अच्छा, तेरा भी मन नहीं भरेगा माफी मँगवाये बिना ? शायद इसी से यहाँ भागी चली आई हो । पर मैं तो खुद ही तुझे मिलने वाली थी । मुझे सब पता चल गया है कि मेरे विरुद्ध तुम लोग मिलकर क्या-क्या उपद्रव मचाने लगी हो । तो देखूँगी कि तुम लोग मेरा क्या बिगाड़ लेती हो पर क्या करूँ मजबूर हूँ । सो यह लो ।

इस बार पटाखे की आवाज पहले से भी कहीं बढ़ चढ़कर गूँजी । परन्तु गुरुदेवी स्यानी निकली और रामप्यारी की तरह तुर्की बतुर्की उत्तर देने के बजाए वह कान लपेटकर कमरे से बाहर निकल गई ।

दूसरी के बाद तीसरी तीसरी के बाद चौथी के प्रति मिस प्रीतम ने अपने कर्तव्य का पालन कर डाला और एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर । जिसे क्षमा याचना न कहकर विष वमन करना ही कहा जा सकता है मानो मिस प्रीतम इस बात का निश्चय किये हुए हो कि इस क्षमा

की आड में वह उनके विरुद्ध अपना चिर संचित क्रोध निकाल कर हल्की हो गयी। इस समय उसका मस्तिष्क पूर्णतया असन्तुलित हो चुका था। वह क्या कर रही है और उसके किए का क्या परिणाम होगा इससे नितान्त अपरिचित थी वह।

होना तो यह चाहिए था कि इतना विष वमन करने के बाद मिस प्रीतम का मन कुछ हल्का हो जाता उसके तन मन में से उठ रही लपटें कुछ नीची हो जातीं और थोड़ी देर के लिए ऐसा हुआ भी। इसके थोड़ी ही देर के बाद उसका मन पहले से भी अधिक बोझिल हो उठा। उसके दिमाग में पहले यदि हवा भरा हुआ था तो अब उसमें अन्धड़ सा उठने लगा।

छुट्टी का घण्टा बजते न बजते मिस प्रीतम का यह हाल था कि अब यदि कोई अध्यापिका उससे एक बात भी कह दे तो वह उस पर टूट ही पड़ेगी।

केवल एक की छोटी बातों सेवा के प्रति उसने इस विशेष प्रकार की क्षमा याचना का कर्तव्य पालन कर डाला।

ज्यों ही वह स्कूल के अहाते से बाहर हुई कि सहसा प्रमिला जो पीछे पीछे आ रही थी उसके साथ हो ली और बोली।

मिस प्रीतम! आज तो भई तुमने बड़ी ही बहादुरी दिखलाई जो सिरे से ही सबको पछाड़ कर रख दिया।

मिस प्रीतम उसकी बातों पर रुक गई। और रूखे हो बोली—'क्या तुमसे कुछ लेना-देना है जो यों मेरा पीछा किए आ रही है तू?'

प्रमिला पूर्ववत शान्त भाव बना कर बोली— मैं नहीं न तो यों ही चली जा रही थी। मुझे पता चला कि क्लास की लड़कियाँ तुम पर खुश नहीं हैं, उन्हें इस बात का शिकायत है कि तुम उन्हें पढ़ाती कम और पीटती अधिक हो।

पर तुम कौन होती हो मेरे काम में टांग अड़ाने वाली? अगर अपनी इज्जत दरकार है तो अपना रास्ता नापो नहीं तो मेरी जैसी

बुरी कोई न होगा।

अरे मिस प्रीतम ! मैंने तो तुम्हारे ही भले की बात कही है नाराज क्या होती हो।

अच्छा अब समझी मैं मिस प्रीतम और नादगाँव में बोली तुम इसलिए मेरे पीछे लगा चला आ रहा है कि मैंने तुमसे माफी नहीं माँगी है। तो ले और मिस प्रीतम ने कहा हो। सो एक और पगला चला डाला। और इससे पहिले कि प्रभाकर कुछ कहता कि मिस प्रीतम मुँह में न जाने क्या-क्या बुदबुदाते हुए नौ दो ग्यारह हो गई।

अन्त ही बुरी हालत में मिस ग्राहम पर पहुँचा। उस पर इतना भार दूसरों पर नहीं हो रहा था जितना अपने पर। आज जो बनाव वह अध्यापिकाओं के साथ करके आई थी उससे विश्वास था कि वह बनाव ऐसा नहीं है जिसे कोई भी बरदाश्त सहन कर ले। उसे पूरा प्रतिशत विश्वास हो चला था कि नियमों के कथनानुसार उसने गलती की थी। यदि वह कुछ भी हो परन्तु आज की इस घटना के परिणाम स्वरूप अवश्य ही उसे स्कूल से निकाल दिया जायगा। साथ ही वह यह भी सोच रही थी मान लो कि उसे नहीं ही निकाला जाता परन्तु इन परिस्थितियों में क्या वह स्कूल में काम कर पायेगी जब कि वहाँ का वातावरण अब उसके लिए नितान्त प्रतिकूल बन चुका है?

इसके अतिरिक्त उसे एक और बात की भी चिन्ता सता रही थी कि इन परिस्थितियों में यदि वह बाद में फिर भी स्कूल में काम करेगी तो निश्चय ही इसके परिणामस्वरूप वह मिस मेरी के लिए अपना मस्तिष्क का सन्तुलन खो बैठेगी। दूसरे शब्दों में वह पागल हो जायगी और पागलपन की हालत में शायद अपने कपड़े तक फाड़ डालेगी, आवेश में आकर किसी का खून तक कर डालेगी और यह भी सम्भव है कि अपने होश को खोकर किसी दिन वह आत्महत्या ही कर ले।

पहला दिन बीता। फिर दूसरा और फिर तीसरा दिन। जब-जब मिस ग्राहम स्कूल जाने लगती तो उसे लगता कि आज कोई न कोई और अनिष्टकारी घटना घटकर रहेगी। परन्तु कुछ भी ऐसा नहीं हुआ—सब कुछ पूर्ववत् ही चल रहा था। अगर यदि कुछ उसे दिखाई पड़ा तो मात्र इतना ही कि सब अध्यापिकाओं ने उसके साथ जबान खामोशी करके

की माता कसम खा ली। यहाँ तक कि छायाएँ भी—जो नियमानुसार किसी भी प्रत्याशित का साक्षात होने पर हाथ जोड़कर बल्कि जो नमस्ते कहा करती थीं अब उनको नमस्ते कहना तो दूर की बात थ उनसे आँख तक मिलाने की खातिर रह था।

इस परिवर्तन को देखकर अथवा इससे सीखकर मिस प्रीतम का मन हुआ कि वह बन्दिनी जा कर पता लगा कर निश्चय कर। क्योंकि उस दिन उसके लौटते समय बड़ा बन्दिनी ने उसे आश्वासन दिलाया था कि भविष्य में यदि कोई उसके साथ दुर्व्यवहार कर तो वह किशोर के मह लगने की बजाए सीधा उन्हीं के पास चली आया कर। परन्तु इस आश्वासन के होने पर भी मिस प्रीतम का मन उन्हीं बहिन जी के सामने जाने का साहस नहीं कर पाया।

मनुष्य के लिए मृत्यु उतनी कष्टकारी नहीं हुआ करती जितना कि उसका ध्यान होता है। कहा जाता है कि फाँसी के दण्ड पाने वाले अभियुक्त को रस्से से लटकाया जाता है वह कष्ट तो थोड़ा सा उसके लिए तुच्छ होता है जो उस फाँसी लगने की सम्भावना में हो रहा होता है। कुछ उसी प्रकार की सम्भावना ने दिया मिस प्रीतम का रक्त चूस जा रही थी। दिन और रात—दिन रात के घण्टे चार मिनट उसके लिए मृत्यु में भी कहाँ बढ़कर रक्त-पिपासु बने हुए थे। हर समय उसे यही सहम लगा रहता कि अब भी कुछ हुआ और कोई विनाशकारी घटना घटी। स्वास्थ्य उसका तो पहले से ही नाममात्र को रह गया अब बचा खुचा भी बिगड़ने लग गया। उसका शरीर दिन प्रति दिन क्षीण हुआ चला जा रहा था और शरीर से भी बढ़कर उसकी मानसिकता बिगड़ रही थी। भय ने चिन्ता ने हिंसा तथा घृणा इत्यादि मनोविकारों ने एक साथ उस पर हल्ला बोल दिया। उसे लगता कि सारा संसार उसके खून में हाथ रंगने पर उतारू है।

चाहे कुछ भी सहा परन्तु मिस प्रीतम ने निहाल की उस नीति का पालन करना नहीं त्यागा—वही मर्यादा दर जाने का। कदाचित इसमें

कि वहाँ जाकर चाहे नाममात्र को ही पर उसके मन को सान्त्वना तो मिलती थी। शायद इसमें उसकी स्त्री स्वाभाविक धार्मिकता का ही हाथ हो। जैसे प्रत्येक स्त्री के मन में यह भय सा बना रहता है कि धर्म से विमुख होने वाले व्यक्ति पर भगवान का प्रकोप पड़ता है—उसे अधिक-से अधिक कष्ट सहन पड़ते हैं।

प्रतिदिन वह प्रातःकाल मंदिर जा पहुंचती और सूर्योदय तक वहीं बनी रहती। सतसंग में बैठने पर ऊंघें और जम्हाइयाँ उसे आती रहतीं और वह जबरदस्ती से अपने को चैतन्य रखने का यत्न करते हुए कथा कीर्तन में मन को लगाने में लगी रहती। इसी ऊंघ या तन्द्रा की स्थिति में बहुत समय वह वहीं स्कूली जोड़-तोड़ में और अध्यापिकाओं से गिन गिनकर बदला लेने की योजनाएँ बनाने में व्यतीत कर देती या कभी-कभी जब तन्द्रा टूटने से उसमें चैतन्यता आने लगती तो इसके साथ ही उसकी नजर वहाँ बैठे स्त्री-पुरुषों पर मंडराने भी लग जाती और साथ साथ वह किसी स्त्री या पुरुष पर बे मतलब ही कुछ इस प्रकार की टीका टिप्पणी करने लगती—

'वह बूढ़ा खूसट कैसा आँखें फाड़ फाड़कर औरतों की तरफ बार बार झाँकता है... यह नयनों वाली औरत कितने जोर-जोर से माला के मनके घुमाये जाती जा रही है। चेहरे से लगता है जैसे चार ज्ञान की पुटली। हाथ में छुरी बगल में कुरान।... वह कुनबे में बैठी हुई औरतें क्या घड़ी घड़ी मेरी ओर ताककर हंस रही हैं...?'

इस प्रकार की टीका टिप्पणी करते हुए मिस प्रीतम अपने पर आलोचना करने लग जाती—

'जहन्नुम में जाएं सब। मुझे क्या पड़ी है... अरे यह मुझे क्या हो गया है? कितनी बेहूदा बातें सोचने लग जाती हूँ। कहीं सचमुच ही तो मुझ पर पागलपन का दौरा नहीं पड़ने लगा है?'

तब अपने इन प्रश्नों का उत्तर स्वयं मिस प्रीतम अपने को देना शुरू कर देती— निश्चय ही मुझ पर पागलपन का दौरा पड़ने लगा है।

और आज से नहा बन्न नि पहा न हर समय मन में गुदगुदी सी रहना क्या यह पागलपन की निशानी नहीं है ? न, उसका नाम पर झपट पड़ने की उत्कण्ठा मन में पनपना क्या यह पागलपन के लक्षण नहा है ?

जब जब भी मिस प्रीतम के अन्तर से उस इस प्रकार की बनावटी या मनौती हो जाती तो वह अपने को सचेत रखती व मन में ताना बाना और तब ध्यान से अपने पर पहरा लगने लगती। साथ-साथ इस बात का भी ध्यान रख रहती कि किन मनोविकारों के अधीन वह किस किस प्रकार की क्रियाएं करती है।

कई बार कुछ ऐसी बातों को आधार बनाकर यह अनुसन्धान लगा जाता जिनका स्कूल के मामलों से कुछ भी सम्बन्ध न होता। बल्कि यों ही इधर उधर की ऊटपटांग बातों को लेकर बनतनकर हो जाया करता जाती।

जैसे एक रोग दूसरे रोग को जन्म देता है और दूसरा तीसरे को कुछ उसी प्रकार से मिस प्रीतम के मानसिक धरातल पर नई नई प्रकार की भावनाएँ उभरती चली जा रही थी। जिनका चाहे पूरे तौर से मिस प्रीतम को ज्ञान नहीं हो पाता। परन्तु कभी कभी उस अपना ही मस्तिष्क मन में कुछ इस प्रकार का परस्पर विरोधी एवं अस्पष्ट सी आवाजें सुनाई देने लग जाती—

यह हर रोज रात को क्यों मुझे एक ही प्रकार के स्वप्न आते हैं ? इनमें कुछ तथ्य तो होगा ही। ऊंह कोई भी तथ्य वथ्य नहीं है। एक भ्रम मेरा भ्रम है—भ्रम या पागलपन। इसके सिवा और कुछ नहीं फिर तो खूब मौज हो जायेगी जब मन सोना चाँदी झोलियों हीरे-मोती और ढेरों नोट पा जाऊंगी अरे ! फिर मैं वही वाहियात बातें सोचने लग गई ? जैसे वहां मेरे बाप ने टकसाल खोल रखी है—मनो सोना—झोलियां हीरे मोती—ढेरों करेंसी नोट।

परन्तु अपनी इन वेगमयी कल्पनाओं को निरर्थक मानते हुए भी

मिस प्रीतम का मन नहीं मानता । जैसे सचमुच कहीं न कहीं मनों सोना—मालिया हीरा-मोती और ढेरा करमा नाग मिल कर ही रहेंगे ।

तब मिस प्रीतम इस प्राप्ति से सम्बन्धित कुछ दूसरी बातों में खो जाना—

फिर तो उन सबों को वह मजा चखाऊंगी की छठी का दूध याद आ जावे। तब यह बात मेरे लिए कुछ कठिन भी तो नहीं होगी जब मेरी आँख के इशारे पर ही बड़े-बड़े नवाबजादे बड़ी बड़ी नवाबजादियाँ के प्राण अटके रहेंगे

वही एक ही प्रकार के स्वप्न कि घर के किसी कोने में मनों सोना मालिया हीरा मोती और ढेरा करमा नाग गड़े हुए हैं—मिस प्रीतम देखा करती । दिन में चाहे जितना इन बातों को झुठलाने का यत्न करती पर रात के स्वप्न इस निश्चित बना देते । अन्ततः एक दिन वह इस निर्णय पर पहुंची कि इसमें हर्ज ही क्या है जो किसी दिन कहीं से कुदाल लाकर और रात में द्वार बन्द करके वहीं खोद कर देख ही लिया जाय । अतः एक रात उसने यह सब कर ही तो डाला ।

रात से लेकर प्रभात तक वह इसी क्रिया में जुटी रही और थक कर चूर हो जाने पर भी उसने हार नहीं माना । घर का एक कोना फिर दूसरा, फिर तीसरा, फिर चौथा । पर परिणाम कुछ भी तो नहीं हुआ । सिवाय इसके कि कुदाल चलाते चलाते उसके हाथों में फफोले उठ आये । तब उसे विश्वास हो गया कि यह उसके भ्रम के सिवा और कुछ नहीं है । अथवा यह पागलपन का ही दौरा है और अन्त में निराश होकर उसने इस काम का पीछा छोड़ दिया ।

इन दिनों मिस प्रीतम के मन की अस्थिरता चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी और उसकी हालत भली पूर तौर में नहीं तो आंशिक पागलों जैसी थी । फिर भी उसने मन्दिर जाने का क्रम नहीं त्यागा । चाहे इसका कोई विशेष लाभ उसको नहीं हुआ ।

मुंह में मुस्कुराने की आदत पर उसने पहरा भी पूर्ववत ही रखा

हुआ था और इस पहरे के फलस्वरूप उसे अपनी इस भ्रान्त म कुछ न कुछ सुधार होते जान पड़ा। पर किसी किसी समय पहर के होन हुए भी वह अपनी बकवास शुरू कर देती और कितनी हा दर तक उस जारी रखती। तब उस भूा ही जाता कि उसने अपन पर कोई पहरा बिठाया हुआ था।

रात अधिक नही बीती थी। बिस्तर म लटी गटी मिस प्रीतम उसी सधष मे पडी थी। कभी पहरे की कडाई कभी पहर की शिथिलता कभी बुदबुदाना शुरू तो कभी बद।

सहसा उस लगा कि फिर स वह वही भूल करन लगी है और खूब ऊँचे स्वर म—

नन जु तेरे गोरिये
जिऊ बूरी मह्दि सिग।

(हे सुन्दरी ! तेरी आँखें इतनी सुन्दर हैं जस भस के सींग)

और गाते—मिस प्रीतम क होठो पर हँसी की क्षीण सी आभा फल गई।

अरे ! यह म क्या बकवास कर रही हू ? कितनी असगत और वाहियात उपमा ! कहाँ सुदरी की आँखें और कहाँ भस के सींग—छी छि ।

पहले हसी और हसी के बाद क्रोध। मन ही वह यह अपनी स्मरण शक्ति पर जोर दते हुए साच रही थी —

पर इस बेहूदा तुक को मन सुना ! कहाँ स कब सुना—किससे सुना ?

और सोचते-सोचते अन्तत उसे याद हो ही आया कि यह बेहूदा तुक कहाँ से सुनी थी कब सुनी थी और किस द्वारा सुनी था।

उसका पूरा नाम 'जगन्नाथ' था या 'रामनाथ' या कोई और नाथ इसे कोई नहीं जानता। जैसे लोग लाड़ को 'सुवाला' कहकर पुकारते हैं। कुछ उसी प्रकार का ही उसका घसगत-सा नाम था 'नाथी'। नाथ का शाब्दिक अर्थ है स्वामी, पर वह तो नीचे से ऊपर तक 'अनाथ' ही 'अनाथ' था। जिसमें नाथपन का कहीं अंश मात्र भी दिखाई नहीं देता था और अनाथ भी ऐसा जिसे भाग्य के कृपण भंडारी ने आँखें प्रदान करने की भी कृपा नहीं की थी—जन्मजात अन्धा था।

यों यदि आकार प्रकार के तौर पर देखा जाये तो अपनी उम्र के युवकों से वह कम नहीं था। बल्कि कुछ बढ़-चढ़ कर ही था। शक्ल को देखकर भले ही उसे सौंदर्य का प्रतीक न कहा जाय परन्तु असुंदरों में भी नहीं गिना जा सकता था। साधारण पंजाबियों जैसा गेहुँआ रंग, चौड़ा ललाट और खासा लम्बा कद था उसका।

स्वच्छ पहरावा जैसे किसी की कुरूपता को ढाँप लेता है उसी प्रकार गन्दा पहरावा किसी की सुन्दरता को छुपा देता है। गन्दे चीथड़ों में नाथी भूतों जैसा दिखाई देता था। कपड़ों के नाम पर उसके तन में लंगोटी थी और टखनों तक लम्बा एक फटा पुराना और गन्दा कुरता। उसके पाँव तीनों दिन बारहों महीने नंगे रहते थे। जिन्हें मल ने एक दम काले और खुरदरे बना दिया था उल्टी हाँडी जैसा उसका मुंडा हुआ साधारण से कुछ बड़ा सिर बहुत ही बेढंगा दिखाई देता था। सिर के मध्य में चूंदी का वृद्ध निशानी चोटी ने तो उसकी कुरूपता में और भी वृद्धि कर दी थी।

मौसम गर्मी का हो चाहे जाड़े का, अन्धड़ चलता हो चाहे लू, नाथी एक ही जगह पर अड़ा दिखाई देता। मन्दिर के निकट, सड़क की दाएँ

किनारे बबूल का एक पुराना वृक्ष और उस वृक्ष के तले एक मैला तप्पड़ बिछाये वह राह सड़क पर गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किए रहता। इस इलाके का कोई भी व्यक्ति न होगा जो नाथी नामधारी इस अन्ध युवक को न जानता हो।

किसी भी समय नाथी की जबान मुंह में नहीं टिक पाती। जब भी देखो वह भद्दे स्वर में कुछ-न-कुछ गा रहा है और हास्य युक्त कोई न कोई पंक्ति और या फिर ऐसी अटपटी बातें कर रहा है जो सुनने वाले को हंसा हंसा कर लोट पोट कर देती।

आश्चर्य की बात कि जहाँ दानी लोग अन्ध अपाहिजों पर दया करके उन्हें दान देते हैं वहाँ इस नाथी की लीला कुछ न्यारी ही है। वह यदि लोगों से कुछ वसूल करता है तो अपनी हीनता अपाहिजपन के बूते पर नहीं बल्कि हर आने जाने वाले को खूब हंसाकर। कदाचित यही कारण था कि जहाँ उस जैसे अन्ध अपाहिजों का कोई बिरला ही भिक्षा देता वहाँ नाथी को हर समय दानी लोग घेरे रहते। और दिल खोलकर उसे दान देते।

नाथी में एक विलक्षणता यह भी पाई जाती थी कि जहाँ दूसरे भिखमंगे किसी दाता द्वारा पैसा टका मिलने पर उन्हें आशीष दिया करते वहाँ नाथी जब किसी से कुछ पाता तो ऐसी ऐंठ में मानो टैक्स वसूल कर रहा हो।

व्यापारी लोग किसी ऐसी जगह पर अपनी दुकान जमाने का प्रयत्न किया करते हैं जहाँ से अधिकाधिक ग्राहकों के गुजरने की संभावना हो। नायक नाथी भी इस व्यापारिक दृष्टिकोण को जानता है। उसने अपने बैठने के लिए ऐसी जगह चुनी है जहाँ से एक रास्ता स्कूल की ओर जाता है दूसरा मन्दिर की ओर और तीसरा मार्किट की ओर। व्यापारी को जैसे अपने ग्राहकों की पहिचान रहती है नाथी भी इस बात का अभ्यस्त है कि उनका कौन सा ग्राहक उदार है कौन साधारण और कौन कृपण।

यों तो नाथी के ग्राहकों का घेरा बहुत ही विशाल है पर जिन

ग्राहकों द्वारा सबसे अधिक आय होती वे हैं स्कूल के छात्र जो पढ़ाई लिखाई से भी कहीं ज्यादा नायी के 'गप्प ज्ञान' में दिलचस्पी रखते हैं। स्कूल जाने पर तो उन्हें मास्टरों की घुड़कियाँ सहनी पड़ती हैं पर नायी उन्हें खूब दिल खोलकर हँसने और कहकहे लगाने का प्रसाद देता है। और यही कारण है कि इधर छुट्टी हुई उधर नायी के आस पास ग्राहकों का जमघट दिखाई देने लगा।

स्कूल जाने वाले ही बालकों को स्कूल जाते समय खाने खर्चने के लिए कुछ-न-कुछ मिला ही करता है। घर में चाहे छत्तीस पदार्थ मिलें इन बाल गोपालों को तब तक संतोष नहीं हो पाता है जब तक स्कूल जाकर धेला, दो पैसे चार पैसे किसी खाने वाले की भेंट न कर दें। बदले में चाहे उन्हें गले सड़े फल या मक्खियों भिनभिनाता हुआ मुरमुरा इत्यादि ही क्यों न प्राप्त हो।

इस रास्ते से गुजरने वाले नन्हें मुन्हें को यदि घर से दो पैसे प्राप्त होते तो उनमें से एक पैसा अवश्य ही वह नायी की भेंट कर दिया करता जिसके बदले में नायी द्वारा उन्हें मुरमुरे मिठाई से भी बढ़कर स्वादिष्ट चुटकुले सुनने को मिलते। कई लड़कों को तो इसकी कुछ ऐसी इल्लत पड़ गई थी कि जब कभी उन्हें नायी से भेंट नहीं होती तो मानो नशा सा टूटने लग जाता उनका।

बस वही पुराना गन्दा और घिसा हुआ तख्त बिछाए नायी अपने इन ग्राहकों को नचनाच नचा जाता। किसी को हास्य की कहानी में डूबा हुआ कोई चुटकुला सुनाकर, किसी को गुदगुदाने वाली कविता की दो चार पंक्तियाँ सुनाकर और किसी को तान वाले बाँसुरी इत्यादि बाजों जैसी आवाजें गले से निकाल निकाल कर। यदि कोई उससे कहता कि नायी रेलगाड़ी चलाकर दिखा दे तो नायी अपने दोनों हाथों को नचाने की तरह गाल फुला मुँह में भरकर कुछ इस ढंग से आवाज निकालता मानो सचमुच ही रेलगाड़ी चला आ रहा हो। दूसरा

कोई जो उससे, फरमाइश करता कि 'नाथी! चिड़ियाघर का नजारा दिखला दे।' तो नाथी अपनी जबान और होठों को उंगलियों द्वारा ऊपर नीचे करते हुए चिड़िया तोते से लेकर दार चीन इत्यादि की आवाजें निकालने लग जाता। जस ही वह पाता कि उसके ग्राहक पूरे तौर से प्रभावित हो उठे हैं तो झट से अपना ऐल्मोनियम का टूटा-फूटा कटोरा उनके आगे फैला देता। तब दनादन लोग उसमें ठनाठन कटोरे में पैसे धेले से लेकर इकन्नियाँ दुवन्नियाँ तक फेंकते चले जाते। नाथी स्वर ज्ञान में इतना अभ्यस्त था कि कटोरे में पड़ने वाले सिक्के की आवाज से ही समझ लेता कि उसमें कितने दाम का सिक्का डाला गया है।

कभी-कभी नाथी की इस दुकान के आगे एक और प्रकार का दृश्य भी दिखाई देने लगता। विशेषतया उस समय जब कोई शरारती छोकरा नाथी के उल्टी पतीली जैसे सिर पर टोला मार देता। बजाए इसके कि लड़के की ढिठाई पर खीझ उठे नाथी एक अनोखी मुद्रा में सिर को सहलाते हुए पुकार उठता— मार ले मार न देगा बड़ बाप का। और उसकी इस दुहाई को सुनने वाले हंसते हंसते गुच्छा ही तो हो उठते। टोला मारने वाला छोकरा नाथी की यह गाली खाकर क्रोध करने के बजाए पुरस्कार के तौर पर एकाध पैसा उसके कटोरे में डाल देता। कोई लड़का कागज का टुकड़ा या रद्दी पोस्टकार्ड उसके हाथ में थमाते हुए यदि कहता कि नाथी! जरा यह चिट्ठी तो पढ़ दो। तब नाथी कागज पर अपनी निर्जीव आंखें घुमाते हुए पढ़ने लग जाता—

लिखतम् थाथा पढ़तम भाई
यमराज की चिट्ठी आई
हम तो मर गये तुम भी मरना
चिट्ठी दस समाप्त करना।

और पढ चुकने के बाद जब नाथी अपने निश्चित अन्दाज में वही कटोरा आगे बढा देता तो ग्राहकों द्वारा कहकहों की गूंज में ठनठन

सिक्के बरसने लग जाते।

स्कूल के इन छात्रों द्वारा नाथी की प्रथम अचिर प्रशंसा उस समय हुआ करती जब नाथी नेत्र-हीन होते हुए भी आँखों वाले व्यक्ति जैसा रौब करने लगता। अर्थात् उसके आस-पास घेरा डाले हुए लड़के बारी बारी से अपना हाथ उसके हाथ में थमाते चले जाते और मुँह से बिना कुछ बोले ही तब नाथी उसी क्षण से हाथ काट हटाते हुए फटाफट कहे जाता—

"तेरा नाम अविनाश है न ... और तू गुरबख्श है ... तू गोपाल है ... तू राजू है ... तेरा नाम किशन है ...। जिसे देख-देखकर न केवल उन लड़कों को बल्कि इधर आने जाने वालों को भी नाथी की इस स्पर्श शक्ति पर आश्चर्य होने लगता कि किस तरह यह अंधा केवल लड़कों की त्वचा को स्पर्श करके ही समझ लेता है कि वह कौन कौन हैं।

कई बार नाथी का यह 'टोटका' असफल भी सिद्ध होता जब कोई अपरिचित लड़का आकर अपनी बाँह उसके हाथ में पकड़ा देता। परन्तु नाथी था कि अपनी असफलता पर लज्जित होने के बजाए उल्टा उसी लड़के को इन शब्दों द्वारा डाँट दिया करता— चल! मैं तेरा बापू नहीं हूँ। जाकर और कहीं तलाश कर। जिसे सुनकर उल्टा वह लड़का ही शर्मिन्दा हो जाता। सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह थी कि नाथी को गालियों में से भी लोगों का शक्करपारे और रसगुल्ले जैसा स्वाद मिलता। उसे न केवल छात्रों के नाम ही याद थे बल्कि यह भी उसे स्मरण रहता कि किस लड़के की बाँह कितनी मोटी पतली है और उसमें कितना कम या अधिक उष्णता रहता है।

इसे नाथी की स्मरण शक्ति का चमत्कार कहा जाए या कुछ और कि साधारणतया वह गुजरने वाले लोगों की पदचाप या कपड़ों की सरसराहट से ही इस बात का अनुमान लगा लेता है कि वह पुरुष है या स्त्री। इसी

क आधार पर वह जिस भी घणा व "मति को अपने सामने खड़ा पाता उसी के अनुरूप अपना कला कौशल का प्रदर्शन करने लग जाता।

× × ×

पहले पहल मिस प्रीतम का ध्यान क्यू उसने अपना और आकर्षित किया और किस बात पर ? याद करने पर भी उस याद नहीं आ पाया। फिर भी इतना वह जानती थी कि जब भी उसने नायी को देखा उसके मन म एक प्रकार की घणामिश्रित जिज्ञासा सी पैदा हुई— यह वन मानस किधर से आ मरा यहाँ पर ? गन्दा न बरा और बदर सी सूरत और तिस पर इतना झूम झूम कर गाता है— इतरा हुआ हसकर बात करता है जैसे कहीं से कुबेर का खजाना मिल गया हो इसे। क्या इस मन के पुलिस वो शर्म नहीं आती ऐसा करते ?

कभी कभी मिस प्रीतम वहाँ से गुजरते हुए सोचती— यह है कौन ? रहता कहाँ पर है ? कोई सम्बन्धी भी तो होगा इसका पागल तो नहीं है। खूब पते की बात करता है और इतने सारे पैसे जो रोज बटोर लेता है इन पैसों को क्या करता होगा ?

जितना ही मिस प्रीतम उस अन्ध के बारे मे सोचती उसी अनुपात म नायी के प्रति उसकी जिज्ञासा और घृणा बढती जाती। उसके विचार म इस प्रकार के व्यक्ति को हसने या प्रसन्न होने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए।

आज और कल और परसों और। दिन प्रति दिन नायी के सम्बन्ध म मिस प्रीतम की अधिक से अधिक मात्रा म जिज्ञासा बढने लगी। कई बार जब वह मन्दिर से लौट रही होती तो अपने स्थाई स्वभावानुसार कुछ इस प्रकार के शब्द मुँह म बुदबुदाने लग जाती—

'भौ' वहां का। कम वाहियात उप गाता रहता ह जिनता पाखण्ड रच रखा है तुच्छ न। बचारे न हैं-न हैं बच्चा की जो दो पस घर म मिलन ? अपनी चापलूसिया द्वारा यह इनस छान भपट लेता है। राम हया तो बच हो साया है कमान न सोगा की अक्ल पर भा बस पत्थर पड़ गय हैं जा इस पाखण्डी की बकवास सुनन बठ जात हैं। जितनी हिमे जमी हुए है धतान की पस बगैरन की। राम मरते समय छाती पर रख कर न जायगा—लोफर कहा का।

और उसक बाद एक दिन जब मिस प्रीतम मन्दिर न निकल कर वहाँ स गुजरा जहाँ मडक के किनार नाथी अपना मडल जमाय रहता था तो उसन देखा बबूल तर का वह स्थान खाली पड़ा है। न वहां नाथी दिखाई द रहा था न ही नाथी की घरन वाला मजमा। तब मिस प्रीतम का सन्तोष हाने लगा। मन-ही मन वह कह उठा—'भगवान का शुक्र है कि उस लुच्चे का अड्डा यहाँ स उठ गया। पर सन्तोष के साथ ही उसे इस बात का कुतूहल भी उत्पन्न हुआ कि वह भ्रष्टा गया कहाँ शायद बीमार पड़ गया हो—शायद कोई नया पाखण्ड रचने क लिए किसी दूसरे शहर म चला गया हो या शायद मर गया हो ।

उसके बाद जितनी बार भी मिस प्रीतम वहाँ से गुजरी बबूल तले का वह स्थान सूना शून्य ही पाया। और धीरे धीरे नाथी के सम्बन्ध म उसने सोचना विचारना छोड़ दिया। नाथी की याद फिर उसे कभी नहीं आई—आँखों दूर तो मन म दूर।

और इतने दिनों बाद आज बिस्तर म लेटे-लेटे जब अनायास हा मिस प्रीतम का नाथी द्वारा कभी सुनी हुई यह बातूनी पक्ति याद हो आई तब दाद हा नहा हो आई बल्कि उसक होठों द्वारा उचारी भी जान लगी तो उसके मन म नाथी के प्रति कुछ उसी प्रकार की घृणा उत्पन्न होने लगा मानो उसके सामने गुनिया ने गन्दगी बिखेर दी हो।

आज पढ़ाई का अंतिम दिन था और कल से छुट्टियाँ होने वाली थी। बड़ी बहन जी पहाड़ पर जाने की तयारी कर रही थीं और दूसरी अध्यापिकायें भी—कोई ससुराल म तो कोई मायके म जाने वाली थी। पर मिस प्रीतम अभी तक कहीं जाने का निश्चय नहा कर पाई थी।

ऐसा नहीं कि मिस प्रीतम ने जाने के बारे में सोचा ही न हो। नहीं बस सोचती जबकि यहाँ पर दो महीने का समय व्यतीत करना उसके लिये एक बड़ी समस्या थी और फिर उसका मकान भी तो ऐसी जगह पर था कि न कोई पास न पड़ोस। कैसे वह उसमें अकेली पड़ी-पड़ी दो महीने गुजारेगी?

ले देकर जाने आने को यदि कोई बाहर उस जगह दिखाई दी तो मात्र मामू का घर। यो तो एक दूसरी जगह भी थी—सौतेले बाप का घर। पर उस घर के द्वार तो उसके लिए उसी दिन से बन्द हो चुके थे जिस दिन उसे वहाँ से खदेड़ दिया गया था।

बहुत बार सोचा मिस प्रीतम ने कि छुट्टियाँ बिताने के लिये वह सगरूर चली जाए। परन्तु हर बार उसके मार्ग म उसे एक नहीं अनेक प्रकार की बाधाए दिखाई दीं। कुछ तो इसी स उसका मन भर गया था कि उसकी भेजी हुई प्राय आधी दजन चिट्ठियों के उत्तर में मामू महोदय चार पंक्तियाँ लिखने का भी रवादार नहा हुआ था और फिर भी यदि कुछ कसर बाकी थी तो उसे पूरा कर दिया निहालो महरी द्वारा किये गये रहस्योदघाटन ने।

बहुत ही गहरी चोट लगती उसके दिल पर जब जब भी उसके

सामन छुट्टियाँ गुजारने का प्रश्न आता। तब अपना अस्तित्व उसे न केवल बोझल अपितु दुस्सह जान पड़ता। अपने पर उसे दया भी आती क्रोध भी होता। आखिर क्या लाभ उनके जाने का जबकि इस इतने बड़े संसार में उनके लिए कोई भी बाहर ठिकाना नहीं है—कहीं पर भी ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके आगे वह दिल खोल सके—जिसके द्वारा प्रेम नहीं तो कम से कम सहानुभूति के ही दो चार शब्द उसे प्राप्त हो सके।

बहुत सोच विचार के बाद अन्त में वह इस निश्चय पर पहुँचा कि चाहे कुछ भी हो—वहाँ जाकर चाहे उसे कितना ही अपमान सहन करना पड़े, ननिहाल में अवश्य ही जाएगा—कोई उसे फाँसी पर थोड़े ही लटका देगा और यदि ऐसा कुछ होगा भी तो वह उन लोगों के कान के पर्दे खोल कर ही चुकेगी जबकि मामू साहिब के कुछ आचरण का भंडाफोड़ करेगा वह सामने है उनसे। क्या है तो फिर क्या है—मामू है तो क्या हुआ। वह भी तो उसी घर की उपज है कोई आसमान से तो नहीं गिरा है। उसे पूरा पूरा अधिकार है उस घर पर और न तो कोई उसे उसके अधिकार से वंचित रखने का साहस करता उसके साथ समझ लेगा वह।

आज मिस प्रीतम का मन नहीं हो रहा था बताने का। उसे वह मायाजाल का अच्छी न ... रहा था। पर यह सोच कर कि बस आज का ही तो दिन है फिर वह बंद हो जाएगा। रात की गाड़ी से तो उसे सवार चल ही जाना है।

तभी उस वही बन्द ... बुलावा आ ... ।

बताया चाहे किसी भी प्रकार का हो मिस प्रीतम को यमराज के बुलावे का आभास जान पड़ने लगा था। अब उस सब में पड़ा भूल गयी और उसे भागी ... बहुत ... और वहाँ जा कर उसे जो कुछ प्राप्त हुआ उसने तो मानो उसकी कमर ही तोड़कर रख दी।

एक पत्र था यह जो स्कूल के पते पर भेजा गया था।

वही खड़-खड़ मिस प्रीतम निपाट मे से पत्र निकालकर पढ़न लगी—

प्रीतो

यह जान कर मुझ बहुत दुःख हुआ कि तूने मेरे किय-कराए को मिट्टी म मिलाकर रख दिया। सुना है कि वहाँ जाकर तेरी आदतें और तेरा आचरण एकदम बिगड़ गया है। अरे भाग जना पहन तेरा मा न ही क्या कुछ कम सताया था हम जो अब तू लगी हमारे घावों पर नमक छिड़कन ! अरे कुल कलंकिनी ! कुछ तो नाम करती। कितना अच्छा होता अगर तुम उसी पापिन की तरह पहले ही गला घोंट कर मार दिया जाता।

अन्त म इतना और कहे देता हू कि कभी भूल कर भी अपनी परछाइ मेरे घर पर न डालना। आज से तू हमारे लिय मर गई और हम तेरे लिये मर गये। ईश्वरदास।

पढ़ लेने बाद मिस प्रीतम जल भुन कर ही तो रह गई। इसस पहले कि वह बिना कुछ कहे सुने वहाँ से भाग निकलती उसने सुना—

और हाँ ! सुन ही जा कि तुझे एक मौका और दिया जाता है। छुट्टियों क बाद भी जो तूने अपनी आदतें न बदली तो तुझे डिसमिस कर दिया जाएगा।

सब पर सुन लेने के बाद मिस प्रीतम वहाँ नहीं रुकी—न ही कुछ बोली। सच उसकी कुछ कहा सुनी हुई। कमरे म से निकलकर उसका इच्छा हुई कि घर की ओर भाग निकले। पर छुट्टी होने से पहले ही चले जाने का मतलब था बड़ा बहन जी के क्रोध को बढ़ावा देना। अतः जैसे-तैसे उसने अंतिम पीरियड तक अपने को क्लास रूम म बाँध रखा और छुट्टी होते ही घर की ओर भाग खड़ी हुई।

रात का खाना उसने न तो बनाया न ही उसे भूख थी। लेटे ही लेटे उसने दोपहर से संध्या कर दी और संध्या से रात।

इधर कई दिनों से मिस प्रीतम जो ननिहाल जाने की योजना बनाती चली आ रही थी उस योजना के समाप्त हो जाने पर भी बाप बार-बार ननिहाल वालों की बातें उसके दिमाग में घूम रही थी—

तूने मिट्टी में मिला दिया मेरे किये कराये को। तेरा आचरण बिगड़ गया है। कुछ तो शर्म कर। हूं-हूं। आ गया बड़ा दूध का धोया बनकर। नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। तू हमारे लिये मर गई। मर कहाँ गई हूं—अभी तो जाती हूं और अगर मरना ही होगा तो उस बेहूदे मर्द पुरुष का और साथ में उसका चहेता का भंडा फोड़कर ही मरूंगी। सच ही तो कहा था निहालो ने और सच का ही बात कही थी जबकि वहाँ गई है मामू का भानजा का किस्सा सुनाने।

कितनी ही देर तक मिस प्रीतम इसी प्रकार की बातों में उलझी हुई दाँत किटकिटाती रही—मुट्ठियाँ भीचती रही और भाँति भाँति के मनसूबे बनाती रही। पर उसके सभी मनसूबे धरे धराये रह जाते जब मन में अपनी और अपने मामू की हैसियत की तुलना करती—कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली। कौन सुनेगा उसकी बात और किस विश्वास होगा उसकी बातों पर। क्या वह नहीं जानती कि संसार में सब कोई चढ़ते सूर्य की ही पूजा करते हैं?

तो जाने दो अन्त में वह थक कर इस निश्चय पर पहुंची— 'जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। मुझे क्या लेना है इस झंझट से।

२२

जैसे जैसे दिन बीतते गये उसका मानसिक संतुलन बिगड़ता चला गया। यह सब इसके लिये दुस्सह व दुर्वह होता चला गया। न उसे खाने पीने की सुध थी न कपड़े पहनने का। यदि निराहार है तो निराहार ही सही कपड़ा पर साबुन की टिकिया बिना घिसाये यदि सप्ताह बीत गये हैं तो उसका क्या स। दिन दिन भर वह अपने कमरे में बन्द रहती। रात रात भर वह बिना सोये और न जाने क्या-क्या बड़बड़ करती चली जाती। उसने प्रतिदिन मन्दिर जाने का नियम बना रखा था वह भी छूट गया। मानो स्कूल की ये छुट्टियाँ होते ही उसने सब कामों से छुट्टी ले ली हो। उसका स्वास्थ्य दिनादिन रसातल को जा रहा था। मानो चलता फिरता शव हो। कभी भूलकर भी उसका ध्यान इस ओर नहीं जाता कि उसे इस हालत में देखकर कोई क्या सोचेगा। उसे लगता जैसे हाड़ माँस की बनी हुई सजीव न होकर वह मिट्टी का लोंदा मात्र है अतिरिक्त कुछ नहीं।

कभी-कभी उसके अन्तर में एक उत्तेजना सी उठने लगती— अब क्या करना है इस मिट्टी के लौंदे को रखकर। किस काम का रह गया है यह हाड़ माँस का थैला। क्या मैं बेमतलब ही इसे उठाये फिरती हूँ। क्यों नहीं सदा सदा के लिये इससे मुक्ति पा लेती। और अन्त में वह दिन आ ही पहुँचा जब इस मिट्टी के लौंदे से—इस हाड़ माँस के थैले से मुक्ति पाने के लिये वह कटिबद्ध अथवा विवश हो उठी।

बरसात का मौसम आरम्भ हो चुका था। गत कई दिन से आँधी पानी ने तूफानी रूप धारण कर रखा था। एक तो कृष्ण पक्ष की रातें

दूसरे आँधी पानी ने प्रलय का समय उपस्थित कर रखा था, और तीसरे यह अकेला मकान—न कोई पास, न कोई पड़ौस। थोड़ी-थोड़ी देर में बिजली कड़क रही थी और गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

आज मिस प्रीतम की मनोदशा अधिक ही बिगड़ी हुई थी। उसका दिल क्षण प्रति क्षण घुटा जा रहा था। उसके कलेजे में मानो कोई विष भरा जन्तु बार-बार डंक चला रहा था। जैसे-जैसे रात व्यतीत हो रही थी उसी क्रम से कष्ट में वृद्धि होती जा रही थी। उसे लगता, यह आज का अंधड़ उसे रातों रात लील जायेगा और दिन चढ़ते इस कमरे में एक अस्थि-पंजर पड़ा होगा और बस।

आधी रात व्यतीत हो चुकी थी और आधी शेष थी। चारपाई पर औंधे मुंह लेटे लेटे मिस प्रीतम सहसा उठकर बैठ गई और फिर खाट से उतर कर कमरे में चक्कर काटने लगी।

"बस अब और नहीं। अब इस खेल को समाप्त होना चाहिए। रोज की यह खटपट आज हमेशा के लिए मिट जानी चाहिये। आखिर किस लोभ में पड़कर मैंने इस शरीर से इतना मोह पाल रखा है? क्या धरा है अब इसमें कि इतनी दुर्दशा तक आ पहुंचने पर भी मैं इसके साथ चिपटी हुई हूं। और नहीं आज ही—अभी ही—इसी समय—" और मिस प्रीतम ने अपने इस अन्तिम निर्णय को कार्यरूप में बदलने का पक्का निश्चय कर लिया। उसकी आँखों के आगे एक पुराना कुआँ उपस्थित था—जो यहाँ से प्राय डेढ़ फर्लांग की दूरी पर था।

इस फैसले पर पहुँच कर मिस प्रीतम को अपना मन कुछ हल्का फुल्का जान पड़ने लगा। मानो उस पर लदे हुए बोझ का अम्बार कम होने लगा हो। उसकी साँस अब पहले की तरह बोझल होकर नहीं चल रही थी।

रात के तीन पहर में आँधी पानी का तूफान चलते रहने के बाद जैसे ही चौथे पहर का आरम्भ हुआ कि गान गान शान्त पड़ने लगा। पछिया का करतब बता रहा था कि गत कई दिनों से अपने अपने नीड़ो में बन्द रहने के बाद आज उन्हें घोंसलों से बाहर निकल कर गली उड़ाने भरने का अवसर मिलने वाला है।

मिस प्रीतम ने गर्दन को इधर-उधर घुमाकर कमरे में चारों ओर दृष्टिपात की। रोशनदान द्वारा आ रही उषा की किरण कमरे की दीवारों और फर्श पर स्याही तथा सफेदी मिश्रित मुलम्मा की पोत रही थी। यह ताकते ताकते उसे अपने फैसले का ध्यान हो आया। मैंने कितनी देर कर दी। मुझे तो दिन चढ़ने से पहले-पहले ही अपना काम समाप्त कर लेना चाहिए था।

संसार की सब डरावनी चीज से बढ़कर डरावनी चीज है मृत्यु। मिस प्रीतम सहसा दरवाजे के पास आकर रुक गई। उसकी टाँगे लड़खड़ा रही थीं। मृत्यु की एक कल्पित-सी छाया उसे अपनी ओर लपकती दिखाई दे रही थी। जो मानो चिल्ला चिल्लाकर उसे कह रही थी— अरे चल भी। अब यहाँ क्या अड़ गई ? और मिस प्रीतम आदेश का पालन करते हुए दरवाजे से बाहर निकल खड़ी हुई। टाँगें उसकी अब भी काँप रही थीं और उसके अंग प्रत्यंगों में शिथिल-सा स्पन्दन हो रहा था जैसा इससे पहले उसने अनुभव में कभी नहीं आया था।

दरवाजे से बाहर निकलने के बाद वह दीवार से सटकर खड़ी हो गई कदाचित गिर जाने के भय से। खड़े खड़े एक बार फिर जीवन के मोह ने उसे अपनी ओर खींचना आरम्भ कर दिया। उसके अन्तर में एक ममता सी उमड़ आयी इस घर के प्रति और इस घर की प्रत्येक चीज के प्रति। जिनके मात्र नाम को भी उसे मोह नहीं रहा था। वह मन ही मन कह रही थी क्या अब मैं कभी इन चीजों को नहीं देख

पाऊँगा—कभी भी नहीं ?' परन्तु दूसरे ही क्षण वह अपने को धिक्कारने लगी—'अरे हतभागिनी राहा ! क्या रखा है इस घर में जो तू मरा जा रहा है इसके लिये। छोड़ इस पागलपन को और अपना रास्ता नाप।

वह दो ही चार कदम आगे बढ़ी थी कि फिर पीछे लौट आयी और दोबारा कमरे में जा घुसी और इस तरह इधर उधर नजर दौड़ाने लगी मानो किसी चीज को ढूंढ रही हो। थोड़ी देर में जानकर अथवा अनजाने ही वह उस आले की ओर बढ़ गई जहाँ एक छोटा-सा बिना फ्रेम का शीशा टिका हुआ था। जिस पर जमी हुई धूल बताती थी कि इस प्रयास में लाखों युग ही बीत गये होंगे। वह न केवल इसके प्रति उदासीन रहती थी बल्कि उससे घृणा भी करती।

इस समय इस घृणित चीज से उसका क्या प्रयोजन ? मिस प्रीतम का ध्यान शायद इस ओर नहीं गया यदि गया होता तो कोई कारण नहीं था कि वह उसे उठाकर और दुपट्टे के छोर द्वारा उसे साफ करने लग जाती। इतना ही नहीं बल्कि इसके बाद शीशे को हाथ में ले वह खिड़की की ओर बढ़ गई।

कितनी अनोखी क्रिया ! कभी आगे, कभी पीछे और आज जब कि वह सदा सदा के लिये इस संसार से बिदा हो रही थी। उसे शीशा देखने का ख्याल आगया। सम्भवतः इस समय वह अपने इस पागलपन को मन-ही मन कोस रही थी।

इस शीशे का मूल्य उसकी नजरों में यही रहा था कि जब जब भी भूले चूके से उसने इसका प्रयोग किया तब-तब ही अपने शरीर के प्रति घृणा ग्लानि और पश्चात्ताप के भावों से वह भर जाती था और उसी चीज की क्या उसे इस समय आवश्यकता पड़ी ? क्या अपने शरीर का बचा खुचा मोह तोड़ने के विचार से ? क्या अपने को घृणा और ग्लानि का नशा चढ़ाने के इरादे से जो नशा भी होश में पहुँचकर वह मृत्यु की ओर से [illegible] हो सके ?

ओह ! कितनी दुबली हो गई हूँ मैं । झुर्रियाँ पहले तो कभी नहीं थी मेरे गालों पर । यह हल्दी जैसा चेहरे का रंग और उस पर बनी हुई यह काली काली छाइयाँ । यह नामुराद कहाँ से आ गई ? हाथ में पकडते हुए शीशे में वह ताके जा रही थी और ताकने के साथ साथ इस प्रकार की टीका टिप्पणी किये जा रही थी ।

सहसा डाह करके शीशे को उसने फर्श पर पटक दिया । शीशा चूर चूर होकर कमरे में बिखर गया । इसके बाद वह वायुवेग से बाहर को भागी ।

सब ओर सन्नाटा था। आदमी छोड़ कहीं पर कोई बिल्ली कुत्ता भी दिखाई नहीं दे रहा था और यदि कोई होता भी तो प्रभात के इस धुंधलके और बादलों के अंधियारे में दिखाई न देता। मिस प्रीतम अब फिजूल के ख्यालों में अपने को उलझाना नहीं चाहती थी उसे डेढ़ फर्लांग की दूरी पर पहुँचना था और बिना किसी को दिखाई दिये।

घर से निकलकर उसने अपनी गति को तेज कर लिया और तेज और तेज—और तेज।

सहसा उसकी गति मन्द पड़ने लगी जब सड़क के दांये किनारे एक घने पेड़ के नीचे उसे कुछ दिखाई दिया। पहले तो उसने उस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया शायद यही सोचकर कि कोई कुत्ता लेटा हुआ है। परन्तु इसके बाद जब उसे एक 'क्षीण ध्वनि' सुनाई दी—किसी मनुष्य के कराहने जैसी तो वह वहीं रुक गई और रुकने पर उसने मानो अपने को डांटा अरे दफा कर। चाहे कोई भी हो तुझे इससे मतलब? और इस डांट के फलस्वरूप वह फिर अपने मार्ग पर अग्रसर हुई।

थोड़ा दूरी पर जा कर एक बार फिर उसके कदम ठिठके मानो उसके अन्तर में कोई कह रहा था— अरे अभागिन इस जीवन में अगर तूने कभी भी कोई भला काम नहीं किया है तो मरते समय तो कुछ भलाई करजा। और तब इसके परिणामस्वरूप वह उल्टे पाँव लौट पड़ी।

पेड़ के नीचे गुच्छा मुच्छा हुई एक गठरी को उसने ध्यान पूर्वक ताका तो उसे विश्वास हो गया कि यह भी शायद उसी जैसा कोई अभागा है जो आँधी पानी में खुले आकाश तले पड़ा है।

पहिले वह खड़ी थी फिर उस गठरी के निकट चली गई और बढ़ने के बाद हाथ बढ़ा कर उसने उसे हिलाने का यत्न किया। पर वह व्यक्ति न हिला न डुला। तत्पश्चात उसने मुंह पर से गीला कम्बल का छोर हटाकर ध्यान से ताकना प्रारम्भ किया।

अरे यह तो वही अन्धा भिखारी है। मिस प्रीतम के अन्तर में एक दम कोई याद सी—कोई पिपासा सी जाग उठी और वही जिज्ञासा यान्त्रिक रूप से उसके होठों से प्रस्फुटित हुई यह यहीं कम आकर मरा? घृणा से उसने मुंह फेर लिया।

दृश्य सच ही बहुत वीभत्स था मल में सना हुआ शरीर। चायड कीचड़ में लथपथ कम्बल में से पानी टपक रहा था। चेहरा एकदम डरा वना घुटनों को छाती से सटाये और गीले कम्बल में गुच्छा मुच्छा बना हुआ वह कुछ इस ढंग से फैला हुआ था जिससे अनुमान कर पाना कठिन था कि जीवित है या मर चुका है।

मिस प्रीतम की हालत उबकाई आने जैसी हो रही थी। वहाँ से उठ कर भाग निकलने को उसका मन हो रहा था। पर मन होने पर भी वह न तो उठी और न हो भाग पाई। उसने इधर उधर नजर दौड़ाई। शायद इसलिए कि यदि कोई आता जाता व्यक्ति उसे दीख जाए तो वह उसे सहायता के लिए पुकारे। परन्तु वहां भी उसे कोई दिखाई नहीं दिया।

तब न जाने उसे क्या सूझा कि उस व्यक्ति की पकड़ कर नब्ज टटोलने लगी। और मन्द गति से नब्ज चलने पर जब उसे विश्वास हो गया कि वह अभी मरा नहीं है तो मानो उसे अपने मरने की याद भूल सी गई।

क्या मृत्यु के निकट पहुंचकर मनुष्य की कठोरता कोमलता में बदल जाया करती है? यदि प्रकृति का यही नियम न होता तो मिस प्रीतम जैसी सख्त हृदय की नारी में इस समय यह उदारता यह सद्भावना पैदा हो जाने का कोई कारण नहीं था। जैसे ही उसे उस व्यक्ति

के जीवित होने का विश्वास हुआ कि उसने उसे झकझोड़ना और आवाज़ें देना आरम्भ कर दिया— नाथी! ऐ नाथी!

थोड़ी देर में नाथी का शरीर हिलने लगा और निर्जीव आँखों के पपोटों में गति आने लगी और फिर उसने अपने सिर को हिला डुला कर कदाचित यह जानने का प्रयास किया कि उसे कौन पुकार रहा है—कौन हिला रहा है उसे।

मिस प्रीतम सकते में पड़ गई। क्या नाथी को उसकी हालत पर छोड़ कर चलती बने? परन्तु न जाने कौन सी शक्ति थी जो बार-बार उसे ऐसा करने से रोक रही थी।

अन्त में उसका संकट कुछ कम हुआ जब नाथी को होश लौटने लगा। मिस प्रीतम पूर्ववत् ही हिलाते डुलाते हुए उस पर प्रश्न किये जा रही थी—

नाथी! ऐ नाथी!

हूँ।

अरे तू वही है जो यहाँ मन्दिर के निकट बैठा करता था?

हूँ

यह तुझे क्या सूझा रे।

हूँ।

मैंने कहा इस आँधी पानी में तू क्यों घर से निकल पड़ा?

हूँ

मिस प्रीतम उसके हूँ हूँ से ऊब उठी और कुछ कड़ाई से बोली—

उठ सकेगा?

क्या कहा जी?

मैं कहती हूँ उठ सकता है तो उठ नहीं तो यहीं पड़े-पड़े मर जायगा। अब तो ठंड के मारे तेरा रंग एकदम नीला पड़ गया है।

क्या मुझे कुछ कहा जी?

और नही तो क्या तेरे बाप को कह रही हू ? मिस प्रीतम का क्रोध भान जगा।

मैं मैं मैं '

अरे क्या बकरी की तरह मैं मैं लगा रखी है। मैं कहती हूँ बादल फिर से उमड आ रहे हैं। अगर मरना नही चाहता तो हिम्मत करके उठ।

कहा चलू जी ?

जहन्नुम म। उठेगा या बातें ही बघारता रहेगा।

नाथी कुछ और चेतन्य हो आया। वह इधर उधर हाथ बढाकर कुछ टटोल रहा था। उसके इरादे को भापते हुए मिस प्रीतम ने कीचड म सनी हुई लाठी उठाकर उसके हाथ म पकडा दी और उसे बाँह से पकड कर खडा करने का प्रयास करने लगी। उसके थोड ही दल से नाथी लाठी और हाथ का सहारा पाकर उठ खडा हुआ।

जब नाथी की बाँह को बल पूर्वक थामे मिस प्रीतम उसे अपने घर की ओर लिए जा रही थी तो एक बार फिर उसे उबकाई आने को हुई। एक तो नाथी के चिथडो की बदबू दूसरे पसीने की और तीसरे उसकी साँसो की।

इससे थोडी ही देर बाद मिस प्रीतम ने फिर से अपने उसी घर म प्रवेश किया जिसे वह अभी सदा सदा के लिए त्याग कर गई थी। उसे नाथी पर क्रोध आ रहा था जिसने उसके काम म बाधा डाल दी थी। अन्त म उसने अपने को यह समझाते हुए सन्तोष किया कि मृत्यु को क्या कहा भाग लेना है ? आज न सही कल न सही परसो सही।

२४

जीवन के चौसर पर मात खाते खाते खिलाड़ी जब उठ भागा तो भागते भागते अनायास ही किसी ऐसी चीज से टकरा गया जिसकी टक्कर ने उसे गेंद की तरह पीछे मोड़कर फिर से उसी चौसर पर ला पटका।

कुछ उसी प्रकार की हालत थी मिस प्रीतम की जिस समय वह अपने शरीर के समूचे बल का प्रयोग करते हुए उस अन्ध व्यक्ति को अपने घर की ओर घसीट ला रहा था। इसे भावावेश कहा जाय या सामयिक प्रभाव कि प्रीतम ऐसा कुछ कर बैठी थी जिसकी उसे अपने पर आशा नहीं थी। अन्यथा यह नितान्त असम्भव है कि जिस व्यक्ति से हम घोर घृणा करते हों उसी के प्रति इतना दयाभाव दिखायें। कहीं इसका यह कारण तो नहीं कि मनुष्य जब जीवन से मुँह मोड़ कर मृत्यु में आश्रय लेने जा रहा होता है तब उसके मानस पर जमी हुई पथरीली पर्तें पिघलने लग जाती हैं?

कारण चाहे कुछ भी रहा हो परन्तु इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जिस समय मिस प्रीतम नाथी को अपने घर में लाई तो अपने शिथिल और जर्जर हुए प्राण तथा कर्मेन्द्रियों में उसे कुछ ताजगी-सी कुछ लचक सी अनुभव होने लगी थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि यह आत्म सन्तुष्टता है या किसी अभाव की पूर्ति। वह यदि कुछ समझ पा रही थी तो मात्र इतना ही कि अब से थोड़ी देर पहले उसके मानस रूपी सरोवर को काई जैसी किसी चीज ने आच्छादित किया हुआ था। काई की वह पर्त कहीं कहीं से फट गई है जिसके नीचे से उसे निर्मल जल जैसे कुछ का आभास-सा होने लगा है।

परन्तु उसकी यह परिवर्तित मा मनावति कुछ अधिक र तक कायम नही रहा। उसन अपने कमरे के साथ लगा छा कमर म से जाकर नाथा का निटा िया उस पश्चात्ताप-सा होन लगा कि य उसने क्या पागलपन कर टाला और सका क्या परिणाम गेगा? यदि कोई समके ब्वेत घर म स अध युवक को देगेगा ता देखकर क्या सोचने लगगा क्या समभन गेगा?

बरसात क मौसम म एक तो या ही मनी गाला नाजा म स बू आने लग जाती है जिस तक ऐसी चीज जो पड़ा म हो बदबू मा पुलिन्दा हो। मिम प्रीतम को लगा जसे कमरा ही नहा उसका समूचा घर ही सडाध मारने लगा है। जितनी बार भी नाथा पर उसकी नजर पडती उसका जि मिचलने-सा लग जाता और अपनी मूखता पर उसे क्रोध हो आता— यह मैं क्या मुसाबत मोल न बटा। क्यो न इसकी ओर से ध्यान टा कर अपने रास्ते चली गई। जब तक तो मैं सारे कष्टो सारी चिताओ से मुक्ति पा गई होती।

नाथी को जहाँ पर मिस प्रीतम ने लिटाया था वहा वह निढाल सा होकर पडा रहा। शायद वहाँ से चलकर यहाँ पहुचने क कष्ट न उसे थका दिया था।

दिन चढ आया था परतु बादला की घटा सूय क प्रकाश को रोके हुए थी मिस प्रातम कुछ अधिक ही घबराई हुई थी। कभी वह कमरे के भीतर जाता तो कभी बाहर आती उसका मन उत्तजित सा क्षुब्ध सा हो रहा था। ऐडी स लेकर चोटी तक उसका शरीर बेचन था। उसे सब ओर बदबू ही-बदबू आती लग रही थी—आग पीछे दाएं बाएं भीतर बाहर और इस बदबू म बचने क लिए वह कभी इधर कभी उधर घम फिर रही थी। परन्तु बदबू मानो परछाइ बनकर उसके साथ-ही साथ चली आ रही थी। वही दृश्य उसकी आँखो आग घूम रहा था— वह गदा और बो मारता शरीर जिस थामकर वह वहाँ स यहाँ ले आई

था, वन्दू के अतिरिक्त उसे लग रहा था जैसे नाथी के शरीर में से अगणित जूएँ निकलकर उसके शरीर पर चढ़ आई हैं और उसके कपड़ों में घुस गई हैं। यहाँ तक कि कमरे के फर्श और दीवारों पर भी जूएँ रेंगती होने का उसे भ्रम सा हो रहा था।

अपनी चारपाई पर बैठे-बैठे अब वह अपने पर मन ही-मन आलोचना कर रहा था— मेरा क्या रखा पड़ा है दुनिया का इस आँच के बगैर और इस आँच को ही दुनिया में क्या मिल रहा है कि इस हालत में पहुँच कर भी यह बन्दस्ल जाना चाहता है? ज़िन्दगी से इतना भी क्या मोह कि कुत्तों से भी बदतर बुरी हालत में होते हुए यह जीने के लोभ को त्याग नहीं पा रहा है। इससे तो यही अच्छा है कि आत्महत्या करके सब दुःखों से छुटकारा पा ले।

सोचते-सोचते मिस प्रीतम की चेतना के तार कुछ इस प्रकार में आपस में उलझ गए कि उन्हें सुलझा पाना उसके लिए कठिन था। उसे इस बात का अन्तर कर पाना भी कठिन था कि इस समय वह नाथी के बारे में सोच रही है या अपने बारे में। उसे अपनी और नाथी की परिस्थितियों में कुछ इस प्रकार की समानता दीख रही थी मानो दोनों एक ही मार्ग के पथिक हों।

न जाने चेतना के तारों के उलझ जाने से या अन्य किसी कारण से मिस प्रीतम मानो क्षणिक तौर से एक दूसरे प्रकार की मिस प्रीतम बन गई हो। एक लम्बी साँस 'आह बेचारा अपाहिज!' भरते हुए वह चारपाई से उठ खड़ी हुई और इस आशंका से छोटे कमरे की ओर चल दी 'कहीं पड़े पड़े दम ही न तोड़ गया हो। रात भर आँधी-पानी में पड़े रहने से ठंड जो खा चुका है बेचारा।'

और वहाँ जाकर उसने देखा घुटनों को छाती से लगाये नाथी कम्बल में गठरी बना पड़ा है सम्भवित ठंड के मारे। यों उसका शरीर पहले की तरह निस्पन्द नहीं था।

तब मिस प्रीतम उठ पाँवों अपने कमरे की ओर लौटी और वहाँ से कम्बल उठा लाई। फिर उसने नाथी के शरीर पर से वह गीला कम्बल उतार कर एक ओर फेंक दिया और उसके बजाए अपना कम्बल उस पर डाला।

इस क्रिया के अन्तर्गत मिस प्रीतम ने देखा कि नाथी का गेंद-सा बना हुआ शरीर बहुत बुरी तरह से काँप रहा है। उसकी साँस कुछ इस तरह-से चल रही थी मानो कष्ट के मारे मरणासन्न हो उठा हो। अपने शरीर पर सूखा कम्बल पड़ने पर नाथी के शरीर में कुछ इस प्रकार की गति हुई मानो वह कुछ सुख का अनुभव कर रहा हो।

मिस प्रीतम को अपनी हृदय हीनता पर ग्लानि सी हो आई। मन ही मन वह सोच रही थी कितनी पाषाण हृदय हूँ मैं।

यह अपना कम्बल इस पर मुझे तभी डाल देना चाहिए था जब इसे लाई थी। इतनी देर तक नाथी हुए कम्बल में इसे क्यों पड़ा रहने दिया मैंने ? जब इसे यहाँ तक घसीट ही लाई हूँ तो जिलाने के लिए या मार डालने के लिए ?

और वह नाथी के निकट बैठ गई। फिर साहस बटोर कर उसने नाथी के माथे पर हाथ रख दिया और आवाज दी—

नाथी ऐ नाथी

नाथी जैसे चौंक पड़ा और बिना उत्तर दिये बैठा और अपनी आँखों की अन्धी पुतलियों को इधर उधर घुमाते हुए कदाचित् अनुमान करने लगा कि जो व्यक्ति उसे यहाँ पर उठा लाया था क्या वही बोल रहा है ?

दूसरी बार मिस प्रीतम पुकारी तेरी तबियत कैसी है ?

उत्तर में कुछ तुतलाते हुए नाथी बोला— त तबीयत त अच्छी है। आप आप और न जाने क्यों इसके आगे नाथी जो कुछ पूछने या कहने वाला था पूछ या कह नहीं पाया।

उसके मनोभाव को समझते हुए मिस प्रीतम पूर्ववत् ही उसके माथे पर हाथ फिराती बोली—

भगवान का धन्यवाद है कि तू बच गया। पर तुझे क्या सूझी रे पगले कि इतनी ठण्डी रात में घर से निकल भागा। क्या मरने की सलाह थी तेरी?

साथी उत्तर देने से अभी तक भी हिचकिचा रहा था। तभी मिस प्रीतम का ध्यान एक दूसरी ओर जा पड़ा—साथी के दाँत किट-किटाने की ओर। जिससे वह समझ गई कि रात की भाग दौड़ सर्दी ने अभी तक भी इसका पीछा नहीं छोड़ा है।

अच्छा ठहर जा। उठते हुए वह बोली— मैं तेरे लिए चाय बनाकर लाती हूं।

× × ×

साथी ने अभाव का अनुभव करते हुए दोनों हाथ बढ़ाए और मिस प्रीतम ने प्यार सहित चाय का गिलास उसे पकड़ा दिया और साथी छोटे छोटे घूंटों से चाय पीने लगा।

बहुत गरम तो नहीं है?

नहीं, जी।

थोड़ी और लोगे?'

नहीं जी।'

अब तबीयत कैसी है?

अच्छी है जी।'

बहुत ठण्ड तो नहीं लग रही है?'

नहीं जी।

मिस प्रीतम चाहती थी कि वह अपने ढंग से साथी को कुछ और बातें करने के लिए प्रेरित करे पर साथी का यह बार बार का 'नहीं जी' 'हाँ जी—जी— नहीं जी फिर भी हाँ जी' को सुनते-सुनते वह कुछ ऊब-सी उठी फिर भी अपना पुरुषार्थ सफल होता पा कर उसे संतोष हुआ।

नाथी की पहली और अब की हालत में बहुत अन्तर आ गया था और यही अंतर मिस प्रीतम की सजगता का कारण था। उसे अपनी इस क्रिया पर कुछ गर्व-सा होने लगा मानो भलाई एवं परोपकार के तौर पर स्वीकारिया हो चुके अपने जीवन में घटी हुई इस घटना ने उसे विश्वास करा दिया हो कि अभी तक वह समुचित रूप में स्वीकारिया नहीं हुई है वह अपने पर एक प्रकार से प्रश्न कर रही थी कहाँ वह उस काइयाँ और कहाँ उसी के घृणित माथ पर हाथ रखना! अरे तू वही है प्रीतम?

नाथी चाय का गिलास खाली कर चुका था। उसके हाथ से गिलास पकड़ते हुए मिस प्रीतम का दूसरा हाथ नाथी की कलाई पर जा टिका और उंगलियों से उसकी नब्ज टटोलते हुए वह बोल उठी— अरे! तुझे तो बुखार जान पड़ता है नाथी।

नाथी उसी प्रकार अपनी नृयाति आँखें मिस प्रीतम की ओर घुमाते हुए बोला— मुझे भी ऐसा ही लगता है और थोड़ा रुकने के बाद वह फिर बोला— आप आप बीबा जी! क्या वहाँ से आप ही मुझे उठा लाई थी?

हां पर तू वहाँ किस तरह जा पहुंचा रे क्या घर का रास्ता भूल गया था? इतने बुरे मौसम में भला क्या विपत्ति पड़ी थी तुझ पर से निकलने की पगले। अगर वहीं पड़े पड़े मर जाता तो? और कहते कहते जाने अथवा अनजाने ही मिस प्रीतम का हाथ फिर से नाथी के माथे पर जा टिका। माथा जो अब से थोड़ी देर पहले एक दम ठंडा था अब एकदम तपा हुआ।

इस स्पर्श ने मानो समूचे नाथी को अमृत सिंधु में नहला दिया। एक मधुर सी—एक स्पन्दना सी झुरझुरी उसकी नस-नस में फिर गई। जैसे नाथी का सम्पूर्ण नाथीपन पिघल कर अपनी जीवन दात्री के चरणों पर बिछ गया हो। माथे के निचले उसके दोनों गड्ढों में टिकी हुई पुतलियों में मानो देखने की शक्ति आ गई हो। मानो वह

प्रत्यक्ष रूप में किसी देव कन्या को अपने सम्मुख पा रहा हो। इस स्थिति में वह भूल ही गया कि अभी अभी उससे क्या पूछा जा रहा था। बजाए इसके कि वह किन्हीं सजे हुए वाक्य द्वारा आभार प्रकट करता उसका माथा मिस प्रीतम के पैरों की ओर झुक गया। उसकी आँखें गद तरल हो उठे।

मिस प्रीतम ने जब फिर से अपने प्रश्न को दोहराया तो नाथा मानो किसी नटखट बालक की तरह अपनी माँ के पास फरियाद कर रहा हो बोला—'मैं बाबी जी मैंने कोई खता से पाप हो ऐसा किया था। उन हरामियों ने जो मुझे मार कर वहाँ से भगा दिया तो फिर क्या करता।

मार कर भगा दिया तुझे? किन लोगों ने? अरे उन कसाइयों को तुझ पर जरा भी दया न आई जिन्होंने ऐसे खतरनाक मौसम में तुझे निकाल दिया?

एक नितान्त अपरिचित और अनजानी स्त्री द्वारा अपने प्रति इतनी गहरी सहानुभूति पाना, यह नाथा की समझ से परे की बात थी। एक असहाय जीवन में कभी भूल कर भी इस प्रकार का कोई क्षण न आया था—कभी भूल कर भी किसी ने सहानुभूति के दो शब्द न कहे थे उसके लिए। इस प्रकार का अवसर सम्भावना की सीमा से बाहर था।

अब नाथा ने एक ही साँस में अपनी करुण कथा सुनाना आरम्भ कर दी—किस प्रकार पहले वह मन्दिर की एक कोठरी में रहा करता था और बाद में वहाँ से उसे इस बात पे निकाल दिया गया कि वह एक नम्बर का लोफर है। वह दिन भर मन्दिर के निकट बैठ कर वाहियात और अश्लील प्रकार की बकवास करता रहता है। इत्यादि।

नाथी ने बताया कि जब उसका नाम मात्र का सामान कोठरी में से निकाल कर और बाहर सड़क पर फेंक दिया गया तब उसे इतना क्रोध आया कि वह उन्हें गालियाँ देने लगा। जिसके बदले में उसको खूब

दिखाई हुई। मार खाने के बाद उसने सड़क पर से अपना सब सामान टटोल कर इकट्ठा किया और उस समय जाकर एक दुकानदार के पास—जिससे उसका पुराना सम्बन्ध चला आ रहा था—ले जाकर रख दिया। उसी दिन से उसने मन्दिर के निकटवर्ती उस गूलर वृक्ष तले बैठना छोड़ दिया। अनन्त बड़ी कठिनाई से उसे तीन रात मकान वहीं पर एक कोठरी मिल गई। परन्तु बाद दिनों बाद ये भी वहाँ दिखन नहीं दिया गया।

मिस प्रीतम जो नाथी की बातें सुनते हुए उसके प्रति सहानुभूति से भर चुकी थी बोली— अच्छा फिर क्या हुआ।

फिर बीबी जी! नाथी ने कुछ हिचकिचाते हुए आगे कहना आरम्भ किया। फिर मेरी जान दुःखी हो गई, क्या बताऊँ आपको। कभी इधर कभी उधर घूमते हुए कई दिन तक ठौर ठिकाने की तलाश करता रहा। और जब कहीं भी कुछ नहीं पा पाया तो दिल बेकरार हो उठा। बार बार मन में होने लगा कि अब मुझे जिन्दा रह कर क्या करना है। क्यों न किसी कुएँ पोखरे में छलांग लगा कर मर जाऊँ।

सुनकर मिस प्रीतम को लगा जैसे नाथी के नहीं बल्कि उसी के द्वारा ये सब कहा जा रहा है। प्रायः वैसे ही शब्द थे ये जैसे अब से थोड़ी देर पहले मिस प्रीतम के हृदय से निकले थे। उसने पूछा— अच्छा फिर क्या हुआ?

नाथी सुनाने लगा— फिर क्या होना था बीबी जी। कई दिनों तक उसी हालत में भटकता रहा। जहाँ कहीं पर भी जाकर टिकता लोग दुतकार कर वहाँ से खदेड़ देते। इसी तरह घूमते घूमते जब मैं लाचार हो उठा तो एक रात मैंने मर जाने का फैसला कर लिया और मरने के लिए चल पड़ा एक कुएँ की ओर। पर आँधी पानी ने इतना जोर पकड़ लिया कि बहुत खोज करने पर भी कुएँ तक न पहुँच पाया और रास्ता भूलकर किसी दूसरी ओर जा निकला। पानी जोर जोर से

बरस रहा था और जब ओले पड़ने लग गए तो ठण्ड के मारे मेरी बुरी हालत हो उठी। एक तो मन ही मन कुछ टूटी नहीं था ऊपर से शरीर को भी जब ठण्ड ने झनझनाना शुरू कर दिया तो मैं अपने को स्थिर न रख सका और लड़खड़ा कर गिर पड़ा। उसके बाद मुझे तब ही होश हुआ जब आपने पहुंचकर मुझे हिलाना डुलाना शुरू किया।'

अपनी वार्ता की समाप्ति पर नाथी ने हाथ द्वारा टटोल कर अपनी लाठी सँभाली और फिर यह कहते हुए उठ खड़ा हुआ—

'अच्छा बीबा जी अब चलता हूँ। भगवान भला करें। बच्चे जीवें सुहाग बना रहे। आपने मेरे लिए बड़ी तकलीफ उठाई।'

नाथी के इस असीस से आशीर्वाद को सुनकर मिस प्रीतम लज्जा के मारे गड़-सी गई। यह भी अच्छा हुआ कि आशीर्वाददाता की आँखें नहीं थीं। यदि होतीं तो सम्भव था कि मिस प्रीतम के लिए उसके सामने टिक पाना कठिन हो जाता। वह कहने को हुई कि, 'यह क्या कह रहा है पगले! मैं तो कुंवारी हूँ।' पर कुछ कहते रुक गई—कदाचित् यह सोचकर कि नाथी की कल्पना में यदि वह कोई बड़ा-बूढ़ा है तो उसे यही समझने दिया जाए।

वह बोली—'अच्छा अगर तुम्हें जाना ही है तो वर्षा रुकने पर चले जाना।'

सुनकर नाथी के होठों पर रूखी-सी हँसी दौड़ गई, वह बोला—'बीबा जी जिसे मरना ही है उसके लिए आँधी पानी सब एक ही बराबर है।'

तब मिस प्रीतम सहज में बोल उठी—'नहीं, नहीं। अभी तू नहीं जा सकता।'

इस आग्रह भरे वाक्य के सामने नाथी ने घुटने टेक दिए। उसे बाँह से पकड़कर मिस प्रीतम ने जहाँ पर उसे बिठाया वहीं पर बैठ गया और बिना हील-हुज्जत के।

सोने का यह समय नहीं था पर प्राय रात भर मिस प्रीतम मानो बोर्ड बदकर सो रही थी। कुछ तो रात भर न सो पाने से कुछ करवट न मारे और जवानी की उम्र। फिर भी यदि नींद न आती तो और कब आता था उसे। पर मिस प्रीतम का आज की नींद का कारण इसके अतिरिक्त कुछ और भी था। रतजगा करना यह तो उसके लिए कोई नई बात नहीं थी जबकि विगत एक लम्बे समय से यह उसकी आदत बन चुकी थी। थोड़ी घनी नींद यदि उसे आती भी थी तो नारस और उचाने वाली। बुरे-बुरे स्वप्न आते रहते उसे। थोड़ी थोड़ा देर म नींद का उचट जाना फिर आना फिर उचटना। यह आज की रात यह कुछ विलक्षण सी व्यतीत की उसने। पहले जब वह सवेरे उठती तो उसे अपना शरीर टूटा टूटा थका-थका जान पड़ता था। जग जाने पर भी बिस्तर छोडने का नाम नहीं पड़े पड़े कितनी ही देर तक करवट पर करवट जम्हाई पर जम्हाई लेती चली जाती थी। पर आज जब उसकी नींद खुली तो उसे अपना शरीर हल्का फुल्का-सा जान पड रहा था। रात भर उसने मीठी और सुखद निद्रा का आनन्द लिया था। यह विलक्षणता क्या? सोचने पर भी उसे इसका कारण समझ म नहीं आया। क्या उसने रात सोने से पहले नींद लाने वाली कोई गोली खा ली थी और यदि नहीं तो फिर?

सोचते सोचते उसे नाथी की याद हो आई और तत्क्षण उठकर वह छोटे कमरे की ओर भागी। यह सोचते हुए कि न जाने बेचारे की रात कैसी गुजरी होगी।

भीतर उसने देखा नाथी अपनी लाठी और हाथ के सहारे कमर मे

से बाहर निकलने का रास्ता टटोल रहा था।

'नाथी ! क्या है तबियत ?'

आपकी कृपा से अच्छा हूं बाबा जी। भगवान भला करें। बट गिये। मिस प्रीतम एक बार फिर गड़ गई— किधर जा रहा है नाथा सवर नहर ?

ना मैं जी मैं मैं और इससे आगे यत्न करते हुए भी नाथा कुछ न कह पाया। मानो किसी ने उसके गले में कुछ ठोक दिया हो।

मिस प्रीतम लगभग उसकी मनोस्थिति को समझ रही थी कि कैसे भीतर ही भीतर नाथा अपने घटियापन की ग्लानि में डूबा जा रहा है। नाथी की मुख मुद्रा से उसे स्पष्ट दिखाई दे रहा था। पर वह समझ नहीं पा रही थी कि किस ढंग से वह नाथी के अन्तर की इस तुच्छता को दूर करे। क्या वह उसे अपने जीवन की कथा सविस्तार सुना दे ? उसे बता दे कि वह भी उसी तरह अभिशापग्रस्त और ठुकराई हुई वस्तु है ? परन्तु कस एक अपरिचित व्यक्ति के सामने अपने रहस्य का खोलना शुरू कर दे और क्या ? अत उसने सोचा—जाता है तो जाए। मुझे क्या लेना देना है। क्यों नाहक मैं इसकी चिन्ता में परेशान हो रहा हूं। आखिर कौन होता है यह मेरा कोई भी तो नहीं। तब उसने नाथी से कह ही दिया—' अच्छा भई तेरी मर्जी। अगर तुझे जरूर ही जाना है तो मैं तुझे रोकूंगी नहीं पर' और इस 'पर' पर आकर मिस प्रीतम सहसा रुक गई।

नाथा अपनी लाठी की सहायता से दरवाजे की देहरी तक पहुंच चुका था और खड़-खड़ अपनी दयामय युवती द्वारा तथास्तु की प्रतीक्षा कर रहा था।

पर वाक्यांश पर तनिक रुकने के बाद मिस प्रीतम इसके साथ कुछ और शब्दों को जुटाते हुए बोली—

पर मैं सोचती हूँ रात भर तो तू अंधा पानी म पड़ा रहा। अभी तक तूने कुछ खाया भी तो नही है। इस हालत म फिर से इधर उधर भटकने पर अगर तुझ कुछ हो गया तो ?

नाथी मन ही मन सहानुभूति म बस हुए इन वाक्या का मूल्यांकन करत हुए बोला— होना क्या है बीबी जी मुझ। मार मार फिरना तो मेरी किस्मत म ही लिखा है। और फिर दुर्भाग्य न जहाँ पर मुझ ला पटका है यह तो ऐसा है कि जीत रहन और मर जान म मुझ कुछ भी अन्तर नही जान पडता है। बल्कि मर जाना मरे लिए अच्छा ही होगा। यही कामना लेकर ही तो चला था मैं।'

हृदय की भाषा द्वारा अपने उद्गारो को दूसरे क सामन रख पाना यह कला ऐसी नही है कि सब कोई इसका प्रयोग कर सके। यदि ऐसा होता तो अवश्य ही मिस प्रीतम को नाथी क मनोभाव बाँचने म देर नहा लगती। क्योकि नाथी ऐसी भाषा शायद नहीं जानता था। फिर भी इसका कुछ-न-कुछ अर्थ तो उसकी समझ म आया ही। अर्थात जहाँ नाथी न अपनी तुच्छता को भावा को भीतर हा भातर कुचलना आरम्भ कर रखा है वहाँ मिस प्रीतम के प्रति आभार क भार तल भी वह दबा जा रहा है मानो मिस प्रीतम ने उसे ससार का काइ बहुमूल्य निधि प्रदान कर दी है।

अच्छा नाथी मिस प्रीतम एक बार फिर स्नेह भरे लहजे म बोली— अगर मुझ जाना हा है तो थोडी देर रुक जा तब तक मैं तरे लिए दो चपातिया उतार कर लिए आती हूं।

नाथी बठ गया। उसका एक पाँव दहरी क भातर था एक बाहर। मक्खन द्वारा वह नाठा का वमतत्व हा कुरेद जा रहा था मिस प्रीतम को तब पर गपना आँखा क पपोटे कुछ इस प्रकार स उठाए हुए था जसे उसकी निर्दोष आत्मा इन पपोटा द्वारा पुकार पुकार कर कह रही हो— आ परोपकार का प्रतिमा ! ओ ममता की साक्षात देवी ! क्या

मैंने पूर्व जन्म में ऐसा कोई पुण्य किया था जिसके बदले में इस स्वार्थमय संसार में तेरा दर्शन कर पाया हूँ।

इतने में मिस प्रीतम ने हाथ बढ़ाकर उसकी काली कलूटी बाँह को थाम लिया। जो उस आग की तरह दहकती हुई लगी। शायद वह भूल ही गई थी कि इससे पहले जब वह यहाँ से लौटी थी तब भी नाथी को बुखार था पर आज जितना अधिक नहीं।

अरे! बस ही उसकी बाँह को हाथ में थाम वह बोली— इतना बुखार एकदम! नहीं, मैं इतनी जालिम नहीं नाथी कि तुम्हें इस तेज बुखार की हालत में घर से निकाल दूँ। लेटे रहो यहीं पर और मैं तेरे लिए कुछ बनाकर लाती हूँ। और कहने के साथ साथ मिस प्रीतम ने उसी कमरे की एक नुक्कड़ में से एक पुरानी दरी लाकर फर्श पर बिछा दी और नाथी को वहीं लिटाकर ऊपर बड़ा कम्बल उढ़ा दिया।

नाथी, अब किसी भी माँ-बाप की बात बड़ा बूढ़ा कह रहा हो मिस प्रीतम बोली— अब बाहर निकलने की कोशिश मत करना। पगले इतना भी नहीं जानता कि बुखार में हवा लग जाए तो सरसाम हो जाता है।

जब भी मिस प्रीतम कमरे से बाहर हुई कि नाथी उठकर बैठ गया और बैठे बैठे मानो उसके अन्दर की जिज्ञासा मिस प्रीतम से पूछने लगी— देवी! क्या तुम इस घर में अकेली रह रही हो? किसी दूसरे व्यक्ति की आवाज तो मुझे यहाँ पर सुनाई नहीं दी है। तुम्हारा पति कहाँ है— तुम्हारे बाल बच्चे कहाँ हैं।

कुछ ही देर बाद मिस प्रीतम वापस आ पहुँची। जिसके हाथ में गर्म दूध का गिलास था। गिलास नाथी के हाथ में पकड़ाते हुए बोली— इन बातों को इस हालत में तुम्हें जानने की आवश्यकता नहीं देख रही हूँ कि बुखार है। और न देर करो। इसे पीकर सो जाओ। बाकी बातें मैं इत्मीनान से बैठकर तुझे फिर सुनाऊँगी।'

नाथी बड़े बड़े घूंट लेते हुए दूध पी रहा था। उसके निकट बैठ-बैठे मिस प्रीतम यह प्रकार के प्रश्न किये जा रही थीं और नाथी एक एक घूंट के साथ एक एक प्रश्न उत्तर दे रहा था—

तो नाथी अब तू कहाँ जाएगा ?

प्रश्न ने नाथी को दूध पीने का मानो मार्ग ही भुला दिया। प्रश्नकर्त्ती की ओर आँखों के कपोट उठाये वह बोला— वापी जा और कहाँ जाऊंगा। उसी कुएं का रास्ता नापूंगा।

घत पागल कहीं का। मिस प्रीतम ने डांट बताई— 'क्या वाहियात बातें बार बार किए जा रहा है।

नाथी पूर्ववत ही अपनी पुतलियाँ मिस प्रीतम की ओर तान बैठा रहा और उधर मिस प्रीतम एक ही सांस में अपना लेक्चर झाड़ती चली जा रही थी जिसका विषय था कि मनुष्य को इतना निराश कभी नहीं होना चाहिए कि मौत के बिना उसे दूसरी कोई राह दीखे ही नहीं। भगवान् ने जो हमें यह मानव जन्म दिया है तो इसलिए नहीं कि आत्म हत्या द्वारा इसे समाप्त कर दिया जाए इत्यादि। परन्तु लेक्चर देने के साथ साथ मिस प्रीतम को लगता कि जैसे उसके अन्तर में बैठा हुआ कोई वक्ता उसे सम्बोधित करते हुए कह रहा है।

अरी बड़ी पण्डिताइन है ! दूसरों को जो उपदेश देने चली है वही उपदेश क्या तू अपने को नहीं दे सकती ? जो व्यक्ति खुद ही किसी भयानक गड्ढे में छलांग लगाने पर उतारू हुआ बैठा हो वह दूसरे को न गिरने का उपदेश दे इससे बढ़कर भी कोई मूर्खता हो सकती है ?

अन्तर के इस वक्ता द्वारा किये जा रहे उपदेश को सुनकर मिस प्रीतम अपनी नजरों में स्वयं ही लज्जित हो उठी। उसे लगा कि वह इस नेत्रहीन व्यक्ति के साथ मजाक कर रही है—पाखण्ड कर रही है। और अपने से धोखा भी।

× × ×

दोपहर होते न होते नाथी का बुखार उतर गया और बुखार

उतरते ही वह अपनी लाठी टिकटिकाता हुआ कमरे से बाहर निकल आया। फिर उसी लाठी की सहायता से चार दीवारी से बाहर जाने वाला मार्ग टटोलने लगा।

मिस प्रीतम इस समय अपने कमरे में सोई पड़ी थी और सोते-सोते में जब ही उसे टिक टिक की आवाज सुनाई दी वह सोचते हुए बाहर निकली— क्या वह सूर फिर जाने को तैयार हो गया?

बाहर निकलकर उसने देखा नाथा के एक हाथ में लाठी थी और दूसरा हाथ चारदीवारी पर सरकाते हुए वह दरवाजे की खोज में आगे बढ़ा जा रहा था।

नाथा, ए नाथा, कहाँ चला?

नाथा के पाँव ठिठक गये। दीवार के जिस भाग पर उसका हाथ रेंग रहा था वहीं जम कर रह गया। जिस ओर से आवाज आई थी उसी ओर मुड़ते हुए नम्र स्वर में बोला— यों ही बीबी जी! मैं अभी लौट आ रहा हूँ थोड़ी देर में।

तब तक मिस प्रीतम उसके सिर पर आ धमकी और आते ही बोली— 'दिखा तो हाथ।

नाथा के सामने हाथ बढ़ाने पर मिस प्रीतम की उँगलियाँ उसकी नब्ज पर जा टिकीं और बोली— बुखार तो अब नहीं है पर तुझे इतनी क्या जल्दी है जाने की।

नाथा कुछ सकुचाते हुए बोला—'मगर बीबी जी आप मुझे यहाँ पर दो एक दिन टिकने का हुक्म दे दें तो बड़ी ही कृपा होगी। तब तक मैं कोई दूसरी जगह तलाश कर ही लूँगा।

मिस प्रीतम उदार भाव में बोली— यह तो कोई बात नहीं कमरा खाली ही पड़ा है। और दो दिन टिकने से फिर ठीक हो जावेगा। पर मैं पूछती हूँ तू कहाँ जा रहा है?

दुकानदार के पास जा रहा हूँ बीबी जी।

कौन दुकानदार।

यहां बाबा जी। रामगोपाल पसारी धन्न का मालिक है चौड़ी—एकदम दवना स्तम्भ बना हुआ पर क्या करता है। उसी के कमरे में मैंने अपना सामान रख रखा है। वहां जान पहचान है। उधार ही ले जाये थोड़ा-सा।

क्या क्या सामान है ?

ऐसा कुछ नहीं बीबी जी। यों ही दो चार फटे पुराने कपड़े एकाध टूटा फूटा सन्दूकचा और लोटा थाली बस।

सुनकर मिस प्रीतम को हंसी आ गई। मन ही मन कहने लगी मूर्ख कहीं का। बड़ा जवाहरात छोड़कर आया है जिसे पर निस कोई उठा कर ले जाएगा। पर प्रगट में बोली— अच्छा जल्दी जा। कितनी दूर है दुकान।

बहुत दूर नहीं है बीबी जी चार ही पांच मोड़ मुड़ने पर आ जाती है।

पर इतनी दूर तू कैसे जाएगा अकेला ?

नाथी हस दिया— भला यह भी कोई दूर है बीबी जी। यह मेरे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। अगर चाहूं तो शहर भर का चक्कर काट सकता हूं। क्या हुआ जो आंखें नहीं हैं भीतर की सूझ तो है जिस रास्ते से दो चार बार गुजर जाऊं फिर वह मुझे भूलता नहीं है।

अच्छा तो जा कहने के बाद मिस प्रीतम उसका हाथ पकड़े दरवाजे तक ले गई और फिर वैसे ही लाठी टिकटिकाते हुए नाथी बाहर निकल गया।

जब तक नाथी घर में मौजूद रहा मिस प्रीतम अपनी वास्तविकता की ओर से उदासीन बनी रही मानो मृत्यु के गड्ढे में लुढ़कती हुई को किसी बात के तिनके ने रोक लिया हो साथ ही वध की छाया ने उसे मुस्काने को बाध्य कर लिया हो, परन्तु जैसे ही नाथी घर से बाहर हुआ कि उसका हाल फिर पूर्ववत् हो उठने लगा, वही जीवन की कड़वाहटें वही निराशा की लहरें और वही मृत्यु का प्यार कुहराम। वह उसी अपने सात जन्म की बरन खाट पर जा गिरा जिस पर लेटते हुए उसने अनगिनत निद्रा रहित रातें व्यतीत की थी जिससे उसे उतनी ही घृणा होने लगी थी जितनी अपने जीवन से।

खाट पर मुँह बाए पड़े पड़े उसने दोपहर से शाम कर दी। बीती रात की सब बातें उसे फिर से याद हो आने लगा। उसने तो कुछ और ही सोचा था कि चैन से पहले-पहल मृत्यु की गोद में जा पहुँचने का सफल। परन्तु यह सब उलट फेर हो गया। उसने तो सोचा था कि उसके इस निश्चय को ब्रह्मा विष्णु भी नहीं बदल सकेंगे। पर एक अपाहिज व्यक्ति ने यदि उस निश्चय को बदला नहीं तो स्थगित तो कर ही दिया और मिस प्रीतम को इस बात का पश्चाताप हो रहा था। पश्चाताप के अतिरिक्त उसे अपनी मूर्खता भरी भावुकता अथवा भावुकता भरी मूर्खता पर क्रोध आ रहा था। वह मदन को कोस रही था—

"अरे ओ कम्बख्त मदन! यह तूने क्या किया। माना कि तूने उस भले का कुछ न कुछ उपकार ही किया। पर तेरी अक्ल क्या घास चरने चली गई थी जो तूने उसे अपने घर में डेरा डालने की दावत दे डाली?

जते तुझ इसी घर म टिक रहना है—जरा तुझ आत्महत्या नही करनी है।

और अब ? मिस प्रीतम के लिए यह एक एमा प्रश्न था जो इस समय भारी सा पत्थर बनकर उसके दिल और दिमाग पर चोटें कर रहा था। वह चिन्तित और भयभीत होकर सोच रही थी— यदि वह लौट आया लौटे तो आयगा ही जबकि उस घुमक्कड को बना बनाया ठिकाना मिल गया है एक बार जो दिल गया तो फिर जाने का नाम थोडे ही लेगा वह। ऐसे ढीठ आत्मा को लाना थोड हो आता है।

मिस प्रीतम मन ही मन भगवान् म मनाने लगी कि यह लौट कर ही न आय फिर तो वह आज रात म उसी कुए पर जा पहुँचेगा और बस।

उसके विचारों का प्रवाह अब बीच म ही टूट गया जब बाहर से उसे फिर वह खटखट सुनाई दी और वह एक बारगी चौंकती उठी— फिर से आ धमका वह वन मानस ! और वसे ही तपी झलसी वह बाहर निकल आई और मन म यही फसला करके कह दूगी उसे कि जा बाबा अपना रास्ता नाप। यहाँ पर मैंने सराय नहीं खोल रखी है। नाराज हो जाएगा तो क्या मेरी टाँग टट जायगी ? मुझे क्या परवाह है उसको नाराजगी की और फिर इस दुनियाँ म कौन है जो मुझ पर नाराज नहीं है।

यदि नायी के पास अपनेपन का प्रमुख चिन्ह न होता तो सम्भव था कि मिस प्रीतम को उसे पहिचानने म थोडी देर लग जाती। कहाँ वह गदे चिथडे और कहाँ यह सादे स्वच्छ वस्त्र। कहाँ वह शरीर पर चढ़ी हुई मल की मोटी परत और कहाँ यह नहाया धोया और चमकता दमकता शरीर। कुछ सामान नायी ने स्वय उठाया हुआ था और कुछ उसके पीछे पीछे चले आ रहे कुली ने।

अब क्या करे मिस प्रीतम ? क्या दुतकार कर उसे घर से बाहर निकाल दे ? परन्तु कहाँ से लाये वह इतना साहस।

नाथा लाठी खटखटाते हुए उसी छोटे कमरे म जा घुसा और बिना

किसा असुविधा के माना बहुत दिना स परिचित हो। मिस प्रीतम तथा उदारता क मिल जुले मनोविकार म घिरी नाथी क पीछे-पीछे कमर म जा पहुचा। नाथी का सामान उतना बुरा नही था जितना समझ बठी थी वसे उस बढ़िया भी नहा कहा जा सकना था—एक खाया कनस्तर एक बोरी म भरा हुआ न जान क्या कुछ एक थोडा म सा गटठर और चगाई म लपेटा हुआ बिस्तर। इस सब को देख मिस प्रातम का क्रोध भल ही न ढला हो परन्तु उसकी घृणा म पर्या कमी हो आइ। सम्भवत इसलिए कि सब नाथी के शरीर या कपडो स नाम को भी बदबू नहा आ रही थी।

कुली सामान रखकर और मजदूरी लेकर लौट गया। इधर नार्थ अपन लटटे पट्टे को टटोल-टटोल कर करीने स रखन का प्रयास करत हुए मिस प्रातम से जिसकी पदचाप स ही उसने समझ लिया था कि वह उसक पीछे पीछे चली आई है—कह रहा था— बीबा जी क्षमा करना मैंने आपको बहुत कष्ट दिया। पर जिसन मरे प्राण बचान तक का कष्ट सहन किया है उस अगर थोडा और भी दे दूगा तो कौन बडा बात है। मैं यहाँ पर दो-तीन दिन ही टिकूगा आप निश्चिन्त रहिये।

पचास प्रतिशत मिस प्रीतम का ध्यान नाया की बाना की ओर था और पचास प्रतिशत अनात म देखी हुई उन झाकियो की ओर जब मदिर -ात आने समय वह इसी नाथी को बेतुकी बातें उचारते देखा करता था उस आभास—सा हो रही थी कि वह नाया और यह नाथी क्या वास्तव म एक ही हैं।

औपचारिक रूप म उसन नाथी स पूछा— अब तबियत कसा है तेरा ?

सामान उठान रखने का क्रम वहा छोड कर नाथी मिस प्रातम की ओर मुडा और श्रद्धाभाव म बोला—' आपकी दया स बिल्कुल ठीक हूँ बीबी जी। मैं ऐस छोटे-मोटे बुखार की परवाह नहा किया करता बीबा जी यह तो मेरी पुरानी आदत है।

कुछ खाया पिया भी है या यूं ही खाली पेट ही भटक रहा है ?

खाने पीने की फुरसत कहां मिली बीबी जी।

अच्छा तो इस दगड़ का रस्ता पकड़ ले इस कोने में ठौर पर तू बैठ के पहले खाना खा ले तेरे हिस्से का खाना मैंने रख छोड़ा है।

नाथी मानो देवताओं से प्रसन्न हो किसी देवता का अमृत वचन सुन रहा हो—मानो स्नेहमयी माता साक्षात् उस पर वात्सल्य की फुहार पड़ रहा हो जिसके प्रभाव से वह मन ही मन आनन्द विभोर हो उठा। उसका माथा मिस प्रीतम के सामने झुक गया। उत्तर में जो कुछ कहना वह चाहता था प्रयत्न करने पर भी नहीं कह पाया।

मिस प्रीतम पूर्ण रूप से नाथी के मन का उद्गार तो न समझ पाई हो परन्तु इतना तो उसे लगा कि नाथी उसके प्रति आभार के भाव से दबा जा रहा है।

⊠ × ×

नाथी खा रहा था और उसके सामने बैठी मिस प्रीतम उससे इधर उधर के छोटे मोटे प्रश्न किए जा रही थी। खाने के साथ साथ नाथी इन प्रश्नों का यथा योग्य उत्तर दे रहा था। इसी बीच में मिस प्रीतम ने कुछ ऐसी बात कह डाली मानो नाथी के मुंह पर चपत सी आ पड़ी हो भले ही यह बात मिस प्रीतम सहानुभूति में कह रही थी—

नाथी ! कितने खोटे कर्म किये हैं तूने पूर्व जन्म में जो एक तो भगवान् ने तेरी आंखें छीन लीं और दूसरे भीख मांगने को छोड़ दिया तुझे और अन्धों की तरह अपमानित कराने को जैसा भगवान ने तुझे हृष्ट पुष्ट शरीर दिया है जैसा तुझे रोशन दिमाग दिया है वैसा आंखें भी दे देता तो कितना अच्छा होता।'

नाथी का स्वाभिमान जैसे घायल हो उठा। वह खिन्न होकर बोला—"आप ठीक कह रही हैं बीबी जी पूर्वजन्म में बहुत खोटे कर्म किए हैं मैंने पर

एक बात शायद आप नहीं जानती हैं कि मैंने भिखमंगे की तरह हाथ फैलाकर कभी नहीं माँगा है। जो कुछ भी किसी से पाता हूँ अपने परिश्रम के बूते पर।'

सुनकर मिस प्रीतम लज्जित-सी हो उठी। वह बोली— मैंने तेरा दिल दुखाने के लिए तो यह बात नहीं कही है। यों ही कहा कि ।

साधो म्लान-सा होकर बोला— आपने कोई अनोखी बात तो नहीं कही है बीबी जी! और इस दुनिया में केवल मैं ही तो एक अभागा नहीं हूँ। मेरे जैसे लाखों हैं जो आँखों के अभाव में गदागरी के लिए मजबूर हैं। बचपन में जब तक मुझे भले-बुरे की सूझ नहीं थी, मैं भी यही करता था। गलियों और मुहल्लों में जाकर आवाज लगाता और जो भी कोई रूखा टुकड़ा कोई झोली में डाल देता उसे पेट में डाल लिया करता था। पर जब मैंने होश सँभाला, इस काम से घृणा होने लगी। मेरा दिमाग बीबी जी शुरू से ही खूब रोशन है। बचपन में गाने का भी शौक था। उसके बाद टूटी-मंडी तुकबंदी भी करने लगा। तब मेरी इच्छा हुई कि अगर किसी गानेवाले से राग-ताल की विद्या सीख लूँ तो कितना अच्छा हो। मन्दिर में भजन-मंडलियाँ और गानेवाले आते ही रहते थे। एक दिन एक गानेवाले की शागिर्दी करने का निश्चय कर लिया, पर उस भले आदमी ने मुझे यह कहकर टरका दिया कि मेरी आवाज फटे हुए [illegible] है।

आवाज मेरी सचमुच ही अच्छी नहीं थी बीबी जी, पर स्वभाव का पूरा ढीठ रहा हूँ। जिस काम के पीछे एक बार पड़ जाऊँ फिर उसका पीछा नहीं छोड़ा करता। उसके बाद मैं अपने ही मन से गाने का अभ्यास किया करने लगा और कुछ छोटे-मोटे भजनों की रचना भी करने लगा। तब मैंने मन्दिर के निकट बैठकर यहाँ भजन गाने शुरू कर दिए। पर आवाज भद्दी होने से कुछ अधिक सफलता न मिल पाई, फिर भी

भरण के लिए थोड़े बहुत पैसे जुटा ही लेता था और स्तन पर हो मुझ एक बात का संतोष तो हुआ ही कि भीख माँगता तो छूटा।

नाथी इससे आगे कुछ और भी कहने जा रहा था कि मिस प्रीतम न उसे टोक दिया— पर तू तो नाथा वहाँ बबूल के नीचे बैठकर बहुत ही वाहियात किस्म का तुक बोला करता था। जिन्हें मैंने स्वयं कई बार सुना है।

आप ठीक कहती हैं बीबी जी! मनुष्य को जीने के लिए क्या कुछ नहीं करना पड़ता। दुनियाँ दो धारी तलवार है बीबी जी। यह आगे से भी मार करती है पीछे से भी आप शायद ख्याल करती होंगी कि वहाँ बैठकर नाथी जो लोगों को हँसा हँसा कर लोट-पोट किया करता था तो खुद भी हँसता होगा। पर आपके चरणों की कसम खा कर कहता हूँ कि मेरे चुटकले सुनने वाले जिस समय हँस रहे होते थे मेरा मन रो रहा होता था। यहाँ पहुँचकर नाथी का गला रुँध गया और उसकी आँखें तरल हो उठीं पर बोलने से रुका नहीं।

दिल निकाल कर आपको क्या दिखलाऊँ बीबी जी। कलेजा छिदा पड़ा है। आँखें न होने से यह बाहरी दुनिया मेरे लिए अँधेरी सही। पर अंतर का उजाला तो किसीने नहीं छीन लिया है। उसी उजाले की सहायता से बिना आँखों के भी मुझे लगता है कि कितना ही कुछ देख सकता हूँ। कभी-कभी मेरे हृदय में कविता की कोई नदी-सी उमड़ने लग जाती है। जब सोचा करता हूँ कि अगर आँखें होतीं तो कविता लिख लिख कर तो ढेर ही लगा देता। मेरी वह ऊट पटाँग तुकबन्दी जिसे सुन कर लोग हँसते हैं वह मैं अपने मन से थोड़ा ही करता हूँ। और इसका मतलब नहीं कि गम्भीर विषय पर मैं कविता रच ही नहीं सकता। पर आप ही सोचिये कि जो चीज प्रयोग में न लाई जा सके उसे रचने का लाभ ही क्या।

मिस प्रीतम गहरे ध्यान में मग्न रही थी। उसे लगता कि नाथी के हृदय की पर्तें जैसे जैसे उसके सम्मुख खुलती जा रही हैं वैसे क्रम से नाथी की आत्मा उज्ज्वल निर्मल होकर उसके सामने निरावरण होती जा रही है। उसे स्वप्न में भी ऐसी आशा नहीं थी कि संसार द्वारा ठुकराया और सब किसी के पाँवों तले रौंदा हुआ नाथी वास्तव में इतना महान है।

कई बार घटना का छोटा सा झटका भी भूकम्प जैसी हलचल पैदा कर देता है जिससे मनुष्य इतना आन्दोलित हो उठता है कि उसके अन्तःकरण में की पुरानी से पुरानी—मोटी से मोटी पर्ते फट पड़ती है। और उन पर्तों के नीचे से ऐसा कुछ उभर कर सामने आ जाता है जिसका उसे कभी स्वप्न में भी ध्यान न हुआ हो।

नाथी के साथ यह जो कुछ हुआ इसे चाहे घटना का सम्मान न दी जा सके परन्तु सत्ता भी तो मनुष्य की अपनी अपनी परिस्थितियों पर आधारित रहती है। जिसे हम स्वाति कण कहते हैं वह क्या है? पानी की एक बूंद ही तो है। वह बूंद यदि धरती पर गिरे तो गिरते ही अभाव में बदल जाती है। वही बूंद यदि चातक की खुली हुई चोंच में जा पड़े तो उसकी जन्म भर की तृष्णा को मिटा देती है। और वही एक बूंद यदि सीप की कोख में जा टिके तो मोती बन जाती है।

कुछ इसी प्रकार का चमत्कार सिद्ध हुआ नाथी के लिए मिस प्रीतम के सम्पर्क में आना। क्या कभी नाथी के ख्याल में भी आ पाया था कि जगह जगह से कुत्ते की तरह दुतकारा जाने के बाद इस संसार में कोई ऐसा व्यक्ति भी होगा जो अपमानित और तिरस्कृत नाथी की ओर सहानुभूति तथा स्नेह का हाथ बढ़ायेगा? जब कि वह अपने को एक नितान्त बेकार और व्यर्थ चीज ही मानता था। कुछ बन पाएगा। ऐसी आशा ही उसे नहीं रही थी।

जिस कमरे में नाथी को आश्रय मिला था उसमें लेटे लेटे उसने कितनी ही रात इस घटना या जो कुछ भी यह थी इसके सम्बन्ध में सोचते हुए व्यतीत कर दी। साथ-साथ अगणित प्रकार की अन्य बातें भी उसके मानस पर उभरती मिटती चली गई। जिसके अन्तर्गत उसे

बहुत दिन पहले की एक बात याद हो आई। उस मन्दिर में एक गोसाईं जी आ टिके थे। जिनकी लोगों में बड़ी चर्चा थी। कोई उन्हें ब्रह्मा का अवतार बताता तो कोई विष्णु का। जब नाथो ने लोगों से सुना कि गोसाईं जी सब स्त्रियों की कामना पूरी करते हैं तो उसने भी उनके चरणों में माथा घिसते हुए विनय की थी कि उस पर दया करें व उसे आँखें प्रदान करें। और उत्तर में गोसाईं जी ने कृपालु होकर उसे कहा था 'आँखें तो तुझे मिल सकती हैं पर इसके लिए तुझे कठिन साधना करनी होगी।

और नाथो जो आँखों की प्राप्ति के लिए तन मन न्यौछावर करने को तैयार थी बोली—हे अन्तर्यामी आप जो भी कहेंगे वो करूँगी। तब गोसाईं जी बोले—'इसके लिए तुम्हें भगवती का पूजन करना होगा और पूजा की सामग्री पर कम से कम इक्यावन रुपये खर्च होंगे। इसके अतिरिक्त उन महात्मा ने नाथो को कुछ पंक्तियों का एक मंत्र स्मरण करवा दिया और कहा था कि हर अमावस की रात जागरण करके रात भर इसका जाप करना होगा।

उस नाथो ने किसी हाल हुक्म के इक्यावन रुपये लाकर उनको भेंट कर दिए और गोसाईं जी के आदेशानुसार प्रतिमास उसने रतजगा करने का निश्चय कर लिया। जब गोसाईं जी जाने लगे तो उन्होंने नाथो को बुलाकर इतनी कृपा और कर दी— देख बेटी, हम तेरी प्रेम भक्ति पर बड़े न प्रसन्न हैं। तपस्या पर सत्य और पर साधना पर तो हम हमारा … भी किसी को नया बनाते हैं। पर एक बात हम बताए देते हैं कि जब तक तुझे आँखों की प्राप्ति न हो जाए तब तक गृहस्थि जगत में बाधा ना पड़नी चाहिए। और यह भी याद रखना कि इस समय में कोई पाप नहीं करना होगा। ऐसा ना करने से किया कराया चौपट हो जायगा। जिस दिन तेरी आराधना पूर्ण होगी उस रात तुझे साक्षात् देवी माता के दर्शन होंगे और माता अपने वरदान द्वारा तुझे आँखें प्रदान करेंगी।

तब म नाथी न प्रति माग जागरण का और रात भर मन्त्र जपने का प्रण न लिया और इस प्रण का वह बराबर निभाता चला आ रहा है। बीच-बीच म क बार उसे कुछ निराशा भी हुई। परन्तु उसने अपना नियम भग नहीं होने दिया। साथ ही इसके लिए भी अपना प्रवन पर पहरा रखता कि जाने या अनजाने उससे कोई पाप न हो जाए।

लेटे-लेटे वह उसी मन्त्र के सम्बन्ध म सोच रहा था और उसकी यह विचार धारा बीच बीच म एक विलक्षण सा रूप धारण कर लेती— 'कहीं कहीं गोसाई जी की भविष्यवाणी के फलीभूत होने का समय तो नहीं आ पहुचा है? कहीं देवी माता उन्हीं गृहस्वामिनी का रूप धर कर तो प्रकट नहीं हुई है?

नाथी की चेतना इस समय दो प्रकार की समीक्षा म उलझ रही थी। कभी वह ख्याल करता कि बात यही है। और कभी सोचता नहीं। यह मेरा भ्रम है। उसके समीक्षा रूपी तराजू का कभी है का पलडा भारी हो जाता तो कभी नहीं का। निश्चित तौर पर चाहे वह किसी परिणाम पर नहीं पहुच पा रहा था परन्तु एक बात का विश्वास तो उसे करना ही पड़ा कि गृहस्वामिनी मानवीय है चाहे देवी पर उसके लिए तो इसका महत्व देवी माता से कम नहीं है।

तब नाथी के मन म एक तर्क सा उठने लगा।

अगर यही बात है फिर तो मैं बड़ा ही अपराधी—बड़ा ही पापात्मा हूँ जो देवी देवताओं के सामने मनकी कई बातें छिपाने का यत्न कर रहा हूं। ऐसा नहीं करना चाहिये मुझे। कदापि नहीं करूंगा मैं। चाहे जो कुछ भी मन म हो—अच्छा या बुरा बीवी जी के सामने कभी भी छपाऊंगा नहीं। और इस ठिकाने पहुच कर नाथी के अन्तर का सघर्ष मिट सा गया। उसके मन म ठहराव सा आने लगा और थोड़ी देर म यही ठहराव निद्रा बन कर नाथी पर छा गया।

उस यात्री का क्या हाल होता होगा जब उसकी लम्बी प्रतीक्षा के बाद गाड़ी स्टेशन पर आ पहुंची हो और उसके सवार होने से पहले ही प्लेटफार्म छोड़ कर आगे निकल गई हो।

नाथी के कमरे से लौट कर जब मिस प्रीतम अपने कमरे में पहुंचा तो उसकी मनोस्थिति प्राय उसी मुसाफिर जैसी थी।

क्या नहीं हो रहा थी। परन्तु बाल्ला को देख कर अनुमान होता था कि वह अब बरस तक बरस इसी से मिस प्रीतम ने ... बिछौना भीतर कर दिया था। बिस्तर में लेटे-लेटे एक बार फिर उसे अपनी मूर्खता पर पश्चाताप होने लगा। कितना अच्छा होता अगर उसने खा लिया। यदि उस समय वह इस प्रश्न की ओर ध्यान दिये बिना ही आगे बढ़ जाती और कद पर पहुंच कर छलांग लगा देती तो कितना अच्छा होता।

तत्पश्चात वहां स्कूल का वातावरण और उस वातावरण में घट चुकी घटनाएं मानो साकार हो कर उसकी आंखों के आगे घूमने लगा। वहां अध्यापिकाओं का हृदय हिलता वही मुख्याध्यापिका का व्याख्यान और उसकी दार्शनी चालें इत्यादि।

पर अभी क्या बिगड़ा है। वह अपने को तसल्लियां दे रही थी— फिर की प्रतीक्षा आ गई जो एक अवसर चूक गया। कुछ भी बिगड़ा तो नहीं गया है। न मेरी टांगें में किसी ने जंजीर बांध दी है। ... है। प्रभात होने हो

सहना एक ... उसे मनोहर ... पर नाथी का

क्या होगा ? बेचारा अन्धा अभागा न कोई आगे न कोई पीछे। यदि उसे छत पर चढ़ाते हुए मन उसने पूरा तन से सोच लिया था तो यह यह सब क्यो किया था मैने। कौन सी लाचारी या पना था मुझ जो राह चलते यह मुसीबत गले डाल ली।

बहुत यत्न किया उसने कि दो घडी म नींद आ जाय। जिससे उसकी यह वेदना कुछ कम हो पर व्यर्थ। जब ही उसकी आँखों म निद्रा के कण सटकन लगते कि फिर न वह स्वप्न की भ्रमता उन कणों को निकाल बाहर करता और आंखों म लहर उमड़ समूचे शरीर म वही चिन्ता सी पैदा कर देता। निराश आतुर हारकर वह बिलबिला उठती। उसका मन होने लगता कि प्रभात क्या और रात क्या—इसी क्षण ही क्यो न कुए की ओर भाग निकलू। जहन्नुम म जाए नाथी और साथ मे उसकी जिम्मेदारी— आप मुआ जग प्रलय।

जैसे ही फिर से नाथी के बारे म इस प्रकार के तर्क वितर्क उसके मानस पर उठने लगते कि गान गान वह इन्ही तर्कों वितर्कों म अपने को भूल कर उसी बहाव म बहने लग जाती।

कितना बुरा दिखाई देता था पहले वह कितना कुचाल। जिसे देखकर ही उबकाइयाँ आने लगती था। केवल मुझे ही क्यो दूसरे सब लोगो को भी तो। तभी तो व लोग उस जहाँ तहाँ से धक्के मार कर भगा देते हैं। पर कितना पक्का दिल है इस राक्षस का कि इतनी दुर्दशा के होते हुए भी इतने समय तक इसने आत्म हत्या नही की। और इधर मेरी दुर्दशा तो उसकी तुलना म नही के बराबर है। मेरे पास तो आँखें हैं। फिर भी कितनी कमजोर दिल का निकली म। कौन क्यामत आ गई जो स्कूल वालियाँ हाथ भाड कर मेरे पीछे पड गई। नौकरी की ही तो बात है। अगर छूट ही जाएगी तो क्या इतने से ही मेरी किस्मत का भट्टा बठ जाएगा ? धिक्कार है ऐसी कमजोरी पर।

रजनी की कोख से जैसे ही ऊषा की पहली किरण ने जन्म लिया

कि मिस प्रीतम का निगा न हो गए और नाना पर उसके मस्तिष्क में सब पट्टा ख्याल ना आ जाता तो उसा बिन बुलाये पाहुन के बारे में । प्रन वह रिस्ता छो कर उसी ग्रार ना निरता ।

पर यह क्या ! कमरा एकदम खाली ! कहाँ गया वह ? क्या रातों रात निसक गया ? पर सामान उसका तो ज्यों-का-त्यों पड़ा है । यदि चला जाता तो क्या इन सब को छोड़ जाता ?

दिन चढ़ आया धूप निकल आई । पर नायी नहीं लौटा । नाश्ते का समय हो चला था मिस प्रीतम एक सबद म पड़ा था—कभी प्रतिदा तो कभी उपना ।

मिस प्रीतम का नाश्ता और दोपहर का खाना एक साथ ही हुआ करता था । कभी दाल भाजी के साथ तो कभी केवल चाय का गिलास लेकर हो । किसी दिन तो वह रात का खाना भी सवेरे हो बनाकर रख छोड़ता था ।

रसोईघर में जा कर ज्यों वह आग मान चकी तो उसे अपने पर हँसी भी हो आई— वह कितना मारा आटा मैंने क्या सान डाला ?"

सवेरा बीता दोपहर हुई शाम पड़ी । पर नायी का कहीं पता नहीं । मिस प्रीतम थोड़ी थोड़ी देर में नायी के बारे में कुछ-न-कुछ सोच ही रही थी । इस समय भी वह आँगन में खाट बिछाए बनी-बैठी उसी के बारे में सोच रही थी कि सहसा वहीं खटखट ने उसके ध्यानों का श्रृंखला तोड़ दी । उसने देखा नायी चला आ रहा है । थका और मुरझाया सा ।

आ गया नायी ? कहाँ रहा रे दिन भर ?" कहते हुए वह आगे बढ़ी और नायी की बाँह का थाम उसे उसके कमरे की ओर ले गई ।

नायी ने एक नम्र, लंबी आह भरी— पता नहीं इन मकानों वालों को क्या हो गया है जब दुनिया भर के आदमी इनके लिए बड़े चाव उठाते हैं कभी किसी का कष्ट कराया नहीं—पूछा नहीं समझ नहीं पाता हूँ कि क्यों ये लोग ठंड दूध को फेंके मारने लग जाते हैं दिल चाहता

है दिल चाहता है ''

मिस प्रीतम को लगा जैसे यह नाथी नहीं बोल रहा बल्कि नाथी के अन्तर में उठा हुआ कोई कष्टों का प्रतीक भावना-स्वर रहा है। नाथी को ऐसी बुरी स्थिति में तो उसने तब भी नहीं पाया था जब वह उसे सड़क से उठाकर लाई थी। व्याकुल सा हो उठा उसका मन और उसकी वह व्याकुलता प्राण की प्राण में महानुभूति के रूप में परिणित होकर माना बिलखा उठी—

पर तुझे ऐसी क्या लाचारी पड़ी थी रे मकान तलाश करने की ? किसने तुझे कहा यहाँ से चले जाने को ? दो चार दिन दस दिन अगर और दिन जायगा तो क्या कमरे की दीवारें घिस जायगी ? पागल कहीं का। थोड़ा रुककर फिर मिस प्रीतम ने वह प्रश्न वाला प्रश्न किया— कुछ खाया पिया भी था या यों ही सारा दिन मटरगश्ती करता रहा ?''

इधर नाथी के मन पर भी शायद वही कल जैसा प्रभाव पड़ा इस बार का—मातृ स्नेह का सा। उत्तर में कहने को उसके पास कितना ही कुछ था परन्तु यह मातृ स्नेह का आवरण उस पर कुछ इस प्रकार से छा गया कि बोलना चाहते हुए भी नहीं बोल पाया यदि उससे कुछ बन पड़ा तो यही कि मिस प्रीतम के सामने उसने माथा झुका दिया। मन में जैसे वह रहा हो— बता तो ममता की प्रतिमा ! मैं तेरा क्या होता हूँ जो मेरी चिन्ता में तू इतनी अधीर हो रही है ?

नाथी को मौन पाकर मिस प्रीतम ने अनुमान लगाया कि वह आज भी कल की तरह निराहार ही लौटा है। अतः उसे डाँट बताते हुए वह कमरे से बाहर निकल गई—

सच ही तू एक नम्बर का फूहड़ है नद जा। मैं लाती हूँ तेरे लिए कुछ।

एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार, पाँच, छः और अन्त में पूरा सप्ताह बीत गया। नायी ने एक से अधिक बार मिस ब्राउन से 'चले जाने' की अनुमति माँगी परन्तु मिस ब्राउन हर बार उसके आग्रह पर लकीर फेर देती रही। अन्त में नायी ने भी बार-बार के आग्रह को छोड़ ही दिया। पर इसका यह मतलब नहीं कि उसने जाने का विचार ही त्याग दिया हो। विचार उसका अब भी ज्यों का त्यों बना हुआ था। वह कृपालु 'बाबा जी' के लिए बोझ बनना नहीं चाहता था। मन ही मन वह कई बार सोचता— मेरा यहाँ बने रहना कहीं बाबा जी के लिए कोई झंझट ही न खड़ा कर दे ... एक बंगाली व्यक्ति का घर में रहना कहीं बाबी की स्वतन्त्रता में बाधक तो नहीं है? ... अगर बाबा जी के जान पहचान वाले लोग इन पर अंगुलियाँ ही उठाने लग गये? ... अगर ... अगर ... अगर ...।

चाहे कुछ भी कहो पर इस एक सप्ताह के सम्पर्क ने इतना प्रभाव तो दिखलाया ही कि इन दोनों व्यक्तियों के बीच जो अजनबीपन की दीवार खड़ी थी वह यदि गिरी नहीं तो उसमें कुछ दरारें अवश्य ही आ गईं। जिनके द्वारा वे दोनों कभी-कभी एक दूसरे के अन्तर में झाँक लिया करते। कदाचित् यही कारण था कि मिस ब्राउन की आत्महत्या करने की बात भूल-सी गई। चाहे उसके अन्तर में इसका कुछ न कुछ अंश अभी तक भी मौजूद था। जीवन की कटुता और अपना अन्धकारमय भविष्य कभी-कभी उसे विचलित कर देता। पर यह विकलता उसके मन में उस समय पैदा होती जब वह घर में अकेली रह जाती। जितनी देर तक नायी वहाँ पर मौजूद रहता उसके साथ बातचीत करने में उसका

मन वहला रहता। कभी कभी तो उसे लगता कि नाथी का अस्तित्व उस के जीवन में के लिए चिरस्थायी प्रभाव की रिक्तता की पूर्ति किए जा रहा है। युगों से मरुस्थल में भटकते हुए पथिक को मानो शीतल वायु का कभी कभी एकाध झोंका स्पर्श करने लगा हो। पवन नाथी की निरर्थकता धीरे धीरे उसे सार्थकता में बदलती दिखाई देने लगी। विशेषत उस समय तो इस सार्थकता का भाग उस और भी प्रखर रूप में होने लगता जब नाथी भर्राई आवाज और छलकती आँखों से उसकी प्रशंसा करने लग जाता। कभी वह उसे भगवती भवानी बना डालता तो कभी जीवनदात्री। भले ही मिस प्रीतम को नाथी की इस प्रकार की बातें भ्रम और श्रद्धा पर आधारित लगती फिर भी इन्हें सुनकर उसके मन को सान्त्वना और प्रोत्साहन-सा मिलता।

इसी बीच में एक दिन नाथी के जीवन का एक ऐसा पक्ष मिस प्रीतम को दृष्टिगोचर हुआ जिसने आश्चर्यचकित ही तो कर डाला।

इतना तो मिस प्रीतम जानती थी कि नाथी दिन का अधिक समय अपने कमरे में बन्द रह कर गुजारता है। यहाँ तक कि गर्मी की भरी रात में भी वह भीतर ही सोया करता और मिस प्रीतम के बार-बार टोकने पर कमरे में बन्द रह कर नाथी सोने के अतिरिक्त कुछ और भी किया करता है यह रहस्य मिस प्रीतम पर उस समय खुला जब अनायास ही वह उसके कमरे में जा घुसा। शायद नाथी को चिटखनी लगाने की याद भूल गई थी।

भीतर अधरा था मिस प्रीतम ने आँखें जमा कर देखा नाथी अपने सामने कुछ फलाव-सा फैलाए बैठा था। एक खाली कनस्तर को मेज के तौर पर प्रयोग में लाते हुए उस पर एक बोर्ड रख और बोर्ड पर कुछ कागज टिकाये वह क्या कर रहा था? मिस प्रीतम की इसकी कुछ भी समझ नहीं आ पाई मात्र उसे कुछ टिक टिक जैसी आवाज सुनाई दे रही थी जैसे टाइमपीस की आवाज।

वह कमरे में निकट बैठ गई और ध्यान से उसकी क्रिया को देखने लगी। कनस्तर पर रखा हुआ एक छोटा-सा बोर्ड और बोर्ड पर पीतल का एक चौकोर सी प्लेट रखी था। जिसमें छोटे छोटे बहुत से छेद बने हुए थे। इन छेदों के नीचे एक मोटा सा कागज टिका था। नाथी के हाथ में एक पतली की चीज थी। जो न तो कलम जान पड़ती थी न ही फाउंटेन पेन या पेंसिल, बल्कि कुछ और ही तरह का था उसका आकार प्रकार। नाथी उसे हाथ में थामे उसकी बारीक नोक द्वारा कागज पर छिद छिद किये जा रहा था।

जैसे ही मिस प्रीतम कमरे में प्रविष्ट हुई कि नाथी भौंचक-सा रह गया। मानो उसकी कोई चोरी पकड़ ली गई हो।

अरे यह क्या कर रहा है नाथी?

यह? नाथी कुछ सकुचाते हुए बोला— 'बीबी जी, यह मेरे लिखने का सामान है।

सुनकर मिस प्रीतम को हंसी आ गई। सोचने लगी कहीं यह मजाक तो नहीं कर रहा है?

लिखने का सामान? और तो भला क्या लिखावट है तेरा' और नाथी के पास से वह बोर्ड उठाकर मिस प्रीतम जिज्ञासा भरी नजरों से ताकने लगी तभी नाथी बोल उठा—

क्या सोच रही हैं बीबी जी? क्या यही कि मैंने झूठ बोला है न? भला देवी सरस्वती के सामने भी कोई झूठ बोल सकता है? यह जो कागज है आपके हाथ में, भला इस पर कुछ लिखा हुआ आपको दिखाई देता है?

कुछ भी तो नहीं। एकदम कोरा है यह तो।

अच्छा अब उलटिये तो।'

मिस प्रीतम ने कागज को उलट कर कहा उलट लिया मैंने।

'इस पर उंगली फेरिये ना।'

मिस प्रीतम ने उंगली फेरते हुए पाया कि कागज पर कुछ बिंदु से

उभरे हुए हैं। जिनका मास उसे उगली व स्पर्श गारा हो रहा था और दीख भी रहे थे। वह बोली— यह तो कुछ कण से उभरे रहे हैं नाथी अक्षर वगैर तो कुछ भी नही हैं यहाँ पर

ये कण जो आप देख रहा हैं न यही अधो की पढ़ने लिखने की लिपि है। जिसे ब्रेल सिस्टम कहते हैं। यह लिपि फ्रांस के एक अध आदमी लुई ब्रेल ने प्रचलित की थी।

भौंचक-सी रह गई मिस प्रीतम और गहरे ध्यान से कागज पर के उन बिन्दुओ को ताक रही थी। साथ-साथ उगली की पोर द्वारा उन्हें स्पर्श भी कर रही थी। उधर नाथी ब्रेल सिस्टम की व्याख्या मे कहे जा रहा था—

आप शायद नहा जानती हैं बीबी जी। यह ब्रेल लिपि आज दुनियाँ भर म प्रचलित है इस लिपि को जानने वाला कोई भी अधा आदमी आँख वालो की तरह ही सब कुछ पढ लिख सकता है। अब तो हमारे देश म भी इसका प्रचलन होने लगा है चाहे कहीं-कहीं पर हो। लगभग सभी अध विद्यालयो म ब्रेल की शिक्षा दी जाती है। आप सुनकर हैरान होंगी कि हमारे देश म सकडो अधो ने इसी लिपि की सहायता से बड-बडे कोर्स पास कर लिए हैं। यहाँ तक कि हमारी सरकार ने देहरादून मे इस लिपि म साहित्य छापने का एक प्रेस भी जारी कर रखा है। फ्रांस अमरिका जसे देशो म तो ब्रेल म कई अखबार और पत्रिकाए भी छपती हैं। सुनता हू कि ब्रेल का टाईप राईटर भी बन गया है।

मिस प्रीतम कभी उन कागजो की ओर ताकती तो कभी नाथी की ओर। नाथी उसी वेग म कहे जा रहा था—

आप सोचती होगी बीबी जी कि किस तरह इन उभरे हुए बिंदुओ से लिखने पढ़ने का काम लिया जा सकता है? लीजिये मैं आपको समझाता हू। कहते हुए नाथी ने हाथ बढ़ाकर मिस प्रीतम के हाथ से वह काड पकड लिया और फिर उस पर के बिन्दुओ पर उगली द्वारा लक्ष्य करते हुए बताने लगा—

'यह जो छोटे चौकोर दायरे में साथ साथ छः बिन्दु देख रहा हैं बस इन छः बिन्दुओं में ही ब्रेल की समूची लिपि सीमित है। मानो इन छः बिन्दुओं को ही ऊपर, नीचे दाँए बाएं रखकर तरतीब देने पर सभी स्वर बन जाते हैं।'

मिस ग्रानम ने उसी जिज्ञासा की मुद्रा में पूछा— कुल छः बिन्दुओं में तरेसठ आवाजें कैसे बन सकती हैं नाथी ? जरा समझा तो मुझे।

यह देखिये। नाथी ने अपनी तर्जनी के पोर को बिन्दुओं पर फेरते हुए समझाना शुरू किया— यह जो आप तीन बिन्दु दायें और तीन बायें देख रही हैं ? बायें वाले बिन्दुओं को एक, दो, तीन की इकाइयाँ मान लीजिये और दाँए वाले को चार, पाँच छः। इसी क्रम से अगर आप क लिखना चाहें तो १ ३ और 'त' लिखना चाहें तो ४ ६। बस इसी तरह इनको अलग-अलग करके दूसरे अक्षर बनते चले जाते हैं।

अरे वाह रे नाथी, तू तो भाई बड़ा... पर तूने यह पहले क्यों नहीं बताया मुझे ?

पहले और अब भी कहाँ बताने को था मैं। पर आपने तो मेरा 'चोरी' ही पकड़ ली, फिर अब कैसे छुपा पाता इसे।

पर मुझसे छुपाने का कारण ?

'कारण यहा बाबी जी कि मेरा यह विद्या अभी तक अधूरी थी और मैंने सोचा कि कुछ दिन और मेहनत करके फिर किसी दिन आप को बताऊंगा।

अब समझी, अब समझी कि अपने कमरे में बन्द कमरे तू क्या करता रहता था पर नाथी यह तो तूने बताया ही नहीं कि इस सीन-मन्त्र द्वारा तू लिखता क्या है ?

कुछ नहीं बीबी जी। उस दिन आपको बताया था कि मुझे कुछ तुक-बन्दी करने की भी बिमारी है। सच पूछिए तो इसी तुक-बन्दी "

के शौक ने मुझे ग़ज़ल गाने पर मजबूर किया। उस दिन जब मैंने कहा था कि मैं कविता भी लिखा करता हूँ तब आप हँस रही थीं। और आपकी हँसी मुझे साफ सुनाई दी थी और मैं सोच रहा था कि भला अन्धे भी कहीं लिख सकते हैं?

मिस प्रीतम ने उस टाल दिया— अच्छा माथो! एक बात बता कि यह लिपि तूने सीखी कहाँ से?

यह भी बीबी जी एक इत्तफाक ही समझिये कि एक बार मन्दिर में एक उपदेशक आकर ठहरा। वह ऊँचे दर्जे का विद्वान था और ब्रेल जानता था। उसी की कृपा से इसे सीख पाया मैंने और कहते कहते माथो ने उसी डिब्बे नुमा कनस्तर का ढक्कन खोल कर उसमें से बहुत ही बहुत से कागज निकाले और मिस प्रीतम के सामने रखते हुए बोला—

यह रही मेरी लिखावट जो अरसे बहुत दिन पहले मैं लिखा करता था पर इधर परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी हो गई हैं कि सब लिखना पढ़ना ठप्प हो गया। न कभी मन का झुकाव बना और न ही लिखने-पढ़ने की रुचि पैदा हुई। यही कारण है कि ग़ज़ल की लिखाई का ढंग कुछ कुछ भूल गया पर इधर जबसे आपकी छत्रछाया में आकर रहा कि फिर से वही धुन सवार हो गई और अपनी इस भूली बिसरी विद्या को नये सिरे से जगाने में लग गया।

पर माथो। उन कागजों का निरीक्षण करते हुए मिस प्रीतम बोली— यह इतना कुछ लिखा क्या है तूने?

ऐसे ही फिजूल सा बीबी जी कोई काम की चीज नहीं है इसमें जो जिस समय मन में आया वही लिख डाला।

अच्छा इसमें से कुछ सुना तो भला।

सुनने-सुनाने लायक इसमें कुछ नहीं है। पर आप अगर मजबूर ही करती हैं तो कहिये कविता सुनाऊँ या वातक?

नहीं कविता मुझे अच्छी लगती है।

तब नाथी ने उन कागजों पर की लिपि पर उंगली फेरते-फेरते उनमें एक कागज अलग करके बोड पर टिकाया और फिर उस पर ऊपर से नीचे की ओर उंगली फेरते हुए उसने पढ़ना प्रारम्भ किया—

× कौण किस दा दर्दी जिंदे, कौण किस दा दर्दी।

दिनदा महिरम कोई ना मिलिग्रा,
जो मिलिजा जणो गरजां।
क्यु पए गोते खाँवें मदाए
क्यु पई रत्त सुकावें अडीए
चार दिनाँ दी गल है सारा
सहिरा गरमा सर्दी।
मच्छ ना थोंदीं बहिर कमावन
मच्छ ना बागी फुल कुमलावन
रब दाता जद महर करेंगा
सावण घटा है चढ़दी।
कौण किस दा दर्दी।'

गाकर मिस प्रीतम ने नाथी का कन्धा थपथपाया— तू तो भाई यह नगीना मोती निकला।

× कौन किसी का सहारा है रे मन? यहाँ तो कोई भी मन का मीत नहीं है जो कोई भी मिला स्वार्थी ही मिला।

क्यूं तू डूब रहा है रे मन! काहे को अपना रक्त सुखाए जा रहा है! चार दिन की ही तो बात है। सब ताप-ताप को सहन किए जा।

मच्छ ही तो सूखा नहीं पड़ा करता है और न ही मच्छ बागों में फूल कुम्हलाते हैं। प्रभु का जब अनुग्रह होता है तो सावन की घटायें उमड़ आया करती हैं।

इस थपकी ने और इस श्लाघा ने नायी को मानो नशा-सा चढ़ा दिया। कदाचित उसके जीवन में यह पहला अवसर था जब उसे किसी व्यक्ति द्वारा श्लाघा के शब्द प्राप्त हुए। उसका सिर मिस प्रीतम के परों की ओर झुक गया और आभार स्वरूप बड़ी कठिनाई से यह यही कह पाया— देवी जी का वरदान फलीभूत हो।

३०

समय का आरोही ज्यों ज्यों कुलाचें मारते हुए आगे बढ़ता गया उसी क्रम से मिस प्रीतम के जीवन मंच पर नये से नया पट-परिवर्तन होता चला गया। और इन पट-परिवर्तनों में उसी व्यक्ति का विशेषतया स्थान था जिसे एक दिन वह मृत्यु के मुँह से खींच लाई थी। अथवा जिसने उसे भी मृत्यु के मुँह से खींच निकाला था।

मृत्यु के चंगुल से निकल पाना और बात है और वास्तविक जीवन के सम्मुख हो पाना और। ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि अब मिस प्रीतम को अपने जीवन के प्रति मोह जाग उठा हो। परन्तु कुछ-न कुछ अन्तर तो प्रत्यक्ष ही था। यों उसकी जिन्दगी अब भी पूर्ववत् ही नीरस तथा निराशा जनक था। परन्तु अब उसके पास कोई तो ऐसा व्यक्ति था जो उसके दुःख में दुःखी हो सकता था। कई बार अब भी उसका मन डिगने सा लग जाता। परन्तु उसका यह डिगना-डोलना पहले जैसा असीम नहीं रह गया था। बल्कि अब उसकी एक सीमा थी। जैसे ही उसकी मानसिक हालत बिगड़ने लगती कि नाथा इसे भाँप जाता और तब नाथा द्वारा उस पर प्रश्नों की बौछार-सी होने लग जाती—

"बीबी जी क्या बात है? आज आप कुछ उदास-सी लगती हैं कहीं आप मुझसे ऊब तो नहीं गई हैं। ... आपकी आवाज से कुछ ऐसा ही जान पड़ता है" इत्यादि। और यही थी वह सीमा जहाँ पहुँच कर मिस प्रीतम का डिगना डोलना रुक जाता।

छुट्टियाँ समाप्त हो चली थीं और ज्यों ज्यों स्कूल खुलने का दिन निकट आता जाता मिस प्रीतम की मानो कमर टूटती चली जाती। जिस नर्क की यातनाओं से पिछले दो महीने से वह सुरक्षित बनी आ रही

थी वही नक प्रन फिर स मुह् खोले उस लौतन को बढ़ चला ग्रा रहा था। दूसरी ग्रार नाथो था कि जिस अपने ब्रेल क अध्ययन म म छनी नही मिलती। जब भा उस देखो वही कनस्तर की मज वहा बाड और वही टिकटिक । कई बार मिस प्रीतम नाथा क इस भ्कराहान म झुभला उठती— ग्रर पगल किसी समय ता ग्राराम कर लिया कर। यह टिकटिक ता गलत है तुझ पागल कर क ही छोडगी। मैं पूछती स हू ग्राखिर इस सिर दर्दी म तुझ मिलता क्या ?

तब उत्तर म नाथो कहता— जरूर कुछ न कुछ मिलता बाबी जी। नही तो क्या मुझ बावल कुत्ते ने काटा है जो व्यथ ही यह माथा पच्ची करता रहता हू ?

इसी बीच म एक दिन जब मिस प्रीतम ने फिर से वही प्रश्न दोह राया तो नाथो बाला— सच बताऊ बीबी जी ?

हाँ हाँ। सच नही तो क्या झूठ बतायेगा ?

झूठ मैंने ग्रापके सामने पहले भी कभी नही बोला है बीबी जी और मरा ख्याल है ग्रगर बोलना चाहू भी तो नहीं बोल सकूगा। बात यह है कि मेरे दिल मे एक काँटा सा गडा रहता है कि और नाथो चुप हो गया।

कौन सा काँटा रे बताता क्यो नही ?

ग्राप बीबी जी ग्राप जब कभी मेरी तारीफो के पुल बाँधने लग जती है तो सच कहता हू शम के मारे म धरती मे गड जाता हू। मेरे मन म एक उत्तजना सी पदा होने लगती है कि कितना ग्रच्छा होता ग्रगर मैं भी किसी काम की चीज होता। ग्रापने मुझ जितना सुख दिया है काश उसका शताश भी मैं ग्रापको दे पाता। मैंने यह जो ब्रेल का काम सीखा था तो केवल शौकिया तौर से नही बल्कि दुनियाँ म कुछ धन पाने की ग्राशा स। मैंने ग्रापको बताया था न कि फ्रांस क एक ग्रन्ध ग्रादमी लुई ब्रेल ने यह लिपि ईजाद की थी। सोचता हूँ उसने

कितना बड़ा उपकार किया उन अन्धों पर जो दिमाग में अक्ल रखते हुए भी गली मुहल्लों में भीख मांगते फिरते हैं। मेरे मन में आने लगा कि अगर भगवान मुझे शक्ति दें तो मैं भी अपने अन्ध भाई बहनों के लिए कुछ कर पाऊं। आप चाहे इसे शेखचिल्ली के पुलाव ही कहें पर आपसे छिपाऊंगा नहीं कि मेरे इरादे बहुत लम्बे और ऊँचे थे। सोच रखा था कि पहले तो पूरे तौर से अभ्यास करने पर जाकर किसी अन्ध विद्यालय में एकाध डिग्री प्राप्त कर लूँ और उसके बाद अगर दो चार धनवान और दयावान व्यक्ति मिल जाएँ तो अन्ध विद्यालय जैसी एक संस्था की नींव डालूँगा। इसे मेरा दुर्भाग्य ही कहिये कि धनवानों से चाहे दुनियाँ भरी पड़ी है पर कोई दयावान मुझे ढूँढने पर भी नहीं मिला। बल्कि जिन एक लोगों जिन्होंने मेरी सहायता तो क्या करनी थी उल्टा मुझे उनसे मिला भरपूर अपमान और तिरस्कार? गाली गलौच और घृणा का प्रसार। तभी तो मैं कहीं पर टिक न पाया। या कहूँ कि मुझे कहीं पर टिकने ही नहीं दिया गया? इससे मेरे मन के वह शौक, और आशायें एक-एक करके मरती चली गईं और अब मैं एक प्रकार सा हाड़ मांस का पिण्ड बनकर रह गया। पर इधर जबसे आप का आश्रय पाया मानो मेरी मर चुकी आशाएं आकांक्षाएँ फिर से जीवित हो उठीं। सोचता हूँ, यदि और कुछ न कर पाऊं तो इतना भर तो मुझे करना ही चाहिये कि अपनी बीबी जी के उपकारों का अंश मात्र ऋण ही चुका पाऊं।

शान्त-कान्त नाथी की आँखों में से अश्रु धाराएँ बह निकलीं। अब वह इससे आगे कुछ नहीं बोल पाया।

नाथी की ये बात सुनकर मिस प्रीतम मानो सकते में आ गई। जिस व्यक्ति को उसने एक गया गुजरा और घृणा का पात्र समझ रखा था उसके अन्तर में इतनी उच्च भावनाएं भरी पड़ी हैं—इतना कोमल और सहानुभूति पूर्ण हृदय है उसका! एक असम्भव सी बात थी जो सम्भव बन कर मिस प्रीतम के समक्ष इस समय उपस्थित थी।

नाथी उसने नाथी का कथा थपथपाते हुए गद्गद कण्ठ से उचारा— तू तो सच ही पड़ जितना मोती है। सच कहती हूं तेरी तुलना में मुझे अपना आपा हल्का और तुच्छ जान पड़ रहा है। मारबच का बात तो यह कि एक तरफ तू है जो अपने अन्तर में दुनिया भर का दद समाए हुए है। और इधर मैं हूं जिसे तू देवी भगवती और जाने क्या क्या उपमाए दिए चला जाता है। वास्तव में हं" दर्जे की क्रूर गुस्सैले और हिंसक स्वभाव का हूं।

नाथी को मिस प्रीतम के अन्तिम वाक्य का विश्वास नहीं हो पाया और इसके विरोध में यह बोला ? मैं जानता हूं बाबा जो जो महान आत्माए होती हैं वे अपने उच्च गुणों को छुपाने का यत्न किया करता हैं हैं।

मिस प्रीतम स्नेह मिश्रित स्वर में बोली— अच्छा बाबा मैं अव तार पगम्बर सही। पर एक बात पूछती हूं—झूठ मत बोलना।

झूठ और आपके सामने बीबी जी ? अगर बोलना भी चाहूं तो क्या बोल पाऊंगा ? हां क्या पूछना चाहती हैं आप ?

यही कि उस रात जो तू आंधी पानी में घर से निकल खड़ा हुआ था तो किस लिए ?

अब आप से क्या छिपाऊं बीबी जी। कुएं में छलांग लगाने के लिए जिसे आपने मरने नहीं दिया पहले तो मैं इसे अपना दुर्भाग्य ही ख्याल करता था। पर अब सोचता हूं कि दुर्भाग्य नहीं बल्कि यह मेरा सौभाग्य ही था। बाकी रही यह बात क्या मरने का इरादा किया मन ? तो इसके बारे में पहले बता ही चुका हूं कि किस तरह से लोग हाथ झाड़ कर मेरे पीछे पड़ गए थे। मुझे मंदिर से निकाल कर भी उन्होंने सन्तोष नहीं किया। बल्कि जहां कहीं भी जाकर टिकता वहीं से वे लोग मार दुतकार कर मुझे खदेड़ देते। खास तौर से उस दिन जो मेरी दुर्गत की गई भगवान ही जानते हैं। इतना मारा उन्होंने मुझे इतनी

बदकिस्मती का मेरी कि क्या बताऊँ। रात का समय और आँधी पानी का जोर। बहुत मिन्नत की—हाथ जोड़े कि मत लादो! कम से कम आज की रात तो मुझे टिका रहने दो। अगर इतना भी नहीं कर सकते तो आँधी पानी रुकने तक ही रुक जाओ। पर वहाँ कौन सुनता था मेरी बात। उल्टा वे लोग और भी ताव में आ गए और पहले मेरा सामान सड़क पर फेंक दिया फिर मुझे भी धक्के मार कर उसी सामान पर गिरा दिया। तब न जाने क्या मेरे मन में स्वसम्मान की कोई चिनगारी सी धधक उठी। भला मेरे जैसा घृणित आदमी, जिसे बेइज्जती सहन करने की आदत हो पड़ चुकी हो उसके अन्दर में स्वसम्मान का प्रश्न? पहले तो मन हुआ कि अपनी लाठी के भरपूर वार से इन लोगों पर पिल पड़ूँ। पर फिर सोचा यह तो आग पर तेल छिड़कने जैसा काम होगा। ऐसा करने से तो वे लोग आन की आन में मेरी हड्डी पसली एक कर डालेंगे।

तब जा कर कर उन लोगों की गालियाँ सहते हुए मैंने कुछ आवश्यक सामान उठा कर एक जान पहचान वाले की दुकान के बरामदे में ला कर पटक दिया और फिर बस्ती के बाहर वाले कुएँ की ओर चल पड़ा। मन में सोचा मरने का यही सबसे सहज रहेगा। एक ही छलाँग और काम तमाम।

आप सोचते होंगे कि उस सामान में मेरा कौन-सी जवाहरात रखा था मेरा कि मरते समय भी मैं उसका मोह न त्याग पाया। जवाहरात कह लीजिए या कुछ और। यही थैला कम्बल का मेरा कुल धन था। जिसका मोह भी मैं त्याग नहीं पाया। मैंने सोचा क्यों न इसे उचित रीति से ठीक जगह पर रख दूँ। दुकान के बरामदे में ला डाल दिया और फिर इसके अतिरिक्त मुझे अपनी दुनिया से साथ भी कुछ इतना मोह नहीं था। चाहे वह लिखा के नाम की याद नहीं था तो भी तोड़ कर मन कलम्भर उठा लिया और कालचक्र के बिना

दूसरी कुछ चीजें भी इधर-उधर स इकट्ठी कर के मोर गु** में बाँध कर अपने ऊपर लाद नी यही सोचकर कि मर मरने क बा* यह चीजें किसी मेरे जसे के काम मा सकें मौर इस काम स निप* कर म वर्षा और आधी की परवाह किए बिना हा कुए का मार चल पडा। आँखें ता थी नही। जिसस आ-धी मुझ ढकेल कर कहीं-स कहा ल गया और इसी हालत म भटकत भटकते म बहाश हाकर गिर प*ा और तभी आपन मुझ ।

बोलते-बोलत नाथा सहसा रुक गया जब मिस प्रीतम का ठहठ उस सुनाई दिया। जिससे उसन सोचा कि "नाथ" उसका बाना को कोरा गल्प गाथा से अधिक कुछ नही समभा जा रहा है। जिसस नाथी के दिल को चोट सी लगी मौर बोला— हसती क्या है बीबी जी?

या ही

क्या आप को विश्वास नही हो रहा है मेरी बाना का?

ऊ हू! ऐसी बात नही।

तो फिर और?

हसी मुझ इसलिए आ रही है नाथी कि हम दाना ही अब तक एक दूसरे को ठगने की कोशिश करते रहे।

नाथी की समझ मे कुछ नही आ पाया। उसका बाबी जी—देवा दवताआ का दर्जा रखने वाली बीबी जी भला किसी को ठगने का कोशिश करेंगी?

मिस प्रीतम भी तो दख रही थी कि प्रत्यक्षवासी नाथी को उसका बात पर विश्वास नहा हो रहा है। वह सोच रहा था— तो क्या अपना बात को प्रमाणित करन के लिए मुझ अपन रहस्य की गठरी नाथा क सामन खोल दना हागी?

और तब मिस प्रीतम ने बिना हिचकिचाहट क अपना समस्त जीवन वृतान्त नाथी को सुनाना शुरू कर दिया। मानो किसी आतरिक

घाटिन ने बलपूर्वक उनके भ्रान्तर की सब गुप्त बातें खींच कर नायी के सामने उडेल दी।

मिस प्रीतम के बनाव का जब अन्तिम भाग नायी ने सुना कि वह भी उस रात उसकी तरह आत्म हत्या करने को बनी थी तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

कितना अचम्भित संयोग था यह कि अपने अपने जिस रहस्य को वे दोनों स्वतन्त्र रूप से एक दूसरे से छिपाये चले आ रहे थे वह रहस्य अब उद्घाटित हुआ तो एक ही समय पर। सच ही कहा है कि दिलों को दिलों से रास्ता मिलता है।

मिस प्रीतम जब अपनी जीवनी सुना चुकी तो उसने देखा कि नायी की आँखों से टपाटप आँसू गिर रहे हैं।

नायी।

'जी!"

क्या बात है?

'कुछ नहीं बाबा ना

यह निमूए क्या बहू रहा है?'

मिस प्रीतम ने प्रश्न यद्यपि कुछ हास्य के ढंग से किया था, पर बोलते-बोलते उसका गला रुध गया तब अनायास ही उसका हाथ नायी के चेहरे पर जा टिका और उसकी अगुलियां के पोर नायी के बह रहे आँसुओं को सुखाने में लगी गय। इतने पर भी जब आँसू नहीं रुके तब मिस प्रीतम ने इस बातचीत का रूख बदलते हुए उससे पूछा—

और हाँ नायी यह पूछना तो मैं भूल ही गई कि वह जो कहा था कि प्रेस डिपार्टमेन्ट के लिए तू एक आश्रम को नाव रखेगा भला यह तो बता कि आश्रम खोलने के लिए तू इतने साधन कहाँ से जुटा पायगा?

तब तक नायी ने अपने को भावावेश की बाढ़ में बहने से रोक

लिया और बोला—

'आप ठीक ही सोचती हैं बीबा जी कि मेरी यह बातें शास्त्रियों के चुनाव से बढ़ कर कुछ नहीं हैं यही तो बड़ी बात है कि न नौ मन तेल जुटे न राधा नाचे। पर आशा यथा संसार है बीबी जी आत्मा तन मन द्वारा जिस काम के लिए कमर बाँध ले कभी न कभी उसमें सफल हो ही जाता है मैंने सोचा कि और नहीं तो कहीं किसी अन्य विद्यालय में नौकरी ही मिल जाय तो उसी की सहायता से आगे अपना रास्ता बनाना आरम्भ करूँगा। मैंने आप को बताया नहीं है तीन चार अन्य विद्यालयों को मैंने पत्र भी भेजे हैं और साथ ही अपना अक्ल लिखावट के नमूने भी। सोचता हूँ कि क्या वही बात है जो कहीं पर पाँव जम हो जाएँ।

मिस प्रीतम को नाथी के यह लम्बे-लम्बे दाव कभी तो असम्भव जान पड़ते और कभी उस स्वप्न सम्भावना का अंश दिखाई देने लगता। कुछ भी सही परन्तु नाथी की इन बातों ने उसे प्रभावित हो किया। वह बोली— सो तो तूने अच्छा हो किया नाथी। पर यह तो बता इसे मुझसे छिपाने की क्या जरूरत था। क्या मैं तेरी वैरन थी?

एसा न कहिए बीबी जी! नाथी फिर से भावुक हुआ जा रहा था— आप से बढ़ कर इस संसार में मेरा कोई हितैषी होगा इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।

तो फिर तूने मुझे बताया क्यों नहीं।

मैंने सोचा कि अगर मैं इस काम में सफल न हो पाया तो एसा न हो कि आप की नजरों में गिर जाऊँ और आप मुझे झक्की ही समझने लग जाएँ। मुँह छोटा और बात बड़ी है बीबी जी मेरी आँखें चाहे नहीं हैं पर श्रवणशक्ति इतनी तेज है कि मेरे कान आँखों का काम करते हैं। हँसना मत मेरी बात सुन कर और नाराज भी मत होना। पहले दिन जब मैं आप के घर में आकर टिका

था तो उससे अगली रात में कुछ ऐसा लगा कि आप भी बहुत बुरी तरह से सताई गई हैं। और यह जो अभी अभी आपने मुझे अपने जीवन की घटनाएँ सुनाई हैं इनसे मुझे कुछ अधिक आश्चर्य नहीं हुआ है। क्योंकि इसका इशारा पहले से ही मैं जान चुका हूँ।

मेरे सताए जाने की बात कैसे मालूम हुई तुम्हें? किसने बताया तुम्हें?

बताना—बताना और किसने था बीबी जी खुद आपने ही बताया।

'मैंने?' मिस प्रीतम ने चकित हो कर पूछा—मैंने तो आज से पहले अपने बारे में तुम्हें कभी कुछ नहीं बताया है।

मैं उस रात की बात कह रहा था बीबी जी। आधी रात के समय जब नींद न आने पर मैं कमरे से बाहर निकल कर इधर उधर घूम रहा था तो मेरे कानों में कुछ कुनमुनाने की-सी आवाज पड़ी। पहले तो मैं समझ गया कि यह आप ही बोल रहा हैं, पर क्या बोल रहा हैं यह जानने के विचार से मैं दबे पाँव उस ओर चला जिधर आप सो रहा था। तब मुझे जितना कुछ आप के शब्दों से समझ में आ पाया वह यही था कि आप बहुत बुरी तरह से सताई हुई हैं और अपने सताने वालों को कोस रहा हैं।'

मिस प्रीतम अवाक् होकर सुने जा रही थी और नाथी कहे जा रहा था—

बीबी जी लोगों की नजरों में चाहे मूल्य दो कौड़ी भी न हो लोग चाहे मुझे हाड़-मांस के पुतले से अधिक कुछ न समझते हों पर मेरे अन्दर में तो बहुत कुछ भरा पड़ा है और उसी के आधार पर कहता हूँ कि अगर किसी प्यासे को ओक में कोई पानी के चार घूँट डाल दे तो पाने वाले को उसका अहसान कभी भूलना नहीं चाहिए। पर जिसने किसी व्यक्ति को मौत के पंजे से छीन लिया हो और उसे आश्रय दिया हो—आह

प्रदान किया हो उसके उपकार का ऋण क्या वह इस जन्म में चुका पायेगा ? पशु से भी जब कोई स्नेह करता लगता है तब आभार प्रकट करने के लिए उसके हाथ चाटने लग जाता है—बिल्कुल मौन बन चलाना भूल जाते हैं। फिर मैं तो एक मनुष्य हूं बीबी जी बस मैं अपने प्राणदाता सुखदाता और स्नेहदाता का ऋण चुका न उतार सकता था। उस पहली रात के बाद हर रात को मैं उठ उठ कर आप की खाट के निकट घूमा करता हूं और घूम घूम कर यह जानने का यत्न किया करता हूं कि आपको क्या दुख है—क्या आप कभी ठंडा सांस भरा करती हैं—क्यों रात रात में आप कराहने सा लग जाता है। तब मेरा मन होने लगता है बीबी जी कि अपने प्राण देकर भी मैं आपके काम आ सकूं—आपका कुछ सवार सकूं। अन्तर्यामी के चरणों में बार-बार प्रार्थनाएं किया करता हूं कि दीनदयाल ! मेरी बीबी जी का बाल भी बांका न करना —और बोलते बोलते नाथी का गला रूंध गया।

मिस प्रीतम सुन रही थी और सुनने के साथ साथ कितना कुछ सोचे भी जा रही थी—कितना कुछ समझ भी जा रही थी। यह समझने में उसे देर नहीं लगी कि नाथी को उसकी नौकरी छूट जाने की फिक्र सता रही है। रातों में उसकी कसमसाहट में से नाथी को ये बातें ज्ञात हो चुकी हैं। मिस प्रीतम इस निष्कर्ष पर भी पहुंची कि नाथी जो इन दिनों नौकरी पाने के फेर में पड़ा है तो विशेष तौर से इसलिए कि वह अपनी बीबी जी की सहायता करने योग्य हो सके। वह इस समय इन उद्गारों में इतनी गहरी डूब चुकी थी कि कब उसका हाथ नाथी की पीठ पर फिरने लग गया उसे पता तक नहीं चला।

छुट्टियाँ समाप्त। दिन चढ़ते ही स्कूल खुल जायेगा—कुल दस-बारह घंटे बाद और तब मिस प्रीतम को फिर से उसी तवे की भट्टी में भुनना पड़ेगा जिसकी उष्णता ने पहले से ही उसका तन मन झुलसा रखा है। फिर से वही मनहूस अध्यापिकाओं की शक्लें उसे देखनी पड़ेंगी जिनके बनाव में उसका रोम रोम दुखी है।

आकाश निर्मल था और रात चाँदनी। मिस प्रीतम आँगन में खाट डाले सो रही थी और साय-नोय वही सवेरे खुलने वाले स्कूल के भाँति भाँति के दृश्य विस्तृत रूप से उसके सामने घूम रहे थे। बीच-बीच में दूसरे भी भाँति-भाँति प्रकार के दृश्य वह देख जा रही थी और ये सब मिल कर उसके क्रोध, चिन्ता तथा क्षोभ में उत्तरोत्तर वृद्धि किए जा रहे थे।

रात कितनी व्यतीत हो चुकी है और कितनी बाकी है? यह जानने के लिए मिस प्रीतम आकाश की ओर ताका। परन्तु समय का कुछ भी अनुमान वह नहीं लगा पाई। अतः फिर से उसने आँखें बन्द कर लीं।

बहुत यत्न किया उसने कि इन चिन्ताजनक दृश्यों से उसका पीछा छूट जाए और थोड़ी देर के लिए उसे नींद आ जाय। परन्तु उसका यह यत्न पूरा नहीं हो पा रहा था। लेटे-लेटे वह मानो अपने जीवन की रंगभूमि पर कोई नाटक-सा देख रही थी। बारी-बारी से मंच पर कई प्रकार के अभिनेता आते और अपना अपना अभिनय करने के बाद लौट जाते।

रंगभूमि पर प्रमुख अभिनेत्री (बड़ी बहिन जी) का अभिनय बारबार हो रहा था और जितनी बार भी वह उसको दृष्टिगोचर होती नई-से-नई वेष भूषा में और नये-से-नया अभिनय करते हुए कभी एक अच्छा गृहिणी

के रूप में कभी एक दुराचारिणी पत्नी के रूप में और कभी अभिसारिका के रूप में। उसके मन ददक ददक कर नया को देखते हुए मिस प्रीतम भांति भांति की आलोचना किए जा रहा था—

कल्ली यही थी ! इसी दहेज के ! बनी फिरती है जैसे गोरे वाकर जिल्ली हूं न को चली पहल पहल कितनी ममता बखारता थी। जैसे मैं ही उसकी सबसे लाडली बला था। दुनियाँ भर की जूठन ! पर मुझे क्या हो गया था तब जब वह पापिन सब दोष मुझी पर थोपने लग गई थी। क्या मेरे हाथ टूट गये थे ? मैं इतनी ही भीरु हो गई कि उसके सामने जाते ही भीगी बिल्ली बनकर रह जाता हूँ ? क्या न मैंने उसे नतानियों का मज़ा चखाया। क्या न उसकी चोटी उखाड़ डाली मैंने अगर फिर कभी ऐसा मौका आया तो छठी का दूध चिताए दूंगी उस भटियारन को

इसी प्रकार का विष वमन करते हुए मिस प्रीतम का मन उफानें भरता हुआ कहीं दूसरी जगह जा पहुँचा—

मामू ! मामू तहा रोक ! एस मामू को तो वहाँ पर मारना चाहिये जहाँ पानी तक न मिले। घर में इतना पैसा जो आग लगाय से न जले। पर भानजी को दो चपातियां देते भी पेटना था। कितनी ममता बघारता था ऊपर ऊपर से। जैसे भानजी के दु ख में मरा ही तो जा रहा हो। भला हो बिचारी महरी का जिसने मेरी आखें खोल दी।

बड़ा इज्जतदार बना फिरता था रसद कहा था—कभी मेरे खानदान की नाक काट कर चली गई। कभी ने यह किया कभी ने वह किया और भव मामा का अपना आचरण यह कि छुपे छुप रखेलियाँ पाल रखा है। उचक्का कहीं का। भाड़ में भोकना है एस मामू को ! नहीं जानती थी कि पानी को छान छान कर पीने वाला यह भला पुरुष खून को भव छाना हो पा जाता है

मामू का अभिनय समाप्त होते ही बारी आई मामी की। परन्तु मामी

का प्रभिनय करते हुए मिस प्रीतम की उस पर क्रोध कम और दया अधिक आ रही थी।

फिर बारी आई स्टूल के ब्रुश का और तत्पश्चात सौतेली बहिन की तो फिर वहां की पाठशाला में पढ़ने वाली छात्राओं का और फिर यह कितना ही कुछ दलदल चला गई वह। रंगभूमि पर प्रारम्भ से लेकर अन्त तक उस पात्रा का ही भरमार रहा। यदि कोई मान्य पत्र इसने उसे दिखाई पड़ा तो मात्र निहाल महरी के रूप में ही। पर इसका अभिनय भाव इतना संक्षिप्त था कि मानो तपते हुए मरुस्थल में बादल का एक छोटा-सा टुकड़ा जो आया और पाहे से छींटे डालकर विलुप्त हो गया।

यही ही तलमलाहट हो रही थी मिस प्रीतम को। समय बिताए नहीं बीत रहा था। नींद तो क्या आनी थी, दो घड़ी का चैन पाना भी उसके लिए दूभर हो उठा।

तभी किसी की पश्चाप ने उसके ध्यान को दूसरी ओर मोड़ दिया—पश्चाप के साथ-साथ सम्भवतः और फिर स्वर भान कर वह उठकर बैठ गई।

'नाथा!'

'जी।'

मगर तू इस समय क्या कर रहा है?'

नाथा सम्भवतः का रंग वहीं गड़ गया। उत्तर में उसने कुछ भी बोलते नहीं बना।

बोलता क्यों नहीं रे।

"

मैंने कहा बोलता क्यों नहीं

मुझे मत कहा जवाब देता है क्या?

नाथी फिर भी नहीं बोला। परन्तु इस बार उसके शरीर में थोड़ा-

सी गति असमय पत्ता हुई। और बहुत ही म गति म वह मिस प्रीतम की ओर बढ़ आया।

चाँद की चाँदनी म जस ही मिस प्रीतम की नजर नाथो क विषाद भरे चेहरे पर पड़ा कि वह कुछ डर सी गई और ममता भरे स्वर म पुकारा—

क्या हुआ नाथो ?

नाथो उसके खाट के निकट आ पहुंचा। जिसस मिस प्रीतम को उसकी मुखमुद्रा और भी स्पष्ट दिखाई दन लगी। उसन हाथ बढ़ाकर नाथो का हाथ पकड़ा और उस अपन निकट बिठान का यत्न करन लगी। परन्तु नाथो ने उसका यत्न सफल नहीं होने दिया—जमीन पर बठ गया। इसस पहले कि मिस प्रीतम फिर स अपन प्रश्न को दोहराती नाथो न उस पर प्रश्न किया रूआंसी सी आवाज म—

क्या बात थी बीबी जी। क्या हुआ ?

उत्तर के बजाए इस प्रश्न को सुनकर मिस प्रीतम तनिक खीझ उठी—

अरे मुझ क्या होना था। मैं तो तुझ पूछ रही हूं कि इस समय क्या घूम फिर रहा है। लगता है जैसे लुटिया डूब गई हो बात क्या है बता तो।

कुछ भी तो नहीं बीबी जी, यों ही   यों ही   ।

अरे क्या यों ही—यों ही लगा रखी है बताता क्यों नहीं सीधी तरह से मैं पूछती हूं यह चेहरा क्यों उतरा हुआ है एकदम ?

मेरा चेहरा बीबी जी ? मैं तो बिलकुल ठीक ठाक हूं। नाराज मत होना शायद मुझ एसी बात पूछने का अधिकार नहीं है। पर क्या करूं। नहीं सहा जाता मुझ से। बहुत ही कमजोर दिल का हूं बीबी जी।

मिस प्रीतम को अधिक पूछताछ करने की आवश्यकता नहीं रह

गई। उसे समझने में देर नहीं लगी कि इस झाड़ी ने उसकी मुँह की फुसफुसाहट अवश्य ही सुन ली होगी। जबकि नाथी का यह स्वभाव ही बन चुका था कि रात में घूम घूम कर आहटें लेना। अब वह नाथी के उत्तर में क्या कहे अथवा नाथी से क्या पूछे कुछ भी तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अतः पूछने या कहने के बजाए वह फिर से अपने अन्तर की किसी गहराई में खो गई—नाथी उसके सामने बैठा है इस ओर से उपस्थित होकर। उधर नाथी वैसे ही घुटनों पर ढड़ा सिराग अपनी लाश पर हाथ फिरा रहा था।

सहसा मिस प्रीतम का ध्यान उभरा जब उसके कान में नाथी की सिसकियों की आवाज़ पड़ी। और सुनते ही उसके दोनों हाथ नाथी के दोनों कन्धों पर टिक—

'क्या हुआ रे नाथी? अरे रोने क्या लगा। भई यह तेरी बहुत ही बुरी आदत है नाथी, कि न कोई कारण न कोई प्रयोजन और लग जाता है टसुए बहाने।'

दो मिनट, चार मिनट पाँच मिनट बीत गये। पर न तो नाथी की सिसकियाँ रुकीं और न ही उत्तर में वह कुछ कह पाया। मिस प्रीतम के हाथ उसके कन्धों पर पीठ पर थपकियाँ कर रहे थे।

'चल तुझे तेरे कमरे में छोड़ आऊँ', कहते हुए मिस प्रीतम ने उसे बाँह से पकड़ कर उठाया। फिर उसे साथ लिए छोटे कमरे की ओर चली। अब बालक-सा नाथी उसके साथ-साथ चलने लगा।

३२

आज प्रीतम कुछ जल्दी ही उठ गई—स्कूल जो जाना था उस ओर जाने से पहले अपनी ओर नाथी की पेट पूजा की व्यवस्था भी तो उसे करनी थी ।

रसोई घर में काम करते हुए मिस प्रीतम को अपना मन रात की अपेक्षा कुछ हल्का फुल्का सा जान पड़ रहा था । अब उसे स्कूल जाने से वैसा डर नहीं लग रहा था जैसा कि गत कई दिनों से हो रहा था । उसके दिल की धड़कन सामान्य थी और मानसिक खिंचाव की हालत में वह अपने स्वभाव के विपरीत विचारों में निमग्न था—

पीछे तो जो हो गया सो हो गया । पर आगे के लिए मुझे कुछ अक्ल से काम लेना होगा । इस तरह का पागलपन कब तक चलेगा । मनुष्य यदि अपने को ठीक रास्ते पर न लाये तो दूसरों के बर्ताव में अवश्य ही परिवर्तन हो जाता है । मैं जो सब किसी के मुंह आने लग जाती हूं—सब किसी से मोर्चा लेने को तैयार हो जाती हूं क्या इससे बड़ा पागलपन भी कोई होगा ? अध्यापिकाएं अगर मेरे खून की प्यासी हो उठी हैं—हैडमिस्टरस अगर मुझे देखते ही माथे पर बल डाल लेती है तो क्या वे सब लोग बुरे हो गये और एक मैं ही दूध की धुली रह गई ? नहीं ऐसा नहीं चलेगा । अब या तो मुझे बदलना होगा या फिर मरना होगा ।

जब तक नाश्ता बनने और खाने का काम चलता रहा यह सारा समय मिस प्रीतम ने अपने पर लेक्चर झाड़ने में ही व्यतीत किया । तत्पश्चात वह स्कूल जाने की तैयारी में जुट गई कपड़े बदले, कंघा लेकर

और सिर गूथते हुए उस आल के सामने जा खड़ी हुई जहाँ शीशा पड़ा था। सहसा उसे उस दिन की घटना याद हो आई जिस दिन उसने यहीं से एक शीशा उठाकर फर्श पर पटक दिया था। उसके बाद ही दिनों बाद वह बाजार से वैसा ही एक और शीशा ले आई और लाकर इसी आले में रख दिया था।

इन दोनों शीशों का मामला मिस प्रीतम के लिये उसके जीवन इतिहास का एक नन्हा-सा परिच्छेद बन गया। पहले शीशे के साथ वह जितना उपेक्षा का बर्ताव किया करती थी दोबारा लाकर रखे हुए इस शीशे से उतना ही उसे प्रेम पैदा हो गई थी। यह क्यों हुआ—कैसे हुआ? इस ओर उसने कम ही ध्यान दिया होगा। सम्भवतः इसका यह कारण हो कि पहले वाले शीशे के सामने जब वह खड़ी होती थी तो उसे लगता मानो शीशा उसे मुँह चिढ़ा रहा है—उसकी कुरूपता का ढिंढोरा पीट रहा है— अरे कलमुँही! तेरी शक्ल भी है शीशा देखने लायक और फिर जब वह ध्यान से शीशे में ताकती तो उसे अपने चेहरे पर बुढ़िया जैसी झुर्रियाँ दिखाई देतीं। जिससे वह शीशे पर झुँझला उठती। मानो यह सारा दोष शीशे का ही हो। कदाचित् इसी से एक दिन उसने बेचारे निर्दोष शीशे को मौत के घाट उतार दिया। उसके बाद वह वैसा ही एक और शीशा ले आई और उसमें अपना चेहरा ताका तो उसे इस नये शीशे पर केवल क्रोध नहीं हुआ बल्कि उसे अच्छा अच्छा लगने लगा। तत्पश्चात जब-जब भी वह शीशे के सामने खड़ी होती अपने नाक नक्शों पर कुछ इस प्रकार की समीक्षा करने लगती—

यह आँखों के पास बने हुए काले घेरे कुछ फीके पड़ते जा रहे हैं झुर्रियाँ तो महसूस भी नहीं पड़ती हैं अब गाल भी तो पिचके पिचके नहीं लगते हैं पीलापन? कहाँ है पीलापन। अरे नहीं शायद यह मेरा भ्रम था

वह चेहरे पर कभी इस परिवर्तन को वास्तविक मानने लग

जाती तो सभी काल्पनिक। उसका मन होता कि दान के प्रति रिक्त यदि उसे कोई और प्रमाण मिल जाता तो कितना अच्छा होता। पर उसके पास-पड़ोस म तो कोई ग्रोरन सम्भा आ ना थी जो उसका भ्रम निवारण कर दती। उसक निकटतम यदि कोई व्यक्ति था भी तो एक नेत्र हीन पुरुष। यदि मिस प्रीतम का मामला आँखों म सम्बन्ध रखता था। मान ना कि नाथी का पाँसें होता। फिर भी क्या वह उससे एसा प्रश्न कर पाता ?

इधर एक दिन मिस प्रीतम न नाथी पर एक अलग सा प्रश्न कर डाला था—

क्यो रे नाथी यह आँखो का अभाव तो तुझे बहुत खटकता होगा ? और उसके उत्तर मे नाथी ने कदाचित अपने मनोवेग म बहते हुए कुछ एस वाक्य कह दिये थे कि फिर कभी मिस प्रीतम को उस पर ऐसा प्रश्न करने का साहस नही हुआ—

आप सच कह रही हैं बीबी जी। ठीक ही आँखें बडी न्यामत हैं और जिसे भगवान् न यह नही दी हैं उसे इनका अभाव तो अवश्य ही खटकेगा। मैंने एक बार आपको बताया था कि एक गोसाइ जी क चक्कर मे पड़कर मैंने मुट्ठी भर रुपये खो दिये और उसका बताया हुआ मन्त्र भी बहुत दिनो तक रटा जो कि असल म पाखड क सिवा कुछ नही था। पर पता नही क्या बात है कि जब से मैं यहाँ आया ह तबस कभी भी मुझ आखो का अभाव नही खटका है। मुझ कुछ ऐसा जान पडता है जस आँखा के बिना भी मैं बहुत कुछ देखने लगा हू और वह सब आपकी आँखो द्वारा। फिर भी अगर कभी कभाक आँखा का अभाव मुझे सतान लगता है तो केवल इसलिए कि अगर मरी आँखें होती तो जी भर कर मैं अपनी बीबी जी को देख पाता। कई बार भगवान क चरणा म प्राथना करन लग जाता हू कि हे अन्तर्यामी ! अधिक नहा तो केवल दो घड़ी क लिए हा मुझ आँखें प्रदान कर द जो एक बार मैं अपना बीबा जी को देख पाऊ

शाम के भाग न होकर मिस प्रीतम ने नौकरों को घर की सम्भाल करने की चेतावनी और फिर स्कूल की ओर अग्रसर हुई।

मिस प्रीतम के मन को कुछ न कुछ सन्तोष हुआ जब वहाँ का वातावरण उसे किसी मात्रा तक अनुकूल-सा जान पड़ा। अध्यापिकाएं भले ही उससे प्रेम के साथ न मिली हों परन्तु पहले की तरह मुँह मोड़ कर भी न रहीं। 'बड़ी बहिन जी' का रवैया भी उसे कुछ ऐसा बुरा नहीं जान पड़ा। सबसे बढ़कर जो बात उसे उत्साह वर्धक लगी वह थी अध्यापिकाओं की ओर से उसके सौन्दर्य पर टिप्पणी। किसी ने उसे कहा 'मिस प्रीतम! क्या कमाल हो गई थी? मैं बनी छुट्टी सहन करके लौटी हो। कोई बोली 'मिस प्रीतम! यह गालों पर कैसा पाउडर क्रीम सा लगाना शुरू किया?

इतना ही नहीं बल्कि क्लास में जाने पर इसी प्रकार की टीका-टिप्पणी उसे अपनी छात्राओं द्वारा भी सुनने को मिली। एक स्यानी लड़की ने सबसे पहले उसे कहा— "भैण जी! तुसी बड़े सोहणे—मोहणे पए लगदे जे!" (बहन जी! आप कितनी सुन्दर दीख रही हैं!)।

मन ही मन मिस प्रीतम इस अनोखी किस्म की टिप्पणी पर टीका-टिप्पणी किए चली जा रही थी— क्या सच ही क्या विगत दो सप्ताह में मुझमें ऐसा उलट फेर हो गया है? कहीं ये सब मजाक तो नहीं कर रही हैं मेरे साथ?

ऐसा होने के बाद जब मिस प्रीतम घर लौटी तो इतनी प्रसन्न थी कि खुशी के मारे उसके पाँव धरती पर नहीं टिक पा रहे थे।

छिपते डोलते और लड़खड़ाते हुए मिस प्रीतम की जीवन गाड़ी एक ऐसे स्थान पर आ पहुंचा जहां पहुंचने का आशा का उस धारा हा करती थी कभी उसकी कल्पना म भा नहीं था पाई था। और इसका ठीक-ठीक अनुमान उस छुट्टियां समाप्त होने पर वापस स्कूल म जाकर हुआ चाहे इसका कुछ कुछ भास उस पहले स हा होने लगा था कि वह मुरूप से कुरूप होती जा रही है। उसका गिरा हुआ स्वास्थ्य सुधरने लगा है—उसके गाल नदनम म ललाई आने लगी है। और इसके सम्बन्ध म पहले उस जो भ्रम था स्कूल जाने पर विश्वास म बदल गया।

दुख या मुसीबत अकेली नहीं आया करती। परन्तु कभी-कभार ऐसा भी होता है कि किसी पर दुख जब आता है तो अपने दुखा के अतिरिक्त थोडी घनी सुख की सामग्री भी लिए आता है। मिस प्रीतम के लिए भी कुछ उसी प्रकार का घटना घटी।

पहले दिन के बाद जब वह घर पहुंची तो नाथी ने एक बन्द लिफाफा उसे दिया—यह बीबी जी आपकी चिट्ठी आई है।

मिस प्रीतम न उस पर नजर डाली। पता लिखा था मिस्टर जगन्नाथ मार्फत मिस प्रीतम वह बोल उठी—अरे यह चिट्ठ मेरी तो नहीं है नाथी।

तो शायद डाकिया भूल कर दे गया होगा बीबी जी।

भूलकर नहीं र यह तेरी है।

मेरी?

हाँ तेरी।

पर मुझ चिट्ठी लिखने वाला

बाच म ही मिस प्रीतम बोल उठी— इन्टरव्यू लटर है।

इन्टरव्यू लटर ? कहाँ से आया है बीबी जी ?

इमनमर के क्षय विद्यालय की ओर स।

खुशी के मारे नाथी एक स चार ही तो हो उठा। तब मिस प्रीतम ने पत्र उसे पढ़कर बताया— सितम्बर की १० तारीख को बुलाया है इन्टरव्यू क लिए। आज है पहली तारीख। यानी आज स १० दिन बाद।

मामला इन्टरव्यू का था। इन्टरव्यू का मतलब यह नहीं रहता कि किसी उम्मीदवार की सफलता निश्चित हो। मिस प्रीतम जानती थी कि नौकरियों के मामले में उम्मीदवारों को अनेकानेक इन्टरव्यू देने पड़ते हैं और एक-एक जगह के लिए बीसियों उम्मीदवार हुआ करते हैं। जिसम से किसी बिरले को ही सफलता प्राप्त होती है। पर यह सब जानते हुए भी नाथी का मन कुछ इस प्रकार स हो उठा मानो पत्र इन्टरव्यू का न होकर नियुक्ति का हो।

उसने नाथी स पूछा— तेरा क्या ख्याल है नाथी ! यह जगह मिल जायेगी तुझ ?

नाथी अपने अन्तर की खुशी को छिपाने का यत्न कर रहा था। और इस भय स कि कहीं उसको बीबी जी उस ओछा न समझने लगें। बोला—'मेरा दिल तो यही कहता है बीबी जी, कि मिल जाएगी।

'भला इसका तेरे पास क्या सबूत है कि जरूर ही मिल जाएगी।'

मेरी बात को आप गलत न समझियेगा बीबी जी। इसका सबसे बड़ा सबूत यही है कि आपने अपना पवित्र हाथ मेरे सिर पर रखा हुआ है। मैं सोचता हूँ—जब आप की छत्र छाया तले आकर मैं पशु से मनुष्य बनने लगा हूँ—मेरा काया कल्प-सा होने लगा है तो इस बात का क्या न विश्वास करूँ कि नौकरी के मामले में भी आप ही मुझे सहारा प्रदान करेंगी। नहीं तो इतनी उम्र बीत गई ऐप्लीकेशनें भेजते भी

बात मुझे पहले क्यों न सूझी।

'अरे क्या फिजूल का गप्पें हांकने लगा। मिस प्रीतम ने मथुरता में बसा हुई घड़की बताई— तुम तो हर समय ऐसी ही पागलपन की बातें सूझा करती हैं। पर नाथी तू अकेला वहां जाएगा कैसे ?

क्या आपने बीबी जी मुझे बिल्कुल गंवार समझ रखा है ? यह लाठी जो है मेरे पास। इसकी सहायता से कहीं भी जा सकता हूं।

मिस प्रीतम को मौन पाकर नाथी बोला— क्या सोच रही हैं बीबी जी ?

'कुछ नहीं।

मैं बताऊं आप क्या सोच रही हैं ?

बड़ा आ गया ज्योतिषी बनकर। भला बता तो।

यही सोच रही हैं आप कि अकेला जाने पर न जाने नाथी पर क्या मुसीबत आ जाएगी। यही सोच रही हैं न आप ?

हूं।

और भी बताऊं ?'

बता।

आप मेरे साथ जाने की बात सोच रही हैं। कहिए मेरा ज्योतिष ठीक है या गलत !

तू तो नाथी सचमुच ही ज्योतिष विद्या सीख गया है।

नाथी धन्य हो उठा इस प्रशंसा को पाकर। मिस प्रीतम का यह प्रस्ताव उसे जचा नहीं। बोला—

पर ऐसा नहीं होने का बीबी जी। मेरी बात का विश्वास कीजिए मुझे अमृतसर जाने में कुछ भी कष्ट नहीं होगा। आप निश्चिन्त रहिए।

अच्छा देखा जाएगा। अब जाकर अपना काम देख। खूब मन लगाकर मेहनत कर से इन छोड़ से दिना में। इस घमंड में न रह कि तेरी *बीबी जी मंत्र से तेरा इन्टरव्यू सफल बना देगी।*

और नाथी ने वही किया।

क्या सच ही अब तक राष्ट्र की आग में पड़कर छना हुआ था ? कितना आश्चर्यचकित होकर मिस प्रीतम सोचती थी।

स्कूल खुलने के बाद मानो सब किसी बात का—हर एक व्यक्ति का रंग रूप बदला हुआ उसे दिखाई देने लगा। जहाँ इस अनोखे परिवर्तन से उसका मन पुलकित हो उठा वहीं उसे पश्चात्ताप भी कम नहीं हो रहा था। क्यों न पहले से ही उसने इस मार्ग को अपनाया। यदि अपना लेती तो क्या उसे इतने लम्बे समय तक अपना रक्त जलाना पड़ता—क्यों उसे सब किसी के क्रोध और घृणा का शिकार होना पड़ता और क्यों उसे अपनी जवानी तथा स्वास्थ्य की आहुति देनी पड़ती।

मिस प्रीतम स्कूल जाकर बड़े चैन से अपना काम करने लगी। उसकी छात्राएं जो हर समय उस पर कुढ़ा करती थीं अब प्रसन्न मुख से उसके साथ बातचीत करतीं। अध्यापिकाओं के साथ के [illegible] साफ होते जा रहे थे। छुट्टी के बाद जब वह घर लौटती तो पहले की तरह पाँव पटकते और नाक भौं चढ़ाकर चलने के बजाए अब उसे अपनी गति में हल्कापन जान पड़ने लगा। रास्ते में यदि किसी अध्यापिका का साक्षात् हो जाता तो वह उदार भाव तथा खिले खिले चेहरे से उसे [illegible] इत्यादि [illegible] तो पहले की तरह आग बबूला होने के बजाए वह इसे साधारण बात समझ कर सहन कर जाती।

प्राय इसी प्रकार का परिवर्तन मिस प्रीतम के घरेलू वातावरण में भी होता जा रहा था। पहले यह हाल था कि किसी दिन खाना बना तो, किसी दिन नहीं बना। कमरों की सफाई किए सप्ताह बीत जाते

अब यह हाल था कि ठीक समय पर नाश्ता तैयार होता ठीक समय पर भोजन बनता।

नाथी को जिस दिन से इण्टरव्यू लेटर मिला उस दिन को दिन समझता न रात को रात। और हर समय वही बात या टिक टिक में लगा रहता। इस प्रकार यद्यपि दोनों ही अपने अपने काम में व्यस्त थे फिर भी वे बातचीत करने के लिए समय निकाल ही लेते। विशेषतया रात का खाना खाने के बाद।

कुछ भी सही पर नाथी था तो बेचारा भगा ही और एक अनाथ के प्रति उसके अभिभावक के जो जो कर्तव्य रहते हैं मिस प्रीतम उन्हें पूरा करने में कभी नहीं चूकतीं। कभी इन दोनों में किसी-न किसी बात पर कुछ माधुर्य मिश्रित झगड़ा भी खड़ा हो जाता। विशेषतया इस बात पर नाथी नाराज होता कि उसके बाहर जाने पर पीछे से उसकी बीबी जी क्यों उसके कपड़े धो डालती हैं जबकि वह स्वयं उन्हें धो सकता है। इसी प्रकार मिस प्रीतम नाराज हो जातीं कि नाथी घर लौटते हुए बाजार से साग सब्जी आदि क्यों खरीद कर ले आता है जबकि वह खुद ही ला सकती है इत्यादि।

विधाता के विधान को कौन समझ सकता है कि उसके कार्यालय में कब क्या कुछ बनाया जाता है और कब क्या कुछ तोड़ा जाता है। मिस प्रीतम अपने इस जीवन परिवर्तन पर—इस अनायास के संयोग पर फूली नहीं समा रही थी कि विधाता ने अपनी वर्कशाप में उसके लिए एक ऐसी चीज गढ़ डाली जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

स्कूल खुले अभी एक ही सप्ताह हुआ था कि जैसे ही मिस प्रीतम स्कूल के अहाते में प्रविष्ट हुई कि उसने वहाँ का वातावरण ही बदला हुआ पाया। क्या छात्रायें और क्या अध्यापिकायें सब किसी का रंग ढंग बदला हुआ दीखा उसे।

बहुत सोचा मिस प्रीतम ने—भरसक दिमाग लड़ाया उसने। पर पहेली खुलने में नहीं आ पाई। बीच बीच में सोचने लगी— कहीं मुझे

ही तो वहम की बिमारी फिर से नहीं आ गई ?

पहले पीरीयड की समाप्ति पर दूसरा प्रारम्भ हुआ और दूसरे के बाद तीसरा। मिस प्रीतम अपनी छात्राओं को पन्ने लिखाने में व्यस्त थी कि उसे किसी की गुनगुनाहट सी सुनाई दी— राम मिलाई जोड़ी एक अंधा एक कोढ़ी।

सुनने पर मिस प्रीतम बरामदे में बाहर की ओर लपकी। पर गुनगुनाने वाली औरत तब तक ओझल हो चुकी थी। वह सोचने लगी— कहीं यह अंधा और कोढ़ी की तुक उसी पर ही तो नहीं कसी गई है ?

आज इतने दिनों बाद फिर से मिस प्रीतम के मन की हालत वही पहले जैसी हो उठी वही हिलते भाव वही घबड़ाहट आँखें और वही मुट्ठियाँ वही दाँत किटकिटाना।

लौट कर जब वह अपनी जगह पर आ बैठी तो पढ़ाने में उसका मन नहीं लगा। उसे लगा कि इतने दिन तक जो अध्यापिकाओं ने उसके साथ छेड़ छाड़ बन्द कर रखी थी तो इसका कारण था कि वे उसे सताने के लिए कोई नया षड़यन्त्र रचने में लगी थी।

मिस प्रीतम सिर से लेकर पाँव तक सनसनी बनी जा रही थी। विशेषतया इसलिए कि इन छेड़ छाड़ में उसी को ही नहीं बल्कि एक बेचारे निर्दोष अपाहिज को भी उसके साथ घसीटा जाने लगा है।

यों तो मिस प्रीतम मानसिक प्रहार सहन करने की अभ्यस्त-सी हो चुकी थी। पर आज का यह नया ढंग उसकी सहनशक्ति से एकदम बाहर की था। चाहे कितना भी अब तक उसे सताया जा चुका था, परन्तु इसके अन्तर्गत कभी किसी ने उसके आचरण पर लांछन नहीं उठाई थी और आज यह पहला ही मौका था जब उसका नाम एक ऐसे व्यक्ति के साथ जोड़ा जा रहा था जिसे वह गंगाजल जैसा पवित्र मानती थी।

तब मिस प्रीतम ने सोचा— यदि तुममें कोई दोष नहीं है— यदि आत्मा का आँचल पवित्र है तो फिर मुझे संसार किस बात का? चन्द्रमा पर यदि कोई थूकेगा उसका अपना ही चेहरा गन्दा होगा।

सम्भव था कि मिस प्रीतम इस प्रकार के विचारों द्वारा अपने को सतुलित कर ही लेती पर थोडी थोडा इन्ही बातो पर यही गुन राम मिलाई उसके ताना मे पडने लगा था उसका हौसला प्राय समाप्त हो गया।

विचारो का प्रभाव मन पर होना अवश्य है परन्तु हर समय और प्रत्येक स्थिति म एकसा नहीं होता। मन की यथार्थ परिस्थितियो के अनुरूप ही तो बनती है। कहा प्रकट रूप म तो कहा गुप्त रूप म।

मिस प्रीतम जिन परिस्थितियो म से गुजर रही थी एक लम्बे समय से चली आ रही थी—उत्तरोत्तर जिन घटनाओ म स्वय उसे बेजार होना पडा था उसके फलस्वरूप उसके मन की बनावट ही कुछ ऐसी बन चुकी थी जिसकी उपमा भर हुए फोडे से दी जा सकती है। भले ही वह ख्याल किए बैठी थी कि नाथी के सम्पर्क म आने पर उसके मन की बनावट बदल गई—उसके अन्त करण म से घृणा, हिंसा तथा ईर्ष्या की त्रिमूर्ति नष्ट हो चुकी है। परन्तु आज उसे लगा कि यह उसका भ्रम ही था। अन्तर यदि कुछ पडा तो मात्र इतना ही कि भर हुए फोडे पर सेक देने पर उसकी टीसें मिट चुकी थी और यह आज की घटना ? इसने तो मानो सुआ बनकर उसके फोडे को छेद डाला।

स्कूल से निकल कर मिस प्रीतम घर की ओर जा रही थी और फोडे म की टीसें उत्तरोत्तर बढती जा रही थी।

घर के निकट जब पहुची तो उसे नाथी का ध्यान हो आया। क्या वह नहीं जानती था कि नाथी—जो उसके स्वर से—उसकी पदचाप से। यहाँ तक कि उसके उठने बैठने चलने से ही उसकी मनस्थिति को भाप लेना था तो क्या उसकी आज की हालत नाथी से छपी रह जायगी और यदि छपी नहीं रही तो क्या नाथी मरणासन्न नहीं हो उठेगी ?

इसके अतिरिक्त मिस प्रीतम को एक और चिन्ता भी खाये जा रही थी यदि किसी प्रकार यह बातें नाथी के कानो तक भी जा पहुची। यदि नाथी ने किसी के मुह से यह बतकी राम मिलाई जोडी गुन ली

तो अभागा क्या वहीं ही मर कर मिट्टी नहीं हो जायेगा? तब न जाने क्या कर गुजरेगा वह। और कुछ न सही पर इस हालत में उसके घर में नायी का क्या एक मिनट के लिए भी पानी भी दूभर न उठा हो?

मिस प्रानम ने अपनी पूरी शक्ति द्वारा अपने को ऐसा बनाने का यत्न किया कि नायी को उसके बारे में कुछ भी संदेह न हो पाये और घर पहुँचने पर उसे अपने इस मनोरथ में पर्याप्त सफलता दिखाई दी। परन्तु इस सफलता का कारण मिस प्रानम की चातुरी नहीं, बल्कि नायी का खेत के काम में व्यस्त होना था।

नाथी ! ए नाथी !

जी।

क्या बात है रे ? आज घोड़े बेच कर सोया था ? इतनी धूप चढ़ आई और अभी तक तेरी नींद नहीं खुली। भई तेरी यह आदत मुझे फूटी आँखों नहीं सुहाती है। कभी तो रात रात भर सोने का नाम नहीं और कभी दिन में भी पाँव पसारे पड़ा है।

इतवार का दिन था आज। मिस प्रीतम को स्कूल नहीं जाना था। इसी से वह आज देर से उठी। पर नाथी तो उससे भी चार कदम आगे बढ़ गया। मिस प्रीतम ने कमरों की सफाई कर ली नाश्ता तैयार कर लिया। उसके बाद वह एक बार दो बार तीन बार नाथी को जगाने के लिए गई आवाजें दीं। पर नाथी उठने का नाम ही नहीं ले रहा था। कभी दायाँ करवट और कभी बायाँ करवट लेते हुए हूँ-हाँ करता और बस।

जब तीसरी बार जगाने पर भी नाथी नहीं जागा तो मिस प्रीतम खीझ-सी उठी और उपयुक्त बातें कहते हुए उसने नाथी का कंधा झकझोरा। जब इतने पर भी उसे सफलता नहीं मिली तो नाथी की बाँह पकड़कर उसे बलपूर्वक बिठा दिया। पर नाथी का रंग-ढंग उसे निद्रा मग्न जैसा नहीं जान पड़ा। मानो वह सोया होने का स्वांग भर रहा हो। उसकी खीझ थोड़ी और बढ़ गई—

अरे सोया था या यूँ ही मन मारे पड़ा रहा ?

नाथी चुप होकर बैठ गया और फिर मगन मुन्न और अरुचि से

स्वर म बोला— आपका ख्याल ठीक है आशीजा । मैं सोया नहा था ।

"सोया नहीं था तो क्या मन्त्र जप रहा था ?" मानसिक तौर पर एकदम दु खी होने पर भी मिस प्रीतम इस समय अपने को प्रसन्न दिखाने का यत्न कर रही थी । वस्तुत दोना ही अपना अपनी जगह पर एक दूसरे को रखने का यत्न कर रहे थ ।

कल शाम स—जब से मिस प्रीतम स्कूल स लौटकर आई उसने नाथी को बातचीत करने का जान-बूझ कर अवसर नहीं दिया था । कदाचित इस भय स कि कहीं बातो बातो म नाथी उसके आन्तरिक कष्ट को भाप न जाए ।

पाठ जप रहा है की बात मिस प्रीतम ने शायद नाथी की हँसाने के विचार से ही कही थी । पर मामला कुछ उलट-पुलट दिखाई दिया उसे जब नाथी के चहरे पर उसने गहरी नजर डाला । चहरा उतरा हुआ था और आवाज गिरी गिरी सा लग रही थी उसे नाथी की ।

क्या बात है नाथी ? तबीयत ना ठीक है ।

"जी हाँ ठीक ही समझिये ।

समझिये का क्या मतलब र ?

कुछ नहीं बीबा जी थाहा जरा वस ही कुछ तबीयत जरा

बहाने बाजी नहीं चलेगी नाथी । सचसच बता बात क्या है ।'

नाथी को गुमसुम पाकर वह उसके निकट बठ गई और जब अपने पहले प्रश्न मे खीझ के स्थान पर ममता का पुट देते हुए उसने फिर स उसे दोहराया तो नाथी को विवश होकर अपने पागलपन को स्वीकार करना पड़ा—

ठीक है बाबा जी मैंने आपसे झूठ बोला ।

क्यों क्या मुझ पर तुझे विश्वास नहीं है ?'

'भगवान के लिए एसा न कहिए बीबी जी ।'

तो फिर सच-सच बता बात क्या है ?

'सच सच बताऊँ ?

गुम क्या हो गया रे बताता क्यों नहीं ?

मिस प्रीतम के ... म कड़ाई का भाव पाकर नाथी कुछ ... मा गया। परन्तु मुह से फिर कुछ न बोला अथवा बोल पाया ही नहीं।

नहीं बतायेगा मिस प्रीतम रौब दिखाने ... चारपाई की पाटी पर से उठ खड़ी हुई— तो मन क ... । मुझे क्या ... है पूछकर म तेरी कौन होती हू। और इससे पहिले कि वह कमरे का भाग पग बढ़ाती। नाथी ने हाथ बढ़ाकर उसकी बाँह पकड़ लिया ... लगा आवाज में बोला— ऐसा न कीजिये बीबी जी— जाइए नहीं बैठिए ! सब बताता हू।

और मिस प्रीतम फिर से वही पाटी पर बैठ गई। साथ ही उसे नाथी का यह बाह पकड़ने की बात कुछ अनन्य-सी लगी परन्तु दुसह्य नहीं। उधर नाथी के लिए भी तो यह क्रिया कुछ कम अनोखी नहीं थी। यदि उसकी मनोस्थिति यहाँ तक पहुँच गई होती तो शायद ऐसी भूल वह नहीं करता। मनुष्य के अन्तर में जब कभी कोई अधड़ मच रहा होता है तो उसकी लपट में आकर वह स्वत्व यातो से उपरित हो जाता है।

बीबी जी अपने मन की बात सुनाने से पहले नाथी ने मिस प्रीतम पर प्रश्नों की बौछार सी शुरू कर दी— क्षमा करेंगी अगर एक बात पूछू। आपने यह पुरुषों जैसा आत्मबल कहाँ से पाया बीबी जी ? मैं तो आज तक यही सुनता आ रहा था कि औरतों का मन छोटा होता है—छोटी सी किसी बात पर वे घबरा उठती हैं। क्या आपने कोई मन्त्र साधना कर रखी है बीबी जी क्या किसी देवता का वरदान प्राप्त है आप

मिस प्रीतम ने उसे टोक दिया— नाथी ! मैं कहती हू टाल मटोल से काम नहीं चलने का। इधर उधर की बातों में मुझे भटकाने की कोशिश न कर और वही बता जो कहने चला था।

बीबी जी, यह तो आपने ठीक कहा कि मैं बहानेबाजी कर रहा हूँ। पर क्षमा करेंगी अगर पूछूँ कि आप ही मुझसे बहानेबाजी क्यों कर रही हैं।

पगला कहीं का। मैंने कौन-सी बहानेबाजी की है रे?

साहस बटोरते हुए नाथी बोला— मेरे पास इसका प्रमाण है बीबी जी। अगर न होता तो क्या मैं ऐसी बेअदब बात मुँह से निकाल सकता था?

अच्छा तो कहो, बता।

नहीं बीबी जी, पहले आप ही बताइए।

मैं? मैं क्या बताऊँ?

मुँह छोटा और बात बड़ी, बीबी जी, पर क्या करूँ। आप तो जानती हैं कि बहुत छोटे दिल का हूँ। अगर मेरे पास भी आप का सा मजबूत दिल होता तो कितना अच्छा होता। अब मैं कहाँ से लाऊँ इतनी शक्ति कि मेरी बीबी जी पर झूठे आरोप लगाए जा रहे हों और यह जानते हुए भी मैं चैन से सो पाऊँ।

सुनकर मिस प्रीतम का वह मनसूबा जो उसने मन में बाँध रखा था कि कल वाली बात को नाथी से छिपाए रखूँगी, [illegible] हो गया। कुछ घबराहट में—कुछ तुतलाती आवाज़ में वह बोली—

तुम... तु... तुमसे किसने कहा? साफ-साफ बताना नाथी। तुम्हें मेरी सौगंध है।

बिना आँखों के नाथी इस समय मानो मिस प्रीतम के चेहरे पर के उतार-चढ़ाव को देख रहा था और जितना कुछ भी नहीं देख पाया वह मिस प्रीतम की लड़खड़ाती हुई आवाज़ ने और टूटते हुए शब्दों ने उसे बता दिया। वह घबरा सा उठा पर इतना अधिक नहीं जो बेतुकी बातें करने तक की नौबत आ जाती। वह अपने को पूरे तौर से संयत रखते हुए बोला—

कल बीबी जी... कल आपको किसी ने कुछ कह दिया था क्या?

धक धक करने लग गया निर्मल आश्रम का दिल। उधर गांधी कहे जा रहा था—

मुझे दिदा का हमारे दरबार वालों ... शायद मुझे ऐसी बातें करने का अधिकार नहीं है। पर जो मजबूरी इस समय मेरे मुँह से निकलवा रही है वह यह कि इस मन्दिर के साथ मेरा नाम भी जोड़ा जा रहा है।

इस निम प्रीतम के लिए बहाना करने का कोई गुंजाइश नहीं रह गई। पर आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि गांधी के कानों तक यह बात पहुँची कैसे? क्योंकि कल दिन भर वह घर से बाहर ही नहीं निकला था—रात को भी कहीं नहीं गया था।

गांधी के चेहरे पर इस समय निम प्रीतम के मनोभावों को पूरे तौर से भाँप रहे थे उसने पूछा—

क्या सोच रही हैं बाबा जी? क्या यही कि इस मुझ को कैसे पता चल गया इस बात का? इतना कहना ये सब बातें मैंने किसी और से नहीं बल्कि आप ही के मुँह से सुना है। आपको पता ही होगा कि मेरे कान पतले हैं। रात आप सोते-सोते जितनी ही देर तक जो कुछ बड़बड़ाती रहीं वह सब मैंने सुना। क्या कहूँ ... दफ्तर दिनों में यही एक आपका सहारा पाया था। जब-जब भी यह मुझे सपने में दिखाई देने लगता है मेरे मन का चैन उड़ जाता है—नींद हराम हो जाती है। कोई रात ऐसी नहीं बीती होगी जब मैं घर में आपके निकट घूमते हुए इन बातों की टोह न लेता रहा होऊँ। आपकी आदत तो मुझसे छिपी नहीं है कि जब कभी आपके दिल पर कोई गहरी चोट लगती है आप सोते में और कई बार जागते हुए भी उसी बात को लेकर कितना कुछ बोलती चली जाती हैं। आज की रात भी वही हुआ।

यों तो कल शाम जब आप स्कूल से लौटी थीं तभी से मुझे संदेह होने लगा कि आज कुछ हुआ है—आपकी आवाज ही बता रही थी।

पूरी बात जानने क लिए मैं रात बहुत देर तक आप की चारपाई के निकट चक्कर काटता रहा। इस बीच म ना कुछ मुझ सुनने को मिला उसन तो मेरी कमर ही तोड़ कर रख दी। बात-तौर पर आपके मुंह से बार बार राम मिलाइ गाडी एक भगा एक कोढ़ी सुन कर। इसके सिवा बीच बीच म आप किसी का खून कर डालने की बातें भी करती रहीं। इसके सिवा और भी कितना ही कुछ।

बीबी जी क्या मैं इतना भी नहीं समझ सकता कि यह कल जो कुछ हुआ वह केवल मेरे ही कारण से? अगर मन यहाँ आपके घर मे डेरा न डाल दिया होता तो किसकी मजाल थी जो ऐसी बात जबान पर लाता। हाँ अब आपकी उस बात का उत्तर दू कि इतनी धूप चढ़ आने पर भी म क्या टाँगें पसारे पड़ा रहा। भला आप ही बताइए बीबी जी। मेरी जसी हालत म कोई सो सकता है। बीती आधी रात से लेकर अब तक म इसी बात को लेकर न जाने क्या क्या मनसूबे बनाता और मिटाता चला गया। कई बार मन हुआ कि अब तो धिक्कार है मेरे जीने पर जो मेरे कारण मे आप पर कलंक के छींटे पड़ने लग गये हैं। फिर सोचता, नहीं ऐसा नहीं करूंगा। अगर मरा आत्म हत्या करना प्रभु को मजूर होता तो पहले ही क्या इसम बाधा पड जाती। फिर मन म आया कि इससे तो यही अच्छा होगा कि जब बाबी जी स्कूल गई होंगी तो पीछे से अपना सामान समेट कर चुपके स चल दूंगा। पर क्या करूं? इतना साहस कहाँ स लाऊ कि उधर मेरी बीबी जी के सिर पर लाछनों का पहाड़ टूट पड रहा हो और इधर म अपनी चमडी बचाने की खातिर भाग निकलूं।

इसके सिवा कुछ और भी ऐसी बातें रात मने आपके मुंह स सुनी जिन्हे सुनकर मरा दिल घायल हो हो उठा।

मिस प्रीतम ने उसे बीच म ही टोक दिया— वे क्या बातें थीं नाथी?

' मार गाने-सोने म रहा था कि चाहे सारी दुनियाँ मुझ पर ...

पागल बन जाय फिर भी मैं नाथो को पत्नी नहीं दूंगा। इस अभाग के लिए आपके मन में इतना दर्द—इतनी सहानुभूति। और कहते-कहते नाथो के नन्दालि आंखों के कोनों में से आंसुओं की धारा बह निकली।

मिस प्रीतम ने सब सुना। जैसे जैसे सुनती गई उसी क्रम से नाथो उसे और भी अच्छा अच्छा मीठा-मीठा प्यारा-प्यारा लगने लगा। वह नाथो का कौन होता है—कौन-सा उसने नाथो का ऐसा उपकार किया है जो वह उसके दुख में इस तरह विगलित हो रहा है? जीवन में हर पग से ठुकराई हुई एक अभागिनी लड़की का क्या इतना बड़ा मूल्य है नाथो की नजरों में?

तब एक लम्बी और सुखद साँस भरते हुए मिस प्रीतम नाथो की ओर झुकी और उसकी बाँहें बेल की तरह नाथो की गर्दन में लिपट गई। उसे लगा मानो प्रकृति ने उससे सब कुछ छीन लेने के बदले में जो यह अच्छा व्यक्ति उसे प्रदान कर दिया है तो यह सौदा उसके लिए कुछ महंगा नहीं रहा है।

तू बड़ा ही मूर्ख है नाथो। वैसे ही उसकी गर्दन में बाँहें डाले मिस प्रीतम उससे नाराज होने लगी—— ऐसा भी कोई करता है पगले?

प्रेम स्नेह की भाषा में हाँ को नहीं के रूप में प्रकट किया जाता है। इस परस्पर विरोधी अथवा विपरीत व्यापार को समझने की बुद्धि नाथो में यदि अधिक नहीं तो कुछ न कुछ तो थी ही। जिससे मिस प्रीतम का यह उलहना उसे 'वरदान' से कम नहीं जान पड़ा। यह उसके हृदय वाद्य की किसी सूक्ष्म तार को छू गया। जिसकी झंकार ने उसे मन्त्र मुग्ध सा बना लिया। नाथो का सिर झुकते झुकते मिस प्रीतम के वक्ष से जा सटा। उसकी आँखों के गढ़ की तरल वस्तु अश्रु कणों में बदल गई। तब उसे लगा कि किसी की स्नेह मय उंगलियाँ इन कणों को चूसे जा रही हैं और उंगलियों की सुखद उष्णता नाथो को आत्म विभोर किए दे रही थी।

नवार का दिन अच्छा ही व्यतीत हुआ। मिस प्रीतम ने दिनका बहुत समय उसने नाथी से बात करने में ही व्यतीत किया और बीच बीच में उसकी अपनी लिपि का वाचन हुए। इसके अंतर्गत नाथी ने भी अपनी लिखित कई पाण्डुलिपियाँ उसे सुनाई। इस शुगल में पड़कर उसे भूल ही गया कि कोई दुखद घटना उसके साथ घटी थी। नाथी आज अपनी रचनाएँ उसे सुनाते हुए भरसक इस यत्न में लगा रहा कि मिस प्रीतम के मन पर से कल वाली घटना का प्रभाव मिटाने में सफल हो सके। और इसमें उसे पर्याप्त सफलता मिली।

दिन के बाद रात भी मिस प्रीतम ने अच्छी ही व्यतीत की। जिसका प्रमाण यही था कि नाथी को आज उसके आस-पास बहुतेर चक्कर काटने पर भी उसके मुँह से किसी प्रकार की फुस फुसाहट सुनने को नहीं मिला।

दिन चढ़ते ही मिस प्रीतम पूर्ववत उठी और शौच स्नान से लेकर नाश्ते तक फिर नाश्ते से लेकर स्कूल पहुँचने तक सभी कुछ उसने अच्छे मूड में किया। सदा की भाँति आज भी उसने स्कूल जाने से पहले घण्टा आध घण्टा उन कापियों के साथ माथा पच्ची की जो प्रतिदिन छुट्टी के बाद वह अपने साथ ले आया करती थी। जिनमें की हुई लड़कियों की लिखाई का उसे संशोधन करना होता था। प्रगट तौर पर चाहे ऐसा ही लगता था कि मिस प्रीतम का मन अब हल्का फुल्का है। पर इसका यह भाव नहीं कि स्थाई तौर पर ही वह हल्का फुल्का हो चुका था। प्रमाणतः स्कूल के अहाते में प्रविष्ट होते ही उसका दिल

अनायास हो गिनने-सा लग गया और पटरा भी कुछ-न-कुछ बढ़ गए। मानो उसने पाया पर था रहे मधुर पर कुछ विस्मृत-सा लगा हो। परन्तु ऐसा नहीं कि जिसका दाहा उसे विचलित हो कर रही।

पहले प्रार्थना या शरियत शुरू हुआ फिर हाजरी लगी। तत्पश्चात पठन-पाठन का क्रम शुरू हुआ। मिस प्रीतम ने कुछ बात और कुछ अनायास मन से क्लास लेना आरम्भ किया। परन्तु उनके बारे में जो एक नया चर्चा भीतर ही भीतर आरम्भ हुआ था वह अब तक किस सीमा तक पहुँचा है इस जानने के लिए वह छिपी छिपी नजरों द्वारा प्रत्येक छोटे बड़े चेहरे को निहारती चली जा रही थी उस लग रहा था जैसे या तो परसों वाला चर्चा अब किसी का मूल बिसर गया है या इस किसी और समय के लिए उठा रखा गया है अथवा यह शान्त वातावरण किसी आने वाले तूफान का अग्रचिह्न है। इस प्रकार की मनोवस्था में वह पूरे तौर से पढ़ाने में अपने को केन्द्रित नहीं कर पा रही थी।

एकाध पीरियड ही हो पाया था कि सहसा स्कूल की चपरासिन जो वाइ नात से जरा लंगडा कर चलती थी उसके कमरे में प्रविष्ट हुई जिस पर नजर पडते ही मिस प्रीतम का कलेजा धक धक बजने लग गया। चपरासिन के आगमन का मतलब था बड़ी बहिन जी का ओर से बुलावा। और मिस प्रीतम का यह आशंका सार्थक ही सिद्ध हुई जब आते ही चपरासिन ने अपने दुपट्टे तले से कागज की एक कतरन निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दी।

चलो मैं अभी आती हूँ। यह कर मिस प्रीतम ने चपरासिन को लौटा दिया और मेज पर बिखरी पड़ी कापियां इत्यादि को परे धकेलते हुए कमरे से निकल कर बड़ी बहिन जी के दफ्तर की ओर अग्रसर हुई।

× × ×

मुख्याध्यापिका लगता था जैसे मिस प्रीतम की ही प्रतिक्षा में थी। कमरे की दहलीज को पार करते जैसे ही मिस प्रीतम की नजर

उसके तमतमाते चेहरे पर पड़ी कि उसकी टांगों में थिरकनें चलने लग गई। और फिर जब बड़ी बहिन जी ने उसकी नमस्ते का उत्तर तक नहीं दिया तब तो मिस प्रीतम के देवता ही कूच कर गये। तत्पश्चात उसे एक और झटका लगा जब बड़ी बहिन जी ने उसे बैठने तक का संकेत नहीं किया। मानो अध्यापिका नहीं कोई अभियुक्त उसके सामने उपस्थित हो। मिस प्रीतम फटी-फटी आंखों से फर्श पर ताकती हुई उसके सामने खड़ी थी।

मिस प्रीतम', उसी प्रकार रक्ताभ चेहरे और घृणा बिखेरती आंखों से मिस प्रीतम की ओर ताकते हुए मुख्याध्यापिका कड़कड़ाई—'यह मैं क्या सुन रही हूं?'

खड़-खड़ मिस प्रीतम को जैसे काठ मार गया। अपने सूखे गले से से उसने कठिनाई से आवाज निकाली—'क्या हुआ बड़ी बहिन जी?' इससे पहले कि मिस प्रीतम को 'क्या हुआ' का उत्तर मिलता, कड़कता और अपमानजनक स्वर में उसे सुनाई दिया—

हूँ एक तो चोर और तिस पर चतुर जैसे बीबी रानी कुछ जानती ही नहीं हो।"

न जाने कहाँ से मिस प्रीतम ने इतनी शीघ्रता से बोलने की शक्ति जुटा ली। वह अपने बड़ाई में बोल उठी— आप क्या कह रही हैं बड़ी बहिन जी, आप तो बताइये न। कौन-सा अपराध हो गया मुझसे?

अब के मुख्याध्यापिका बचा-खुचा सब्र भी खो बैठी— आँखों में न भूलती जा बदजात कहीं की! खानदानिन आखिर वही बात की न तूने कि 'मुंगा खाये उड़ाये और अपने सिर में आये। अरे कुतिया अगर इतनी ही आग लग गई थी तुझे तो किसी ढंग के आदमी को लेकर ता भाग मारती। अरी लुच्ची तेरे लिए क्या दुनियाँ में अन्य, या अशराफ़ हा रह गये थे? धिक्कार है तुझ—हजार बार लाख बार धिक्कार।

मिस प्रीतम अब खड़ी नही रह पाई और निकट पड़ी कुर्सी पर बठ नही गई बल्कि धप्प से गिर गई। उधर बड़ी बहिन जी एक ही साँस में विष वमन किए जाती जा रही थी—

अरे बदकार! अरे कमीनी कही की! तू इतना भी न सोचा कि तू क्या पाठशाला की एक अध्यापिका है। कुमारी लड़कियों को विद्या पढ़ाना यानी उन्हें सभ्यता सिखलाने चली। क्या तेरी इच्छा है कि तेरी तरह ही यहाँ की छात्राएं दुराचारिणी बन कर मेरे स्कूल को कोठीखाना बना डालें?

कुर्सी पर बठते अथवा गिरते ही मानो मिस प्रीतम के अन्तर में से एक दूसरी मिस प्रीतम उभर आई—स्वसम्मान तथा त्याग की प्रतीक जसी कोई और जसे ही मुख्याध्यापिका रुकी कि वह कड़क ही तो उठी—

क्षमा करना बड़ी बहिन जी, आप इस समय मेरा अनादर कर रही हैं।

यह बात कह कर मानो मिस प्रीतम ने मुख्याध्यापिका के अन्तर में धधक रही आग पर एक बोतल तेल डाल दिया हो—

क्या कहा अनादर कर रहा हूँ तेरा? अरे वाह रे बड़ी आदरणीय और ऊंचे खानदान की बेटी! पर इसमें तेरा दोष नहीं है। जसा पेड़ हो वसा ही उसमें फल लगता है सुन चुकी हूं तेरी माँ की सब बातें। अरे अकृतघ्न लड़की मैंने तो तेरी गन्दगी ढांपी थी तेरी हालत पर रहम खाकर। पर मुझे क्या मालूम था कि बेटी अपनी माँ से भी बढ़ चढ़ कर निकलेगी। खसम की चिता भी ठंडी नहीं हो पाई थी कि यार के साथ भाग निकली थी। तू भी तो आखिर उसी की औलाद है ना। सच ही कहा है कि बाप पर बेटा नसल पर घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।'

मिस प्रीतम की न केवल सहन शक्ति ही विलुप्त हो गई बल्कि समझ बूझ भी उसे जवाब दे चुकी थी। इतना कहा और प्राण लेवा

प्रहार । विशपत असे ही बोलन वाली के मुह से उसने अपनी माँ के बारे म यह टीका टिप्पणी सुनी नि बौखला हा तो उठी वह—

'देखिए वहिन जी । जो कुछ आप कह चुकी वह वह चुकी । अगर फिर से मेरी मा का नाम जवान पर लाई तो इसका नतीजा अच्छा नही होगा ।

हैडमिस्टरस मुह चिढाते हुए बोली— अर वाह रे ? सती सावित्री की बेनी । क्या कहन तरे और साथ हा तरी माँ के जा मरे खसम की चिता पर ठोकर मार कर उस हरामी बूजड नी शय्या पर जा चढा । अगर मेरा बस चले ता तुम जसी दुराचारणियो का बात अभी वह पूरी भी नहीं कर पाई था कि मिस प्रीतम के सिर पर मानो भूत सवार हो गया । बाघिनी का तरह दहाडते हुए वह कुर्सी से उठ खडी हुई ।

अरे रहने भी दीजिए बडी बहिन जी । सच्ची बातें मुह स मन निकलवाइय । भला छाज तो बोलगा छलनी क्या बोलगी जिसके अपने ही पेट मे नौ सौ छद हो । मरी मा न तो विधवा होन के बाद ही दूसरा खसम किया । पर जरा अपन गरबान म तो मुह डाल कर देखिये कि अपने जाने खसम को छाड कर मर मामू की शय्या पर

तभी मुख्याध्यापिका उसकी बात को बीच म ही काटने हुए कड-कडाई— चुप रह हरामजादी कुतिया और इसके साथ ही एक भारी गरकम थप्पड मिस प्रीतम के गाल पर आ पडा । उसक बाद दूसर गाल पर और फिर उत्तरोत्तर वहा तडातड का क्रम शुरू हो गया । इसक साथ-साथ मिस प्रीतम पर वाक्य बाणा का प्रहार भी होना चला गया—

दूर हा जा मेरी आँखों स नहीं तो हड्डी बाटी एक कर डालूगी । बदजात । गन्दी नाली की छींट । मैंन भक मारा तुझे आश्रय दकर । नही जानती थी कि कुत्त को खीर नहा हजम हुआ करती है ।

कुचली हुई नागिन की तरह भीतर ही भीतर जहर घोलते हुए जसे ही मिस प्रीतम दरवाज की ओर मुडी कि वहाँ उसने अध्यापिकाओं का जमघटा पाया । जो दहलीज को रोके खडी था । वह नही बान पाइ कि

कब से वे लोग यहाँ खड़ी भीतर के इस नाटक का आनन्द ले रही थीं। इससे पहले कि मिस प्रीतम बाहर निकलने का प्रयास करती, अध्यापिकाओं ने भीतर घुसकर उसे हाथों हाथ ले लिया। अपनी माननीया बड़ी बहन जी का यह अपमान और उनकी आँखों के सामने! भला वे इसे कैसे सहन कर सकती थीं। किसी ने चाँटा किसी ने थप्पड़ और किसी ने लात चलाना आरम्भ कर दिया। जिस मिस प्रीतम से बदला लेने के लिये वे न जाने कब से घात लगाये बैठी थीं वे भला इस स्वर्ण अवसर को पाकर क्या चूकतीं।

अन्ततः बड़ी बहन जी ने अपना बड़प्पन और उदारता दिखाते हुए मिस प्रीतम को उन सबों के चंगुल से छुड़ाया। और फिर किसी ने धक्कों की ठेल पेल द्वारा उसे कमरे से बाहर खदेड़ दिया।

हाँफते और सिसकते हुए मिस प्रीतम इस तरह स्कूल के अहाते से बाहर निकली जैसे उस किसी ने सेर भर भाँग खिला दी हो। एक पग बढ़ती तो दो पग पीछे की ओर मुड़ जाती। उसकी आँखों के आगे गहरी धुंध छाई हुई थी। सिर में जोर जोर से चक्कर आ रहे थे और इसी अर्ध चेतन अवस्था में वह लड़खड़ाते और डगमगाते हुए घर की ओर अग्रसर हुई। उसके गाल सूजे हुए थे नाक में से खून बह रहा था नाक के अतिरिक्त मुंह से भी—शायद एकाध दाँत टूट जाने के कारण। उसके सिर का दुपट्टा कई जगहों से फट गया था। और दुपट्टे की तरह कमीज भी फिर भी वह अपनी समाप्त हुई जा रही चेतना को जोर जब्र द्वारा समेटते हुए द्रुत गति से घर की ओर भागी जा रही थी। चिंतित इस भय से कि कहीं रास्ते में ही गिर न जाए और कहीं रास्ता ही न भूल जाए।

चलते चलते सहसा उसके पाँव रुक गये और खड़े खड़े वह सोचने लगी— किधर जा रही हूं? घर? क्या करूंगी घर जाकर? आह कितनी ढीठ कितनी बेगैरत हूं जो इस हालत में पहुंचकर भी जीने का मोह नहीं छोड़ना चाहती। क्या जो कुछ आज मेरे साथ हुआ है यह

अपमान की चरम सीमा रही है। इतना हो जाने पर भी क्या मनुष्य के लिए जीते रहने का प्रश्न पैदा हो सकता है? मृत्यु क्या कहीं इससे भी बढ़कर कष्टप्रद होती होगी ?

थोड़ी देर तक वहीं खड़े-खड़े इस प्रकार की असंगत बातें सोचती चली गई और उसकी टाँगों में गति आने लगी।

अधिक-से अधिक पचास कदम चली होगी कि एक बार फिर किसी मनोविकार ने उसकी टाँगों को जकड़ लिया और पूर्ववत् हो वह खड़ी होकर सोचने लगी— पर पर उस बेचारे अमाहित का क्या होगा जो रात रात भर जगकर मेरे दु:खों कष्टों को नापता रहता है? यदि मैं ऐसा कुछ कर बैठूँगी तो वह अभागा मेरे मरने की खबर पाकर ही प्राण त्याग देगा।

मन फूली-सी होने लगी मित्र प्रीतम का और कदाचित् इसी भूल भुली ने उसके कदमों का रुख घर की ओर मोड़ दिया। सम्भव था इतने पर भी उसका शरीर कहना न मानता। परन्तु बीच-बीच जब नायी का आकृति उसकी आँखों आगे आ जाती तो उसके मिट्टी हो चुके शरीर में फिर से थोड़ा घना चलने की क्षमता पैदा हो जाती। शीघ्रातिशीघ्र घर पहुँचने की आकांक्षा उसके बिखरे होश हवास को पुनर्गठित किए जा रही थी।

थोड़ा देर बाद उसने मदन का घर के सामने पाया और फिर हाथ उठाकर दरवाजा खटखटाने लगा मानो यह सब क्रियाएं वह स्वयम् नहीं कर रही थी बल्कि कोई बलपूर्वक उससे करवा रहा था।

नाथी घड़ी नहा रखता था पर मिस प्रीतम की प्रतीक्षा एक प्रकार स उसे घडी का ही काम देती थी—घड़ी के अतिरिक्त दुरबान का भी। अब स्कूल में छुट्टी होन वाली है अब छुट्टी की घंटी बजा अब बीबी जी अपनी कापी समाते स्कूल के महाते स बाहर निकली। अब बीबी जी घर की ओर चलीं इत्यादी सभी दृश्य मानो प्रत्यक्ष रूप म उसे दिखाई दिया करते।

इधर कई दिनो मे नाथी स्कूल के काम म से कुछ समय निकालकर दूसरे कामो की ओर भी ध्यान देने लगा था। मिस प्रीतम का चाहे उसका सम्मान फटी आँखो नही सुहाता था और इसके बारे मे वह उसे रोक-टोक भी करती रहती थी पर नाथी था कि जो कुछ करने पर उतर आता चाहे कुछ भी हो जाये उससे हटन का नाम लेता। मिस प्रीतम की अनुपस्थिति में वह घर के कितने ही छोटे मोटे काम कर डालता। झाड़ू लगाने से लेकर बतन मलने तक और पानी लाने से लेकर आटा सानने तक।

आज नाथी इन छोटे-मोटे कामो को कर लेने के बाद बाजार का भी एक चक्कर लगा आया था। इसलिये कि सवेरे स्कूल जाते समय मिस प्रीतम अपना थला साथ नहीं ले गई थी अथवा भूल गई थी। वह इस बात से अनजान नहीं था कि इस प्रकार की भूल चूक मिस प्रीतम तब ही किया करती है जब उसके मन की हालत अच्छी न हो और नाथी देख रहा था कि परसो स उसकी बीबी जी की हालत डाँवाडोल है चाहे उसने परसों वाली स्कूल म की घटना का प्रभाव मिटाने के लिये कुछ भी उठा नहीं रखा था।

पहले जब मिस प्रीतम के लौटने का समय होता तो नायी अपने कमरे में बैठा उसकी प्रतीक्षा किया करता था। परन्तु आज न जाने क्यों वह बीन का काम बीच में ही छोड़कर और कमरे से बाहर इधर उधर घूमते हुए बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

जब ही दरवाजा खटखटाने की आवाज उसे सुनाई दी कि वह झट से इस तरह दरवाजे की ओर भागा जैसे कोई आशा वाला व्यक्ति है।

आज इतनी देर कर दी बीबी जी आपने। दरवाजा खोलने के साथ ही उसने प्रश्न किया और उत्तर में जब मिस प्रीतम द्वारा— हाँ आज कुछ देर हो गई वाक्य सुनते ही नायी को मानो रक्त सूखने लग गया— यह क्या ! बीबी जी को आज क्या हो गया ? आवाज में यह रूखापन ! यह हिचकियों जैसा स्वर !

पहले प्रश्न के बाद नायी कोई और प्रश्न करता कि मिस प्रीतम तीर की तरह अपने कमरे में जा घुसी और बिना इस बात का ध्यान किये कि घबराहट के मारे मरणासन्न हुआ नायी भी उसके पीछे भागा आ रहा है।

भीतर जाते ही जब मिस प्रीतम कटे हुये वृक्ष की तरह चारपाई पर गिर पड़ी तो नायी का रहा-सहा दम भी मानो निकलने को हो आया। या मिस प्रीतम का स्कूल से लौटने पर चारपाई पर गिर जाना उसके लिए कोई नई बात नहीं थी। जबकि ऐसा कम ऐसा हुआ ही करता था। पर आज की तरह गुम-सुम होकर क्या कभी मिस प्रीतम ने ऐसा किया था ? जब तक वह नायी से क्षेम कुशल नहीं पूछ लेती तब तक उसे चैन नहीं पड़ता था। और आज सबके विपरीत आज यह हालत ? यह तो नायी के लिए बड़ा ही था मानो सूर्य निकले और बिना प्रकाश के। जिसका भाव और क्या हो सकता है कि सूर्य को राहु केतु ने ग्रस लिया है।

यों तो परसों से ही—जब से स्कूल की अध्यापिकाओं ने मिस प्रीतम के साथ वह नई कहावत ' राम मिलाई जोड़ी

थी नाथी का मन डिगने लग गया था परन्तु तब भी उसने अपनी बीबी जी को आज जैसी दुखद स्थिति में नहीं पाया था। मिस प्रीतम की यह आज की हालत उसी परसों वाली घटना का प्रतिक्रम है ऐसा मानने को नाथी का मन तयार नहीं था। क्योंकि उसके बाद मिस प्रीतम की हालत उत्तरोत्तर सुधरती चली गई थी।

तो क्या आज कोई नया काण्ड हो गया है? मन ही-मन इस प्रकार के कई अनुमान लगाते हुए नाथी चारपाई की पाटी पर बैठ गया और बैठते ही उसने मिस प्रीतम पर प्रश्नों की बौछार शुरू कर दी जिनके उत्तर में पहले तो मिस प्रीतम एकदम मूक बनी रही पर जब नाथी हाथ धोकर ही उसके पीछे पड़ गया तो उसने अपने को सम्भालने का प्रयास करते हुए अपने को बोलने योग्य बना ही लिया। पर जो कुछ उसके मुंह से निकला बजाए इसके कि सुनकर नाथी को कुछ संतोष होता वह और भी अधीर हो उठा।

नाथी! नाथी इ ई और इस लम्बी चीख के बाद जो उच्चारण मिस प्रीतम द्वारा हुआ वह कुछ ऐसा था कि जिसकी रूपरेखा किसी कवि ने इन शब्दों में प्रस्तुत की है—

किस तरह करता बियाँ मैं सितम उस सय्याद के।
हिचकियों ने कर दिये टुकड़े मेरी फरयाद के।

अब नाथी की हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि इससे आगे कुछ पूछने—कुछ कहने का सामर्थ्य मानो उसे जवाब दे गई। परन्तु था तो वह होश में और होश में होते हुए कैसे न बोलता। अतः प्रश्न पर प्रश्न करता चला जा रहा था। अन्त में मिस प्रीतम ना कुछ नहीं कहना चाहती थी जिस रहस्य को वह नाथी के सम्मुख कदापि उद्घाटित करने को तयार नहीं थी उसका सूत्रपात कर ही डाला उसने।

नाथी मुझे मुझे उन्होंने मार मारकर मेरी देखो मरे मेरे नाथी! आज मुझे बचा ले अगर बचा सकता है। मैं आज मुझे और मिस प्रीतम दहाड़ मार उठी।

नाथी की, ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गई यह सुनकर। वह निढाल होकर मिस प्रीतम के वक्ष पर ढह गया और नन्हें बच्चे की तरह सिसकियाँ भरने लगा।

सन्ध्या मिस प्रीतम पूरे तौर से अपने पर काबू पाते हुए उठ बैठी और साथ ही उसने अपने वक्ष पर गिरे हुए नाथी के सिर को उसी तरह थपथपाते हुए सीधा किया जैसे माँ अपने शिशु को। तत्पश्चात यह दोनों कुछ इस प्रकार से मौन मुद्रा में बने रहे मानो किसी के पास न कुछ पूछने को रह गया हो न बताने को।

अन्त में इस घुटन—भरी निस्तब्धता को मिस प्रीतम ने तोड़ा—

नाथी ! अरे तू क्या मरा जा रहा है। ठीक से होकर बैठ और मेरा बातें सुन। नाथी ! भगवान् के लिए अपने को सभाल अगर मुझे जीता देखना चाहता है। और कहते-कहते मिस प्रीतम ने उसका हाथ पकड़ कर अपने सूजन भरे चेहरे पर रख लिया।

नाथी को अपनी वह भूल करता इस समय याद आई। जैसे ही उसकी उंगलियों ने मिस प्रीतम के गालों और माथ को स्पर्श किया कि वहाँ मोटी मोटी और उभरी रेखायें का उसे भास होने लगा।

मरे रब जा। नाथी हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ— यह थप्पड़ों के निशान ! हे भगवान ! यह तूने क्या कर डाला मेरी बीबी जी को इतना पीटा गया ! और कहते-कहते नाथी ने अपना माथा पीट लिया। तब मिस प्रीतम ने उछलकर उसके दोनों हाथ पकड़ लिए। अन्यथा तब सम्भव था कि नाथी चारपाई की पाटी से अथवा फर्श पर पटक पटक कर अपने सिर के दो टूक ही कर डालता।

मिस प्रीतम ने देखा कि नाथी ने यह जो अपने माथ पर दोहत्थड़ मारा है यह दूसरे शब्दों में खतरे की घंटी है। यदि वह उसे न सभाल पायगी तो इसका परिणाम होगा नाथी का प्राणान्त। अतः नाथी को सुधारने का यदि कोई ढंग उसे दीखा तो यही कि वह बिना लुकाव छिपाव के वह सब उसके सामने प्रगट कर दे जो कुछ आज उसके साथ हुआ है। -

ओर उसने वही किया।

मिस प्रीतम अपने को यथा सम्भव सतुलित रखते हुए सब सुनाये जा रही थी और उधर नायी भी ये सब सुनने के लिये अपने को सभाले हुए था। या तो भीतर ही भीतर इस समय इन दोनो को किसी सर्वनाशी भूकम्प के से झटके आंदोलित किए दे रहे थे।

शारीरिक चोट का प्रभाव हमारे मन पर होता है और मानसिक चोट का शरीर पर। परन्तु उस व्यक्ति की क्या हालत होती होगी जिसका मन और शरीर, दोनों ही मसल पड़े हों ? इस प्रश्न का उत्तर कोई मिस प्रीतम से पूछकर देखे, जिसका शरीर धक्कों लातों से घायल हुआ पड़ा था और मन उन वाक्य बाणों से जो उस पर मुख्याध्यापिका से लेकर दूसरी अध्यापिकाओं तक ने बरसाये थे। इसे तो मिस प्रीतम के साहस की चमत्कार ही मानना चाहिए कि इतना होने पर भी वह अपने घर तक आ पहुँची। अन्यथा उसका रास्ते में ही गिर कर बेहोश हो जाना सम्भवित था।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई बड़ा कष्ट हमारे लिए महान औषधि बनकर आया करता है कुछ ऐसा ही हुआ मिस प्रीतम के साथ। घर पहुँचने के थोड़ी ही देर बाद उसे इतनी जोर का बुखार हो गया कि बदन का होश नहीं रहा और इस बुखार को मिस प्रीतम के लिए औषधि का प्रतीक ही कहना चाहिए जिसने उसकी चेतना को छीनकर थोड़ी देर के लिये उसे कष्ट मुक्त कर दिया।

इतना भयंकर बुखार और रात का समय। न कोई पास न कोई पड़ोसी। ले-देकर यदि रोगिनी को सम्भालने वाला कोई था भी तो मात्र वही अपाहज नाथी।

घबराहट में कभी वह कमरे के बाहर निकलता तो कभी भीतर घुसता क्या उसे डाक्टर को लिवा लाना चाहिए ? पर डाक्टर की दुकान तो दूर थी। वहाँ तक जाने आने में नाथी जैसे अपंग व्यक्ति के लिए कम

और उसन वही किया।

मिस प्रीतम अपने को यथा सम्भव सतुलित रखते हुए सब सुनाय जा रही थी और उधर नायी भी ये सब सुनन के लिये अपन को सभाले हुए था। या तो भीतर ही भीतर इस समय इन दोना को किसी सवनाशी भूकम्प-से से झटके आंदोलित किए दे रहे थे।

शारीरिक चोट का प्रभाव हमारे मन पर होता है और मानसिक चोट का शरीर पर। परन्तु उस व्यक्ति की क्या हालत होती होगी जिसका मन और शरीर, दोनों ही मसल पड़े हो ? इस प्रश्न का उत्तर कोई मिस प्रीतम से पूछकर देखे, जिसका शरीर थप्पडो लातो से घायल हुआ पडा था और मन उन वाक्य बाणो से जो उस पर मुख्याध्यापिका से लेकर दूसरी अध्यापिकाओ तक ने बरसाये थे। इसे तो मिस प्रीतम के साहस की चरम सीमा ही मानना चाहिए कि इतना होने पर भी वह अपने घर तक आ पहुची। अन्यथा उसका रास्ते मे ही गिर कर बेहोश हो जाना सम्भवित था।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई बडा कष्ट हमारे लिए महान औषधि बनकर आया करता है कुछ ऐसा ही हुआ मिस प्रीतम के साथ। घर पहुचने के थोडी ही देर बाद उसे इतनी जोर का बुखार हो गया कि बदन का होश नही रहा और इस बुखार को मिस प्रीतम के लिए औषधि का प्रतीक ही कहना चाहिए जिसने उसकी चेतना को छीनकर थोडी देर के लिये उस कष्ट मुक्त कर दिया।

इतना भयकर बुखार और रात का समय। न कोई पास न कोई पडोसी। ले-देकर यदि रोगिनी को सभालने वाला कोई था भी तो मात्र वही अपाहज साथी।

घबराहट मे कभी वह कमरे के बाहर निकलता तो कभी भीतर घुसता क्या उस डाक्टर को लिवा लाना चाहिए ? पर डाक्टर की दुकान तो दूर थी। वहाँ तक जाने आने मे साथी जसे अपग व्यक्ति के लिए कम

स कम एक घंटे का समय तो चाहिए ही और इतने लम्बे समय के लिए क्या वह अपनी बीबी जी को बुखार की आग में जलते हुए छोड़ कर चला जाए ? यदि पीछे से कोई वज्रपात हो गया तो ?

बुखार से सन्तप्त मिस प्रीतम को कहीं आधी रात में होश आया। और होश आते ही उसे नाथी की चिन्ता ने आ दबोचा कि नाथी के साथ क्या बीत रही है ? उसने उसे अपने पास बुलाया और स्नेह-युक्त स्वर में कहने लगी—

अरे पगले ! घबरा क्यों गया तू ! थोड़ी देर में ठीक हुई जाती हूँ मैं। ऐसा कर कि लोटे में पानी भर कर ले आ और मेरे माथे पर पट्टी भिगो भिगो कर रखनी शुरू कर दे सब ठीक हो जायेगा।

आदेश का पालन करते हुए नाथी वही सब करने लगा। मिस प्रीतम ने सिर से दुपट्टा उतारकर उसके हवाले कर दिया और दुपट्टे के छोर की कई तह बना कर नाथी ने पट्टी रखनी शुरू कर दी। उसके मन की हालत चाहे कुछ भी रही परन्तु वह जानता था कि यदि उसने पौरुष से काम नहीं लिया तो सम्भव है कि उसकी बीबी जी की हालत अधिक बिगड़ जाए। पट्टी भिगोकर रखने के साथ साथ वह मन में अपने अन्तर्यामी से मना रहा था— हे दीनदयाल ! मैंने आज तक कभी तुमसे कुछ नहीं मांगा है। आज मेरी कामना पूरी करो प्रभु मेरी बीबी जी को आंच न आने पाये यही मांगता हूं तुमसे

लगता था जैसे नाथी के अन्तर्यामी ने निकट होकर उसकी पुकार सुन ली। बुखार की मात्रा उत्तरोत्तर घटती जा रही थी और इसके साथ साथ मिस प्रीतम की चेतना भी लौटने लगी। मलेरिया अथवा टाईफाइड जैसा बुखार तो था नहीं जिसे हटाने के लिए कुछ अधिक उपचार की आवश्यकता होती। दुर्घटना का ही तो प्रभाव था अधिक कुछ नहीं।

अब मिस प्रीतम के माथे में दर्द होने लगा था और नाथी उसको माथा दबाए जा रहा था कभी दर्द जरा कम हो जाता तो कभी फिर से

न्टीसें पढ़ने लगतीं। इस बीच म एक से अधिक बार मिस प्रीतम ने नाथी से आराम करने के लिए अनुनय विनय की और जब उसका कुछ असर नहीं हुआ तो आदेश जस लहजे म कहा और जब फिर भी नाथी नहीं माना तो इससे अधिक वह क्या कर सकती थी।

रात का दूसरा प्रहर पट्टियाँ रखने म व्यतीत हुआ और तीसरा माथा दबाने म।

तभी मिस प्रीतम पुकारी—'नाथी ई ई ई!

कहिए बीबी जी। नाथी ने थोटा उस पर झुकते हुए पूछा—"क्या कहना है बीबी जा?

नाथी! तू कहाँ है?"

'यही तो आपके पास बैठा हूँ बीबी जी बताइय न क्या कहना है?

'नाथी! आज तूने मुझे बचा लिया। अगर तू यहाँ न होता तो शायद मैं अब तक मर चुकी होती। पर तेरे मोह न नाथी सिर्फ तेरे ही मोह ने मुझे आज दूसरी बार मौत से विमुख '

बीबी जी नाथी ने टोका। भगवान के लिए बहुत नहीं बोलिए। बोलने से कहीं बुखार फिर न बढ़ने लग जाए।

पर बीबी जी ने कुछ नहीं सुना। वह अपनी ही धुन म कहती चली जा रही थी—

प्रभु को धन्यवाद है कि तू मेरे पास है नाथी। अब और मुझे कुछ नहीं चाहिए और सुन मेरी बात। देख रही हूँ कि तू घुला जा रहा है मेरी चिन्ता में। अरे पगल मैं तो भली-चंगी हूँ। तुझे कहा नहीं था कि थोड़ी देर म ठीक हो जाऊँगी? तूने सुन लीं न मेरी सब बातें? नौकरी-नौकरी-नौकरी? बस नौकरी ही मेरा गुरु परमात्मा हो गई। नौकरी के बिना जसे मरी जाती हूँ। मेरी बला से। एक दर बँधा सौ दर खुल। जिसने चोंच दी है क्या वह दाना नहीं देगा। पर पर सोचती हू अगर महीना दो महीना और काम पर लगी रह पाती तो अच्छा ही था—कम-स-कम छुट्टियों की तनख्वाह ही पा लेती। उसी

से कुछ सहारा मिल जाता। कुछ पैसे जुट जाते तब किसी पर कपड़े सीने की मशीन ले लेती। सिलाई का काम योग्य घना आता है मुझे। अच्छा जो भगवान की मर्जी। हाँ मैं क्या कह रही थी? क्या कहा था मैंने? और बहुत सोचने पर भी मिस प्रीतम को याद नहीं पड़ा कि वह क्या कह रही थी अथवा कोई आवश्यक बात कह भी रही थी या नहीं।

नाथी मौन साध चारपाई की पाटी पर बैठा पूर्ववत् ही माथा दबाये जा रहा था। ज्यों ही मिस प्रीतम ने बोलना बन्द किया कि वह बोल उठा—

बीबी जी भगवान ने बड़ी दया की जो हम दोनों को बचा लिया। अगर आपको कुछ हो जाता तो यह अन्धा किसके आसरे रहता—क्यों जीता रहता बीबी जी। विनती करता हूं बीबी जी कि आप मेरी चिन्ता छोड़ दीजिये और अपने को सम्भालने की कोशिश कीजिये। सब भूल जाइये जो कुछ आपके साथ हुआ है।

भूल जाऊंगी नाथा की पीठ थपथपाते हुए वह बोली— यूं तो चाहे न ही भूल पाती पर नाथी तेरा खातिर जो मुझे जीना है तो फिर बिना भूलने से कैसे चलेगा।

नाथी का सिर एक बार फिर मिस प्रीतम की ओर झुक गया। न जाने कितना कुछ कहने के लिये उसके अन्तर में से उमड़ा आ रहा था। परन्तु उससे कुछ भी कहते नहीं बना और जो कुछ उसे कहना था उसका अनुवाद करके मिस प्रीतम को सुनाये जा रहे थे उसके आँसू।

नाथी मिस प्रीतम ने फिर से उसके सिर को सीधा करते हुए कहा— अरे छोड़ भी पगला कहीं का। बात-बात में टिसुए बहाने लग जाता है औरतों की तरह। अरे हाँ मैं तो भूल ही गई थी। किधर ध्यान है रे तेरा? सुन रहा है या नहीं?

सुन रहा हूं बीबी जी कहिये।

मैंने कहा तेरा इन्टरव्यू कब है?'

परसों बीबी जी।'

'परसों' तनिक रुक कर मिस प्रीतम बोली— अच्छा ही हुआ जो यह नौकरी का बवाल गले से छूट गया। सोचती थी, किस तरह तू अकेला अमृतसर जायगा और अगर मुझे साथ जाना पड़ा तो छुट्टी के लिए फिर उस चुड़ल के सामने विनती करनी पड़ेगी। पर अब तो छुट्टी मांगने की जरूरत ही नहीं रह गई है। चाहे कहीं भी चली जाऊं।

मचलते हुए नन्हे बालक की तरह नाथी प्रतिरोध में बोला— 'ऐसा नहीं बीबी जी। आपको हरगिज नहीं जाना होगा मेरे साथ। चाहे आप कुछ भी कहें।

'क्या नहीं जाना होगा रे? बता तो।'

भला आपकी हालत इजाजत देती है गाड़ी का सफर करने की।

क्या हुआ है मेरी हालत को क्यों नहीं मैं सफर कर सकती भला?

'देखती नहीं हैं कितना बुखार आया आपको।

अरे हट पागल कहीं का। ऐसी नाजुक मिजाज नहीं हूँ जो इतना सा बुखार आने पर खाट पकड़े रहूंगी।

तत्पश्चात् इसी विषय को लेकर दोनों में कितनी ही देर तक वाद विवाद चलता रहा और अन्त में रात का चौथा पहर बीतने पर इस विवाद का अन्त हुआ और नाथी को अपने बीबी जी की हठ के आगे घुटने टेक देने पर विवश होना पड़ा।

सवेरे निश्चित समय से कुछ देर बाद मिस प्रीतम की आँख खुली। उसने अपना शरीर हल्का फुल्का पाया। बुखार या तो उतर चुका था या नाम को ही बाकी था। शरीर के अतिरिक्त उस मन की हालत भी कुछ अच्छी ही जान पड़ी। कल वाली घटना का असर एक दम मिट गया हो ऐसा तो वह नहीं ख्याल कर रही थी परन्तु कल की अपेक्षा इस समय उसकी मानसिक हालत में बहुत अन्तर था।

खाट को जब उसने छोड़ा तो उसकी टाँगें डगमगा रही थीं मानो बहुत दिनों की बीमारी के बाद उठी हो। उठने के बाद वह फिर से बैठ गई और बैठने के बाद फिर से उठ खड़ी हुई और यह सोचते हुए कि बेचारा नाथी कल से निराहार है।

छोटा कमरा रसोई घर के रास्ते में पड़ता था उसका ख्याल था कि अनादि के कारण नाथी सोया पड़ा होगा। पर जैसे ही उसने भीतर झाँका कि नाथी का बिस्तर खाली पाया। मन ही मन उसने अनुमान किया कि सम्भवतः वह डाक्टर के यहाँ गया होगा। उस नाथी पर खीझ होने लगी मुझ को पूछ तो लेना चाहिए था मुझे कि डाक्टर की जरूरत भी है या नहीं।

वह अपने कमरे में लौट आई और चारपाई पर लेट कर अपनी नब्ज टटोलने लगी। नब्ज की गति ठीक ही जान पड़ी उसे। तब वह उठकर कमरे का सामान ढंग से उसने सवारने में लग गई जैसे गरीब घरों में किसी डाक्टर हकीम के आने से पहले आमतौर पर किया जाता है। काम कुछ अधिक नहीं था और न ही कमरे में सामान का ही ऐसी भरमार थी। वह चारपाई पर बैठकर सोचने लगी डाक्टर जब आकर मुझे भली चंगी पायगा तो मन में क्या सोचेगा कि बीबी रानी इतनी

ही नवाबजादी है जो तनिक सा नाखून गर्म होने पर भी डाक्टर को बुलवाने लग जाती है? नाथी की जल्दबाजी पर उसे बारबार क्रोध हो रहा था।

अन्ततः उसकी प्रतीक्षा समाप्त हुई जब बाहर से उसे 'खटखट' की आवाज सुनाई देने लगी। नाथी ने जब कमरे में प्रवेश किया तो मिस प्रीतम का अनुमान था कि उसके पीछे-पीछे अपना साइकिल बगैर संभाले डाक्टर भी आ धमकेगा। परन्तु उसका यह अनुमान गलत निकला—डाक्टर वाक्टर कोई नहीं आया।

'कहाँ गया था रे नाथी?

'यों ही थोड़ा सा नये बाजार तक चला गया था।

सवेर-सवेरे क्या काम पड़ गया था तुझे बाजार जाने का?

उत्तर देने के बजाए नाथी ने अपनी कमीज की जेब में से कागज में लपटी हुई एक चौरस पुड़िया-सी निकाली और उसे मिस प्रीतम की ओर बढ़ा दिया।

अरे यह क्या नाथी पुड़िया में से नोटों का अच्छा खासा पुलिन्दा निकालते हुए मिस प्रीतम ने उससे पूछा— यह कहाँ से ले आया?

वहीं अपने निश्चित जगह—चारपाई की पाटी पर बैठते हुए नाथी ने उसे बताया— मैंने उस दिन आपको कहा था न बीबी जी कि एक दुकानदार के पास मैंने थोड़ी सी पूँजी जमा रखी है। और इसके आगे नाथी को कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं जान पड़ी। न ही मिस प्रीतम को समझने में देर लगी कि नाथी को इस से आने की इतनी क्या जल्दी हो गई थी। फिर भी वह चुप नहीं रह पाई। थोड़ी देर तक सोचते रहने के बाद बोल उठी—

नाथी

जी

क्या यह इसलिए कि मेरी नौकरी छूट गई है?

'नाथी उत्तर में कुछ नहीं बोल पाया।

मिस प्रीतम समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे और क्या न करे। नाथी को मूर्ख बताये या उसका धन्यवाद करे अथवा नोटों का यह पुलिन्दा रख ले या उसे लौटा दे। रख लेने का भय था नाथी का उत्साह बढ़ाना और लौटा देने का भय था नाथी का दिल तोड़ना।

नाथी वहीं बैठा बैठा अपनी लाठी को यथावत ही दोनों हाथों में शन शन घुमाये जा रहा था। मानो लाठी नहीं कोई दुरबीन पकड़ रखी हो उसने और जिसे घुमा फिरा कर वह उसका फोकस ठीक कर रहा हो—किसी सूक्ष्मातिसूक्ष्म वस्तु का निरीक्षण करते हुये और मानो दुरबीन का फोकस सेट हो जाने पर मिस प्रीतम की पसलियों की दीवार के पीछे चल रहे संघर्ष को नाथी ने देख लिया हो। बोला—

क्या सोच रही हैं बीबी जी—सौगात की बात ? भगवान के लिए ऐसा नहीं कीजिएगा बीबीजी। इससे मेरा दिल साबुत नहीं रह जाएगा। यही सोच रही हैं न आप कि नाथी से यह कागज के टुकड़े लेने का आपको अधिकार है या नहीं। क्या बीबीजी अभी तक मुझे यह बताने की जरूरत बाकी है कि आपके और भगवान के सिवा इस दुनियाँ में मेरा कोई नहीं है ? और अगर आप ही ... आप ही ... और कमजोर मन का नाथी बोलते-बोलते फफक पड़ा तो पड़ा।

तूने मुझे इतना पत्थर समझ रखा है रे नाथी ? निःसंकोच भाव से उसके सिर को अपने वक्ष से लगाते हुए वह बोली— पगले ! अगर तेरा दिल तोड़ दूंगी तो क्या मेरा दिल साबित रह जाएगा ? बंद कर ये आँसू टपकाना मूर्ख कहीं का। और कहते कहते मिस प्रीतम अपने दुपट्टे के छोर से उसकी आँखें पोंछने लगी।

नाथी इस प्रसंग को और आगे चलाना नहीं चाहता था अथवा चला पाने की सामर्थ्य ही उसमें नहीं रह गई थी। अतः बातचीत का रुख बदलते हुए उसने मिस प्रीतम की कलाई थाम ली और उसे टटोलते हुए बोला— अब तो बीबी जी आपकी नब्ज ठीक से चल रही है।

हाथ वाला पुलिन्दा सिरहाने के नीचे रखते हुए मिस प्रीतम बोली— तेरा ख्याल ठीक है नाथी मुझे भी ऐसा ही लगता है तभी तो मैं सोच

रहा थी कि पगला कहीं 'डाक्टर' को न लिवा लाय।

उधर नाथी का हाथ कलाई को छोड़कर मिस प्रीतम के चेहरे पर जा टिका और उसकी उँगलियाँ शायद सूजन को जाँचने के लिए उसके गालों पर और माथे पर रेंगने लगीं।

मिस प्रीतम उसका मनोभाव जाँचते हुए बोल उठी 'सूजन! वह अब घट गई है नाथी। मुझे स्वयं मालूम हो रहा है। दर्द जो उतना नहीं हो रहा है इसी से।'

सहसा नाथी को मिस प्रीतम की कही हुई बात 'पगला कहीं डाक्टर को' याद हो आई। जिसके उत्तर में वह बोला— 'या तो चला ही जाता डाक्टर के यहाँ पर गया इसी से नहीं कि मैं जानता था कि आपका बुखार उतर गया होगा।'

मिस प्रीतम को हँसी आ गई 'बिना देखे इस बात का कैसे पता चल सकता है? तार मुजक्कड़ कहीं का।'

शायद जान बूझकर ही मिस प्रीतम ने नाथी के लिए इस 'लाल मुजक्कड़' उपनाम का प्रयोग किया था और जिस मनोरथ से उसने यह किया वह उसे पूरा होते देखा जब नाथी कहकहा मार कर हँस पड़ा और हँसते हुए बोला—

'भला बाबी जी क्या इतना भी समझ नहीं रखता हूँ? आपने पूछा कि कैसे पता चल गया मुझे। आपके साँस लेने पर ही मैं समझ जाता हूँ कि आपके शरीर की हालत कैसी है और मन की कैसी।' उदाहरण के तौर पर नाथी ने अपने इस गुण को प्रमाणित करने के लिए कितनी ही दूसरी बातें गिनानी आरम्भ कर दीं।

गिनाते-गिनाते नाथी ने अपने कानों को—जो उसे आँखों का काम देते थे—मिस प्रीतम की ओर लक्ष्य करते हुए अनुमान किया कि वह पूरा ध्यान देकर उसकी बातें नहीं सुन रही है अतः वह कुछ उकताकर बोला। 'बाबी जी आप का ध्यान किधर है क्या नींद आ रही है?'

नही तो

कही फिर से बुखार तो नही होन लगा ?

अरे तुझे तो वहम की बिमारी हो गई है नाथी। वह जो क्या कि भली चगी हू ले देखने मेरी न ओर कहते हुए उसन अपना हाथ नाथी के हाथ म थमा दिया।

हाथ का ऊष्णता से ही नाथी समझ गया कि बुखार रहा है। तब उसने दूसरा प्रश्न किया—

तो फिर आप का ध्यान उखडा उखडा क्यो लग रहा है मुझ ?

भला तू क्से कह सकता है कि मेरा ध्यान उखडा हुआ है।

चाह किसी तरह से भी पर बताइये मेरा कहा ठीक है या गलत ?

ठीक है तेरा कहना नाथी इसे मैं गलत नही कह सकती सच ही इस वक्त मेरा ध्यान किसी दूसरी ओर बार-बार जाने लगा।

किसी ओर बीवी जी क्या बतायेंग नही

उत्तर देन के बजाए मिस प्रीतम न प्रश्न किया—

नाथी ! यह कितनी रकम है जो तू लाया ?

नाथी को यह प्रश्न रुचा नहा वह कुछ बन्दिशो से बोला— पाच सौ स कुछ ऊपर ही होंगे बीवी जी।

यानी करीबन साढे पाँच सौ ?

जी हा इतने ही होग

थोडा दर तक मिस प्रीतम किसी गहरे विचार म खोइ रही। फिर गहन प्रसग को बदलते हुए बाली—

तो अब हमे अमृतसर जाने का प्रोग्राम बनाना चाहिये नाथी।

अब बेचारा नाथी इस बार बार दोहराए जा रहे प्रश्न का इसके सिवा और क्या उत्तर दे—

जैसी आपकी इच्छा बीवी जी।

कितना अजीब सा लग रहा था मिस प्रीतम को जिस समय वह नायी के साथ नजर रलवे स्टेशन पर पहुँची ! घर से जब निकला तो अपने कंध पर नायी के हाथ का स्पर्श पाकर उसकी सुलभ लज्जा बोखला भी उठी थी। नायी जिसका उसके साथ दूर पार का भी रिश्ता नही था उसके साथ चलते चलते कई बार उसने सहमी-सहमी नजरो द्वारा इधर उधर ताका—कोई उसे देख तो नहा रहा है ? पर स्टेशन पर पहुँचने न पहुचते वह आशंकित फिर सभल गई। फिर भी एक प्रकार की झिझक उसके अन्दर म खलबली सी मचाती रहा। फिर जब रल के डिब्बे म सवार हो कर वह नायी के साथ बठ गई तो लोक लाज का एक जाल सा उस पर लिपटा जा रहा था। कदाचित यह सोचते हुए कि यदि कोई जान पहिचान वाला उसे पूछ बठे कि यह अधा तेरा कौन होता है अथवा नायी से ही कोई प्रश्न कर बैठे कि इस लडकी से तेरा क्या सम्बन्ध है तो फिर क्या बनेगा ?

गाडी म दोनो साथ-साथ बठ थे मानो दोनो की जबानें दिनो म जा घसी हों और दिल जबानो म आ टिके थे।

अतन इसा हालत म उन्होंने रेल की यात्रा समाप्त की और उसके बाद बारी आई रिक्शा की। तत्पश्चात रिक्शा स उतर कर व दोनो अध विद्यालय की इमारत म प्रविष्ट हुए। जो हाथी दरवाज से बाहर दुरग्याना मन्दिर के निकट पडती थी।

सारे रास्ते मे मिस प्रीतम नायी को इटरव्यू के बारे म हिदायत

हो कुछ समझाती चला आई था— वहाँ जाकर प्रबन्धकों के साथ खूब
ि ारी से बात चीत करना अपने ब्र न के तजुर्बे का खूब बना चढ़ाकर
बयान करना जो भी बात तुमसे पूछी जाए उठ कर उत्तर देना
कहीं ऐसा न हो कि उन लोगों के सामने जाकर तू भारा ि्ल्ला बन
जाए और इस अवसर को खो बैठ इत्यादि । मानो इन्टरव्यू नायी
का नहीं मिस प्रीतम का होने वाला हो ।

× × ×

विद्यालय का मैनेजर एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था जो स्वभाव
का नम्र और मन का विशाल जान पड़ता था । नायी को साथ लिए
मिस प्रीतम जब उसके सामने पहुँची तो सबसे पहले उसने अपने को
तथा नायी को इन शब्दों द्वारा इन्ट्रोड्यूस कराया—

जी मान ! यह मेरे निकट सम्बन्धी हैं । अब से पहले चाहे
इन्होंने सर्विस नहीं की है पर ब्रेल का इनका एक्सपीरिएंस बहुत
दूर का है । साथ ही ये एक मजे हुए कवि भी हैं । इनके सिवा इनके
मन में अपने जैसे व्यक्तियों के तन मन द्वारा सेवा करने की बहुत अभि
लाषा है ।

जिससे मुझे आशा है कि यदि इन्हें इस पोस्ट पर नियुक्त कर
दिया गया तो आप देखेंगे कि ये इस काम के लिए कितने योग्य साबित
होते हैं । ।

इन्टरव्यू का आरम्भ हुआ । सबसे पहले ब्रेल लिपी की लिखाई
की परीक्षा आरम्भ हुई । निकट बैठी मिस प्रीतम गहरे ध्यान से नायी
का प्रयत्न गति विधि को देख रही थी । क्षण-क्षण उसे यहाँ भासता
विश्वास दिये दे रही थी कि यह भोला महान वहीं बना बनाया
खेल बिगाड़ कर न रख दे । ज्यों ज्यों नायी कार्य करता गया मिस
प्रीतम का यह मानना निर्मूल सिद्ध होता गई ज्यों ज्यों बोर्ड पर रखे
हुए कागज पर नायी का ब्रेल पर चलता गया । उसी क्रम से
उसका उत्साह बढ़ता गया ।

इसके बाद पश्चात का क्रम आरम्भ हुआ। तीन चार शीट नाथी के सामने रख दिए गये और उनकी बिन्दुरूपण पंक्तियों पर नाथी की उंगली ऐसे चल रही थी मानो मछली पानी में तैर रही हो। जिस ओर ऊंगली जाती उसी ओर मिस प्रीतम की आंखें मुड़ी जातीं। बीच-बीच में उसकी नजर मनेजर महोदय के चेहरे पर भी जा पड़ती। कदाचित् यह जानने के लिए कि नाथी के काम का उस पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है। और उसे सन्तोष हुआ मनेजर की प्रशंसा सूचक आंखों की ओर ताक कर परन्तु इसके साथ ही उसके मन में यह जानने की जिज्ञासा बढ़ रही थी कि देखें अब ऊंट किस ओर लौटता है।

एक घंटे से कुछ अधिक समय तक यह क्रम चलता रहा। इसके बाद प्रश्नोत्तर का सिलसिला जारी हुआ और इसमें भी नाथी आशातीत ही सफल सिद्ध हुआ। अब जो काम शेष रह गया वह था मैनेजर की ओर से इंटरव्यू का परिणाम सुनाया जाना। मिस प्रीतम कौतूहल भर मन से इसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

अन्तत परिणाम सुना दिया गया—

मिस्टर नाथ! आपका काम प्रशंसनीय है। परन्तु जैसे ही मिस प्रीतम के कान में यह 'परन्तु' शब्द पड़ा कि उसके अन्तर में एक हलचल-सी उठ खड़ी हुई और समस्त शरीर को कानों के रूप में बद लते हुए उसने आगे के वाक्य सुने—

' परन्तु क्षमा करना इसके रास्ते में रुकावट यह है कि नेत्र हीन उस्तादों को पढ़ाई करान में कई प्रकार की असुविधाएँ रहती हैं। मेरा भाव है कि ब्रेल मास्टर' का यदि कुछ थोड़ा बहुत दिखाई देता हो तब ही वह अपने काम में सफलता पा सकता है अन्यथा ।"

इन वाक्यों को सुनकर नाथी का जो हाल हुआ सो तो हुआ, मिस प्रीतम को मानो काठ ही मार गया। परन्तु मनेजर ने इसके आगे जो कुछ कहा इससे इन दोनों को ही यदि अधिक नहीं तो कुछ-न-कुछ आश्वासन मिला।

" बात यह है मिस्टर नाथ कि हमारे देश में अभी तक ब्रेल मास्टरों की बहुत कमी पाई जाती है। आमतौर से आंखों वाले ब्रेल मास्टरों की और यही वजह है कि जितने भी उम्मीदवारों की ऐपलीकेशन्स आई हैं उनमें एक भी आंखों वाला नहीं है। सो फिलहाल मनेजिंग कमेटी ने यही फैसला किया है कि जब तक कोई आंखों वाला ब्रेल मास्टर नहीं मिल जाता तब तक के लिए किसी नेत्र हीन को ही चुन लिया जाय। इसी निश्चय के अनुसार हम आप को टेम्परेरी तौर पर ही रख सकेंगे और इस बात पर कि जब भी हम कोई आंखों वाला मास्टर मिल गया तब आपको इस काम से अवकाश लेना पड़ेगा।

उत्तर में नाथ कुछ कहता कि इसमें पहिले ही मिस प्रीतम बोल उठी— हमें आपका फैसला मंजूर है मैनेजर साहिब।

बहुत अच्छा मैनेजर महोदय ने पूरी उदारता और सदभावना के भाव से मिस प्रीतम को सम्बोधित किया तो हम परसों से ही इन्हें ड्यूटी पर लगा रहे हैं। वेतन १० रूपये और महगाई भत्ता २ रुपये। क्वाटर बिजली पानी यह सब भी होगा। इसके सिवा इनकी सहायता के लिए एक सेवक भी आश्रम की ओर से दिया जाएगा।

धन्यवाद! मैनेजर साहिब प्रसन्न मुद्रा में मिस प्रीतम बोली— आपके आदेशों का ये तन मन द्वारा पालन करेंगे इसका विश्वास रखिये।

वह दिन और फिर दूसरा दिन भी इन दोनों ने एक मुसाफिरखाने में व्यतीत किया। तीसरे दिन का सूर्य चढ़ते ही इनको रिहायशी विद्यालय द्वारा प्राप्त हुए क्वार्टर में थी, जो एक खुली चार दिवारी के अन्दर तीन बड़े छोटे कमरों से युक्त था। इसके अतिरिक्त फ्लश टट्टी, किचन, पानी का नल, बाथरूम इत्यादि भी साथ कमरों में फर्नीचर, चारपाईयाँ इत्यादि आवश्यक सामान मौजूद था। अब रह गया अपना अपना सामान लाने का प्रश्न अतः मिस प्रीतम ने आव देखा न ताव और पहली ही गाड़ी से जाकर अपना और नायो का सब सामान ले आई।

नायो को अकेला छोड़ कर जाने में अब मिस प्रीतम को कोई आपत्ति नहीं थी। भले ही इस समय नायो चारों ओर से नेत्रहीन व्यक्तियों से घिरा हुआ था फिर भी वह निराश्रय नहीं था चाहे कितने ही दिन उसे मिस प्रीतम के बिना व्यतीत करने पड़ें। यहां पर लंगर इत्यादि का प्रबन्ध तो था ही साथ में नायो को एक सेवक भी दे दिया गया था फिर भी मिस प्रीतम जिस समय उसे क्वार्टर में अकेला छोड़कर चली गई तो उसे असुविधा सी लगने लगी। नया ठिकाना, नये और अनजान लोग, कामधंधा भी नया और दूसरा सब कुछ भी नया। उसे कलास लेनी होगी जो उसके लिए एकदम नई और नई के अतिरिक्त अनोखी सी बात था। न जाने कितने नेत्रहीन छात्र-छात्राओं को उसे ब्रेल का शिक्षा देना होगा और उस स्थिति में जबकि वह स्वयं भी नेत्रहीन है। कैसे वह उन छात्र-छात्राओं की उंगलियां पकड़ कर ब्रेल शीट पर घुमाता हुआ उन्हें सब प्रकार की जानकारी दे पायेगा। बस वह बारी-बारी से सबकी ब्रेल

कला की यह कडवी गोली निगलनी ही पड़ेगी ?

मो नाथी स्वभाव का इतना सीधा नहीं है। वह समय की नब्ज पहचान कर चलने वाला व्यक्ति है। तभी तो एक समय वह अपनी कला कौशल द्वारा लोगों को हंसा हंसा कर लोट पोट कर दिया करता था और अगणित प्रकार की नकली आवाजें गले से निकालना उसका धन्धा ही बन गया था ? इस समय वह सोच रहा था कि जब तक पेट की खातिर इतने पापड़ बेलता रहा है तो क्या यह खेल सिखाने का काम यहां उससे भी कठिन है जो वह नहीं कर पायेगा ? और फिर यहाँ पर तो उसे अपना व्यक्तित्व चमकाने का अवसर मिल रहा है।

तब अनायास ही नाथी को मनेजर द्वारा कहे हुए वह वाक्य याद हो आये जिनका मतलब था कि उसकी नौकरी तब तक के लिए है जब तक कहीं कोई आँखों वाला व्यक्ति नहीं मिल जाता। फिर यह नौकरी ? यह तो उसके लिए चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात जैसी ही बात होगी। इन बातों को सोचते हुए नाथी को निराशा ने घेर लिया। अपने दुर्भाग्य के प्रति उसे क्रोध होने लगा। काश ! मैं अंधा न होता। फिर किसकी मजाल थी जो मुझसे यह नौकरी छीन लेता। तो क्या अपनी बीबी जी की सहायता के लिए यह जो मुझे एक सुअवसर मिला है यह थोड़े ही दिनों में समाप्त हो जायगा ? और तब क्या होगा ?—बस चलेगा ?

यथा समय मिस प्रीतम नाथी को साथ ले कर क्लास रूम में पहुंची। यों आश्रम द्वारा मिला हुआ चन्दराम नामक अधेड उम्र का व्यक्ति उसके साथ था ही। फिर भी मिस प्रीतम को तब तक सन्तोष नहीं हुआ जब तक कि उसने नाथी को क्लास में पहुंचा नहीं दिया।

नाथी को पहुंचाने के बाद क्वाटर में लौटते ही मिस प्रीतम घर के सामान को संभालने में लग गई। और यह सब करते हुए उसके मन में भी नाथी की तरह के ही विचार उठने लगे। परन्तु नाथी की तरह न तो उसमें निराशा का कोई अंश था और न ही अन्य किसी

प्रकार की कोई चिंता का । इसके विपरीत वह पूर्णतया सन्तुष्ट थी प्रोत्साहित थी और आनंदित थी ।

नाथो की यह नियुक्ति मिस प्रीतम को बार बार अपनी नियुक्ति की पुरानी याद दिलवा रही था जब वह प्रीतो से 'मिस प्रीतम बन कर पहले दिन कन्या स्कूल के अहाते में प्रविष्ट हुई थी, जस नाथो आज नाथो से मास्टर लतानाथ बन कर अपना क्लास ले रहा था, वही नाथो जो एक दिन शरणार्थी बन कर उसके घर में आ टिका था, मिस प्रीतम को लगता मानो उसी प्रकार की शरणार्थी बनकर आज वह नाथो के घर में आ टिकी है । तब एक अपरिचित और अंध युवक का अपने घर में आ घुसना उसे कितना खटका था । परन्तु आज एक कुमारी होते हुए वह स्वयम उसी अपरिचित के घर में आ घुसा है । इस सब का प्रतिकम रूप कैसा लग रहा था मिस प्रीतम को आज ?

भाँति भाँति के इन उदगारों के अन्तगत जब जब भी वह तुक राम मिलाई जोड़ी उसकी स्मृति मस्तिष्क पर उभर आती तो पहले की तरह न तो उसके अन्तर में किसी प्रकार की हिंसा या घृणा या कोई मनोविकार पैदा होता और न ही यह तुक उचारने वाली स्त्रियाँ से बदला लेने की अकुलाहट उसे आन्दोलित करती बल्कि यह तुक उसे कुछ भली भली कुछ उत्साह वर्धक-सी लग रही थी, कदाचित इसलिए कि इन औरतों ने जिस अंध का नाम उसके साथ जोड़ते हुए उसे लाँछित किया था आज वह अपने को इसके लिए समर्थ पा रही थी कि एक दिन वह उन सब अध्यापिकाओं को दिखला देगी कि जिस अंध का नाम उन्होंने उसके साथ जोड़ा और उस जोड़ा को सज्जा दी थी उसी के साथ मिलकर वह एक दिन उन्हें बता देगी कि—' अरी ओ मुँह फट औरतो ! यह देखो वह वही अंधा है न जिसे तुम लोगों ने

काम करते हुए इस प्रकार की अगणित ही बातें मिस प्रीतम के मस्तिष्क में घूम रही थीं और घूमती ही चली जा रही थीं ।

वही व मरे प्रति उदासीन तो नहीं हाने लगो हैं। और यह प्राशंका हजारो सापा विच्छग्रो के रूप म बदल कर नायो क मन को डसने लग जाती— यदि यदि यही बात है फिर तो मत कुछ स्वाहा—सारा ससार समाप्त है मेरे लिए

तब वह ग्राप ही ग्रपने इन मनोविकारो के ग्रपवाद म दलीलें प्रमाण गढने लग जाता—

छि ! कितना बवकूफ हू मैं। कसी बेहूदा बात सोचने लग जाता हू । ग्ररे मूढ ! देवी दवताग्रो पर भी कही सन्देह किया जाता है ? और इस प्रकार की दलीलो प्रमाणो का परिणाम कुछ ग्रच्छा ही होता। उसके मन की स्थिति सुधरने सी लग जाती परन्तु कितनी देर क लिए ?

इसके ग्रतिरिक्त दूसरा चिन्ता जो नायो का शोषण किये जा रही थी वह था उसकी नौकरी का प्रश्न। हर समय उसे यही भय बना रहता कि नौकरी ग्रब छूटी—तब छूटी।

और मिस प्रीतम ?

इन दिनो उसके करने के लिए कोई विशष काम नहा था। ग्रत इन दिनो उसका मुख्य धर्म था तो यही कि वह ग्रपना मुह माथा कपडा लत्ता सवारने म व्यस्त रहती या फिर इधर उधर चक्कर काटने म। कभी वह ग्राश्रमवासा स्त्रियो मे जा बठती ? कभी ग्रधा छात्राग्रो के साथ घुल घुलकर बात करन लगती—उनके ग्रध्ययन क बार में कई प्रकार की पूछ-ताछ करती रहती। परतु इसका यह मतलब नही कि वह दिन भर ग्रधविद्यालय की चार दीवारी म ही घिरी रहती हो। प्रतिदिन एक बार या कभी-कभी दो बार भी वह आश्रम स बाहर चली जाती और घण्टा समय बिताकर लौट ग्राती। वह नायो स चोरी छपे य सब करती हो ऐसी बात भी तो नहीं थी। समय-समय पर वह उसमे कह देती—

नायो ! ग्राज मुझ जरा एक कन्या पाठशाला मे जाना है। पता चला है कि वहा छोटी कलास के लिए एक ग्रध्यापिका की जरूरत है

नाथी ! मैं जरा एक डाक्टर के यहाँ हो आऊँ इत्यादि।

एक दिन शाम को जब मिस प्रीतम और नाथी आश्रम के लान में हरी हरी दूब पर मटरगश्ती कर रहे थे तो बातों ही बातों में नाथी ने एक नया प्रसंग चला दिया—

एक बात कहूँ बीबी जी ?

हाँ हाँ कह न जो कुछ कहना चाहता है। अरे तू इतना सकोच क्यों करने लगा है मुझसे ? इधर कई दिनों से देखती हूँ कि न तो तू खुलकर बात करता है मेरे साथ और न ही दो घड़ी के लिए मेरे पास बैठता ही है। क्या ब्रेल मास्टर हो गया, इसी से ?'

नाथी भौंचक्का रह गया जब उसने यह उलटी गंगा बहती पाई, जिस बात की शिकायत वह मिस प्रीतम से करने चला था वही शिकायत मिस प्रीतम कर रही थी।

उत्तर में नाथी को कुछ भी न कहते पाकर मिस प्रीतम जो अब तक उसका हाथ थाम एक घने वृक्ष के तने से लगकर बैठ गई थी बोली—

चुप क्यों हो गया रे ? कह दे न जो कहने लगा था।

मानेगी बाबा जी ?'

अगर मानने की बात होगी तो मानूंगी। नहीं तो नहीं भी मानूंगी।

नाथी कुछ हताश-सा होकर बोला— तब नहीं कहूँगा।

मिस प्रीतम ने उसी अपनी मिठी डाँट के लहज़े में कहा— 'रूठ गया रे मुझसे ? बनाएगा सीधा तरह या करूँ तेरी मरम्मत ?' और मिस प्रीतम के इस मरम्मत शब्द को सुनकर नाथी हँस पड़ा।

तो बताता हूँ सुनिए मेरी सलाह है बीबी जी, कितना अच्छा हो अगर आप ब्रेल का काम सीख लें। इसका लाभ यह होगा कि यह नौकरी हमारे हाथ से नहीं छूटेगी।

थोड़ी देर के लिए मिस प्रीतम मौन साधे रही फिर बोली—

'तेरी तजवीज बुरी नहीं है मुझे अगर ऐसा हो सकता तो सम्भव

था कि तेरा यह नौकरी मैं ही सभाल लेती। पर यह काम क्या इतना सहज है जो मैं झटपट सीख पाऊंगी ? मुझे तो तेरी इस टिक-टिक का कुछ भी पार पार नहीं मिलता है।

ऐसा मुश्किल काम नहीं है बीबी जी मगर आप कोशिश करें।

मुश्किल है चाहे नहीं पर नाथी

क्या मतलब बीबी जी ?

नाथी ने जब पाया कि उत्तर देने में मिस प्रीतम आनाकानी कर रही है तो बोला—

तो जाने दीजिए। मगर आपको यह पसद नहीं है तो मैं मजबूर नहीं करूगा। वह तो मैंने यों ही कह दिया।

सन्ध्या का झुटपुटा अधेरे में बदलता जा रहा था। बातों ही बातों में दोनों ने बहुत देर कर दी थी। अत मिस प्रीतम उठ खड़ी हुई और नाथी को भी उसने हाथ पकड़ कर उठाया फिर दोनों साथ साथ चलते हुए ग्राऊंड का चक्कर काटने लगे और इसी बीच में मिस प्रीतम बोली—

कला कोई भी बुरी नहीं है नाथी विद्वानों का कहना है कि जहाँ धनी पहुचे नहीं वहाँ पहुचे विद्वान और तेरा यह हुनर तो बड़े काम की चीज है।'

तो फिर आप इस सीखने में क्यों हिचकिचाती हैं बीबी जी बता इय तो।

बताने की अभी मेरी इच्छा तो नहीं थी नाथी। पर अगर तू नहीं हा पीछा छोड़ता है तो बताए देती हू। शायद तू सोचता होगा कि केवल कन्या पाठशाला की नौकरी की तलाश में हू। पर केवल इसी के लिए ही तो मुझे हर रोज सड़कें नापनी नहीं पड़ रही हैं नाथी।

तो फिर और किस लिए बीबी जी ?

वास्तविक बात बताने से पहले मिस प्रीतम ने मानो उसकी भूमिका बाँधनी आरम्भ की—

शायद तुझे मालूम नहीं है नाथी कि साइन्सदानों ने नेत्र हीनों

को आँखें प्रदान करने के लिए एक नया ढंग ढूँढ निकाला है। जैसे हमारे देश में ब्लिड बैंक हैं न, जहाँ परोपकारी लोग अपना खून इसलिए जमा करवाते हैं कि कई मरणासन्न रोगियों के प्राण बचाने में काम दे सके। इसी तरह दूसरे कई देशों में 'आई बैंक' यानि आँखों के बैंक होते हैं। जहाँ पर मानवता के प्रति दया भाव दिखाने वाले लोग एक वसीयत नामा लिखकर दे दिया करते हैं कि उनके मरने के बाद उनकी आँखें निकाल कर किसी अंधे को लगा दी जाएँ। इससे हजारों अंधों को आँखें प्राप्त हो चुकी हैं नाथी।'

नाथी इस अनोखी बात का दत्तचित होकर सुन रहा था। उधर मिस प्रीतम ने भूमिका के बाद वास्तविक प्रसंग का आरम्भ किया—

'उस दिन नाथी, तेरे इंटरव्यू के बाद जब मनजर ने इस नौकरी के लिए आँखों का होना आवश्यक बताया तो अनायास ही मुझे बहुत दिन पहले की सुनी हुई यह बात याद हो आई और मैं सोचने लगी कि कितना अच्छा हो अगर नाथी को भी इस ढंग से आँखों की प्राप्ति हो जाए। इतना तो जानती थी कि शायद अभी तक हमारे देश में इस तरह का कोई आई बैंक नहीं है। फिर भी सोचा कि इसके बारे में खोज तो कर देखूं। मुझे किसी अखबार में पढ़ी हुई एक दूसरी बात भी याद है कि एक मशहूर फिल्म अभिनेत्री गीताबली के पिता जो जन्मजात अंधा है विदेश के किसी आई बैंक से आँखें मंगवाकर लगवाई हैं और उसकी नजर बिल्कुल ठीक हो गई है। इस बात ने मुझे और भी प्रोत्साहित किया और मैं इसके बारे में जानकारी प्राप्त करने में लग गई।'

मिस प्रीतम कितनी ही देर तक यह अनोखा वृतान्त उसे सुनाती चली गई। जिसके अन्तर्गत नाथी को बार बार एक ही व्यक्ति का नाम सुनने को मिल रहा था। जब जब भी मिस प्रीतम की जबान पर डाक्टर निरंकारी का नाम आता उसके चेहरे पर श्रद्धा की आभा सी फैल जाती।

अन्त में जब वह सुना चुकी तो नाथी ने जिज्ञासा प्रकट की— यह डाक्टर निरंकारी कौन है बीबी जी ?

तेरा ध्यान किस ओर है ? मिस प्रीतम ने वही मीठी डाँट बताई उसे— बता तो चुकी हूँ कि यह यहाँ के आँखों के अस्पताल में सबसे बडा डाक्टर है। जिसकी दूर-दूर तक धाक जमी हुई है।

माफी चाहता हूँ बीबी जी नाथी कुछ लज्जित होकर बोला— सच ही आपकी बातें सुनते-सुनते मेरा ध्यान और कहीं चला गया था

कहाँ चला गया था रे तेरा ध्यान ?

कहीं भी तो नहीं बीबी जी बसे ही सोचने लग गया कि अगर उन डाक्टर निरंकारी की कृपा से मुझे आँखें मिल जाएँ तो कैसा हो ? ऐसा ही कुछ सोचने लग गया मैं अच्छा आपने बताया न कि कई बार आप उसकी कोठी पर जा चुकी हैं। फिर उन्होंने इसके बारे में क्या कहा आप से ?

उसने बताया कि इस प्रकार के आँखों के आपरेशन अब हमारे देश में भी कहीं-कहीं होने लगे हैं। मैंने तुम्हें बताया न कि यह इलाज बहुत ही महँगा है। जिसे करवा पाना हम लोगों की बिसात नहीं है। तब मैंने डाक्टर निरंकारी से पूछा कि डाक्टर जी अगर किसी गरीब आदमी को आँखें प्राप्त करनी हों तो क्या इसके लिए भी कोई ढंग है ? तब डाक्टर कहने लगे हैं क्यों नहीं। वही आई बैंक इसमें मदद कर सकते हैं। पर उनके पास दूसरे देशों को सप्लाई करने के लिए फालतू आँखें नहीं रहतीं हैं जबकि उनके अपने ही देशों में इसकी माँग बहुत बढ़ गई है। फिर थोड़ी देर सोचने के बाद डाक्टर के दिल में शायद कुछ दया भाव उतर आया और कहने लगा—अच्छा लड़की मैं कोशिश करूँगा कि तेरे सम्बन्धी के लिए कहीं से एक आँख प्राप्त हो सके।

इन उत्साहवर्धक बातों को सुनना था कि नाथी खुशी के मारे पागल सा हो उठा और हकलाते हुए उसने पूछा— तो बीबी जी डाक्टर साहब अब तक इसके बारे में कुछ बता सकेंगे ?

हाँ ! कुछ थोड़ी सी आशा बंधवाई है उन्होंने।

क्या भला सुनूँ तो क्या उन्होंने सच ही आपको कुछ आशा बंधाई ? उन्होंने विलायत वालों को पत्र भेजकर पता लगा था ? जब

एक ही साँस म नाथी कितने ही सारे प्रश्न करता चला गया। मिस प्रीतम ने फिर घुड़की बताई— 'अरे तू तो अभी स पागल हुआ जाता है अगर कही तुझे आँखें मिल जाँय फिर तो जमीन पर तेरे पर ही नही टिकेंगे।

नाथी उसी हड़बड़ाहट म बोला—

क्या करू बीबी जी, यह मामला हो कुछ एसा है। आपकी बातें सुनकर न जाने कसा हो रहा है मेरे दिल म। अच्छा अब बता दीजिये कि क्या सच हो उन डाक्टर जी न आपको कुछ आशा बधवाई है?

अब तक य दोनो अपने क्वाटर म प्रविष्ट हो चुके थ। मिस प्रीतम ने नाथी को एक कुर्सी पर बठाल दिया और दूसरी पर स्वय बठ गई। वह जानती थी कि जब तक इस प्रसग का अन्तिम भाग सुना नही देगी तब तक नाथी उसका पीछा नही छोड़गा। उसने आग बताना आरम्भ किया—

'आशा अगर उन्होंने न बँधवाइ होती तो क्या मरा सिर फिरा था जो रोज रोज कोठी क चक्कर काटा करती। जितनी बार भी म वहाँ गई। मरी आशा अधिक-से अधिक मजबूत होती चली गई और

नाथी एक बारगी अधीर हो उठा। अत बीच म ही टोककर उसन पहले की तरह ही हकलाते और हाँपते हुए पूछा—

'सच बीबी जी? क्या उसने आपको कहा कि नाथी को दिखाई देने लगेगा? सचमुच? कहीं मजाक मे तो नही कह दिया उन्होंने आपको? कही सपने की बातें तो नही कर रही हैं आप?'

हट पागल कहीं का' उसके कन्धे पर हल्की सी चपत जमाते हुए मिस प्रीतम ने उसे टोक दिया— मैं कहती हूँ अभी अगर यह हालत है तो आँखें मिलने पर तो जरूर ही तू होश-हवास खो बठगा।

अच्छा अच्छा नाथी अधिक नहीं तो कुछ पागलपन बघारते हुए बोला— अब दूसरी बातो को छोडिये बीबीजी। हाँ आपने क्या कहा था—मैंने क्या पूछा था—डाक्टर डाक्टर ने फिर क्या

कहा आपको "

चल भाग यहाँ से मिस प्रीतम ने वसी ही एक और चपत जमाते हुए कहा। कमतनत्र म ही मेरा दिमाग चाटने लग गया मूल कहीं का।

अच्छा बीबी जी आपके पाँव पडता हूँ। फिर ऊटपटाँग नही बोलूँगा। हाँ तो बताइये न। और कहते-कहते नाथी कुर्सी पर से उठकर मिस प्रीतम के परो पर लेट गया।

मैं कहती हू तेरा होश ठिकाने है या नही। अरे कमबख्त तुझे इतना तो सोचना चाहिए कि बाहर का दरवाजा खुला है और सामने से लोग गुजर रहे है। कोई अगर तेरे इस पागलपन को देख लगा तो क्या सोचेगा।

नाथी जल्दी से उठकर कुर्सी पर बठ गया। मिस प्रीतम की यह डाट सुनकर वह ग्लानि म डूब गया। लज्जा के मारे उसने गदन झुका ली। उसकी नवर लवर चलती जवान मे मानो ताने पड गये। उधर मिस प्रीतम नाथी के इन उद्गारो का भाँप रही थी और सोचकर कि बेचारे के मन पर चोट लगी है। वह गहरी ममता के रग मे बोल उठी—

एसा क्या हो गया रे ? घबरा मत। किसी ने देखा नही है। और अगर कोई देख ही लेगा तो क्या तूने किसी के घर मे सेंध तो नहीं लगाई है जो डूबा जा रहा है।

बचारा नाथी भी क्या कर विवश था वह। एक तो अन्त से भावुक दूसरे इस ममतामयी युवती का कुछ प्रगाढ स्नेह पाकर वह कुछ अधिक ही खुल सा गया है। तभी तो कभी-कभाक वह इस प्रकार का पागलपन करने पर उतारू हो जाता है। फिर यह इस समय जो बात चल रही थी यह तो किसी का भी पागल बना देने वाली थी।

मिस प्रीतम के लिए जो कुछ बताना अभी शेष था उसे उसने जल्दी-जल्दी स बना डाला। कदाचित इस आशका से कि नाथी कही फिर से वसा ही पागलपन करने न लग जाय।

मब सुन लेने पर अब नायी को विश्वास हो चुका था कि उसकी बीबी जी के पुरुषाथ स तथा डाक्टर निरकारी के अनुग्रह स थोडे ही दिनो बाद उसक माथ म एक आँख होगा। जिसके द्वारा उसका अन्ध कारमय ससार जगमगा उठेगा और इसस भी बडी बात कि तब उसकी बहुत दिनों की वह साध पूरी होगी कि किसा प्रकार एक बार वह अपनी बीबीजी को देख पाय। एक बार फिर मिस प्रीतम के परो पर माथा रखन को उसका मन उत्तजित हो उठा। परन्तु अभी अभी जो इस पागलपन का फल वह भुगत चुका था वह उस भूला नहा था। अत बहुत इच्छा होने पर भी वह इस इच्छा को कायरुप म नहा बदल पाया।

निकट भविष्य म छिपी हुई इतनी बडी खुशी इतनी महान् सफलता! इस अपने छोटे से हृदय म समेट पाना नायी के बस का रोग नहीं था। शायद किसी व्यक्ति म इतनी शक्ति नहीं रह जाती होगी जिसे नायी जसी परिस्थितिया म से गुजराना पड रहा हो। सच तो यह है कि मिस प्रीतम के स्थान पर यदि कोई और व्यक्ति उसे ऐसी बात बताता तो उस झूठी गप्प से अधिक कुछ न समझता। मन ही-मन वह इतना कुछ सोच चला जा रहा था कि आज की रात का बहुत-सा भाग उसने *बिना सोए ही व्यतीत कर दिया।*

फिर तो मुझे लाठी की बिल्कुल जरूरत ही नहीं रहेगी फिर तो मैं जहाँ भी जी चाहेगा दगड-दगड करते भागा चला जाया करूगा। न हाथ से टटोलने की जरूरत न कानों पर अधिक जोर देने की। छोटी से लेकर बडी चीज तक की शक्ल सूरत को— रग रूप को आकार प्रकार को देखकर ही सब कुछ समझ लिया करूगा रग! यह रग क्या होते हैं। कसे पता चल जाता है कि अमुक रग लाल है पीला है नीला है या कौन-सा है लाल किसे कहते हैं पीला कसा होता है नीले का क्या मतलब है। हे अन्तर्यामी! क्या यह सब पहेलियाँ एक बारगी मुझ *पर खुल जाएँगी?*

उसका मन चाहता था कि आज रात भर वह अपनी बीबी जी से इसी विषय पर बातें सुनता चला जाए—इसी विषय पर प्रश्न करता चला जाए।

रात बीती दिन हुआ और दिन चढ़ने के साथ ही सब कुछ

पूववत ही होने लगा। पर नाथी को आज यह सब कसा लग रहा था। मानो सब कुछ अपरिचित सा—सभी चीजें बदली-बदली सी। पहले की तरह ही आज भी उसने जाकर क्लास ली। जिसके अन्तगत उसने अपने विद्यार्थियों को पठन पाठन करवाना आरम्भ किया पर आज यह सभी कुछ उसे ऐसा लग रहा था मानो किसी ने पकड़ कर उसे बेगार पर बठाल दिया हो। उसका मन उकता उठता भला यह भी कोई ढग है पढ़ाने का।

शाम हुई। फिर रात का खाना खाया गया और उसके बाद मिस प्रीतम—जो आज लगभग सारा दिन घर से बाहर रही थी, आकर उसके पास बठ गई और कहा—

नाथी!'

'जी!'

भई तू तो बहुत ही उतावलापन दिखाने लग गया।

नाथी का दिल धड़कने सा लगा, पूछा— क्या कहा बीबी जी—क्या मतलब?'

कुछ नहीं! मैंने कहा आज मैं गई थी कि डाक्टर तिरवारी की कोठी। उसने बताया कि नाथी के लिए एक आँख का प्रबन्ध हो गया है'

हा गया सच ही?' उछल ही तो पड़ा नाथी और मिस प्रीतम आग बताने लगी— कहता था कि जल्दी ही नाथी का आपरेशन कर दिया जायगा। उसने यह भी कहा कि आपरेशन बहुत कड़ी किस्म का होता है जिसमें बहुत ज्यादा परहेज की जरूरत रहती है। तो अब तयार हो जा।'

नाथी के भीतर में तूफान-सा उठने लग गया—कामना पूर्ति का तूफान। इसके साथ ही प्रश्नों का एक बड़ा-सा अम्बार लग गया उसके भीतर में—कब होगा आपरेशन कितने दिन रहना होगा अस्पताल में इत्यादि। परन्तु उधर मिस प्रीतम ने इस प्रसंग को कुछ ऐसे ढग से बदल डाला कि नाथी को अपने अम्बार में से एक भी प्रश्न करने

का अवसर नही मिल पाया—

'नाथी ! एक बात पूछूं ?

पूछिए बीबी जी ।

पर सच-सच बताना—झूठ मत बोलना ।

उत्तर म नाथी कुछ नही बोला । कदाचित उसका यह मौन ही मुंह से बोलकर कह रहा था— क्या बीबी जी इसम भ्रमा भी आपको सन्देह है ? और मिस प्रीतम ने नाथी का यह मूक उत्तर पा लने के बाद आगे बात चलाई—

भला नाथी ! यह तो बता कि भगवान् की कृपा से जब तुझे दिखने लगेगा तो सबसे पहले तू कौन-सी चीज देखना पसन्द करेगा ?

नाथी की जबान शायद अभी तक भी उसका कहना नहा मान रही थी । परन्तु प्रश्न भी तो ऐसा नही था कि उत्तर दिये बिना काम चल सके । अत वह कुछ झिझकते हुए—कुछ सकुचाते हुए बोला—

भला यह भी कोई पूछने की बात है बीबी जी ! जो चीज मेरे लिए ससार मे सबसे बढकर कीमती है उसे छोड क्या किसी और चीज को सबसे पहले देखना चाहूगा ?

और वह कौन चीज है नाथी ?

नाथी को थोडा-सा रोब कसने का साहस हो आया— नाथी चाहता हूँ बीबी जी सब कुछ जानते बूझते हुए भी क्यो आप बेमतलब ही पिसे को पीसे जा रही हैं ?

मिस प्रीतम को इस समय शायद पिसे को पीसने म ही आनन्द मिल रहा था—

मरे मैं तेरी तरह अन्तर्यामी थोड़ ही हू जो बिना बताये समझ लूंगी ।

पर बीबी जी मेरा अन्तर ज्ञान तो तभी से समाप्त हो चुका जब से हम लोग यहाँ पर आ टिके हैं ।

क्या मतलब ?

आप होंठों में कुछ-न-कुछ बाते जाया करती थीं जिसे चोरी छिपे सुनकर मैं अपने अन्तर मान की तुमान्ना आपके सामने किया करता था। पर जब आपने उस आन्त को ही त्याग दिया है फिर अब मेरी अन्तरात्मा कैसे नों कम चल।

आज पहली बार मिस प्रीतम पर यह भेद खुला कि यहाँ आने के बाद उसकी वह जन्म जात आदत छूट गई है और यह जान कर उसे प्रसन्नता भी हुई आश्चर्य भी।

तो तू यह कहना चाहता है कि आँखें मिलने पर सब से पहले तुझे मेरा ही मुँह देखने की लालसा है। यही न ? पर नाथी तुम कैसे बताऊँ कि इस बात का ध्यान आते ही मैं काँप उठती हू।'

काँप उठती हैं आप ? सो क्यू बीबा जी ?

'इसलिये कि मेरे बदसूरत चेहरे पर नजर पड़ते ही तू ।

बीबा जी ! चिल्लाने जैसी आवाज में पुकारते हुए नाथी ने हाथ बढ़ाकर मिस प्रीतम का मुँह ढाँप दिया। जिससे वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाई। आप को भगवान् की सौगन्ध है जो फिर कभी मेरे सामने ऐसी बात की। आपके चरणों की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि अगर आप नहीं मानी तो दीवार से टक्कर मार-मार कर मैं अपना सिर फोड़ लूगा। ।

'आह नाथी ई ई ई

आह नाथी ई ई ई।

एक लम्बी साँस भरते हुए—माना आँसुओं में भिगोकर मिस प्रीतम ने यह शब्द उचारे— तू नहीं जानता और शायद न ही कभी किसी ने तुझे आज तक बताया कि मैं कितनी बदसूरत हूँ। जिसे तू अप्सरा और देवी की तुलना देते अघाता नहीं है उसका रंग रूप !

नाथी से अब नहीं रहा गया। वह अपनी जगह से लाठी के सहारे उठ खड़ा हुआ और इतने वेग से सामने वाली दीवार की ओर बढ़ा कि यदि मिस प्रीतम झपट कर उसे रोक नहीं लेती तो सम्भव था कि वह दीवार के साथ पटक कर अपना सिर फोड़ लेता।

बल पूर्वक उसके शरीर को बाँहों में भरकर मिस प्रीतम कुर्सी

का अवसर नही मिल पाया—

'नाथी ! एक बात पूछूं ?

पूछिए बीबी जी ।'

पर सच सच बताना—झूठ मत बोलना ।

उत्तर मे नाथी कुछ नही बोला । कदाचित उसका यह मौन ही मुंह से बोलकर कह रहा था— क्या बीबा जी इसमे भी आपको सन्देह है ? और मिस प्रीतम ने नाथी का यह मूक उत्तर पा लेने के बाद आगे बात चलाई—

भला नाथी ! यह तो बता कि भगवान् की कृपा से जब तुझे दिखने लगेगा तो सबसे पहले तू कौन सी चीज देखना पसन्द करेगा ?

नाथी की जबान शायद अभी तक भी उसका कहना नही मान रही थी । परन्तु प्रश्न भी तो ऐसा नही था कि उत्तर दिये बिना काम चल सके । अत वह कुछ झिझकते हुए—कुछ सकुचाते हुए बोला—

'भला यह भी कोई पूछने की बात है बीबी जी ! जो चीज मेरे लिए ससार में सबसे बढकर कीमती है उसे छोड क्या किसी और चीज को सबसे पहले देखना चाहूगा ?

'और वह कौन चीज है नाथी ?

नाथी को थोडा-सा रौब कसने का साहस हो आया— माफी चाहता हूँ बीबी जी सब कुछ जानते बूझते हुए भी क्यो आप बेमतलब ही पिसे को पीसे जा रही हैं ?

मिस प्रीतम को इस समय शायद पिसे को पीसने मे ही आनन्द मिल रहा था—

अरे मैं तेरी तरह अन्तर्यामी थोड़े ही हू जो बिना बताये समझ लूगी ।

पर बीबी जी मेरा अन्तर ज्ञान तो तभी से समाप्त हो चुका जब से हम लोग यहां पर आ टिके हैं ।

क्या मतलब ?

भाप होठों म कुछ-न-कुछ बोले जाया करती थी जिसे चोरी छिपे सुनकर म भपने अन्तर गान की नुमाइश भापक सामन किया करता था। पर जब भापने उस भाषा को ही त्याग दिया है फिर भ्रज मेरी अन्तरात्मा चन ता कस चल।'

भ्राज पहली बार मिस प्रीतम पर यह भद खुला कि यहाँ भ्रान क दाद उसकी वह जन्म जात भ्रान्त छूट गई है और यह जान कर उसे प्रसन्नता भी हुई भ्राश्चर्य भी।

तो तू यह कहना चाहता है कि भ्रामें मिलने पर सबसे पहले तुझ मेरा ही मुह देखने की लालसा है। यही न ? पर नाथी तुम इसे बताऊ कि इस बात का ख्याल भ्राते ही मैं काँप उठती हूँ।'

काँप उठती हैं भ्राप ? मा क्यू बाबा जी ?

इसलिये कि मेरे बदसूरत चेहरे पर नजर पड़ते ही तू ।

बीबी जी ! चिल्लाने जसी भ्रावाज म पुकारते हुए नाथी ने हाथ बढ़ाकर मिस प्रीतम का मुह ढाँप दिया। जिससे वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाई। भ्राप को भगवान् की सौगन्ध है जो फिर कभी मेरे सामने एसी बात की। भ्रापके चरणों की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि भगर भ्राप नही मानी तो दीवार से टक्कर मार-मार कर मैं भ्रपना सिर फोड़ दूगा। ।

भ्राह नाथी ई ह ह

भ्राह नाथी इ ई ह'

एक लम्बी साँस भरते हुए—मानो भ्राँसुभ्रों मे भिगोकर मिस प्रीतम ने यह शब्द उचारे— तू नहीं जानता भ्रौर जानता न हीं कभी किसी ने तुझ भ्राज तक बताया कि मैं कितनी कम्बख्त हूँ। किसी तू भ्रप्सरा भ्रौर दुखों की तुलना देख भ्रपनाता नहीं है उसका रंग रूप ।

नाथी से भ्रब नहीं रहा गया। वह भ्रपनी जगह से नाचा के प्रहार जैसा उठा हुभ्रा भ्रौर पलक दम से सामने वाली दीवार की भ्रोर बढ़ा कि यदि मिस प्रीतम झपट कर उसे रोक नहीं लेती तो सम्भव था कि वह दीवार के साथ पटक कर भ्रपना सिर फोड़ लता।

बल पूर्वक उसके शरीर को बाहों में भरकर मिस प्रीतम कुछ

चक ले आई और बढ़ाते हुए बोली—

यह तुम क्या हो गया नाथी। यह क्या करने लगा पागल कहीं का।

तब इस दुखद प्रसग को और आगे न बढ़ाकर मिस प्रीतम ने झटपट बात बदल डाली—

अरे जो कुछ कहने के लिए मैं तेरे पास आई थी वह बात तो मैं भूल ही गई। वह ब्यौरे से बताने लगी कि दो एक दिन में उसे जालधर में एक इन्टरव्यू पर और अपने अध्यापन की योग्यता दिखलाने के लिए जाना होगा—यदि उसे चुन लिया गया—कुछ दिन वहीं पर उसे क्लास भी लेना होगी।

सुनकर नाथी की प्रसन्नता कम हुई और घबराहट अधिक। एक ओर आपरेशन और दूसरी ओर उसकी बीबी जी की अनुपस्थिति।

अरे क्यू मरा जा रहा है रे! नाथी की मनोस्थिति को भाँपते हुए मिस प्रीतम बड़ा बूढ़िया की तरह उसे शिक्षा सी देने लगी— क्या मैं ऐसा ही पागल हूँ जो तुझे किसी खतरे में पड़ने दूंगी सुनकर नाथी की घबराहट भले ही न मिटे हो पर उसे प्रोत्साहन तो मिला ही।

मिस प्रीतम कह जा रही थी।

डाक्टर निरकारी मुझे अपनी बच्चियों जैसी मानते हैं और यह सब काम वे एक तरह से धर्मार्थ ही करेंगे। नहीं तो क्या मेरी तेरी बिसात थी जो झोली भर रुपया खर्च करके आँख प्राप्त कर सकते? सो तू बिल्कुल मत डर नाथी अगर मेरी गैर मौजूदगी में ही तुझे आपरेशन करवाना पड़े।

नाथी की मानसिक हालत चाहे कुछ भी रही हो परन्तु उसने साहस बटोर कर इन शब्दों में मिस प्रीतम को विश्वास दिलाया—

आप बेफिक्र रहिए बीबी जी। जैसा आप चाहती हैं वैसा ही होगा। फिर भी कोशिश करना जो आपरेशन के वक्त—चाहे थोड़ी देर के लिए ही आप आ सकें। जालधर कोई दूर थोड़ ही है।

'ठीक है। अपनी ओर से पूरी कोशिश करूंगी।

और उसके दूसरे ही दिन नाथी को आँखों के अस्पताल में प्रविष्ट करा दिया गया। यह एक दो बेड का कमरा था। जिसमें नाथी की आवश्यकतानुसार सब प्रकार की व्यवस्था कर दी गई थी साथ में एक सेवक भी था। वस्तुतः यह कमरा डा० निरकारी के पसनल आफिस का ही एक भाग था और आड़ बाड़ से अलग थलग।

मिस प्रीतम ने नाथी को रिक्शा में सवार करके उसे उसके कमरे में पहुँचा दिया। नाथी जब अपने बेड के गुदगुदे गद्दे पर बैठ गया तो उसके निकट बैठते हुए मिस प्रीतम ने पूछा— क्या रे अभी तक भी विश्वास हुआ या नहीं।

किस बात का बीबी जी।

वही जो अभी अभी डाक्टर निरकारी कह कर गये हैं कि एक दो सप्ताह में दीखने लगेगा।

मैं क्या बताऊँ बीबी जी ? डाक्टर की बात पर विश्वास हो या न हो पर जब आप को इनका पूरा विश्वास है तो मुझे क्यों नहीं होगा।

अरे सुन ! मैं आज जालंधर जा रहा हूँ। खूब चौकसी से रहना और जो डाक्टर जी कहें उस पर पूरे तौर से अमल करना। कहीं ऐसा न हो कि कोई पागलपन कर बैठे और सारा गुड़ गोबर हो जाए— समझा ?

सो तो समझा बीबी जी नाथी ढाने से स्वर में बोला— पर क्या बाबो जी।'

मूल कहीं का प्यार से उसका कन्धा थपथपाते हुए मिस प्रीतम बोली— अरे मैं अगर हर समय तेरे साथ बधी रहूंगी तो क्या चलेगा। बता तो चुकी कि मुझे इन्टरव्यू के लिए जाना है।

नाथी कुछ परेशानी म बोला—' ठीक है बीबी जी आपको जाना ही चाहिये। पर लौटेंगी कब आप ?

शायद दो चार दिन लग ही जाए। तुझे बताया तो कि वहाँ जाकर मुझे कुछ दिनों के लिए क्लास भी लेनी होगी।

नाथी की परेशानी और बढ़ी— तो तो इसका यह मतलब हुआ कि आपरेशन के वक्त आप मौजूद नहीं रहेंगी।

भई इच्छा तो मेरी यही थी नाथी। पर क्या क्या मामला ही कुछ ऐसा बन गया है। वैसे तुझे फिक्र करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। डाक्टर साहिब हम लोगों पर बड़े मेहरबान हैं। तुझे बता तो चुकी हूं कि वे मुझे अपनी बेटी के तुल्य मानते हैं। अगर यह बात न होती तो क्या ऐसे समय पर मैं तुझे अकेला छोड़ कर जा सकती थी ?

अच्छा बीबी जी नाथी मरे हुए स्वर म बोला— आप जाइए और वहाँ जाकर खूब तसल्ली से अपना काम कीजिएगा। मेरे बारे म आप बिल्कुल चिन्ता न करें।

उसके दोनों कन्धों को दबाते हुए और यह कहते हुए मिस प्रीतम कमरे से बाहर निकल गई— प्रभु मेरे नाथी की सहायता करना।

आज स नायी डाक्टर निरंकारी और उसके प्राईवेट मुलाजिम करनसिंह के हवाले था। करनसिंह परछाई की तरह हर समय नायी के पास मौजूद रहता। किसी को भी उसके निकट नहीं फटकने देता। उधर थोड़ी थोड़ी देर म नायी की आँखों व कोना में टीके लगाये जा रहे थे और यथा समय नर्सों द्वारा उसका टम्प्रेचर लिया जाता था।

आज का दिन नायी ने बहुत ही बेचैनी से बिताया। मिस प्रीतम का अभाव उसे किसी करवट भी चैन नहीं लेने दे रहा था। उसे लगता जैसे मिस प्रीतम के चले जाने पर वह अनाथ और असहाय हो गया है। चाहे उसकी देख रेख के लिए अनेकों व्यक्ति मौजूद थे। विशेषतया करनसिंह तो उसे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देता। ठीक समय पर खाना चाय और नाश्ता इत्यादि उसे पहुचाता। उसका बिस्तर ठीक करता और कई प्रकार की बातें सुना सुना कर उसका दिल बहलाने म लगा रहता था।

मिस प्रीतम जाते समय चाहे अपने लौटने की बात विश्वस्त रूप म नहीं कह गई थी परन्तु नायी के मन म कुछ ऐसा ही विश्वास बना हुआ था कि सूर्य चाहे पूर्व के बजाए पश्चिम उगने लगे उसकी 'बीबी जी हजार काम छोड़कर भी आपरेशन के समय अवश्य ही आ पहुँचेंगी।

कल सुबह नायी का आपरेशन होने वाला था। आपरेशन अर्थात् उसका नया जन्म।

दृष्टि प्राप्त होने की आशा ने नायी के सपनों को सातवें आसमान पर चढ़ा रखा था। चाहे उसे मिस प्रीतम तथा डाक्टर निरंकारी की

ओर से बार बार आश्वासन दिलाया गया था कि अवश्य ही उसे दृष्टि प्राप्त होगी। फिर भी बीच-बीच म अनायास हा उसे एक प्रकार की निराशा सी दबोच लेती और वह सोचने लगता यदि एसा न हुआ तो? और इस नकारात्मक प्रश्न के उठते ही नाथी मरणासन्न सा हो उठता। बहुतेरा वह अपने को समझाता कि इतनी उम्र जो उसने आँखों के बिना ही व्यतीत की है तो अब यदि आपरेशन नहीं भी कामयाब होगा तो इसम कौन सी कयामत आ जायगी। जसा वह पहले था वसा वह फिर भी तो बना रहेगा। परत उसका मन था कि यह सब बातें जानते समझते हुए भी बार बार उसी निराशा के गढ़ म गिरने लग जाता। फिर भी इस गिरती हुई स्थिति मे उसके लिए एक ठाहर तो थी ही जिसके होते हुए दुर्भाग्य यदि उसे आशा की कितनी ही ऊच शिखर पर से धक्का दे दे फिर भी उसकी बीबी जी अवश्य ही उसे बचा लगी।

अन्तत आशा के स्वर्णमय ससार को झलपते और निराशा की परछाईयों को धक्के देते हुए उसने रात व्यतीत कर दी। डाक्टर निरंकारी रात उसे कह गए थे कि सवेरे उसे जरा जल्दी ही जागना होगा। परत यहाँ तो जागने का प्रश्न ही नहीं था जबकि नाथी की समूचि रात ही जागरण मे व्यतीत हुई।

दिन चढे डाक्टर निरंकारी ने नाथी के कमरे मे प्रवेश किया और अपने सहकारियों से घिरे हुए।

कहिये मास्टर जी ठीक ठाक हैं न?

आपकी बड़ी कृपा है डाक्टर साहिब।

दिल को मजबूत रखेंगे न आपरेशन के समय?

इस बात की फिक्र न कीजिए डाक्टर साहिब मेरा दिल काफी मजबूत है।

शाबाश! कुछ आवश्यक चेतावनियाँ देनी हैं आपको जिनकी पाबन्दी आपके लिए निहायत जरूरी होगी।

हुक्म कीजिए डाक्टर साहिब मैं प्राणपन से आपके हुक्म का पालन

करूँगा।

"यह तो आपको बता ही चुका हूँ मास्टर जी, कि यह आपरेशन साधारण आपरेशनों जैसा नहीं बल्कि एक खास किस्म का है। सच पूछिए तो आपका तो आपरेशन ही होना है पर मेरी डाक्टरी का इम्तिहान होगा यह। क्योंकि इस तरह के केस हमारे देश में अभी तक पाँच-सात से अधिक नहीं हुए हैं और मेरी सफलता का दारोमदार आप पर ही है। यह तभी हो सफल हो सकेगा जब आप मुझे पूरा-पूरा सहयोग दें। आपकी छोटी-सी गलती या लापरवाही भी हम दोनों की आशाओं पर पानी फेर सकती है।

तम नी रखिए डाक्टर साहिब, यह अगर आपकी प्रतिष्ठा का प्रश्न है तो इधर मेरा 'जिन्दगी' का। जो कुछ भी करने को आप कहेंगे उसमें रत्तीमात्र भी फर्क नहीं पड़ेगा।'

तो सुनिए आपरेशन के बाद पहला सप्ताह आपके लिए जरा कठिन होगा और आपको बहुत-सी पाबंदियों का पालन करना होगा। पर उसके बाद धीरे-धीरे उन पाबन्दियों में कमी होती चली जाएगी। सबसे बढ़कर आपको यह बात ध्यान में रखनी होगी कि यह सारा सप्ताह भर आपको बोलना तक नहीं है। और न ही सामना छींकना आदि जैसे हाथ पैरों का। हिलने पर पूरा-पूरा काबू रखना होगा। उधर-उधर करवटें बदलना भी आपके लिए मना है। मतलब यह कि सातों दिन तक आपको मुँह बाए पड़ा रहना होगा। टट्टी पेशाब आप को बेड पर ही करवाया जायगा।

थोड़ी देर रुकने के बाद डाक्टर ने फिर कहना आरम्भ किया—

और जो बात इस केस को बिगाड़ने का सबसे बड़ा कारण बन सकती है वह है मरीज का किसी भी प्रकार के भावावेश में आना। जैसे क्रोध, घृणा प्यार या किसी भी प्रकार की उत्तेजना या बसखी। इधर

अतिरिक्त आपरेशन वाली आँख को खुजलाना छोड़ छूना तक भी वर्जित है

इस प्रकार कितनी ही बातें डाक्टर निरखारा उसे बताते चले जा रहे थे और उत्तर में नायी सब बातों में पूरा उतरने का वायदा किये जा रहा था।

ास प्रोफेसर अपन छात्र क सामन ावचर द रहा हो अथवा कोई माफिसर अपन मातहत का चतावनी द रहा हा—

आपको भूलना नहीं चाहिए कि एक वडी कठिन परीक्षा म से गुजर रहे हैं आप याद रखिये यदि आप इसम फेल हो गय तो न इधर के रहग न उधर क । और जो पास हो गय तो समझ लेना कि आपने जिन्दगी जीत ली एक बात और भी ध्यान म रखनी होगा कि इस ससार मे कोई भी चीज मुफ्त नहीं मिला करती है। जितनी बढिया चीज कोई लेना चाहेगा उतने ही उसे अधिक दाम देने पडते हैं। और फिर नकद ही नहा बल्कि पेशगी । जानते हैं कि आप इस समय जिन्दगी की मार्किट म क्या खरीदने जा रह हैं? आंखो की ज्योति। सोचिए न अगर आप को इस बहुमूल्य निधि के दाम क तौर पर दो सप्ताह क लिए कुछ पाबन्दियाँ सहन करनी पड़ें तो क्या यह सौदा आपक लिए महगा होगा? सुन रह ह न मरी बातें?

नायो मुह बाए पडा था। उसक चेहरे का आधे स अधिक भाग पट्टियो से मढा हुआ था। आपरेशन हुए अधिक स य नहा बीता था—यही पाच छ घटे और यह सारा समय नायी न नीद म व्यतीत किया जा उस दवाइयो की सहायता म प्रदान की गई थी ताकि घाव की पीडा का उस अनुभव न हो पाए।

रात भाग रहा था। बाहर डाक्टर निरंकारी की टनाबी रग की कार खडी थी और कार के निकट उसका शोफर बग सिगरेट क कश लगा रहा था। पट्टियों म कसे हुए नायी के सिर म जसे ही तनिक सी

गति पत्र ऱ्इ कि निकट की कुर्सी पर बैठ डाक्टर निरंकारी का लक्चर कुछ डांट के रूप म बदल गया— जी हां ! सिर को बिल्कुल नही हिलाना है। खास तौर से आज रात भर व दिन।

उत्तर म जब नाथी न मात्र होठो की हरकत द्वारा डाक्टर की चेतावनी को स्वीकार किया तो डाक्टर महोदय अपने पुराने नौकर करतार सिंह को कुछक आवश्यक चेतावनिया देते हुए कमरे से बाहर निकल गए।

लेटे हो लेटे नाथी मदद ढंग से अनगार आंखो का काम कानो स लेते हुए मानो देख रहा था—डाक्टर जी अपनी गाडी की ओर बढ जा रहे हैं। अब नौकर खिडकी खोल रहा है अब डाक्टर जी अपनी सीट पर बैठ चुके है गाडी स्टार्ट हो चुकी है गाडी हरकत पकड रही है गाडी जा रही है।

रात भर नाथी के कमरे म नर्सों तथा ड्यूटी वाले डाक्टर का ताना-बाना चलता रहा। एक तो नाथी का घाव भी बडा सीरियस था तिस पर बुखार भी चढ आया जिसस नाथी का कष्ट उत्तरोत्तर बढता जा रहा था। अत कर्मचारियो का दायित्व और भी बढ गया। इस स्थिति म यदि मरीज ने नाम मात्र को भी कोई हरकत की अथवा चिल्लाया तो न जाने इसका क्या परिणाम हो। अत व लोग बुखार को कम करने और घाव की पीडा को घटाने के उपचार रूप म टीके इत्यादि विशेष तौर स प्रयोग कर रहे थ। मरफिया द्वारा लाई हुई नीद कभी तो मरीज को अचेत कर देती और कभी सचेत। सबस बडा कष्ट जो नाथी को परेशान किए दे रहा था जिसका डाक्टरो नर्सो के पास कोई इलाज नही था वह था बार-बार उसके हाथो में से बीडी का निकलना। भले ह वह डाक्टर की चेतावनियो के अनुरूप अपने पर बडा पहरा रखे हुए था पर यही तो कठिनाई थी कि पहरे के होने हुए भी उसका मन बीच-बीच म मनमानी कर रहा था।

रात व्यतीत हुई और दिन चढा। ततपश्चात दूसरी रात दूसरा

दिन फिर तीसरी रात और तीसरा दिन। इसी प्रकार रातों और दिनों का यह चक्कर चलता रहा और इस चक्कर के मध्य नाथी पल पल-क्षण-क्षण गिनते हुए समय को धक्का दिए चला जा रहा था। इस सारे समय में जो बात उस अन्धे बालक को बचाये रही वह था डाक्टर निरकारी द्वारा दिया आश्वासन कि यही सप्ताह ही सबसे मुश्किल है उसके बाद धीरे धीरे उस पर से पाबंदियाँ हटनी लग जायेंगी।

कल जब डाक्टर निरकारी कमरे में आया था तो उसने बातों-ही बातों में नाथी को बताया कि उसकी बाबा जी का पत्र आया है और तब डाक्टर ने उस पत्र में का कुछ भाग नाथी को सुनाया था—

मेरे प्यारे नाथी! घबराना मत प्रभु की कृपा से मैं अपने काम में पूरे तौर से सफल होकर ही लौटूंगा। और इसके लिए तुम्हें अब अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी

और फिर डाक्टर के चले जाने पर नाथी बार-बार उसी वाक्य 'अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी' को मन में रटने और साथ-ही-साथ अनुमानों के फीते द्वारा इन पंक्तियों को नापते चला जा रहा था—

अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी ... यानि बहुत थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ... थोड़ी मतलब यानि एक दिन ... दो दिन चार दिन या कितने दिन? ... ।

प्रतीक्षा समय की गति को बोझिल एवं स्थिल बना दिया करता है। परन्तु वास्तव में समय की गति न कभी बोझिल हुआ करती है न स्थिल। समय तो अपना एक ही निरन्तर गति से चले जाता है और चले ही जाता है।

अन्तत नाथी के साथ अगणित प्रकार की छेड़छाड़ करते हुए और कई तरह से उसे सताते हुए पहला सप्ताह विदा हुआ।

आज सवेरे आते ही डाक्टर निरकारी ने नाथी के पास अकेले में बैठकर कहा— अब तो मास्टर जी गिनती के ही दिन बाकी रह गये हैं आप की कैद के। फिर तो आप को लाठी के बिना ही जहाँ

फिरने की सुविधा मिल जायेगा।

नाथी जिसे अब बातचीत करने का सुविधा प्राप्त हो गई तक कि उठने-उठने और चारपाई पर से उतर कर वैसाखियों की सहायता से थोड़ा घूमने फिरने की भी। डाक्टर निरंकारी के ये वाक्य सुनकर आभार प्रगट करते हुए बोला—

डाक्टर साहिब। मैं सात जन्म तक भी आपका उपकार का बदला नहीं चुका पाऊंगा।

यह सब उस निरंकार की कृपा है मास्टर जी। मुझ तो वही करना है जो निरंकार मुझसे करवाता है। हाँ जो बात खास तौर से मैं आज आपको कहना चाहता हू उसे ध्यान से सुनिये। पहले भी आपको कई बार समझा चुका हू। पर देखता हू कि आप उस पर पूरे तौर से अमल नहीं कर रहे हैं। मेरे कहने का मतलब है कि आप दिन रात का बहुत समय वही अपनी बीबी जी के विचारों में खोकर गुजारा करते हैं। जिसे मैं खूब जानता हू। पर आपको भूलना नहीं चाहिये कि अभी आप पूरेतौर से खतरे से बाहर नहीं हुए और अगर आप इस आदत से बाज नहीं आये तो खतरा है कि आपकीआँखों पर इसका खतरनाक असर पड़े।

नाथी अब बस अपने को उत्तेजित होने से रोक पाये जब कि उसके कानों में वाक्य ही ऐसे पड़ रहे थे जो उसे साधारण होने में रहने नहीं दे रहे थे। तभी डाक्टर निरंकारी बोले—

मेरा मतलब यह नहीं मास्टर जी कि आप उसे बिल्कुल भूल ही जाइये। साधारणतया या प्रतीक्षा करने में तो कोई हर्ज नहीं जान पड़ता है पर जहां तक बन पाये आपको चाहिये कि अपने मन को संयत रखने का यत्न करें। इसी में भलाई है।

इससे पहले कि उत्तर में नाथी कोई और बात करता। विशेषतया बीबी जी के बारे में कि उसे इतना अवसर दिये बिना ही डाक्टर निरंकारी उसे शुभ कामना भेंट करते हुए चले गये।

आखिर हो क्या गया बीबी जी को ? क्या एक दम पत्थर हो गया उनका दिल क्या मेरे किसी अपराध पर नाराज होकर उन्होंने मुह मोड लिया है ? पर उन्होंने तो कभी भी मेरे किसी अपराध पर—किसी भी पागलपन पर कभी ध्यान नहीं दिया था। वे तो मेरी हर अच्छी-बुरी बात को हँस कर टाल दिया करती थीं। वे तो मेरी जरा जरा सी तकलीफ का ध्यान रखती थीं। हर समय उन्हें यही चिन्ता लगी रहती थी कि नाथी का दिल छोटा है। कहीं नाथी के दिल पर चोट न लग जाय। अभी कल तक ही तो उनका यह हाल था कि थोडी देर के लिए यदि मुझे अकेला छोडकर कहीं जाना होता था तो दस बार समझाकर जाया करती थी कि नाथा ! यह करना वह करना—नाथी यह न करना वह न करना। कभी जो घर लौटने में तनिक देर हो जाती तो आते ही पूछने लग जातीं— नाथा ! बहुत भूख तो नहीं लगी है ? नाथी ! मेरे पीछे तू उदास तो नहीं हो गया था ? हे राम जी ! युग जितना समय बीत गया और बीबी जी ने एक बार भी न सोचा कि अभागे नाथी के साथ क्या बीत रही है और ये डाक्टर निरंकारी भी अजीब हैं जो मुझे टरकाने को उधार खाये बैठे हैं। रोज रोज कह देते हैं कि नाथी तेरी बीबी आज आती है—कल आती है। आखिर मामला क्या है ? कहा कुछ नहीं कोई

प्रति दिन ही नाथी अपने मन में बात पक्की कर लेता कि आज जिस समय डाक्टर साहिब आयेंगे तो वह उन्हें खरी-खरी सुनाते हुए पूछेगा कि डाक्टर जी सच बताइये क्या मामला है पर ज्यों ही डाक्टर निरंकारी का आगमन होता कि उसे सब सट्टा-पट्टा भूल जाता—कुछ

भा उस कहो न बा पउ़ा।

ग्वाई का गोनी विह्ना हा बढ़ी हा गागी ।। मगापला माम व निए उस गा रा उतारना ही पन्ता है। परन्तु रङो व भतिरिक्त जा गोनी भाग्रार म भी ग्तनी बरी हो रि रोगा व मुह म न्ने न समा सद उस कस वन गले के नाच उतार पायगा ?

न्न्त समझाया नाथो ने अपने मन को। भग्मन मन लिया उसन अपनी बीबी जी को भूलाने का पर रव नथ। ग्लानवीय मन वा कुछ बनावन ही ऐसा है कि जब यह अपना बात पर इन्न जाता है तो नगाहरों ग्मके माग म कुछ भी रुकावन नही डाल सकती हैं।

नागी का व द समाप्त हाने म केवल दो ही न्नि बाकी रह गय थ का का और परसा का। नाथो की हालत न्न समय बडे प्यास उस पथिन ग्सा थी जिन गपना ऊबड़-खावड माग समप्त वर लन क बान ठण्ड ।।ठ नाल वा लहलहाता हुआ साफ न्निखन लगा हा परन्तु पानी पान मे पहल ही जिसका ग्ना बन हान नगा हा।

ग्ग्न व। ग्नि व्यतीत हुआ और आज व बाद कल वा भी न। तस बात ही गया। उसक बान आ पहुची रात। परन्त यह एक ही रात मानो नाथा के लिए अनपललवा की तरह हजार रात्रि जितनी नम्बी वन गर्न। एक एक क्षण उसक लिए बरस-बरस का ना गन। यह गत प्रायन्नान तक भी नही आतगा एसा हा ना ग्हा था नाथो का। परतु ग्मय ने तो रुकना नहा सीखा है। वन अनादि काल से चाला नना आ रहे है और अनन्तकाल तक चलता हा चला जायगा।

रात बीती न्नि हुआ। आज नाथा का नया नाम हान वाला है। आज नाथा न नाम व साथ न अथा विशषण सना सदा क लिए मनाग हो नान पाता है। आज व बाद कभी भी कोई उ। र आ या गुर दास नन्नर नहा पुकारेगा ग्गौर न्सक साथ ही नाथो को गोन ी ी परमानन्द हो नायगा। यह अपन काम म प्रगनि करना चला नायगा।

प्रति वर्ष उनके वेतन मे तरक्की होने लगेगी और ।

कितना अनूठा स्वप्न और स्वर्णमय संसार। जो अब न कुछ ही घण्टों बाद नाथी के परों के पास आ पहुँचेगा। परन्तु नाथी किस अपना दिल चीर कर दिखलाये ? किसके सामने फरियाद करे कि 'दुनिया वालो ! मुझे और कुछ नही चाहिए। मुझे आँखें भी नहीं चाहिएँ। अन्धा मुझे अन्धा ही रहने दो। पर भगवान के लिए मेरी बीवी को मुझे वापिस ला दो '

लगता था जैसे बीते चुकी इस एक ही रात ने नाथी को बीच में से तोड़कर आधा आध कर दिया हो। इस समय वह अपने कमरे में अकेला था। शायद उसका सरक्षक कर्नलसिंह शौच स्नान के लिए गया हुआ था। नाथी के अंग प्रत्यंग मे टीसें उठ रही थी और उन्ही यह टीसें स्वन ही कुछ ही पंक्तियों का रूप धारण करके उसके कण्ठ द्वारा प्रस्फुटित हो रही थी—

कोई नहीं अपना रे समझ मन।
कोई नही अपना रे समझ मन।
और किसी का कौन ठिकाना
जिसको था अपना कर माना
कोई नही अपना रे समझ मन।
कोई नही अपना रे समझ मन।
कोई नही अपना रे समझ मन।
कोई नही अपना रे ।'

और गाते-गाते या वह लीजिए कि इन पंक्तियों द्वारा कराहते हुए सहसा वह रुक गया जब डाक्टर निरंकारी कमरे मे प्रविष्ट हुए।

'आप तो बड़ा अच्छा गाते हैं मास्टर जी ! मुझे नही मालूम था कि इतना लोचदार गला है आपका।

कुछ झेंप सा आ गई नाथी को जब उसने डा० निरंकारी द्वारा यह प्रशंसा सुनी। उसे याद हो आया जब उसकी भद्दी आवाज के कारण

लोग उस पत्र हमा ढोल के रूपनाथ से पुकारा करते थे। उस आश्चर्य हुआ कि कब गये ही उसका वह पत्र हुआ नाम मुरारा गया बन गया है ? और वह म ? सके बार म यह कदाचित् ग्यारा था।

आज आपकी पट्टी मनाना वाला है। मास्टर जा , कुर्सी पर बैठते हुए न निरकारी ने उन माना बधाई न हुए कहा— निरंकार की कृपा से आज अपने अधर समार को मनने-ग्मरने रूप म पायेंगे।

अच्छी बात है डाक्टर ना नरे हुए स्वर म नाथी का यह उत्तर सुनकर डा निरकारी ने उन पूछा— बात क्या है मास्टर जी ? आपको तो इस समय खुशी क मारे फूले नहीं समाना चाहिए था। पर आपके चेहरे स तो ऐसा नहा दिखाई द रहा है।

मैं खुश हू डाक्टर साहिब। उसी मर स्वर म नाथी न उत्तर दिया।

शायद आप झूठ बोल रहे हैं मास्टर जी। सच बताइये मामला क्या है ?

नाथी को मौन पाकर डा० निरकारी फिर बोले— बड आश्चय की बात है कि प्रभु की इतनी बडी दन आपको प्राप्त होने वाली है और आपम खुशी का चिह्न तक नही दीखता है। आखिर इसका कारण क्या है ?

नाथी जब फिर भी टस स मस नहीं हुआ तो डा निरकारी कुछ छेड छाड करने जैसे सहज म बात— तो क्या मुझ हा बतानी पडगी आपकी यह बीमारी ? बीबा जी क लिए ही उदास ह न आप ?

पहले से भी क्षीण स्वर म नाथी बोला— नहा डाक्टर साहिब ऐसी बात तो नहा है।

रहने भी दो इन सफाइयों को। मुझसे भला छिपी है आपकी हालत ?

नाथी को डा निरकारी का यह व्यग्य अच्छा नहीं लगा बल्कि कुछ अपमानजनक ही मालूम पडा। फिर भी प्रतिरोध म उसकी जबान

नहा सुन पाई। उधर डा० निरकारी ने पहले व्यग्य पर एक दूसरा कसा—

धीरज रखिये व आन ही वाली हैं आपसे मिलने के लिए।

यह दूसरा व्यग्य भी नायी का पहले जसा हा लगा, परन्तु इसका प्रभाव उस पर कुछ उसी तरह का पडा जसे प्रवाह पानी मे डूब रहे व्यक्ति को किसी के हाथ का स्पर्श हुआ हो। वह कुछ तुतलाने-से स्वर म बोल उठा—

आ आ रही हैं बीबी जी? कब डाक्टर साहिब?

डा० निरकारी जो सर्जन होते हुए भी एक अच्छे मनोविज्ञानी थे नायी के अन्दर म उठ रहे बवण्डर को भापते हुए बोले—

जी हाँ! शायद कल तक।

मानो नायी की सफलता पर ओस सी पड गई—

कल तक? पर डाक्टर साहिब आज क्यो नही?

हँस दिये डा० निरकारी— तो एक दिन म क्या अन्तर पड जायगा मास्टर जी? जसा आज वैसा कल।

बहुत बडा अन्तर पड जायेगा डाक्टर साहिब।

यानी?

आप मेरी बात का मजाक नहीं उडाइयेगा डाक्टर जी। बहुत दिनों से मेरे मन म एक अभिलाषा-सी चली आ रही है कि भगवान की कृपा से अगर कभी मुझे आँखें मिल जाए तो सबसे पहले मैं बीबी जी का दर्शन कर पाऊगा?

वार्तालाप का क्रम यहीं पर टूट गया तब हाथो म मडीकल ट्रे लिए वहा एक नर्स आ पहुची—शायद आपरेशन स पहले कोई आवश्यक इजक्शन दने के लिए।

४८

इससे थोड़ी दर बाद नायी अपन वा आपरेशन थियेटर म था रहा था। डाक्टर निरकारी के सामन नातें फलाय पडा था वह और उसका जोर जोर स धडक रहा था। परन्तु तभी उस अन्तिम इन्जक्शन दिया गया कि तुरन्त वह निश्चल मन्न-सा हो गया और फिर उसे कुछ भी ज्ञात नहीं हो पाया कि किस प्रकार क्या हुआ।

उगलियो क कवच स्पर्श द्वारा और बडी ही सफाई स डाक्टर निरकारी न बधी हुई पट्टी को खोलकर तस वा ट्रे म रख दिया। फिर रूई के फाह उतार उतार कर उसी ट्रे मे रखत चल गए। फिर लोशन द्वारा गीला करके आँख के उपर का लिन्ट उतारा और नाशन द्वारा भिगोकर रूई के तू ब स आँख का ऊपरी भाग साफ करन लग।

इसके बाद बारी मार्क टाँके काटने की। यह काम साधारण जसा नहीं बल्कि बहुत ही सूक्ष्म और महत्वपूर्ण था। मानो दर्जी को कपडे म का कटा पुराना पीस निकाल कर उसके स्थान पर नया पेवन्द लगाना पड रहा हो।

डाक्टर निरकारी क दोना हाथ एक ही समय अपनी अपनी क्रिया में रत थे। एक हाथ म सूक्ष्म सी कची और दूसरे म उससे भी सूक्ष्म प्रकार की चिमटी। जस जसे टाँके कट रह थ उसी क्रम स चिमटी उन कटे हुए तारो को अपना बारीक चोच द्वारा पकड पकड कर ट्रे म रखे जा रही थी। काम जितना लम्बा था उतना ही असुविधा जनक।

अनन्त चालीस पचालीस मिनट क निरन्तर परिश्रम स डाक्टर

निरक्षा ने काम को मान लिया और इस सारे समय में नाथी अवि चलित और निस्पन्द पड़ा रहा। जो लिये हुए इजलास था हा परि णाम था।

तब नाथी को सुनाइ दिया— आँख खोलिए मास्टर जी!

नाथी के याद से यत्न से आँख खुल गइ।

इधर ताकिये मेरी ओर।

नाथी आवाज के लक्ष्य पर ताका।

आप वो भाषिये।

स्तन भरती।

अपना हाथ उठाते हुए डा० निरकारी ने पूछा—

आपको क्या दिखाई दे रहा है।"

जी हाँ

क्या बताइये तो।

अब नाथी बताये तो क्या उसे जो कुछ दिखाई दे रहा था उसे क्या सजा दी जाय क्या कहा जाता है? नाथी की बला जाने। उसे क्या मालूम कि मानवीय हाथ का आकार प्रकार कैसा होता है। उस असमंजस्य में पाकर डाक्टर निरकारी स्पष्टीकरण करने लगे—' यह मेरा हाथ है मास्टरजी और ये देखिये ये हैं इसकी अंगुलियाँ। अब समझे?

जी हाँ अब तो समझ गया डाक्टर साहिब।

तो बताइये कितनी अंगुलियाँ है?

जी एक।

और अब?

दो।

और अब?

तीन।

'ठीक है और अब बताइये।

'शाबाश! और अब कितनी हैं!

अब पाँच हैं जी

आँख की पुतली को जरा इधर उधर फिराइये तो। नाथी वैसा ही करने लगा।

बताइये तो अब क्या दिखाई दे रहा है आपको ?'

जी जी डाक्टर साहिब अब सब मुझे दिखाई दे रहा है और इसके आगे नाथी कुछ नही कह पाया।

डाक्टर निरकारी उसके सकट को भाँप रहे थे। एक जन्मजात अंधे को क्या मालूम कि दीवारें कैसी और दूसरी सब चीजें कैसी तब वे खुशी में भरकर पुकारे—

बधाई हो मास्टर जी ! आप को नजर मिल गई !

बहुत बहुत धन्यवाद डाक्टर साहिब

आपरेशन हाल में प्रविष्ट होने से लेकर वहाँ से लौटने तक का सारा समय दवाइयो के असर से नाथी ने नीद तथा बेहोशी की हालत मे व्यतीत किया था। जन्म जन्मान्तरो से—युग युगान्तरो से नाथी की आत्मा जिस निधि को पाने की अभिलाषा से भटकती चली आ रही थी उसी निधी को पाकर नाथी रोया रोया अपने प्रभु तथा डाक्टर निरकारी के आभार तले दब गया। जसे जसे उसकी दृष्टि सजीव होती चली गई उसी क्रम से देखने वाली चीजो के बारे मे उसके ज्ञान मे वृद्धि होने लगी और शन शन उसे समझ आने लगी कि यह दीवार है यह दरवाजा है और यह पखा है।

यह जो कुछ नाथी को आज प्राप्त हुआ भले ही उसके लिए हजार वरदानो से बढ़कर था। परन्तु बेचारा नाथी किस तरह अपने को प्रसन्न कर पाता जबकि इस प्राप्ति के साथ-साथ एक अप्राप्ति की— अभाव की सी परछाई उसके साथ साथ घिसटती चली आ रही थी। उसके अतर से पुकार उठ रही थी— हे प्रभु ! अगर मैं पहली नजर अपनी बीबी जी पर नही डाल पाया तो न सही। पर अब तो उसे ले आओ मेरे पास।

यही मनोवेदना भीतर ही भीतर नाथी को कचोटे जा रही थी और उसके रक्त का शोषण किए जा रही थी।

कहिए मास्टर जी क्या हाल है ?

नाथी इस समय अपनी नया प्राप्त हुई दृष्टि द्वारा इधर-उधर ताक रहा था।

डाक्टर निरकारी को देखते ही वह बिना लाठी की सहायता के आगे बढ़कर बोला— आपकी बड़ी कृपा हुई डाक्टर साहब आपने मुझे नया जीवन दिया।

उसे कंधे से पकड़कर चारपाई पर बैठाते हुए डाक्टर निरकारी बोले— मास्टर जी इस तकल्लुफ की जरूरत नहीं है और यह जो आप 'नया जीवन' की बात कहते हैं यह कला तो उस भगवान् के हाथ में है। बताइये अब आपको कैसा दिखाई देता है ?

बिल्कुल ठीक डाक्टर साहिब। या थोड़ी थोड़ी अकुलाहट-सी जान पड़ती है ताकने पर।

वह तो कुछ दिन तक रहेगी ही इसकी चिन्ता न कीजिए। और मैंने कहा अब क्या सलाह है आपकी ?

कैसी सलाह डाक्टर साहिब ?

मेरा मतलब है कि अस्पताल वालों ने उम्र भर के लिए तो आपको रोटियां खिलाने का ठेका नहीं ले रखा है और उधर आश्रम में जो विद्यार्थियों की पढ़ाई का हर्ज हो रहा है सो अलग से।

तो जैसे आपका हुक्म हो डाक्टर साहिब।

तो फिर उठिए चलें कहते हुए डाक्टर निरकारी ने अपने कोट की जेब में से हरे शीशे वाला चश्मा निकाल कर उसकी आंखों पर चढ़ा दिया।

कहाँ जाना होगा डाक्टर साहिब ?

जहाँ जाने के लिए आप उतावले हो रहे हैं वहीं।

इस पहेली को समझ नहीं आई नाथी को और न ही वह इसके

बारे मे कुछ पूछने का साहस कर पाया ।

जब डाक्टर न अपना यानव का फिर स दाहराया तो नाथो को इधर उधर कुछ टटोलते पाकर डाक्टर निरकारी ने ठहाका लगाया—

क्या ढूँढ रहे है नाथी ? अरे भाई आदमी अब तो उस बेचारी का पीछा छोड दो ।

नाथी अपनी इस भूल पर लज्जित हो गया । सच ही वह इस समय लाठी ढूढ रहा था ।

इसस थोडी देर बाद जब नाथी न अपने को डाक्टर निरकारी की कार म बठ पाया तो उस अजीब सा लग रहा था ।

उसके जीवन म यह पहला ही अवसर था ।

डाक्टर निरकारी गाडी को स्वय चला रहे थे । उनके हाथ व्हील पर थ पर ब्रेक पर नजर सडक पर और भकाव था बगल म बठ हुए नाथी की ओर ।

गाडी अस्पताल के मेन गट स निकलकर जब मडीकल कालेज की ओर मुडी तो डाक्टर ने ध्यान पूवक नाथी की ओर ताका । जो इस समय कुछ उत्तेजित-सा कुछ घबराया-सा दिखाई द रहा था ।

क्या बात है मास्टर जी ?

जी कुछ नहीं डाक्टर साहब ।

कुछ उड उड स जान पडते हैं आप ।

नही तो डाक्टर साहब । मैं ठीक हू ।

और मैंने सच कहा कि आप गलत होगे । मेरा मतलब है कि शायद आप यह जानने के लिए बेकरार हैं कि गाडी तुम्हें कहाँ लिए जा रही है । यही सोच रहे हैं न ? सच-सच बताइये ।

नाथी से कुछ भी उत्तर देते नहा बना और उसका यह मौन मानो डाक्टर की बात को पुष्ट कर रहा था ।

सम्भवत इस समय डाक्टर निरकारी उसे छेडने के मूड मे थे—

' एक बात बताऊ ? अगर मेरा अदाजा गलत नहीं तो आप मन ही

मन मुझे कोस रहे है शायद और इसलिए कि मैं मिस प्रीतम के बारे में बहुत दिनों से आपको धोके मे रख रहा हूँ।'

नाथी के चहरे पर कुछ कड़वी-सी कुछ उदास-सी मुस्कान फल गई। जो डाक्टर की बात को पुष्ट कर रही थी।

"बोलते क्यो नहीं मास्टर जी ?" डाक्टर निरकारी की छेड़ छाड़ अब प्रकट रुप धारण कर रही थी—

'सर न बताइये अलबत्ता इस बात का आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने जो आपके साथ वायदा किया हुआ है वह झूठा नही होगा यानि कि आपकी बीवी जी से अवश्य ही आज आपकी मुलाकात होगा।'

"क्या कहा डाक्टर जी ?" मानो सुनकर भी नाथी ने नहीं सुना हो 'तो तो इसका मतलब है कि आप मुझे बीवी जी के पास लिए जा रहे हैं ? भगवान के लिए डाक्टर साहब अब और पहेलियाँ मत डालिये। मेरा दिल बहुत छोटा है। और कहते-कहते नाथी ने एक दीर्घ निश्वास भरा।

डाक्टर निरकारी का मूड विनोदी' से बदलकर एकदम गम्भीर हो गया। कदाचित नाथी के मनोभावो को बाँचते हुए।

गाडी मडीकल कालेज के निकट पहुच चुकी थी। डाक्टर निरकारी बोले—

'छोटे दिल के नहीं मास्टर जा बल्कि मैं तो कहूँगा कि बहुत मजबूत दिल पाया है आपने। जिन परिस्थितियो म आपने यह समय गुजारा है और जिस दृढता से यह किसी फौलादी दिल वाले आदमी का ही काम था। मुझसे छिपा नहीं है कि अपनी बीवी जी की अनुपस्थिति मे आपको अपने साथ कितना संघर्ष करना पड़ा। आपने उसे जी भर कर कोसा और साथ ही शायद मुझ भी। पर आपको क्या मालूम कि उस बेचारी के साथ क्या बीती। अब तक तो मैंने यह भेद आप से छिपाये रखा, पर अब नहा छिपाऊँगा।"

"क्या मतलब मास्टर साहिब ?" कलेजे पर चोट खाकर नाथी

पुकारा—क्या क्या बीबी जी कुछ बीमार हैं ?

घबराइये मत डाक्टर निरकारी ने उसका हाथ अपने कंधे पर रखते हुए कहा—

बीमार तो बहुत अधिक हो गई थीं पर भगवान की कृपा से अब अच्छी हैं। फिर भी इतनी नहीं जो आपको लेने के लिए अस्पताल तक चली आतीं।

पर पर हकलाहट में नाथ बोला— अभी क्या तक साफ हो गई डाक्टर जी उन्हें ? मैं सोचा करता था भगवान न करें जरूर ही कुछ-न-कुछ हुआ है। नहीं तो भला मेरे बीबी जी और इतनी निष्ठुरता क्या और इसके आगे नाथ कुछ कहता कि उसका गला रुंध गया।

डाक्टर निरकारी ने फिर से उसका कंधा थपथपाते हुए कहा—

एक बात का ध्यान रखिएगा मास्टर जी कि उनसे मिलते समय बहुत भावुकता नहीं हो जाएगा। आप जानते हैं कि बीमारियाँ बस ही जजबाती होती हैं। एक तो बीमारी और उससे भी बड़ी बात कि आप से अलग रहने के कारण उस बेचारी का शरीर और भी जर्जर हो गया है। या उसकी हालत चाहे खतरे से बाहर है फिर भी इस बात की आशंका बनी हुई है कि आप दोनों का मिलन कहीं कोई गड़बड़ न पैदा कर दे।

गाड़ी निरकारी निवास के मेन गेट में प्रविष्ट हो चुकी थी। ब्रेक लगाते हुए निरकारी बोले— हम लोग आ पहुँचे मास्टर जी। उतरिये ?

अपनी समस्त शक्ति द्वारा अपने को सन्तुलित रखने का प्रयास करते हुए नाथ ने आदेश का पालन किया।

सीट पर से उठते समय एक बार फिर नाथी ने अपनी लाठी को टटोलने के लिए इधर उधर हाथ सरकाये । परन्तु तुरन्त ही उसे याद आ गया कि इसी बात पर थोड़ी देर पहले डाक्टर निरकारी ने उसे टोका था । अब आगे-आगे डाक्टर निरकारी था और पीछे-पीछे नाथी । सहसा नाथी ने डाक्टर का कन्धा थाम लिया । परन्तु उसकी यह क्रिया अपनी सदा आदत की प्रतीक नहीं थी बल्कि गिर पड़ने के भय से उसने ऐसा क्या किया । उसकी टाँगें इस समय शराबी की तरह लड़खड़ा रही थीं । होश में होते हुए भी उसे बेहोश होने का भ्रम-सा हो रहा था हर चीज़ के चश्मे में से परा तल का फ़र्श चक्की के पाट समान घूमता सा जान पड़ रहा था । कहा नहीं जा सकता कि इसका कारण किसी महान प्राप्ति की सम्भावना थी या किसी सम्भवित घटना का भय ।

"अरे ! डाक्टर निरकारी ने उसे टोका— यह मेरा कन्धा क्या पकड़ लिया आपने । क्या पुरानी आदत को छोड़ना नहीं चाहते हैं ?

सुनते ही नाथी ने कन्धा छोड़ दिया और अपने शरीर का सन्तुलन रखने का भरसक प्रयत्न करते हुए चलने लगा । परन्तु डाक्टर निरकारी ने उसकी स्थिति को भाँपते हुए स्वयं ही उसका हाथ पकड़ लिया और और चलने की गति मंद कर दी ।

"ठहरिए मास्टर जी !" डाक्टर निरकारी ने रुकते हुए कहा— अब अगर आप चाहें तो इस हरी ऐनक को उतार सकते हैं । क्योंकि कमरे में हरे ही रंग की लाइट है ।

नाथी ने चश्मा उतार कर कमीज़ की जेब में डाल लिया ।

कमरा न बहुत बड़ा था न बहुत छोटा। यहाँ पर मौजूद थे—एक 'मरीज' के रूप में और दूसरा उपचारक के रूप में। मरीज थी युवती और उपचारक था युवक। एक पलंग पर दूसरा कुर्सी पर।

नाथी की इस समय यह हालत थी कि यदि डाक्टर निरकारी ने उसका हाथ न पकड़ रखा होता तो सम्भव था कि वह वायुवेग से भागे बढ़कर मरीज से लिपट जाता। उस दृश्य कुछ भी सन्देह शेष नहीं था कि यही है उसकी प्राणाधार बीबी जी। और जिस बात ने नाथी के आश्चर्य को चरम सीमा तक पहुँचा दिया वह था मिस प्रीतम की बीमारी के सम्बन्ध में उसे प्राप्त हुई जानकारी।

मिस प्रीतम का तकिए पर टिका हुआ सिर उसी प्रकार की पट्टियों में मढ़ा हुआ था उसी नाथी कल तक बाँधता था।

सामने खड़ा-खड़ा नाथी मानो वायु बनकर उड़ गया हो वहाँ से। उसे अपने अस्तित्व तक का भास नहीं रहा। जैसे उसकी हालत कुछ सुधरी अर्थात् वायु बना हुआ नाथी फिर से ठोस रूप में बदला तो उसने अपने को मिस प्रीतम के पलंग की पाटी पर बैठ पाया। मिस प्रीतम का सिर उसकी गोद में था और क्षीण स्वर में वह कह रही थी—

ओह मेरे नाथ! आपको ... आपको दिखाई देने लगा? हे भगवान्! तुझे लाख लाख धन्यवाद! तूने मेरे नाथ को ज्योति प्रदान की। कितने कमजोर हो गए हैं आप! ठीक से दिखाई देता है न?

तभी निकट बैठे डाक्टर निरकारी ने मिस प्रीतम को टोक दिया—बस बेटा ज्यादा नहीं बोलना। कहीं ऐसा न हो कि ज्यादा बोलने के कारण टाँके टूट जाएँ।

नाथी अवाक् एक जड़वत् खड़ा था—मन मुग्ध-सा। कभी मिस प्रीतम की ओर तो कभी डाक्टर निरकारी की ओर ताके जा रहा था। और डाक्टर का वह सहकारी युवक एक ओर खड़ा भगवान की यह अचरज लीला देखकर आश्चर्यचकित हो रहा था।

मास्टर जी! डाक्टर निरकारी ने उसे आदेश दिया—एक बार

फिर आपको खबरदार किये देता हूँ कि आपको भी आवेश म बिल्कुल नहीं आना होगा। कुछ ही दिनों की बात है। फिर मनमाने ढग से देखा कीजिएगा 'बीवी' को।'

नायी ने आदेश का पालन किया। पर डाक्टर निरकारी का यह व्यग 'अपनी बीबी' उस फूटी आँखों नहीं सुहाया। मानो डाक्टर ने उसे कोई बडी सी गाली दे दी हो।

उधर डाक्टर निरकारी को शायद इतने पर भी सन्तोष नही हुआ और बोले—

तसल्ली रखिये जनाब! यह आपकी 'मम साहिबा अब कभी भी आपसे जुदा नहीं होंगी।

नायी मन-ही मन कुछ खा रहा था और डाक्टर को काप रहा था कि इतना सयाना आदमी होकर यह कैसी बेतुकी बातें करने लग गया है।

डाक्टर निरकारी का वह सहकारी कमरे से बाहर जा चुका था—शायद अपने आफीसर का संकेत पाकर।

मिस प्रीतम डाक्टर निरकारी की इन बातो से अनभिज्ञ रह रही हो नायी को ऐसा नहीं दिखाई देता था। उसका आधा चेहरा जो पट्टियों की कैद से बाहर था, उस पर कोई विलक्षण प्रकार का उन्माद-सा—आल्हाद सा झलक रहा था।

मामला क्या है? अभी तक नायी की समझ म कुछ नही आया। यदि कुछ समझ सका तो इतना ही कि यह जो उसे आख की प्राप्ति हुई है उसे विलायत के किसी आई बैंक द्वारा नही, बल्कि उस प्रदान करने वाली उसकी जीवन दात्री 'बीबी जी' हैं। सहसा नायी म कुछ पागल पन-सा उठ खड़ा हुआ और डाक्टर निरकारी द्वारा लगाये हुए प्रतिबन्ध को तोड़ते हुए वह मिस प्रीतम से लिपट गया यह चिल्लाते हुए—

बीबी जी ईं ईं ईं!" यह आपने क्या कर डाला बीबी जी? हे मेरे भगवान्! आपने अपनी आँख निकलवा कर और इसके पलेह

कि उसका पागलपन और आगे बढ़ता डाक्टर निरकारी ने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया और बलपूर्वक उसे कुर्सी पर बिठाते हुए बोले—

'ऊ हू ! होश म आइए मास्टर जी । आप नहीं जानते कि आप क्या कर रहे है । लड़की का केस कही अधिक नाजिमस है । मै कहे देता हू कि अगर कोई ऐसी-वैसी हरकत कर बैठे तो जिन्दगी भर पछताना पड़ेगा आपको ।

नाथी सभल गया । अपने अधिक ओछेपन पर ग्लानि-सी हो आई ।

उधर मिस प्रीतम बार बार पुकारे चली जा रही थी—

हे दाता ! तूने मेरी पुकार सुन ली आज तूने मेरी जन्म-जन्मातर की साध पूरी कर आज मैं कितनी सौभाग्यवती कितनी ।

बेटी ! फिर वही गलती करने लग गई ! डाक्टर निरंकारी के डाटने पर वह रुक गई । पर उसके हाथो की गति नही रुकी । पलग के निकट कुर्सी पर बैठ नाथी के सिर पर मुह पर कन्धो पर और पीठ पर उसके हाथ सरक रहे थे । उसके हृदय मे भरी हुई अपार खुशी अश्रु धारा ए बन-बनकर उसकी आंखो से टपक रही थी । उसकी नगी आंख की पुतली इस समय तरलता के भार कुछ ताक जाने मे असमर्थ थी और वह बार बार उसे पोछकर नाथी की ओर ताकने का प्रयास कर रही थी ।

तभी डाक्टर निरकारी ने आवाज लगाई—

हरबसींसह ! इजक्शन । और तत्क्षण वही युवक टीके का सामान हाथ मे लिए भीतर आ पहुचा ।

मिस प्रीतम को टीका लगते देखकर नाथी घबरा उठा ।

घबराइये नही मास्टर जी केस को खराब करने मे चाहे आपने कुछ भी उठा नहीं रखा है । पर निरंकार की कृपा से सकट टल गया । मै आपको कितना समझाया कि इसके सामने आकर जल्दबाजी मत होना पर आपने नहीं मानी बात । फिर से ऐसी गलती नहीं कीजिएगा । जानते हैं इस लड़की का क्या रिश्ता कायम होने वाला है आपसे ? पहले

यदि यह आपकी बीबी जो थी तो थोड़े दिनों तक यह आपकी दुल्हन बनने वाली है समझे ?'

नाथा यह क्या सुन रहा था ? इतनी विलक्षण बात ! मानो कोई उसे कह रहा हो कि आकाश में चमकने वाला चाँद थोड़ी देर में उसकी गोद में आ गिरेगा।

डाक्टर निरंकारी अपनी बात शायद अभी पूरी नहीं कर पाये थे। बोले—

'शायद आप सोचते होंगे मास्टर जी कि मैंने क्यों इतने दिनों आपको भुलावे में रखा—क्यों मैं नये-से-नया झूठ गढ़ कर आपको चकमा देता रहा। और इस बात का कारण भी यह लड़की खुद ही आपको बतायेगी कि क्यों मैंने इतने दिन आपके सिर पर नंगी तलवार लटकाये रखी कि किसी तरह भी यह भेद आप पर खुल न जाये। भेद खुल जाने का परिणाम क्या होता शायद आप इसे नहीं जानते हैं। लड़की ने ही मुझे बताया था कि अगर नाथा को पता चल गया कि उसे [illegible] है, तो वह आवेश में आकर न जाने क्या उपद्रव कर बैठेगा। इसी से आपके साथ मुझे इतने छल-कपट करने पड़े। असल में मास्टर जी इस लड़की की कीमत कोई मुझसे पूछ कर देखे। करोड़ों में ही कोई व्यक्ति होगा जो किसी के लिए इतना बड़ा त्याग त्याग नहीं बल्कि बलिदान कर सके।

अब कहीं जाकर नाथा की समझ में आया कि डाक्टर निरंकारी के उस व्यंग्य 'बीबी' का मतलब क्या था। दूसरी बात जो उसकी समझ में अब तक नहीं आ पाई थी यह कि किस आत्म ने उसके प्रति सम्बोधन में 'नाथा' के स्थान पर 'नाथ' क्यों कहा।

डाक्टर निरंकारी फिर बोले—

तो अब मैं आपको और अधिक भ्रम में नहीं रखना चाहता। मैं सोचता हूँ कि जो लड़की आपकी खातिर यहाँ तक कर गुज़री, यकीनन प्रकृति ने वह केवल आप ही के लिए सिरजी है और जो रहना चाहिए

यदि यह आपकी बीबी जी थी तो थोड़े दिनों तक यह आपकी दुल्हन बनने वाली है समझ ?

नाथी मैं क्या सुन रहा था ? इतनी विलक्षण बात ! मानो कोई उसे कह रहा हो कि आकाश में चमकता वाला चाँद थोड़ा देर में उसकी गोद में आ टिकेगा।

डाक्टर निरकारी अपनी बात शायद अभी पूरी नहीं कर पाये थे। बोले—

"शायद आप सोचते होंगे मास्टर जी कि मैंने क्यों इतने दिनों आपको भुलावे में रखा—क्या मैं नये से नया भूठ गढ़ कर आपको चकमा देता रहा। और इस बात का कारण भी यह लड़की खुद ही आपको बतायेगी कि क्या मैंने इतने दिन आपके सिर पर नंगी तलवार लटकाये रखी कि किसी तरह भी यह भेद आप पर खुल न जाये। भेद खुल जाने का परिणाम क्या होता शायद आप इस नहीं जानते हैं। लड़की ने ही मुझे बताया था कि अगर नाथी को पता चल गया कि उसे और किसने प्रदान की है तो वह आवेश में आकर न जाने क्या उपद्रव कर बैठता। इसी से आपके साथ मुझे इतने छल-कपट करने पड़े। असल में मास्टर जी इस लड़की की कीमत कोई मुझसे पूछ कर देखे। करोड़ों में ही कोई व्यक्ति होगा जो किसी के लिए इतना बड़ा त्याग त्याग नहीं बल्कि बलिदान कर सके।

अब कहीं जाकर नाथी की समझ में आया कि डाक्टर निरकारी के उस व्यंग बीबी का मतलब क्या था। दूसरी बात जो उसकी समझ में अब तक नहीं आ पाई थी यह कि मिस प्रीतम ने उसके प्रति सम्बोधन में नाथी के स्थान पर नाथ क्यों कहा।

डाक्टर निरकारी फिर बोले—

तो अब मैं आपको और अधिक भ्रम में नहीं रखना चाहता। मैं सोचता हूं कि जो लड़की आपकी खातिर यहां तक कर गुजरी परिणाम प्रकृति ने वह केवल आप ही के लिए रिजर्व रखी और या कहना चाहिए

कि इसका पागलपन और आगे बढ़ता, डाक्टर निरंकारी ने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया और बरबस उन कुर्सी पर बिठाते हुए बोले—

ऊँ हूँ ! होश में आइए मास्टर जी। आप नहीं जानते कि आप क्या कर रहे हैं। लड़की का केस बड़ी अधिक सीरियस है। मैं कहे देता हूँ कि अगर कोई ऐसी-वैसी हरकत कर बैठे तो जिन्दगी भर पछताना पड़ेगा आपको।

नाथी सहम गया। अपने अधिक ओछेपन पर ग्लानि-सी हो आई।

उधर मिस प्रीतम बार-बार पुकारे चली जा रही थी—

हे दाता ! तूने मेरी पुकार सुन ली आज तूने मेरी जन्म-जन्मान्तर की साध पूरी कर आज मैं कितनी सौभाग्यवती कितनी ।

बेटी ! फिर वहा गलती करने लग गई ! डाक्टर निरंकारी के डाटने पर वह रुक गई। पर उसके हाथों की गति नहीं रुकी। पलंग के निकट कुर्सी पर बैठे नाथी के सिर पर मुँह पर कन्धों पर और पीठ पर उसके हाथ सरक रहे थे। उसके हृदय में भरा हुई अपार खुशी अश्रु धाराएं बन-बनकर उसकी आंखों से टपक रही थीं। उसकी नशी आँख की पुतली इस समय तरलता के भार कुछ ताक पाने में असमर्थ थी और वह बार बार उसे पोंछकर नाथी की ओर ताकने का प्रयास कर रही थी।

तभी डाक्टर निरंकारी ने आवाज लगाई—

हरबससिंह ! इन्जेक्शन। और तत्क्षण वही युवक टीके का सामान हाथ में लिए भीतर आ पहुँचा।

मिस प्रीतम को टीका लगते देखकर नाथी घबरा उठा।

घबराइये नहीं मास्टर जी बस केस खराब करने में चाहे आपने कुछ भी उठा नहीं रखा है। पर निरंकार की कृपा से संकट टल गया। मैं आपको कितना समझाया कि इसके सामने आकर जाना ठीक नहीं होगा पर आपने नहीं मानी बात। फिर से ऐसी गलती नहीं कीजिएगा। जानते हैं इस लड़की का क्या रिश्ता कायम होने वाला है आपसे ? पहले

यदि यह आपकी 'बीबी जी' थी तो थोड़े दिनों तक यह आपकी दुल्हन बनने वाली है, समझे ?'

नाथ के क्या सुन रहा था ? इतनी विलक्षण बात ! मानो कोई उस पर एक हुआ कि आकाश में चमकने वाला चाँद थोड़ा देर में उसकी गोद में आ टिकेगा।

डाक्टर निरकारी अपनी बात शायद अभी पूरी नहीं कर पाये थे। बोले—

'शायद आप सोचते होंगे मास्टर जी कि मैंने क्यों इतने दिनों आपको धोखे में रखा—क्यों मैं नये-से-नया झूठ गढ़ कर आपको चकमा देता रहा। और इस बात का कारण भी यह लड़की खुद ही आपको बतावेगी कि क्यों मैंने इतने दिन आपके सिर पर नंगी तलवार लटकाये रखी कि किसी तरह भी यह भेद आप पर खुल न जाय। भेद खुल जाने का परिणाम क्या होता, शायद आप इसे नहीं जानते हैं। लड़की ने ही मुझे बताया था कि अगर नाथ को पता चल गया कि उसे और किसने प्रदान की है तो वह आवेश में आकर न जाने क्या उपद्रव कर बैठेगा। इसी से आपके साथ मुझे इतने छल-कपट करने पड़े। असल में मास्टर जी इस लड़की की कीमत कोई मुझसे पूछ कर देखे। करोड़ों में ही कोई व्यक्ति होगा जो किसी के लिए इतना बड़ा त्याग त्याग नहीं बल्कि बलिदान कर सके।'

अब यहाँ आकर नाथ की समझ में आया कि डाक्टर निरकारी के उस व्यंग्य वाक्य का मतलब क्या था। दूसरी बात जो उसकी समझ में अब तक नहीं आ पाई थी, यह कि मिस प्रतिमा ने उसके प्रति सच्चा प्रेम में नाथ के स्थान पर नाथ क्या रहा।

डाक्टर निरकारी फिर बोले—

'तो अब मैं आपको और अधिक भ्रम में नहीं रखना चाहता। मैं मानता हूँ कि जो लड़की आपकी खातिर यहाँ तक कर गुज़री, मनोनिप्रकृति ने वह केवल आप ही के लिए सिरजी है और यों कहना चाहिए

कि भगवान ने उस लड़की के लिए इस संसार में केवल आपको ही सिरजा है। कितनी खुशी होगी मुझे जिस दिन मैं आप लोगों को 'दूल्हा दुल्हन' के रूप में देखूँगा।

उत्तर में नाथी क्या कहता है इसके लिए डाक्टर निरंकारी को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी जबकि सारा समूचा नाथी उनके पैरों पर बिछ गया और रुँधे गले से पुकारते हुए बोला—

मेरे दाता! मेरे जैसे कीट को मगर आप... मगर आप...?

और इससे आगे यत्न करने पर भी नाथी कुछ नहीं बोल पाया।

केले की नवप्रस्फुटित कोंपल जैसे वायु के झोंके से लरजती है मिस प्रीतम के होंठ कुछ उसी प्रकार स्पंदित हो रहे थे। उसके साथ निरा वरण चेहरे पर वैसी ही आभा झलक रही थी जैसी उषा की पहली किरण गुलाब की पखुड़ियों पर झलकती है। यही आभा—यही स्पन्दन मानो मूक भाषा में डाक्टर निरंकारी के प्रस्ताव की पुष्टि भी थी और स्वीकृति भी।

नाथी कभी मिस प्रीतम की ओर कभी डाक्टर निरंकारी की ओर बारी बारी से ताकते हुए मानो पूछ रहा था—

'क्या सचमुच? क्या ऐसा सम्भव है? क्या एक कंगले के सिर पर हीरे-मोतियों जड़ित मुकुट रखा जाने वाला है?

नाथी का माथा झुक गया।

मिस प्रीतम की आँखें झुक गईं।

डाक्टर निरंकारी आँखों ही आँखों द्वारा मानो युगल जोड़ी को आशीर्वाद दे रहे थे।